संगीत

रागकल्पद्रुमः

(२रा खण्ड)

स्वर्गीय [illegible]ष्णानन्द रागसागर-विरचित

———0———

सुप्रसिद्ध साहित्यानुरागी लालगोलेके

राजा राव श्रीयोगीन्द्रनारायण राय बहादुरके

सम्पूर्ण व्यय और उत्साहपर

हिन्दी प्रभृति विविध भाषाओंमें पारदर्शी सङ्गीतज्ञोंके साहाय्यसे

विश्वकोष-सम्पादक

श्रीनगेन्द्रनाथ वसु प्राच्यविद्यामहार्णव शब्दरत्नाकर

सिद्धान्तवारिधि-सम्पादित

———0———

२४३।१ अपर-सरकुलार रोड, बङ्गीय साहित्य-परिषत्-मन्दिरसे

श्रीरामकमल सिंह द्वारा प्रकाशित

कलकत्ता

संवत १९७२

ग्रन्थकार और ग्रन्थका संक्षिप्त परिचय

कोई ३२ वर्ष पहिले सन् १८८४ ई०को कलकत्तेमें सार् राजा राधाकान्तदेव बहादुरके प्रासादमें हमने तेजस्वी तप्तकाञ्चनवर्णाभ और दीर्घकाय एक ब्राह्मण देखा। उस समय हमने वङ्गभाषामें 'शब्देन्दु-महाकोष' नामक ब्रहदभिधान प्रकाशित करनेका बीड़ा उठाया था। इस अभिधानके प्रकाशन और प्रत्नतत्त्वविषयमें शिक्षालाभके अभिप्रायसे ही राजा राधाकान्तके उपयुक्त दौहित्र स्वर्गीय श्रीआनन्दकृष्ण वसु महाशयके समीप हम उपस्थित थे। उसी समय पूज्यपाद वसु महाशयसे साक्षात् करनेको वह ब्राह्मणप्रवर राधाकान्त भवनमें आये थे। वसु महाशयकी कृपासे हमारा उनका परिचय हुआ। परिचय-प्रसङ्गमें वसु महाशयने कहा था,—"यही रागसागर कृष्णानन्द व्यासदेव हैं। इस समय इनका वयस ८० वर्षका, किन्तु देखनेपर ५०।६० वर्षसे अधिक समझ नहीं पड़ता। हमारे मातामहने जैसा 'शब्दकल्पद्रुम' नामक अभिधान बनाया है, इन्होंने भी वैसे ही 'रागकल्पद्रुम' नाम पर एक प्रकाण्ड सङ्गीत-ग्रन्थको सङ्कलन किया है। 'पृथ्वीराज-रायसे'को बात सबने सुनी होगी। इस समय एकमात्र यही कविचन्दका वह 'रायसा' उपयुक्त रूपसे गा सकते हैं।" इत्यादि

जब हमने उन महात्माको देखा, तब वह बहुमूल्य जरीन् कुरता, चपकन, चोगा और टोपी पहने हुये थे। उनकी वह वेशभूषा देख हम उन्हें कोई श्रेष्ठ ग्रन्थकार या गायक समझ न सके। हमने सोचा, कोई अमीर या राजा-महाराज होंगे। वसु महाशयसे उनका प्रकृत परिचय पा हम विस्मय-विमुग्ध हो गये। कवि-चन्दका नाम तो सुना, किन्तु उनका गान कभी कानमें न पड़ा था। हमने बहुत डरते-डरते गुरुस्थानीय वसु महाशयसे वही गान सुननेका आग्रह प्रकाश किया और रागसागरने भी हंसते-हंसते बालकका मन रख दिया। उन्होंने कविचन्दका गान सुनानेके लिये पहले अपना परिहित परिच्छद समस्त खोल-खाल लंगोटा पहना, पीछे वीररसात्मक कविचन्दका एक पद गाया। वैसा हृदय-उत्तेजक और वीररसात्मक गान फिर हमें कभी सुन न पड़ा। जो लोग आनन्दकृष्ण वसु महाशयके पुस्तकागारमें उस समय बैठे थे, वे रागसागर महाशयका अपूर्व स्वरालाप सुन और हावभाव देख मानो मन्त्रमुग्ध हो गये। हमने उसी समय समझ लिया, कि यह व्यक्ति प्रकृत ही एक असाधारण पुरुष हैं। किन्तु उस समय भी उनके कीर्तिस्तम्भ 'सङ्गीत-रागकल्पद्रुम'को देखनेका सुयोग न लगा। स्वर्गीय वसु महाशयने सिर्फ यही कहा, "यह राजा राधाकान्त देवकृत शब्दकल्पद्रुमके अनुकरण पर रागकल्पद्रुम बना रहे हैं।" सिर्फ उसी दिन इन महापुरुषसे हमारी मुलाकात हुई थी। उसके थोड़े दिन बाद सुन पड़ा, रागसागर इहजगत्से उठ गये। इस बातको गुजरे कोई २८ वर्ष बीते होंगे। वर्तमान वङ्गके प्रथित-कीर्ति साहित्य परिपोषक मुर्शिदाबाद-लालगोलेके वासी श्रीयुक्त राजा योगेन्द्रनारायण राव बहादुरकी कृपा एवं हमारे श्रद्धास्पद बन्धुवर श्रीयुक्त रामेन्द्रसुन्दर त्रिवेदी महाशयके उद्योगसे रागसागरका कीर्तिस्तम्भ राग-कल्पद्रुम हमारे हाथ लगा है।

प्रसिद्ध प्रत्नतत्त्ववित् राजा राजेन्द्रलाल मित्र महाशयने रागसागर और रागकल्पद्रुमके परिचय-प्रसङ्गमें लिखा है :—

"The book was in three volumes. The author, I remember, told me that he would make his work extend to seven volumes, the same as Raja Radhakanta Deva's Sabdakalpadruma, but I do not think he had materials ready at hand for the purpose. He carried about with him a huge bundle of MS notes, but I never had an opportunity to examine them, and I was too young then to care for them. The author was a Brahman, and his great pretension was that he could sing in three octaves, the ordinary compass of the human voice being two and a half octaves. He pretended also that he could sing in all the Ragas and Raginis with absolute accuracy, and without ever mixing up the latter ; but I never studied music myself, and in my youth cared no-

thing about it, so I never could get any proof of the man's pretensions. He was always singing, but was not a professional musician, that is, he never let himself out on hire. He received presents from the rich people of the town frequently, but never accepted anything as wages or remuneration for singing."

राजा राजेन्द्रलालकी उक्तिसे समझ पड़ता है, कि उन्होंने बाल्यकालमें ही रागसागरको देखा था। उस समय रागसागर अपने बृहत् ग्रन्थकी पाण्डुलिपि लिये घूमते रहे। उद्धृत परिचयसे आप अच्छीतरह समझ सकते हैं, कि वे एक अद्वितीय गायक थे। फिर उस समय कलकत्तेमें प्रत्येक बड़े आदमीके घर सङ्गीतका यथेष्ट आदर रहा। प्रधान-प्रधान धनी रागसागरको बुला गाना सुनते, और उपयुक्त उपहार दे सम्मानित करते थे। किन्तु उन्होंने कभी किसीसे पारिश्रमिक वा वेतनके तौरपर कुछ नहीं लिया। राजा राजेन्द्रलालने कहा है, कि शब्दकल्पद्रुमकी तरह रागकल्पद्रुमको सात खण्डमें प्रकाश करनेका अभिप्राय रखते भी रागसागर तीन खण्ड मात्र ही छपा सके थे।

सन् १८२४ ई०में राजा राजेन्द्रलाल मित्रने जन्म लिया था। अन्ततः द्वादशवर्ष वयःक्रमकालपर रागसागरके सहित उनका साक्षात् होनेसे प्राय सन् १८३६ ई०को हमें रागसागर कलकत्तेमें देख पड़े। रागसागरने अपने रागकल्पद्रुमकी सूचनामें बताया है, कि उन्होंने ३२ वत्सरकाल भारतमें सर्वत्र घूमफिर गीत-संग्रह किया था। सन् १८४२ ई० अर्थात् १८९९ संवत्‌में उनके रागकल्पद्रुमकी सूचना और प्रथमांश 'रङ्गीन गान मजमूवा' प्रकाशित हुआ।

हमने प्रारम्भमें ही लिखा है, कि सन् १८८४ ई०को रागसागरका वयस प्रायः ९० वत्सर पहुंचा था। ऐसे स्थलमें प्रायः सन् १७९४ या १७९५ ई० उनका जन्मकाल निकलता है। उनके आत्मपरिचयसे मालूम पड़ता है, कि राजपूताना मेवाड़-राज्यके अन्तर्गत उदयपुरके 'जोहैनी' नामक स्थानमें कृष्णानन्द व्यासदेव रहते और वृन्दावन-गोकुलमें सङ्गीतशास्त्र पढ़ते थे। गोकुलके सुप्रसिद्ध सङ्गीताचार्य दामोदर गोस्वामी, गिरिधर गोस्वामी एवं कल्याणराय प्रभृति गोस्वामिगणने सङ्गीत-विद्यासे मुग्ध हो उन्हें 'रागसागर' उपाधि दी थी। इसके ठहरानेका कोई उपाय नहीं, किस वयसमें उन्होंने 'रागसागर' उपाधि पायी थी। फिर भी उन्होंने ३२ वर्षकाल उत्तर एवं दक्षिण भारतके सकल प्रधान स्थान घूम-फिर बड़े बड़े उस्तादों या गायकों और पदकर्त्ताओंसे मिल उनके निकट उस समय भारतको नाना भाषामें जितने प्रकारके श्रेष्ठ गान रहे उन सबको संग्रह किया। जिस समय वह इस विराट् संग्रह-कार्यमें लगे, उसी समय सम्भवतः राजा राजेन्द्रलालसे उनकी मुलाकात हुई थी। उस समय भी वह विशाल पाण्डुलिपि कन्धेपर लादे घूमते थे।

सन् १८२२ ई०में राजा राधाकान्त देवने शब्दकल्पद्रुम आरम्भ किया और १८५८ ई०में उनका वह महाग्रन्थ पूरा हुआ। सुतरां जिस समय शब्दकल्पद्रुमका मुद्रणकार्य चलता था, उसी समय रागसागरके हृदयमें रागकल्पद्रुम प्रकाशका सङ्कल्प उठा। शब्दकल्पद्रुम-प्रचारकालमें राजा राधाकान्त जिस तरह अजस्र अर्थ लगा अपने छापिखानेसे शब्दकल्पद्रुम निकालते, असाधारण उद्योगी पुरुष गौड़ब्राह्मण रागसागर वङ्गवासी और धनकुबेर न होते भी उसी तरह कलकत्तेमें खास छापाखाना खोल अपना विराट् रागकल्पद्रुम प्रकाश करनेको व्रती बने थे। उस समयके इस कामको असाधारण अध्यवसायका चूड़ान्त निदर्शन कहना पड़ेगा। यह हमने एक दिनके परिचयमें ही समझ लिया, कि ब्राह्मण दरिद्रसन्तान होकर भी उनका हृदय राजा-महाराजकी तरह उदार और विशाल था। शब्दकल्पद्रुम समाप्त होनेसे पहले ही उनका रागकल्पद्रुम निकल गया। राजा राधाकान्तदेवने १६ लाख रुपये लगा ३६ वर्षकी चेष्टाके फलसे जो महाकार्य साधन किया, बेचारा ब्राह्मणसन्तान ३२ वर्ष घूम उपकरण संग्रह कर पीछे ८ वर्षकी चेष्टामें ही अपना चार खण्ड रागकल्पद्रुम छपा सका था। पहले ही बता दिया है, कि सन् १८४२ ई०में उनके ग्रन्थका प्रथम खण्ड छपा था। मुद्रित ग्रन्थकी समाप्ति पुस्तिकासे समझ पड़ता है, कि सन् १८४९ ई०को उनके ग्रन्थका अन्तिम खण्ड निकला था। उनके ग्रन्थका जो-जो खण्ड जिस२ समय मुद्रित हो प्रकाशित हुआ था, उसका सन्-संवत् इसतरह लिखा मिला है,—

सूचनिकाके शेष "संवत् १८९९ चैत्रवदि द्वितीया रवौ, वङ्गला सन् १२४९ ७ चैत्र अङ्गरेजी १८४२ १९ मार्च।"
रङ्गीनगान मजमूवाके शेष "संवत् १८९९ चैत्र वदि रवौ"
शास्त्रनाम सूचनिकाके शेष "संवत् १९०० वैशाख कृष्णत्रयोदशी वङ्गला १२५० १५ वैशाख,अङ्गरेजी १८४२ २०एप्रेल।"
रागरागिणी-विवेकाध्यायके शेष "संवत् १९०१ वैशाख शुक्ल एकादशी, वङ्गला सन् १२५१ १९ वैशाख २४ एप्रेल।"
बंगला भाषा रङ्गीनगान २३६ पृष्ठके शेष "सन् १२५२ साल, संवत् १९०२ शुक्लचतुर्दशी तारीख २९ माघ"
ध्रुवपद विष्णुपद ख्याल आदि गानके शेष "संवत् १९०२ फालगुन सुदी १शुक्रवार,वङ्गला सन् १२५२ अङ्गरेजी १८४५"
कबीर-बीजकके शेष "संवत् १९०६ वैशाख कृष्ण १ चतुर्थी, वङ्गला सन् १२५६,११ वैशाख, अंगरेजी सन् १८४९"।

पूज्यपाद आनन्दकृष्ण वसु महाशयसे सुना और राजा राजेन्द्रलाल मित्र महाशयने भी लिखा है, कि रागसागर महाशयने अपने रागकल्पद्रुमको शब्द-कल्पद्रुमकी तरह ७ खण्डमें सम्पूर्ण करनेका सङ्कल्प किया था, किन्तु उसमें वे ३ खण्ड मात्र ही प्रकाश कर सके। इधर रागसागरकी ग्रन्थसूचनामें देखते हैं, कि उनका ग्रन्थ ४ खण्डमें सम्पूर्ण हुआ, प्रति खण्डका मूल्य २५) रु० और समग्र ग्रन्थका मूल्य १००) रु० निर्दिष्ट रहा।

सुप्रसिद्ध साहित्यानुरागी लालगोलेके राजा श्रीयोगीन्द्र नारायण राव बहादुरने एक प्रति रागकल्पद्रुम संग्रह कर वङ्गीय साहित्य-परिषत्-पुस्तकागारमें प्रदान किया। बहुत दिनसे यह अपूर्व ग्रन्थ लुप्तप्राय था। सन्देह है, कुछ प्राचीन सङ्गीतज्ञ व्यतीत कितने ही लोगोंने इस महाग्रन्थका नाम पर्यन्त सुना है या नहीं। चिर-साहित्यबान्धव राजा बहादुरने ऐसे लुप्तग्रन्थका पुन-रुद्धार एकान्त वाञ्छनीय समझ सन् १९१२ ई०में पुनर्मुद्रणका अभिप्राय प्रकाश किया। इसलिये उन्होंने हमें लालगोले ले जा हमसे परामर्श पूछा—कैसे यह ग्रन्थ छपाया जा सकता है, और सुहृद्वर श्रीयुक्त रामेन्द्रसुन्दर त्रिवेदी महाशयके आग्रहसे इस वृहद् ग्रन्थका सम्पादनभार हमारे ही ऊपर रख दिया। हमारे लिये यह गुरुभार ग्रहण कोई सीधी बात न थी। जिस बहुविध भाषाका गान इस रागकल्पद्रुममें ग्रथित हुआ, उस समस्त भाषा और विशेषत: सङ्गीत शास्त्रमें हमें अल्प ही अभिज्ञता विद्यमान है। हमने राजाबहादुर जैसे उत्साहदाताके आनुकूल्य और सुहृद्-वर त्रिवेदी महाशयके उत्साहवाक्यसे इस महाकार्यमें हाथ लगाया।

यद्यपि रागसागरने अपनी सूचनामें ४५ विभिन्न भाषाओंके सङ्गीत-संग्रहकी बात लिखी है, तथापि उनके इस ग्रन्थमें प्रधानत: हिन्दी, उर्दू, माड़वारी, पञ्जाबी, व्रजभाषा और बंगला ही अधिकांश व्यवहृत हुई है। अपरापर भाषाओंके गान बहुत ही अल्प हैं। देशीय मुद्रायन्त्रकी उस शैशव अवस्थामें अच्छा प्रूफ परिदर्शक न मिलता, प्रूफ देखनेका भी कितनों हीको अभ्यास न था। सुतरां उस समय उपयुक्त प्रूफ-परिदर्शकके अभावसे रागकल्पद्रुमके अधिकांश गान ऐसे विकृत भावसे छपे, कि उनका प्रकृत पाठ उद्धार करनेके लिये हम और हमारे साहाय्यकारी कयी बार घबरा गये हैं। विशेषत: चीन, पेगु, ब्रह्म, श्याम, बलख, बोखारे प्रभृतिकी जो भाषायें इस देशमें साधारणत: नहीं चलतीं, उनमें हम यह नहीं ठहरा सके, किस-किस विषयके कौन-कौन गान संगृहीत हुये हैं। संस्कृत, बंगला, हिन्दी, उर्दू, अंगरेजी, मारवाड़ी प्रभृति प्रचलित भाषाओंके गानोंका पाठ उद्धार नाना व्यक्तियोंके साहाय्यसे किया गया है।

रागसागरके छापेखानेसे जिस अवस्थामें ग्रन्थ सम्पा-दित हुये, उसे हम आजकलका प्रथम प्रूफ समझ सकते हैं। राजा राधाकान्तदेवने जैसे बहुसंख्यक पण्डित नियुक्तकर अपने शब्दकल्पद्रुमके विशुद्ध संस्करण-प्रकाशमें, उपयुक्त आयोजन किया, मेवाड़के गौड़-ब्राह्मण सन्ताननें भी कलकत्ते पहुंच वैसे ही उपयुक्त आयोजन करने-का सुयोग न पाया था। सङ्गीतविद्याके अद्वितीय व्यक्तिहोते हुयेभी इसमें सन्देह है,कि अपनी बतायी ४५ भाषाओंमें उन्हें अभिज्ञता रही। इसीसे उनका ग्रन्थ उपयुक्त भावसे मुद्रणकर निकालना एक प्रकार असाध्य-साधन व्यापार है। लालगोलेके राजा बहादुरके उत्साह

और हमारी बहु चेष्टासे छपते भी नहीं कह सकते, कि यह संस्करण संपूर्ण भ्रम-प्रमाद-विरहित हुआ है। हमने यथासाध्य प्रकृत पाठ-उद्धारकी चेष्टा की है।

यह बता देना भी आवश्यक है, कि इस रागकल्पद्रुमके संस्कृत, बंगला और अंगरेजी अंशको छोड़ अपरापर अंशके मुद्रणकालमें हिन्दी भाषावित् श्रीयुक्त राधारमण मैत्र, पण्डित मतिराम महता, पण्डित बलभद्र शुक्ल, पण्डित रामाधीन अवस्थी, पण्डित गुरुदयाल मिश्र, पण्डित रामेश्वर देव साहित्याचार्य और पण्डित जयनारायण पाण्डेय काव्यतीर्थ महाशयने विभिन्न स्थलके भ्रमसंशोधन एवं पाठोद्धार-कार्यमें उपयुक्त साहाय्य किया है। इस लिये हम उनके निकट कृतज्ञ हैं।

१ले और २रे खण्डकी प्रथमांशमें प्राचीन संस्कृत सङ्गीत-शास्त्रसे जो प्रमाण उद्धृत हुये, रागकल्पद्रुममें उनके आकरस्थान वा अध्यायादिका निर्देश न रहनेसे बहुसंख्यक मूलग्रन्थ मिला आकारस्थान निकालने और प्रकृत पाठोद्धार करनेमें हमें अनेक कष्ट झेलने पड़े हैं। हम सम्पादक रूपसे कह सकते हैं, कि संस्कृत अंशके प्रकृत पाठ-उद्धारके लिये संपूर्ण भावसे दायी हैं। अपरांश हमारे सहकारियोंकी अभिज्ञताके फलसे सम्पादित हुआ है। इस सकल अंशकी आलोचना करनेको हमें समय न मिला। विशेषतः सङ्गीतविद्यामें अभिज्ञता न रहनेसे उनके कार्यपर हस्तक्षेप करना युक्तियुक्त कैसे समझ सकते हैं! हिन्दुस्थानी पण्डितों और गायकोंमें भाषाज्ञानका भी यथेष्ट तारतम्य है। किन्तु उनमें तीन दल हो गये हैं। एक दल तो चाहता, पहले जिसतरह प्रकृत रूपसे हिन्दीभाषा व्यवहृत होती थी, ठीक उसी तरह हिन्दी अंश छपना चाहिये। दूसरा दल हिन्दीभाषामें जहां शुद्ध संस्कृत शब्द आता, वहां प्रकृत संस्कृत रूप ही रखता और खालिस हिन्दी अंश हिन्दी भाषाके प्रकृत उच्चारणानुसार सन्निवेशित करता है। फिर गायकदल जिस भावसे गाता, उसीके स्वरालापकी पद्धति और उच्चारणके अनुसार ग्रन्थ छपानेकी अनुमति भी देता है। ऐसी ही तीन श्रेणीके संशोधकोंके साहाय्य एवं तत्त्वावधानसे विभिन्न स्थलको हिन्दी, ब्रजभाषा और मारवाड़ीके पदोंका अंश छापा गया है। सुतरां मुद्रण कालमें सर्वस्थान भाषागत या उच्चारणगत परिचर्या सम्पूर्ण भावसे रक्षित रह नहीं सकती।

नहीं जानते और सुनते भी नहीं, कि भारतीय सङ्गीत-साहित्यमें रागकल्पद्रुम-जैसा कोई वृहत् ग्रन्थ विद्यमान है। हिन्दुस्थान और बङ्गालमें सङ्गीत संग्रहके जो ग्रन्थ छपे हैं, उनमें हमारे कितने ही देखे सुने हैं। किन्तु इस रागकल्पद्रुमके सामने वह अति सामान्य हैं। रागसागरने ग्रन्थके प्रथम सङ्गीतशास्त्रसे उद्धृत संस्कृतमें जिस अकाल-पूर्व विविध सङ्गीत-साहित्यका परिचय दिया, उससे हमें बहुतसे प्राचीन सङ्गीत ग्रन्थोंका सन्धान मिला है। उनमें ऐसे अनेक ग्रन्थ हैं, जो वर्तमान भारत-गवर्णमेण्टके भारतव्यापी अनुसन्धानसे भी आजतक आविष्कृत हो न सके। वर्णानुक्रमिक प्राचीन (२रे खण्डके अन्तिम ८ पत्रपर) संस्कृत शास्त्रसूत्रोंमें उन सकल ग्रन्थोंके नाम देख पड़ेंगे। इन सकल संस्कृत ग्रन्थोंको छोड़ रागकल्पद्रुमके गानाध्यायमें बहुसंख्यक हिन्दी और बंगला ग्रन्थोंसे भी गान उद्धृत हुये हैं, नीचे वही सकल ग्रन्थ अकारादिक्रमसे लिखे जाते हैं*,—

अनन्तरस	काशीखण्ड
अनेकार्थ-नाममाला	कृष्ण गीतावली
अवतार-चरित्र	कोकसार
अवध-विलास	कौतुक-रत्नावली
अष्टयाम	खटऋतु
आभास रामायण	गणिताङ्क
उपदेशमाला	गर्भावली रामायण
कविप्रिया	गीतावली (हिन्दी)
कवित्त-रामायण	गीतावली (बंगला) आनन्दनारायण घोषकृत
कबीर-बीजक	

* सर जर्ज ग्रीयार्सन साहबने अपने हिन्दी भाषाके इतिहासमें रागकल्पद्रुमसे हिन्दुस्थानी ग्रन्थोंकी जो तालिका दी, वह भी इस जगह ले ली गयी है। उसमें सकल गान मिला हम यह ठीक कर नहीं सके, किस-किस ग्रन्थसे कौन-कौन अंश उद्धृत हुये हैं। इस तालिकामें जिन सकल ग्रन्थोंके नाम हैं, उनमें केवल गीतावली और ब्रह्मसङ्गीत बंगला भाषाके ग्रन्थ हैं। सिवा इसके समस्त ही ग्रन्थ हिन्दुस्थानी, मारवाड़ी और ब्रजभाषाके बने हैं।

गीतावली (वङ्गला
,, आशुतोष देवकृत)
,, कालिदास गाङ्गोलीकृत)
,, कालिदास मीरजाकृत)
,, रामनिधि गुप्तकृत)
,, शिवचन्द्र सरकारकृत)
गोपीचन्द गान
गोरखमच्छेन्द्र-समाज
चाहार दरवेश
छत्रप्रकाश
जगद्विनोद
ज्ञान उपदेश
तानसेनका सङ्गीतसार
तुलसीदासका रामायण
नगर-कीर्त्तन (राजकृष्ण
बाहादुरकृत)
दया-विलास
दोहावली
ध्यान मञ्जरी
नयानसुख
नरसीकी हारमाला
नाजिरका शायर
नीतिकथा
पञ्चरत्न
पद्मावत्
पृथीराज रायसा
प्रबोधचन्द्रोदय-नाटक
प्रेमसागर
ब्रह्मसङ्गीत (राममोहनराय)
,, (देवेन्द्रनाथ ठाकुर)
,, (गिरीन्द्रनाथ ठाकुरकृत)
भक्तमाला (हिन्दी)
भाषा इन्द्रजाल
,, कोक
,, छन्द
,, पचिशी
,, पिङ्गल
,, भगवद्गीता
,, भागवतपुराण
,, भूषण
,, रत्नाकर
,, सङ्गीतदर्पण
,, सावर
भाषा सामुद्रिक
मदन-मञ्जरी
मनोरञ्जन इतिहास
मन्नु लालका शायर
माधो-विलास
योगान्तकसार
रसराज
रसार्णव
रसिकप्रिया
रागमाला
राजनीति
राज-भर्त्तरि गान
रामचरण-चिह्न
रामविनोद
रामशतसै
राम-शलाका
राम-पञ्चाध्याय
रुक्मिणीमङ्गल
लीलावती
लूना चमारिका मन्त्र
वारवे रामायण
विश्वपरीक्षा
विद्याभ्यासका फल
विनय-पत्रिका
विहारी शतसै
वृन्दावन सत्
वैताल-पचिशी
वैदरकी कथा
वैद्यमहोत्सव
व्रजयात्रा
व्रजविलास
व्रजभाषा महाभारत
शालिहोत्र
शिखका ग्रन्थसाहब
शिवसरोज
शिशुबोध
श्रीकृष्णावली
सिंहासनवत्तिसी
सभाविलास
सरस रस
सर्पादि-जन्तुकी पोथी
सूगा वहत्तरी
सूरसागर
सौदाका गजल
स्नेहसागर
हनुमान नाटक
हनुमान वाहक
हातमताइ
हितोपदेश
हीराराञ्झा

इस ग्रन्थतालिकासे हमें कई हिन्दुस्थानी, डिङ्गल और बंगला ग्रन्थोंका सन्धान मिलता है।

इस सुवृहत् ग्रन्थमें कितने प्रकारकी राग-रागिणी, कितने गीत-रचयिता और उनके रचित कितने प्रकारके गान किस विषयमें संगृहीत हुये, साधारणको समझानेके लिये उपरोक्त तालिकाको छोड़ इस ग्रन्थके साथ निम्नलिखित भावसे विस्तृत सूचीपत्र दिया गया है—

१। १ले और २रे खण्डके साधारण विषय और रागरागिणीकी सूची (१—१६ और १—६ पृष्ठ)

२। २रे खण्डके अन्तमें १ला खण्डोक्त वर्णानुक्रमिक रागरागिणी-नाम सूची। (१—८ पृष्ठ)

३। प्राचीन संस्कृत ग्रन्थ सूची। (२य खण्डके अन्तमें ८ पृष्ठ)

४। १ले, २रे, और ३रे खण्डके गीतरचयिताओं और साधारण नामोंकी वर्णानुक्रमिक विस्तृत सूची। (१०—१६ पृष्ठ)

गीत-रचयिताओं और साधारण नामोंकी सूचीसे समझ पड़ेगा, रागसागरसे पहले कितने सुप्रसिद्ध गायक या सङ्गीत-रचयिता विद्यमान थे और दिल्लीके मुगल बादशाहसे लेकर कितने मुसलमान और हिन्दू राजन्य, धर्माचार्य और सिद्ध पुरुष उनके आश्रयदाता रहे। तीन खण्डकी साधारण नामसूचीमें उन सकल आश्रयदाताओंके नाम लिखे गये हैं, उनमें कितने ही पदकर्ता या गीतरचयितृ-रूपसे भी परिचित हुये हैं। सिवा इसके दूसरे भी बहुतसे गान रागकल्पद्रुममें हैं, जिनके रचयितृगणके नाम और आकरस्थानका कोई सन्धान हम नहीं पा सके हैं।

रागकल्पद्रुम कोई प्रकृत इतिहास या साहित्य ग्रन्थ नहीं है, तो भी इस विराट् संग्रह ग्रन्थमें इतिहास-प्रसिद्ध व्यक्तियों, धर्माचार्यों और समाजपतियोंके नाम मिलनेसे इसकी आलोचना द्वारा मुसलमान और हिन्दू-समाजके विभिन्न समयका अनेक अज्ञातपूर्व ऐतिहासिक तत्त्वोंका उद्धार हो सकता है। इस रागकल्पद्रुमसे हमें कितने ही हिन्दी और उर्दूके मुसलमान पद-

कर्ताओंका सन्धान मिलता है। नामसूचीकी तालिकामें अकबर, जहांगीर, शाहजहां औरंगजेब, आलमगीर, मुहम्मदशाह प्रभृति बादशाहोंका नाम लक्ष्य करनेसे ही समझ पड़ेगा, कि मुग़ल बादशाह भी हिन्दुओंके साथ भगवद्लीला एवं प्रेम-विषयक गान सुनते और स्वयं भी समय-समय पर पद बना कृतकृत्य होते थे। जिस औरङ्गजेबको कितने ही लोग दारुण देवद्वेषी और हिन्दूविद्वेषी समझते हैं, उनके रचित पद पढ़नेसे इस विषयमें घोरतर सन्देह होता है कि वास्तविक वह हिन्दूविद्वेषी थे या नहीं। शायद लोग कहें,—औरङ्गजेबका नाम रहते भी वह पद औरङ्गजेबके खास बनाये नहीं, किसी हिन्दूने ही लिखे होंगे। इस बातका यह उत्तर दिया जा सकता है—वह यदि प्रकृत हिन्दू-विद्वेषी ही होते, तो उनके समय उन्होंके नामसे ऐसे गान प्रचारित होनेकी कभी सम्भावना न थी। अन्ततः इस रागकल्पद्रुमोक्त मुसलमान पद कर्ताओंके बनाये शत-शत पदोंसे हम समझ सकते हैं कि, किसी समय मुसलमान बादशाह और मुसलमान लोग हिन्दूओंको हरगिज़ विद्वेषकी दृष्टिसे न देखते थे। हिन्दु-देवलीला भी उनके निकट सम्पूर्ण अवज्ञाकी वस्तु नहीं मानी जाती थी। ऐसे दिन बीत गये हैं, जब हिन्दू मुसलमान एक दूसरेको आत्मीय भावसे देखते, धर्म-विश्वासमें कभी विरुद्धवादी न होते; उलटे परस्पर धर्मकार्यमें सहानुभूति रखते थे। कहनेसे क्या—मुसलमानी अमलदारीमें समाज,धर्म-साहित्य और रीतिनीतिके मध्य जिस भावका तरङ्ग उठता था, उसका कुछ-कुछ आभास हमें रागकल्पद्रुमके नाना पदोंसे मिला है। स्थानाभावसे हम इसका विस्तृत विवरण न दे सके।

पहले ही लिख चुके हैं, कि रागसागरके समय भारतके सकल धनी गृहस्थोंके घरमें सङ्गीतकी चर्चा यथेष्ट प्रचलित रही, विशेषतः कलकत्तेमें बड़े आदमियोंका ऐसा घर न था, जिसमें उपयुक्त सङ्गीत-चर्चा न होती हो। सङ्गीत-चर्चाके साथ कितने ही बड़े आदमी नाना विषयोंके अनेक गान बनाते थे, जिनका अधिकांश इस समय विलुप्त होते हुये भी रागसागरकी कृपासे रागकल्पद्रुमके बङ्गांशमें कुछ लोगोंका सन्धान मिलता है।

इस ग्रन्थके प्रथम प्रकाश-कालमें ग्राहकश्रेणीभुक्त हो जिन-जिन महात्माओंने रागसागरको उत्साह दिया था, उन सबका नाम ग्रन्थकी सूचनामें रागसागरने कृतज्ञताके साथ लिखा है। उसी ग्राहकतालिकामें राजराजेश्वरी क्वीन विक्टोरियासे लेकर उस समयके भारतवर्षीय सकल स्थानके सकल प्रधान-प्रधान राजाओं अमीरों और बहुतसे सम्भ्रान्त धनी व्यक्तियोंका नाम देख पड़ता है। उस समय महाराज रणजित्सिंहके पुत्र स्वाधीन भावसे ही राज्य करते और काशीपति चेतसिंहका राज्य लोप होते हुये भी उनके पुत्र महाराज बलवन्त सिंह आगरेमें विराजते थे। उस समय भी भारतवर्षके बाहर-भीतर जिन स्वाधीन और अर्ध-स्वाधीन नृपतियोंने रागसागरको रागकल्पद्रुम ले उत्साहित किया, उनका सन्धान भी इस ग्रन्थकी सूचनासे मिल जाता है। जिन सकल महात्माओंका नाम उक्त तालिकामें लिखा है, उनके कितने ही वंशधर आज भी नाना स्थानोंमें उज्ज्वल नक्षत्रकी तरह चमक रहे हैं। हम आशा करते हैं, कि उनके पूर्वपुरुषोंकी तरह उनके निकट भी यह ग्रन्थ विशेषरूपसे समादृत होगा।

हम पहले ही बता चुके हैं, कि रागसागरके ग्रन्थ छपानेके बाद अनेक ज्ञानी और मानी लोगोंके रागकल्पद्रुम ले उन्हें उत्साह देनेपर अल्प दिनोंमें ही यह ग्रन्थ विरल-प्रचार हो गया था। परम पूज्यपाद महामहोपाध्याय श्रीयुक्त हरप्रसाद शास्त्री महाशयसे हमने सुना है, कि ग्रीयार्सन साहबने (अधुना सर जार्ज ग्रीयार्सन) सन् १८८६ ई०को जब हिन्दूस्थानी भाषाका संक्षिप्त इतिहास लिखना आरम्भ किया तब यह रागकल्पद्रुम उनका प्रधान अवलम्बन बना; उन्होंने अनेक चेष्टा लगा मेटकाफहाल-पुस्तकालयसे एकमात्र सम्पूर्ण ग्रन्थ पाया था। यह ग्रन्थ दीर्घकाल व्यवहार करनेको उन्हें सौ रुपयेसे भी ज्यादा चन्दा पड़ा, परन्तु उन्हें बहु चेष्टा करने एवं मूल्य देनेपर भी दूसरा सम्पूर्ण ग्रन्थ न मिल सका। शास्त्री महाशयने भी घटनाक्रमसे वङ्गांश मात्रके तीन खण्ड संग्रह किये थे। अपना एक खण्ड उन्होंने वङ्गीय साहित्य-परिषत्-पुस्तकागारमें उपहार दिया है। पहले शास्त्री महाशयकी भी धारणा रही,

कि वङ्गाक्षरमें मुद्रित अंश ही रागसागरका सम्पूर्ण रागकल्पद्रुम था। किन्तु पीछे लालगोलेके राजाबहादुरने जब वङ्गीय साहित्यपरिषत्को नागरी अक्षरोंमें मुद्रित अंश दिया और शास्त्री महाशयने उसे देखा, तब यह वास्तविक चमत्कृत हो गये। लालगोलेके राजा बहादुरको इस ग्रन्थके उद्धारका आयोजन करते देख शास्त्री महाशयने आन्तरिक धन्यवादज्ञापक पत्र लिखा था। हमने अनेक चेष्टासे निम्नलिखित नागर और वङ्गाक्षरमें मुद्रित रागकल्पद्रुमका सन्धान पाया है। उनमें—

१। लालगोलेके राजा बहादुरका दिया और वङ्गीय साहित्य-परिषत्-पुस्तकालयमें रखा आदर्श पुस्तक है।

२। स्वर्गीय राजा राधाकान्तदेव बहादुरके भवनमें अयत्नसे रक्षित १ खण्ड है।

३। वर्तमान कलकत्ता इम्पीरियल लायिब्रेरीमें रक्षित एक असम्पूर्ण खण्ड है। (इस पुस्तकको ग्रीयार्सन साहबने व्यवहार किया था।)

केवल वङ्गाक्षरमें मुद्रित ४।५ ग्रन्थोंका सन्धान तो मिला, किन्तु हम कितने ही लोगोंसे अनुसन्धान लगा भी यह मालूम कर न सके, नागरी और वङ्गाक्षरमें मुद्रित ग्रन्थ सिवा तीन प्रतिके किसी दूसरी जगह है या नहीं। पहले हम समझते थे,—लालगोलेके राजाबहादुरका दिया आदर्श-पुस्तक ही संपूर्ण रागकल्पद्रुम है। इस पुस्तकमें निम्नलिखित रूपसे अंश-विभाग लगा है—

१। सूचनिका ४ पत्राङ्क और माम ४ पत्राङ्क।

२। स्वराध्याय, तालाध्याय, नृत्याध्याय, रामरागिणीविवेकाध्याय—२८ पत्राङ्क।

३। ध्रुवपद, ख्यालादि गान प्रथम २२८ पत्राङ्क, पीछे १से ८ और ११७से १५६ पत्राङ्क।

४। रङ्गीनगान मजमूवा, ३४४ पत्राङ्क।

५। कीर्तन वा नृत्यकीर्तन, १२२ पत्राङ्क। उसके बाद खण्डित है।

६। होली रङ्गीनगान १०८ पत्राङ्क। (१०८ पृष्ठके बाद खण्डित है।)

७। अध्यात्म और ज्ञानतत्त्वसागर, ७६ पत्राङ्क।

८। हिन्दी भक्तमाल-धृत कबीरका बीजक, ५२ पत्राङ्क।

९। बंगला अक्षरमें मुद्रितांश, प्रथम २३६, उसके बाद २४ पत्राङ्क।

आदर्श पुस्तकके अवलम्बनसे ग्रन्थसम्पादनकालमें अनेक चेष्टा करनेपर भी हम दूसरा कोई ग्रन्थ संग्रह कर न सके थे। ग्रन्थका ३रा खण्ड या वङ्गाक्षरांश छपते समय हमें इम्पीरियल लाइब्रेरी और राजा राधाकान्त देवके पुस्तकालयमें इस पुस्तकके वर्तमान रहनेका सन्धान मिला। किन्तु उभय ग्रन्थ मकान लाकर उपयुक्त भावसे मिलानेका कोई सुयोग लगा न था। स्वर्गीय राजा राधाकान्त देवके सुयोग्य पौत्रके निकट कितनो ही दौड़ धूप कर भी उनके भवनका पुस्तक हम देख न सके। इम्पीरियल लाइब्रेरीका पुस्तक देख तो पाया, किन्तु उसे मकान ला अपने आदर्श-पुस्तकके साथ मिलानेकी सुविधा न लगी। इम्पीरियल लाइब्रेरीके कर्मचारी अपने यहांका पुस्तक किसी प्रकार बाहर निकालनेपर सम्मत न हुये। इसीसे हमें इम्पीरियल लाइब्रेरीमें जाकर उभय पुस्तक मिलानेकी व्यवस्था बांधनी पड़ी। हमारे सहकारी पण्डित श्रीयुक्त रजनीकान्त विद्याविनोद मासाधिक काल इम्पीरियल लाइब्रेरीमें यातायातकर आदर्श पुस्तकसम्बन्धीय १ला खण्डका खण्डित अंशके ३२ पृष्ठोंकी नकल उतार लाये। यह अंश २रे खण्डके परिशिष्टमें छपा है। ३यांश या ध्रुवपदख्यालादि अंश इम्पीरियल लाइब्रेरीके पुस्तकमें ४ पृष्ठ मात्र अर्थात् संपूर्ण न रहनेसे हम पूर्ण कर न सके। षष्ठ अंश भी थोड़ासा असंपूर्ण रह गया है। इम्पीरियल लाइब्रेरीके पुस्तकको नकल उतारते समय दूसरे भी कई भाग मिले, जो हमारे आदर्श-पुस्तकमें बिलकुल देख नहीं पड़ते। नीचे उनका अंश-विभाग दिया जाता है :—

१०। सूरदासजीकृत सूरसागर-सारावली ४४ पत्राङ्क।

११। सूरसागर—बधायी, बाललीला, यमलार्जुन, अघासुरवध, वत्सहरण, राधाकृष्णजीको प्रथम मिलनलीला, गोचारण-लीला, कालीयदमन-लीला, वस्त्रहरणलीला, पनघटकी लीला और खण्डिता, (सूरसागरके) कुल १५२ पत्राङ्क।

१२। सूरसागर—दानलीला और राधाजीको अनुरागलीला, कुल १०४ पत्राङ्क।

१३। सूरसागर—मुरलीलीला, रासलीला और मानलीला, कुल ९६ पत्राङ्क।

१४। सूरसागर—मथुरालीला, ३२ पत्राङ्क।

१५। सूरसागर—भ्रमरगीता (रागसागर-संग्रह), १२० पत्राङ्क।

१६। अपना दीनत्व,प्रभुजीका माहात्म्य तथा विनय-पत्रिका, ३२ पत्राङ्क।

१७। कलावती होलीगान—अतिरिक्त पत्राङ्क १०९ से १७६।

१८। राजा-भर्त्तृहरि-गीत, (१-८पृ०) और राजा गोपीचन्द्र गीत (९-२८), कुल २८ पत्राङ्क।

१९। रङ्गीनगान (ग़ज़ल, रेख़्ता, शायर, रुबायी आदि हिन्दी, फ़ारसी और सब देशकी भाषामें) कुल ९८ पत्राङ्क, उसके आगे खण्डित है।

सुतरां उभय पुस्तक मिलानेसे देख पड़ा, कि इम्पीरियल लायिब्रेरीमें रक्षित रागकल्पद्रुमके ७४४ पृष्ठ अभी छपनेको पड़े हैं।

समझनेकी बात है, रागसागरने अपनी सूचनामें जिन चार खण्डोंका परिचय दिया, उनमें तीन खण्ड मात्र राजा बहादुरके दिये हुये आदर्श पुस्तकमें मिलते हैं। तीन खण्डमें विभक्त ऐसाही मूलग्रन्थ सम्भवतः राजा राजेन्द्रलालने भी देखा होगा। हमें प्रथम जैसे चतुर्थ खण्डका सन्धान न मिला, राजा राजेन्द्रलालको भी वैसे ही तीन खण्डसे अतिरिक्त पुस्तक देखनेका सुयोग लगा न था। सुतरां इसमें सन्देह नहीं, उनके समयमें ही इस संपूर्ण पुस्तकका कितना ही अभाव पड़ा होगा। जो हो, इम्पीरियल लायिब्रेरीमें संगृहीत पुस्तकसे हमारा वह अभाव पूरण हुआ है। हमारे आदर्श और इम्पीरियल लायिब्रेरीके पुस्तकमें जो-जो अंश मिला, उसकी तालिका ऊपर दी गयी है। सिवा इसके किसी दूसरेके पास यदि कोई अंश मिले तो कृपापूर्वक उसका संवाद देनेसे हम विशेष अनुगृहीत होंगे। अतः राजाबहादुरके उत्साहसे यदि चतुर्थ खण्ड निकालनेका सुयोग लगा, तो अवशिष्ट समस्त अंश छाप ग्रन्थ पूर्ण करने और उसी चतुर्थ खण्डमें सङ्गीत साहित्यके इतिहासको आलोचना देनेकी हमारी प्रबल इच्छा है।

इस वृहत् ग्रन्थके तीन खण्ड प्रकाशित हुये हैं। रागसागरने ३रा खण्ड केवल बङ्गाक्षरोंमें निकाला था। ३रे खण्डमें अधिकांश बंगला गान रहनेसे हमनेभी उसे बंगला अक्षरोंमें ही छापा है। आगेके दो खण्डोंकी पत्रसंख्या कुल १३५६ और तृतीय खण्डकी पत्रसंख्या कुल ३४० है। फिर आगेके दो खण्डोंमें गानोंकी संख्या ११३३० और तृतीय खण्डमें गानोंकी संख्या २५६२ है। इसी बातसे ग्रन्थकी विशालता लोगोंकी समझमें आ जावेगी।

हम पहले ही कह चुके हैं, कि महात्मा सर जार्ज ग्रीयासनने हिन्दूस्थानी भाषाका इतिहास-बनाते समय इस रागकल्पद्रुमसे यथेष्ठ साहाय्य लिया था। महात्मा ग्रीयासन साहबने भी अपने ग्रन्थमें लिखा है—

"And another product of Calcutta civilisation, of a very different kind, was the huge anthology of Krishnanand Byas Deb, called the Rag-Sagarodbhab Rag-kalpadrum, written in emulation of the better-known Sanskrit lexicon, the Sabda-kalpadruma."

(The Modern Vernacular Literature of Hindusten, (1889) p. xxiii.)

"Some years ago this work, which was printed in Calcutta, sold for a hundred rupees a copy, but it is now out of print." (Do Do pp. 137.)

ग्रीयासन साहबके ग्रन्थ-रचना-कालमें इस पुस्तकका एकान्त अभाव हो गया था। आज लालगोलेके राजा-बहादुरकी असाधारण वदान्यता, ऐकान्तिक यत्न और आग्रहसे वह अभाव मिट गया। सौ रुपये नक़द मूल्य देकर भी ग्रीयार्सन साहब जो ग्रन्थ पा न सके, अब अनायास ३० ही रुपयमें वही ग्रन्थ सबको मिल जायेगा। इसलिये इसमें सन्देह नहीं, कि समस्त भारतवर्षके सङ्गीत-रसज्ञ मात्र इस महाकार्यके लिये लालगोलेके राजा बहादुरका सुयश कीर्त्तन करेंगे। बङ्गीय साहित्य-परिषत्‌के परम बन्धु राजाबहादुरने बहु व्ययसे मुद्रित इस विशाल ग्रन्थका समस्त स्वत्व साहित्य-परिषत्‌को अर्पण किया है और इसके विक्रय-लब्ध मूल्यसे अन्यान्य सङ्गीत-ग्रन्थके प्रचारका आदेश दिया है। राजा बहादुरकी वदान्यतासे बङ्गीय साहित्य-परिषत् चिर-कृतज्ञ बना रहेगा।

विश्वकोष-कुटीर
९ विश्वकोष लेन, बाग्‌बाजार, आषाढ़ी पूर्णिमा, संवत १९७३। } श्रीनगेन्द्रनाथ वसु (सम्पादक)

रागसागरकी सूचना

श्रीगणेशाय नमः। श्रीलक्ष्मीनारायणाय नमः।

श्रीकृष्णानंदव्यासदेव सागरसागरोद्भव सङ्गीतरागकल्पद्रुमनाम ग्रन्थः॥ श्रीब्रजगोकुलके गोस्वामि श्रीदामोदरजी महाराज गोस्वामि श्रीगिरिधरजी महाराज गोस्वामि श्रीकल्याणरायजी महाराज आदि सर्वगोस्वामिजीने कृपाकरके श्रीकृष्णानन्द व्यासदेवको संगीतशास्त्रमें रागसागरनाम दयो। ताने सबही गोस्वामीनकी कृष्णानुग्रहतें सर्वदेशमें फिरके बतीस वरष पर्यन्त गान संग्रह किया। सब गुनीजननसे प्रबंध दिवारो संगीतवारे ध्रुपदवारे कलामंत तिसकी च्यारवानी। गोबरहारो खंडारो डागरो नोहारो तानसेनको बैजुबावरेको गोपालनायकको सूरदासको वाणी। ख्यालवारे कवालतिसकी वाणी च्यार अमीरखुसरोको कबीरको राजामान इंदलको सूलतानसरको। अथ रागोत्पत्ति—श्रीब्रजवृंदावनमें श्वेतवाराहकल्पविखे श्रीकृष्णभगवान् स्वयं परब्रह्मरासलीला करी। तामें च्यार प्रकारकी गोपी वेदकी स्रुतिरुपी ऋषिरुपी देवरुपी और स्वतन्त्र सदासर्वदा व्रजमें नित्यलीलामें गोपी। श्रीकृष्णविराजि व्रजवृन्दावनप्रलयमें नांहीं ब्रह्मस्थान है। सोले सहस्र एक शो आठ आदिगोपी एतनही श्रीकृष्णरूप धरे। एक एक गोपी श्रीकृष्णप्रति एक एक राग एक एक ताल जुदे जुदे गाए। सोले सहस्र एकशो आठ रागरागिणी प्रगट भए। ताते यह भूलोकमें रागरागिणी प्रसिद्ध भए। तामें भैरवादि छराग छतीस रागिणी रागपुत्र पुत्रवधु सखी सहेली राम उपराम देशी मार्गादि भेदकरके रागमिलाप देशदेशको धुन आदि राग उपरागादि साढ़ेसातसो राग साढ़ेसातसो उपराग। धनादि संग्रह किया बारलक्ष पचीस सहस्र गानप्रबंध ध्रुपद ख्याल विष्णुपदादि परमेश्वरके प्रीत्यर्थं संग्रह संकल्प किया। ताते सब हिन्दुस्थानमें ब्रज दिल्ली ग्वालेयर अन्तर्वेद जैनगर योधपुर गुजरात मम्बोई पुना दक्षण हैदराबाद काशी पटना ढाका बंगला बाराभाटी कलकत्तेमें सब बंगलामान सब देशका गान संग्रह करके हजारान रुपैया खरचकर शरीरसो मेहनत करके परमसज्जनके आनंदार्थ। संगीतशास्त्री श्रीकृष्णानन्द व्यासदेव रागसागर गौड़ब्राह्मण रहेणवारे मेवाड़देश उदेपुर देवगढ कोटकेवासी यह पुस्तक सब देशनमें, सब तीर्थनमें सब प्रजानमें सब राजा उमराव और बिलायत बादसाहको पठाया, बादसा बहोत प्रसन्न भया नामकेवास्ते पठाया। अमीरनमें पठाया। यह पुस्तकमें कुछ भूलचूक होय ताको क्षमा करियो सुधार बनाय लइयो। भैरवादि षट्राग त्रिंशतिरागिणी अष्ट अष्ट पुत्र तथा पुत्रवधूसखीसखा सहित ध्यानोदाहरण समय रागमिलाप संस्कृत भाषाटीकासहित संगीतरत्नाकर संगीतदर्पण संगीतदामोदर संगीतसार संगीतमहोदधि संगीतनारायण संगीतसाहित्य सङ्गीतनादपुराण सङ्गीतपारिजात सङ्गीतकौमुदी सङ्गीतचन्द्रिका सङ्गीतमञ्जरी सङ्गीतनारदसंहिता सङ्गीतार्णव सङ्गितभाष्यादि शिवमत भरतमत हनुमन्मत नारदमत ब्रह्ममत विष्णुमत महेशमत पार्वतीमत लक्ष्मीमत हाहाहूहूगांधर्वमत सोमनाथमत कल्लिनाथमत इन्द्रप्रस्थमत नन्दिकेश्वरमत भैरवनाथमत गणेशमतादि अनेकमत मंगलाचरण भगवद्वाक्य नादमहिमा सरस्वतीवाक्य शरीरचक्रयोगभेद सप्तस्वरोत्पत्ति वर्णकुलदेवता स्वरस्वरूपवर्णन पंक्षीपशुस्वर उचार वाईस स्रुतिविवेक इकईश मूर्छना नामविवेक स्वर-अलंकार वादी विवादी अनुवादीभेद स्वराध्याय उनंचास कोटतान प्रस्तार विस्तार पलटा आरोही अवरोही तिन प्रकारसों ओडव खाडव संपूर्ण संकीर्ण काकली द्वादशभेद स्वराध्याय रागाध्याय प्रकीर्णाध्याय प्रबंधाध्याय वाद्या-

ध्याय मृदंगाध्याय पर्णप्रस्तार प्रमलु ब्रह्मा विष्णु महेश गणेश देवी सूर्यषट्शब्द सङ्गीतबोल देशदेशके संस्कृतभाषादिगान भैरवादि अष्टप्रहरके रागरागिणीसंयुक्त नित्यनैमित्तिक कीर्त्तन ठाकुरकों जगानेंतें पौढ़ानें पर्यन्त प्रार्थनासहित सेवापदके मंगलके प्रात दरशनके जुगलस्वरूपके कलेवाके बाललीलाके जमुनाजीके गङ्गाजीके सिङ्गारके ग्वालके राजभोगके वनछाकके उथापनके अचनते प्रजबनके संध्या आरतीके बयारुके पोढवेके दीनताके नित्यगान और उवछव द्वादश महीना होली अठारहजार झूलन पांचहजार। जन्माष्टमीके छठीके पलनाके ढाढ़ीढाढनके बाललीलाके श्रीराधाष्टमीके वामनद्वादशीके दानलीलाके सांझीके नवरात्रिके दशहराके धनतेरसके रूपचतुर्दशीके दिवालीके अन्नकूटगोवर्द्धनधर गोवर्द्धन पूजा इन्द्रमानभङ्गके भाइदुजके गोपाष्टमीके प्रबोधनी एकादशीके गोकुलनाथजी यमुनाजीके चीरहरणके श्रीविठलनाथजीके वसन्तसमयके होली धमारके डोलउत्सवके फूलमण्डलीके रामनवमीके सीताजीके हनुमानजीके आचार्यजीके अक्षयतृतीयाके नृसिंहचतुर्दशीके जलविहारयात्रा स्नानयात्राके रथयात्राके वर्षाके हिंडोलाके पवित्राके राखीके इत्यादि उछवादि गान और ध्रुपदादि द्वादशलक्ष पचीससहस्र गान तिसके गीत सङ्गीत प्रबंध छन्द कविता सवैया धाक धोवा माठा परमाठा जुगलबंध त्रेवट तिल्लाना रागसागर चतुरङ्ग षट्रङ्ग पञ्चरङ्ग सप्तरङ्ग अष्टरङ्ग नवरङ्ग दशरङ्ग चौराष्टक निरोष्टक मणि पति बलि विकट उंच नींच प्रथम सार ध्रुवपद विष्णुपद बलदेवपद शिवपद शक्तिपद सूर्यपद गणेशपद भैरवनाथपद सब देवतानके सब राजावादशाही ध्रुपद तुक ख्याल टप्पा ठुमरी खेमटा पंचाली सखीसंवाद बिरहा कहरवा दादरा सिठनी समधनगारी लोरी जशन सावन कजली झुलना राजा भर्तरीगान गोपीचन्दगान अनेक प्रकार दक्षणा-तिल्लावणी चूर्णिका गुजराति-धवल गरबा गरबी गजल रुबाइ रेखता शयर नानाप्रकारके देशदेशभाषाबोल गान हिंदूस्थानिभाषा उरदु व्रज बांसवाड़ा तिरोहती मगही नेपाली निवारी भोट बाराभाटी बंगाला गान पैंगु चिनिया औड़ीया तैलंगी पद्मनाभभूमि महाराष्ट्री कोंकणी कर्णाटी काष्टावाड़ सिंध मारवाड़ी मेवाड़ी ढूंढार हाडोती जैसमेरी सेखावती हरियाणा दिल्लीबोली वैखरीभाषा प्राकृतभाषा सरस्वतीबालभाषा नागभाषा डिंगलपिंगलभाषादि गान, अरबीगान तुरकी इरानी रुम शाम बलख बुखारा खेवर वस्ती फारसी गजल रेखता रुबाई फरद बैत मिस्रा शयर बहरेबाबोल द्वादश अहंग विलायत मकाम द्वादश चौवीस सोवे सनम् गनम् नारेज बाकरेजादि नाना प्रकारके छन्द दोहा सोरठा चौपाई सवैया कवित झुलना त्रिभङ्गी आर्या शिखरिणी शार्दुलविक्रीड़ित त्रोटक वसन्ततिलका मालिनी नागराज नागस्वरूप हरिणीप्लुता जयकरि छन्द महीधरी इन्द्रवज्रा मोतीदाम दोधक सावंत रोला भुजङ्गप्रयात गुरुतोमरछन्द घनाक्षरी गद्यपद्यादि अनेकछन्दमें गीत। इत्यादि तिनसौ साठ ताल। नानाप्रकारके छन्द ताल लय एकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पदी पंचपदी षट्पदी सप्तपदी अष्टपदी नवमपदी दशमपदी नायिकाभेद स्वकीया परकीया सामान्या खण्डितादिभेद अलंकारादि गणागण नगण भगण यगण सगण तगणादि अष्टगण शुभाशुभ लीलावती गणितादिभेद व्याकरण न्याय मीमांसा षट्काव्यादि श्लोकप्रस्तान रत्नाकरादि अनेकस्तोत्रस्तवकवचादि श्रीवल्लभाचार्यजी श्रीगुसाईंजी कृताष्टक गोस्वामिश्रीगिरिधरजीकृत रामानुजजीकृत माधवाचार्यजीकृत नीमावताचार्यजीकृत श्रीहितहरिवंशजीकृत रूपसनातनगुसाईं श्रीकृष्णचैतन्य श्रीशङ्कराचार्यकृत विल्वमङ्गल पुष्पदन्ताचार्य इत्यादि अनेक मधुरस्तोत्रादि श्रीसूरदासजी सूरस्वामिजीकृत सूरसागर एतने महाभावनकी वाणी सूरदास सूरश्याम श्रीजयदेवजीकृत नानकजी तानसेन नायक बैजुबावरे नायकगोपाल नायकधोंधी नायकचिरजु नायकमीर नायक बक्सु नायकरामदास जगन्नाथ सूरस्वामी परमानन्दस्वामी छीतस्वामी गोविन्दस्वामी चतुर्भुजदास कृष्णदास कुम्भनदास नन्ददास सूरदास मदनमोहन श्रीभटजी गदाधरभटजी गदाधरमिश्र व्यासजी हितआनन्द ध्रुवदास विहार

विहारण रसिकविहारी व्रजनिध नागरीदास मीरांबाई नामदेव कबीर कमाल जुगलदास जानकीदास माधोदास व्रजजीवनदास बरतालीया मोहनदास श्यामदास विष्णुदास कान्हरदास ठंडीराम महानन्द चरणदास सहजीबाई मलूकदास रामजस नृसीमहता नरहरदास भगवानदास कृष्णजीवन लछीराम चतुरविहारी रसिकराय श्रीगुसांई वल्लभजी श्रीगुसांई पुरुसोत्तमजी श्रीगुसांई गोकुलनाथजी सरसरङ्ग श्रीगुसांई व्रजाधीशजी मदनमोहन कल्याण माणिकचन्द वल्लभदास दामोदरदास धीरज माधो दयासखी सांवरीसखी चन्दसखी सोनादासी रङ्गीलीसखी सामासखी केवलराम वृन्दावन जीवन आनन्दघन बलरामदास ऊधोदास रङ्गीला प्रीतम ज्ञानदास लछनदास जुगराजदास हरिदास जितउ रामगुलाम नृसिंहदयाल रामसहाय रसिक गोविन्द गोपाल गोपालदास हितदामोदरदास श्यामसुन्दर श्यामाश्याम इत्यादि, चण्डिदास गोविन्ददास विद्यापति अभैराम नशिराम रामप्रसाद रघुनाथमहाशय नीधु आशुतोष नीलमणि नीलरत्न करुणानिधान मदनमोहन रामसोहन शिवचन्द्र कालीमिरजा लोकनाथ रामानन्द इत्यादि अनेक कवीश्वरकृत गिरिधर कविराय भूषण मतिराम पद्माकर देवआलम विद्यापति कमलापति सुवंश कुलपतिमिश्र चन्दकवि पृथुराज राजा कर्ण विक्रम भर्तृहरि राजा विश्वनाथसिंह मानभावनके गानसंग्रह। ध्रुपदमें तानसेन बैजुबावरे गोपालनायकादि विष्णुपद सूरदास सूरश्याम आदि। मुसलमान गवैया इछावरस बाबावरस हसुखां हुसेनवक्स साकलि जम्नुमम्नुखां रङ्गवरस ताजवरस तानवरङ्ग वाणीविलास हिदायत खुशालखां कलुखां मूरखां रागरसखां कायमखांकृत नोवाजखां दुलेखां उदोतसेन गङ्गासेन जाफरखां पेयारखां वासदखां सादिखां छगेखां इमामखां नाशरखां चपल मौज साहुसेन अकतर मानखां खाजेहसन रहीमवक्स इमामवक्स साहवखां शौरीटपेवारे गामु हम्दम् नादम् महमदखां नासर अली अमीरखां कविरखां खाजेकुतव मीरअलिसाह गूदर काजम असगरली खां सुलतान् अलीखां हुसेनअलीखां जीवनखां वाकरखां सखनभखन रजअली फजअली हदुहसु मानखां पानखां तानप्रवीण धोंधा फारातुला। अथवालामति चार वाणी प्रथम गुवरहारो तानसेनकी वाणी दुसरे खठारो इछावरसकी वाणी डागरीवाणी नोहारीवाणी इति कलामति वाणी। अथ कवाली वाणी-कनोरवाणी अमीरखुसरो सुलतानसरकी शेख सलेमी सदारङ्ग अदारङ्ग मनरङ्ग रसरङ्ग कोडीरङ्ग इस्करङ्ग आशकरङ्ग दिलरङ्ग खूशरङ्ग सरसरङ्ग रङ्गरस आनन्दरङ्ग। ध्रुपद हुमाउके अकबरके राजारामके साहजहांके जहांगीरके आलमसाहके औरङ्गजेबके महमदसा अहमदसा सुलतान सलेम इत्यादिकनके नामके ध्रुपद ख्याल टप्पादि प्रकार। इत्यादि प्रसुत संग्रहीत रसज्ञ गुणज्ञ रोचक महानुभाव ज्ञानी सज्जन विद्वज्जन रसिक-जननके आनन्दार्थ सङ्गीतशास्त्री श्रीकृष्णानन्दव्यासदेव रागसागर गोड़ब्राह्मण मेवाड़देश उदेपुरवासी श्रीजीहैंनिवास निज छापामें सङ्गीत-रागकल्पद्रुम छापाए। जाकु यह पुस्तक लेनेकी इच्छा होय सो ठिकाना नगर कलकत्तेमें बड़ेवाजार थानेके नजिक सराफा महाजनोंमों पुछलेवे श्रीकृष्णानन्द व्यासदेव रागसागर पास मिले इस पुस्तकका च्यारखण्ड एक एक खण्डका मोल नवछावर रुपैया २५ च्यार खण्डका जुमले रुपैया १०० अंके एकसो कंपनी निखरचे लगेंगे और वाहार भेजनेमें डाकका महसूल गाहकोंको लगेगा। आछा कागजमें छापा जाता है। अगरचे एकठेदेश विदेशमें लिखावे तो हजारोन रुपैया खरच होय नहीं संग्रह होय सकता सो श्रीयुक्त राजा उमराव अमीर जमीदार महाजन सराफ व्यापारी बजारू प्रइत्यादि जो कोउ लेवे सो दसखत करे वा चिठो भेजी तिनके परमभाग्य है।

"सङ्गीतसाहित्यरसानभिज्ञः
ख्यातः पशुः पुच्छविषाणहीनः।
चरत्यसौ किं तृणानभुंक्ते
परं पशूनामुपवासहेतुः॥
नाहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये न च।
मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद॥"

शुभमिति चैत्र वदि तिया रवौ संवत् १८९९, वांगला तारिख ७ चैत्र सन १२४९, अंगरेज सन १८४२ १९ मार्च श्रीरस्तु कल्याणमस्तु।

श्रीलक्ष्मीनारायणाय नमः। अथ श्रीकृष्णानन्द व्यास-देव रागसागरोद्भव सङ्गीत-रागकल्पद्रुम नाम ग्रन्थकी पुस्तक प्रीतिपूर्व्वक अङ्गीकार कीया, सर्व देशानमें पठाया तिन राजा, वादशाह, अमीर, उमराव, महाजन, सज्जन विद्वज्जन, गुणीजन तिनके नाम हस्ताक्षरकारिणां नामानि। श्री५ महाराजाधिराजराजेश्वर हिन्दुपति पातसाह श्रीराणाजी स्वरूपसिंहजी, इंलण्डीय सर्व-देशाधिपति श्रीमती राजराजेश्वरी सर्वसामन्त-चक्र-चड़ामणि कुयन् विक्टोरीया वादशाह, दिल्लीदेशाधि-पति शाहनशाह वहादुर शाहसानी, अरवदेशाधिपति शाहनसाह शैयद नावाबल्लाजी या मोल्लानी वा नवीना शैयद विन सुलतानी, फराशीस देशाधिपति साहनसाह, रुशयादेशाधिपति साहनसाह, पुन-सतारेके श्रीमहाराजा-धिराज साहुराजा पुस्तकमेकं, ईरानदेशाधिपति महम्मद शाहसुलतान, लाहोर-पञ्जाव-काश्मीर मूलतानदेशा-धिपति श्री५ महाराजाधिराजराजेन्द्र पातसाह श्रीरण-जत सिंह वहादुर, श्री५ महाराजाधिराज राजराजेन्द्र खड़गसिंह वहादुर, श्री५ महाराजाधिराज राजराजेन्द्र नवनिहाल सिंह वहादुर, श्री५ महाराजाधिराज शेर-सिंह वहादुर, श्री५ महाराजाधिराज लाहोर-पञ्जाव-काश्मीर-मूलतान-देशाधिपति पातशाह दिलाप सिंह वहादुर नृपवरस्यैकं पुस्तकं। चीनीहा देशाधिपति शाहनसाह पातसाह, रंगुन-पेगु-ब्रह्मा देशाधिपति साहनसाह पातसाह, इरानदेशाधिपति शाह, वलख बुखाराधिपति शाह, दक्षिणाधिपति श्री५ महाराजा-धिराज राजराजेश्वर राजा श्रीमन्त वाजिराव पेशवा वहादुरस्यैकं पुस्तकं। दक्षिणाधिपति श्री५ महाराजा-धिराज राजराजेश्वर अमृत राव पेशवा वहादुर तस्य पुत्र श्री५ महाराजाधिराज श्रीमन्तविनायक राव पेशवा वहा-दुरस्यैकं पुस्तकं। श्री५ जहांपना राजराजेन्द्र सुरैयाजा हैद्रावादाधिपति श्रीजहांपना, मगसुदावाद देशाधिपति जहांपना श्रीमन्त जहांपना जुलफकार, फरकावाद देशाधिपति जहांपना, नेपालनेवार देशाधिपति स्वस्ति श्री५ गिरिराजचूड़ामणि नरनारायणेत्यादि विविध-विरुदावली विराजमान मानोन्नत श्री५ श्रीमन्महाराजा-धिराज राजराजेन्द्र विक्रमसाह वहादुर समसेरजङ्ग देवानां सदा समविजयीनां नृपवरेषु—मारवाड़देशाधि-पति श्री५ महाराजाधिराज राजराजेन्द्र राजा तखत सिंह वहादुर नृपवरस्यैकं पुस्तकं। जयनगर देशाधि-पति श्री५ महाराजाधिराज राजराजेश्वर श्री५ राजा रघुजी भोंसले सेनापति सुवे वहादुरस्यैकं पुस्तकं। कर्णाटदेशाधिपति श्रीपद्मनाभ भूमिपति श्री५ महाराजा-धिराज राजराजेश्वर श्रीरामराजा सिंह वहादुरस्यैकं पुस्तकं। नागपुर-देशाधिपति श्री५ महाराजाधिराज राजराजेश्वर राजा सयाई रामसिंह वहादुर नृपवर ग्रन्थमेकं। वृन्दावनपुरी बुंदी देशाधिपति श्री५ महा-राजाधिराज राजेन्द्र राजा रामसिंह वहादुरस्यैकं पुस्तकं। कोटादेशाधिपति श्री५ महाराजाधिराज राजा राव राजा रामसिंह वहादुरस्यैकं पुस्तकं। बुंदेल-खण्ड ववेलखण्ड देशाधिपति श्री५ महाराजाधिराज राजेन्द्र राजा विश्वनाथ देवसिंह वहादुर तिलकधारी नृपवरस्यैकं पुस्तकं। वरोदा-गुजरात-देशाधिपति श्री५ महाराजाधिराज राजेन्द्र श्रीमन्त सोयाजी गायक-वाड़ सेनापति सुवे वहादुरस्यैकं पुस्तकं। सुदामा-पुरी पुरवन्दर द्वारका देशाधिपति श्री५ महाराजाधिराज भोजराज सिंह वहादुरस्यैकं पुस्तकं। रामनगर काश्यधिपति महाराजाधिराज राजेश्वर उदितनारा-यण सिंह वहादुर। श्री५ महाराजाधिराज राजराजेन्द्र राजा ईश्वरीप्रसादनारायणस्यैकं पुस्तकं। श्री५ महा राजाधिराज राजा देवकीनंदनवहादुर। गुजरात-भाव-नगर देशाधिपति श्रीमहाराजाधिराज विजयसिंह वहा-दुरस्यैकं पुस्तकं। गुजरात-नयानगर देशाधिपति श्री५ महाराजाधिराज राज जामशाह वहादुरस्यैकं पुस्तकं। कच्छभुजदेशाधिपति श्री५ महाराजाधिराज राजा देशर जी वहादुरस्यैकं पुस्तकं। जेपुर-प्रधान महाराज

रावल सिंहजी एकं पुस्तकं। श्री५ राउ लक्ष्मनसिंहजी पुस्तकमेकं। भरतपुर देशाधिपति श्रीमहाराजाधिराज राजा वलवन्त सिंह बहादुरस्यैकं पुस्तकं। आगरेमें श्री५ महाराजाधिराज चेतसिंह वहादुरस्य पुत्र श्री५ महाराजाधिराज वलवन्तसिंह वहादुरस्यैकं पुस्तकं। मथुराजी मध्ये श्रीद्वारकाधीशजी पुस्तकस्यैकं। श्री५ महाराज सेट मनाराम, लक्ष्मीचन्द्र, राधाकृष्णस्यैकं पुस्तकं। अएग्रामाधिपति श्रीमहाराज पीतमसिंह वहादुरस्यैकं पुस्तकं। श्रीमैनपुरीदेशाधिपति श्रीमहाराजाधिराज गङ्गासिंह वहादुरस्यैकं पुस्तकं। श्री५ श्रीमहाराज आलमसिंह जी। श्री५ साह विहारीलाल, गोविंदलालजी रघुवरदयालजीस्यैकं पुस्तकं। श्री५ साह रामलाल वद्रीनाथजी एकं पुस्तकं। भोजपुर डमराव देशाधिपति श्रीमहाराजाधिराज राजा लाल साह वहादुर नृपवरस्यैकं पुस्तकं। बकसरदेशाधिपति श्रीमहाराजाधिराज उदितप्रकाश सिंह वहादुरस्यैकं पुस्तकं। पगयादेशाधिपति श्रीमहाराजाधिराज हितनारायण सिंह वहादुरस्यैकं पुस्तकं। श्री५ महाराजाधिराज राजा टोडरनारायण सिंह वहादुरस्यैकं पुस्तकं। वेतीयादेशाधिपति श्री५ महाराजाधिराज राजा नवलकिशोर सिंह वहादुरस्यैकं पुस्तकं। छोटेनागपुरके श्री५ महाराजाधिराज जगन्नाथ सिंह वहादुरस्यैकं पुस्तकं। हजारीवागके श्री५ महाराजाधिराज राजा शम्भुनाथ सिंह वहादुरस्यैकं पुस्तकं। श्री५ महाराजाधिराज अमरसिंह वहादुरस्यैकं पुस्तकं। पुरणीयादेशाधिपति श्री५ महाराजाधिराज राजा विजयसिंह वहादुरस्यैकं पुस्तकं। हतुवाके श्री५ महाराजाधिराज राजा छत्रधारी सिंह वहादुरस्यैकं पुस्तकं। दरभङ्गातिरोहूतदेशाधिपति श्री५ महाराजाधिराज राजा रुद्रसिंह वहादुरस्यैकं पुस्तकं। श्री५ महाराजाधिराज राजा वासुदेवसिंह वहादुरस्यैकं पुस्तकं। मधुवनीके श्री५ महाराजाधिराज कीर्त्तिसिंहस्यैकं पुस्तकं। सकरी फतेपुरके श्री५ महाराज रामप्रतापसिंह वहादुरस्यैकं पुस्तकं। पुरणीयाके श्री५ महाराजाधिराज राजेन्द्रनारायण, श्री५ महेन्द्रनारायणसिंह वहादुरस्यैकं पुस्तकं। पुरणीयाके श्री५ महाराजा विद्यानन्द सिंहस्यैकं पुस्तकं। पुरणीयाके श्री५ महाराज रुद्रानन्द पुस्तकमेकं। फतेपुरके श्रीमहाराज हमीर सिंह पुस्तकमेकं. महाराज रामनारायण सिंह पुस्तकमेकं, महाराज रूपनारायण पुस्तकमेकं। मुजफरपुरके साह मनोहर दासजी पुस्तकमेकं। महाराज सथाके भैरवसिंहजी पुस्तकमेकं। काशीके महाराज अवसान सिंह पुस्तकमेकं। राजधानीके महाराजाधिराज राजा ग्रन्थमेकं। बाबू जगन्नाथ दास, बाबू बलराम दासजी पुस्तकमेकं। बाबू गोवर्द्धन दासजी पुस्तकमेकं। साह गोपालदास, मनोहरदास, मुकुन्दलाल दास, हनुमानदास पुस्तकमेकं। बाबू मुकुन्दलाल जानकीदास पुस्तकमेकं। बाबू रामचन्द्र जानकीदास, दामोदरदास पुस्तकमेकं। बाबू ब्रजवल्लभ दास, गोकुलदास, हरिदास, मथुरादास पुस्तकमेकं। साह विहारीलाल रघुवरदयाल पुस्तकमेकं। बाबू रामदयालजी पुस्तकमेकं। बाबू शिवचरणलाल, शिवसहायलालजी पुस्तकमेकं। बाबू ब्रजभूषण दास पुस्तकमेकं। बाबू द्वारकादास मधुवनदास पुस्तकमेकं। बाबू रामसेवक मिश्र, रघुनन्दन मिश्र पुस्तकमेकं। बाबू हरिदास, हरेकृष्णदास पुस्तकमेकं। बाबू नारायणप्रसाद वल्लभदास, जगन्नाथ दासजी पुस्तकमेकं। बाबू मोतीचंद गुजराती पुस्तकमेकं। कलबाबू लालचंद जी पुस्तकमेकं। बाबू परसराम अयोध्याप्रसाद पुस्तकमेकं। बाबू सीताराम, तुलसीराम पुस्तकमेकं। बाबू पूरणमल कृष्णदासजी पुस्तकमेकं। साह मोहनलाल ठाकुर पुस्तकमेकं। बाबू नेणसी पद्मसी पुस्तकमेकं। बाबू प्रतापचंद वहादुरमल पुस्तकमेकं। बाबू रूपचंद स्वरूपचंद पुस्तकमेकं। बाबू जोरावरमल दानमल पुस्तकमेकं। बाबू माणकचंद केशरीचंद पुस्तकमेकं। बाबू देवचंद, पूर्णचंद पुस्तकमेकं। बाबू देवचंद सर्वसुखस्यैकं ग्रन्थं। बाबू पूरणचंद लक्ष्मीचंद ग्रन्थमेकं। बाबू पूरणचंद मनालाल ग्रन्थमेकं। बाबू सूरतराम रायभान धनरूपा वाघमल। बाबू शिवजीराम

गौरीराम हरदयाल शिवप्रसाद रामप्रसाद। बाबू हरगोविंद राय गुलाबराय। बाबू देवचंद कपूरचंद। बाबू सीताराम चैतनदास। बाबू बालजी रतनजी कल्याणजी ग्रन्थमेकं। बाबू मावजी धनजी ग्रन्थमेकं। बाबू रणछोडदास मनजी ग्रन्थमेकं। बाबू नानजी लौकरम ग्रन्थमेकं। बाबू मूलचंद प्रेमजी ग्रन्थमेकं। बाबू भूटाकल्ला जी ग्रन्थमेकं। बाबू गोकुलदास जी ग्रन्थमेकं। बाबू दामाजी ग्रन्थमेकं। बाबू रुस्तमजी ग्रन्थमेकं। बाबू शिवरामदास शालमसिंह। बाबू गोवर्द्धनदास धनसुन्दरदास। बाबू नंदराम मैत्री गणेशदास लछमनदासजी ग्रन्थमेकं। बाबू फकीरचंद गंभीरचंद ग्रन्थमेकं। कुष्णलाल वैजनाथ। बाबू सीताराम लछमनदास मनदास परमसुख। सदासुख युगलकिशोर। बाबू राजरूप धनसुखदास। बाबू फकीरचंद गंभीरचंद। मेवाड़देशके सोले उमराव। बूंदीके द्वादशउमराव। नवकोटी मारवाडके उमराव। हरियाना शेखावटीके उमराव। लाहोरअोवरसर पञ्जावके उमराव। जांबू जंग शौयालाके उमराव। काश्मीरके उमराव। मुलतानके उमराव। ज्वालामुखी पटीयालादि उमराव। हरिद्वारके उमराव। श्रीनगर वद्रीनाथजीके उमराव। ऊंनगरके उमराव। अलवरादि उमराव। वृन्दावन मथुरा गोकुलके गोस्वामी उमराव। आगरा ग्वोलियरके उमराव। दिल्ली सरधना मेरट पानीपत जल्लरके उमराव। बिठौर कानपुर अंतरवेदके उमराव। लखनौउ वासपाड़ा अयोध्याके उमांडाके उमराव। गोरखपुर आजमगढ़ जौनपुरादि उमराव। गाजीपुर कोपामोह डुमरावादि उमराव। काशी मिरजापुर प्रयागादि उमराव। बुंदेलखण्ड बघेलखण्ड जबलपुर चरखेरी ब्रतीया झांसि उमराव। छपरा हतुवा देहतादि उमराव। तिरोहृत दरभङ्गा जनकपुरादि उमराव। वेतीया नेपाल पुरणीयादि उमराव। घोड़ाघाट रङ्गपुरादि उमराव। ढाका मुक्तागाछा चट्टग्राम बाल बांकुड़ादि उमराव। मणिपुर भोट कुकीयादि उमराव। रङ्गनके पेगु ब्रह्मदेशके उमराव। चीन महाचीन सिंगापुरादि उमराव। वाराभाटी वंगला मगसुदावाद कलकत्ता मेदिनीपुरादि उमराव। उड़िष्या बालेश्वर बन्दर कठक जगन्नाथपुरी आदि उमराव। पद्मा नृसिंह मछलीबंदर शिवकांची विष्णुकांची मदरवाजादि उमराव। रामेश्वर देशाधिपति उमराव। कर्णाटदेश पद्मनाभभूमादि उमराव। कौंकणदेश मलयावारादि उमराव। हैद्राबाद सत्यासो बिटुर गंगाखेड उमरावती आदि उमराव। औरङ्गाबाद पुन-सतारा महाराष्ट्रदेशादि उमराव। मूम्बाई सूरत बरोदरा अमदावाद भावनगर नयानगर सुदामापुरी द्वारकानाथ गुजरात देशादि उमराव। काठिवाड़ कछभुज अजारादि उमराव। सिन्ध सिकारपुर हद्राबाद कावल-गंधारादि उमराव। द्वादश ठोपी इंलड फरासी रुसीया अरब रूम शाम इरान बलख बुषा मक्का मदीना बसोरादि उमराव। अथ बंगला देशके खाचरकारी। ५ राजा महाराजाधिराज गिरीशचंद बहादुर। ५ महाराजाधिराज श्रीशचंद बहादुर। ५ महाराजाधिराज महतापचंद बहादुर। ५ महाराजाधिराज बनवारीलाल बहादुर। ५ महाराजाधिराज दुर्गानाथ बहादुर। महाराज आनन्दनाथ बहादुर। बाबू द्वारकानाथ ठाकुर महाशय। बाबू देवेन्द्रनाथ ठाकुर महाशय। बाबू गिरींद्रनाथ ठाकुर महाशय। बाबू रमानाथ ठाकुर महाशय। बाबू प्रसन्नकुमार ठाकुर ग्रंथमेकं। बाबू गोपाललाल ठाकुर १। बाबू ललितमोहन ठाकुर। बाबू चन्द्रकुमार ठाकुर। बाबू नीलरतन हालदार। बाबू हरिश्चन्द्र लाहिड़ी १। ५ महाराजाधिराज राधाकान्त देव बहादुर। कुमार महेन्द्रनारायण १। बाबू अमृतलाल मित्र। महाराजाधिराज सीतानाथ बहादुर १। बाबू आशुतोष देव १। ५ महाराजाधिराज कालीकृष्ण बहादुर १।५ महाराजाधिराज देवेन्द्रकृष्ण बहादुर १। बाबू जन्मेजय मित्र १।

रागकल्पद्रुमः

द्वितीयखण्ड—सूचीपत्र

सूचीपत्र

नित्यकीर्तनका परिशिष्ट

रागकल्पद्रुमः

द्वितीयः काण्डः

श्रीकृष्णाय नमः॥

अथ खम्बावती-ध्यानम्।

(संगीतदर्पणे २।५४)

खम्बावती स्यात् सुखदा रसज्ञा
सौन्दर्य्य-लावण्य-विभूषिताङ्गी।
गानप्रिया कोकिलनादतुल्या
प्रियम्वदा कौशिक-रागिणीयम्॥

खम्बावती सरगम—ताल साठ

ध ध नि नि धा नि सा सा नि ध प म ग स म ध म
ध नि सा सा नि ध प म ग रे सा सा रे ग म प ध
नि सा सा नि ध प म ग रे सा।
धा नि मि ध नि नि ध नि सा ग रे सा म ग रे सा
सा नि ध प म ग रे सा सा नि सा नि ध प ध प
म ग रे सा म ग रे सा॥

प्रथम सप्त सुर ब्रह्मनाद उच्चारो आहद अनहद त्रइ
लोक चराचर सुर नर मुनि गुनी गन्धर्व्व आद नाद।
सा नि नि सा ध नि सा ग रे सा म ग रे सा सा नि सा
नि ध नि ध नि ध प ध प ध प म प म प म ग
म म म ग रे ग रे ग रे सा सा रे ग म प ध नि सा
सा नि ध प म ग रे सा॥

खम्बावती—चौताला

एरी तू अङ्ग अङ्ग रङ्ग रानी अतहो सयानी री तू
पिय मन मानी री तू।
सोलह कला समानी बोलत अमृत बानी तेरो मुख देखें
चन्द जोत ह्न लजानो री तू॥
कटि केहर कदली जङ्घा नासका पर कीर वारों
श्रीफल उरोजनको छवि आनी री तू।
तानसेन कहे प्रभु दोऊ चिरञ्जीवी रहो तेरो नेह रहे
जों लों गङ्ग जमुना पानी री तू॥

२

जोबनके जोर तोर कैसे समझाय राखूं मेरो
कह्यो मान प्यारी आज तेरो दावरी।
तन मन धन नोछावर करहूं बीत गई रैन
तासों छूट गयो चावरी॥
लाल मनावत तू नहीं मानत उठरी गंवार नार
घने समझावरी।
तानसेन कहे प्रभु से तजो मान हातसे गंवाय
लाल फेर पछतावरी॥

३

बंशी धुन सुन मझार बाजत श्रीवृन्दावन
रङ्ग घुमड़ रह्यो सघन गरजत बादर विमान।

रहस सरस वरषत गोपी जिम दामन चमकत
नैना रतनारे पर भौंह सोहै धनुष वान ॥
चंवर चार चौकुनै कंचन वसन विराजत है
प्यारी और प्यारे दोउ छूटे छवकी छटान।
कृष्णन श्रीविहारी जुगल विहरत मुख मूंदत खोलत
जैसे वरषा रितमें निकसत ओ छिपत मान ॥

४

मन्दिर मणि दीपक काया मणि जीव
रजनी मणि चन्द दिन मणि है जु भान।
फूल मणि पङ्कज वृक्ष मणि कल्पवृक्ष
विद्या मणि भोज विक्रम जनन मणि जान ॥
वेदन मणि सामवेद राजन मणि रामराज
आनन्द मणि सुखनिधान।
सरिता मणि गङ्गा वीर मणि हनूमान
गुणियन मणि तानसेन गुरुन मणि ज्ञान ॥

५

सूनो भवन उन विन कैसे रहो जाय निपट कारी
वरषा रित आई अब विरहन पर मदन दूनो।
रजनी अंधियारी भारी कारी कारी कजरारी
झिल्ली झनक भारी दादुर मोर सोर सर समान जनो॥
जुगनू जमाति जोरे चपला चमकै तैसे
पवन झकझोर देत होत दुख दूनो।
चिन्तामन व्रजचन्द नन्दनन्दन आनन्दकन्द
केधौं मेरे नयन ए चकोर होंहिं निरखि सुखचन्द पूनो॥

६

आवत देखे हे री माई सुन्दर मोहनलाल।
जैसी बनी सीस केसरी पाग तैसिय बनी उर माल ॥

७

अरन दल मलनकों सांचो अरदल प्रबल वर भूम पर।
ऐसे छत्रपति भुअपति हलनको
तोरे गढ़ सब और घर घर ॥

८

सङ्गत अनाघात देशी मारग लिये हो ए राग।
जय जय गुनी ते ते कठन जानत है यह खेलौना नाम॥

९

सा ग म प ध नि सा सा नि ध प म ग म प
नि ध नि प म ग म प ध म ग रे सा।
म प ध नि नि सा नि सा ग रे सा नि सा नि
ध प सा नि ध प म ग रे सा ॥

१०

रङ्ग लाल रूप लाल अधर अधिक लाल
द्रगनके डोरे लाल कोरे लाल झलके।
कर लाल चुरी लाल सीसफूल द्रुमे लाल
एती लालो बिच प्यारी लाल पलके ॥
असन वसन लाल दसन चमक लाल
लाल हो ललना पगन परत लाल सुगनके।
माला लाल दुलरो की रेशम लाल
सदारङ्ग प्यारे लाल लाल होमें ललके ॥

११

समझ समझ आली प्राण जात प्यारे मोहन विन।
बहोर न यह रङ्ग बहोर न यह रूप
बहोर न रहे आली यह दिन ॥
अञ्जुरन जल घटत छिन छिन तेरे री
मान बढ़े चोगन।
तानसेनके प्रभु तुम बहु नायक
मान न कीजे आली छिन छिन ॥

१२

लाल अब कब करोगे मेरे आंगनमें तुम फेरा।
तर गईं अंखियां जगमग जोहत रैन
गिनत नित होत सवेरा ॥
सूनो भवन मोहे रंच न भावे
आन सतावे विरह ताप ने घेरा।
नन्दलालके लाड़ले आज मया कीजे सवेरा ॥

१३

कर पछताय आली री मान कर पछताय रही।
हमसों अवध बद अनत विरम रहे
जीतो भइ सहे लही ॥

१४

ध ध नि ध नि सा सा नि ध प म ग म म ध म ध नि
सा सा नि ध प म ग रे सा सा नि ध प म ग रे सा रे सा।
नि नि ध नि नि ध नि सा सा नि ध प म ग रे सा
म ग रे सा सा नि ध प म ग रे सा सा नि ध प म
ग रे सा रे सा ॥

प्रथम तार सुर ओप विद्या किया दोउ बिन भो
अम्बर दोउ एक रस बन काम भयो।
सा नि नि सा नि नि ध सा सा नि सा सा नि ध प ध प
म ग रे सा सा नि सा नि ध प म ग रे सा ॥

१५

आज तो सखी री देखे रामचन्द्र छत्रधारी
गजकी सवारी किए चले जात बाटमें ।
केते असवार सोहे केते सोहे बरकनदाजे
केते नकीब बोले आनन्दके ठाटमें ॥

१६

झीनो झंगली बीच झीनो अङ्ग झलकत
झुमरि झुमरि झुकि ज्यों ज्यों झूले पलना ।
घुंघरू घूमत बनी घुंघराके घोर घनी
घुंघुरारे घोर मानो घनी बार चलना ॥
आलम रसाल जुग लोचन विशाल लोल
ऐसे नन्दलाल विनु देखे क्योंहु कलना ।
फबेरि फबेरि फेरि करि गोद ले ले घेरि घेरि
टेरि टेरि गावे गुण गोकुलकी ललना ॥

खम्बावती ख्य,ाल—तिताला

अब कोई जाइयो रे मीता सुरजनुवा मोरे के
मइकों वेग खबरियां लइयो याइ सन्देशवा
उन सन कहियो।
वेग खबर ले आव पतिंगवा उन विन मइ कों
विरह सतावे बार बार नित जइयो ॥

२

तू मेरे डेरे आइयो रे सांवरा सलोना प्यारे
वेग दरस मोही देखाइयो ।
विन देखे मोहे चैन न आवे तनको तपन बुझाइयो ॥
घरी पल छिन विन देखे मोहे कछु न सुहावे
वंशी तान सुनाइयो ।
कृष्णानन्द आनन्द करो उर सुख सम्पत
देहो मन चाइयो ॥

३

आगानि पधारो जो महाराज ओ जी म्हांरा राज वेगानें
पधारो जो महाराज ।
म्हें तो थांरो दासो वारो थें म्हांरा सायबां थांसे
अटक्यो छे म्हांरो काज ॥

४

कोठे रित मानो महाराज कोठे साहबां
रैन विहानो म्हांरा राज ।
लटपटो पागके अटपट पेचां
चाल चले छे मतवारो म्हांरा राज ॥

५

राज हो लोभी आवणा थें म्हांरा सिरताज राज ।
फूलांदी सेज वारो उमगसे बिछावां थां सों अटकों छे
म्हांरो काज ॥

६

जाए दासो जवा दे मारुड़ाषे केज्यों मैं वो आवां छां ।
मैं तो थांरी दासो बारो थें म्हांरा साहबां इतनो अरज
म्हांको मानां छां ॥

७

सुखसें रहियो मेरो जान हरियाले बने ।
सक्कर बाटूवारो पोर मनाऊं तानू
मौलादो अमान हरि० ॥

८

प्यारे विन जो मेरो तरसे कारो रैन डरावनो लागे
धरकत मोरी छतियां ।
नहीं आयो मेरो मदको मातो कैसे कटे दिन रतियां ॥

९

अमलांरो मातो आयो छे जो लाडो थांरे वारने ।
रैण चौमासो मांझलो रात
झोका खातो आयो थांरे कारने ॥

१०

महलां पधारो म्हांरो राज राग सूनो छे हो खम्बाची।
थें अदारङ्ग अरज करे छे मतवारो राज अरजि सांची॥

११

वीरा नागरवेल रो अपने बालमजूकी कारने कहो
पान जिहो पातलोरे कहो के सूहे जिहा रङ्ग।
केदल जिहो कहो जङ्घ है झुक झुक लागे अङ्ग॥

१२

नैनां दी बरछी लाई वे आख्या सुन तो भला तेज
नजरांवाला।
सान धरी काजर दोउ मग दिल नाल वे
सितम किया तें तो यार सिपाई वे०॥

१३

नैणांदी सांग चलाई वे हो जटी नैणांदी सांग चलाई।
सांग धरी काजर दो उमंगसे इश्कदी लाग लगाई॥

१४

कांई गुनडा समझासो म्हांरो राज।
बालो रङ्ग यूं ही करो छे सुनियो रो म्हांरो ए रो सखो।

१५

जादूगर वे जादूकी जाने सेड़े नैन आप हो सेहर दे।
एक आन बिच उमंग दिल सियाणेनू मायल कर दे॥

१६

म्हें की जाणां नैणांदी तकसीर भला वेख
रांझणनू सानू मायल कोता।
उमंग दिलदी जाण दे नाहीं लोकां आंक दे फिर दे
वामलो हुइयाहीर भला०॥

१७

सानू बूहे खड़ा झिड़के दा वे दरदो वे परवाह्नियां दे
नाल रब ना सहे जो मैं सहंदा।
राति देहा उमंग दिल डरदा रहंदा आह
फकोरांदो क्यों लेदां॥

१८

कांई रुसे मासें बतलावो जो आवे राजेन्द्र मारू।
ऊभी ऊभी थांरी वातड़ीपे ओ सायबां चञ्चल
सेझड़िए रङ्ग लावोजी राजेन्द्र मारू॥

१९

आवे सोणा मांनू छड़के न जा मैंडा नेहा लगा।
छिकतो गलां साड़ी माण लेवो चञ्चल
तैंड़े कारण असी जगणत जा॥

२०

हो रबा वे मैं तो राजी जो तैंड़ी मरजो।
अरज गरज तुसो माल मुलक नहीं
करदो वरल पिया तैंडे मेहर नजरदो॥

२१

कस कर भौंहें कमान प्रेमके बान चलावत हंसके।
चञ्चल चपल दृगन मोहे सेन चलावे बतियां कसके॥

२२

याद मांड़ी क्यों भुलाई वे औरांदे नाल वहाना तू
सुण तों नैणावाले मियां।
जो कुछ तेरे दिलमें खूब समझि तैं दाद मैंने
भर पाई वे०॥

२३

तुज विन यार मैंड़ा जो तरफे हो जों मछलो विन नीर।
ववरू आधीन हुण तैं दड़ा लगदे विरहंदे तीर॥

२४

या जटीमें थो क्यों रूठीनो तकसीर साड़ो को दोठानो।
नाहकदो बदनामो ग्रोरी सोंणे दुनियांदो सबसो ठानो॥

२५

एक गलांदे नाल पियारा मैं सवी गलां शिरते झेलियां।
जो तान इश्कदो वहाणा उमंग नाल वे मियां रब
करेगा छंड़ो सब भलियां वे मैं केह्री बदनामां
शिरते०॥

२६

दम ब दम जोर जफा सहदा तानू की नफा वे।
दुतांदा वेला दुश्मन पावे मग दिल और महबूब
बेवफा वे॥

२७

हुणतो वसे खेंड़ें दिलवर मांड़ डा माड़े नेड़े।
विछोहैदो रातो न करो रब सांइयां भांदे
उमंग दिलदे झेड़े झेड़े॥

२८
आयानी मैंनू मायके बे माते माते नैण बेखावणनू।
मेरी उसदी प्रीत लगी गोरी मियां
फकीर रब डाढ़ेदा पंजतन दा होवो साया॥
२९
भमके माते नैण ढोलनदी पलकां साया नेह वो।
तेज निजारे नाल जींद खस लोतो
गुजियां कर कर सैण ढो०॥
३०
नाहक जीन्द क्यों सतामो वो बेदरदाँ हथ बीच को
तेंड़े श्रामो।
कवो तो आन मिलो चञ्चल साड़े नाल
हुण तैंड़ा गम खामो॥
३१
ए हो मैं की जाणि नैणां दो तक्सीर बे।
घायल कोतां असी लड़ फिरजांदा
गोरी दिल लांदा तोर बे॥
३२
क्यों भुक भुक विरहदे जानो यार मैं तो
मर चुकियां तेंड़ा गम खांदो खांदो।
गोरी दे मानूं टपेदी तान भांदो आंदो जांदो॥
३३
वसदा बे थांरे मैंड़ा ऊंचे बेड़े मानू सांवलियां दा डेरा।
ना कछु तेरा गोरी ना कछु मेरा को दमदा उलभेरा॥
३४
तानू तो कदर दा न जान जिन्द दो तो एमें आन।
रब कोता गुलजार हुणदा महबूब वे
उमंग दिलदे सुन सुन टपेदी तान॥
३५
नैन कर तेंडे चोरियां में लखियां जानो यार भला।
इश्कदो तेंड़े वेडें उमंगनू मेरा मियां
एक तो सोरो दूजि गिरते जोरियां जा०॥
३६
आज इथे रहणा बे मियां आज इथे रहणा।
आप को दिल मिला नहीं मिलदे जांदे
गोरो फकोरांदो मान सदा मियां रहजांदे
इथे होंदे माते आ०॥
३७
मोहो बे मोहो यार मैं तो मोहो बे भला मोहो बे
सानू अंखो मारदा।
मुखड़ भालन तेंड़ा सानू काम न होया
गोरी तूं तो ठग बाजारदा॥
३८
मुख बेखलामो बे मियां घणे दिन बोते।
दरदनू नित ध्यान तूं डा साड़ा बे आपो मिल जावे
सानू हां बे सुख बे॥
३९
हमकों तो याहो गलां तेरो प्यारो बे मियां।
रमभांदे नाल सानू मायल कोता मुखडा तैंड़ा सब
जगन भांदा असो अदापे तेरो वारो वारो बे०॥
४०
जटो पनियां भरन न देन रमण रम
तेंड़ो कलाई दुखेनो।
घड़ा घड़ूला भरन चलो शोक रङ्ग दिलड़ो बाड़ो
होदां जिन्दडा लटो प०॥
४१
लाड़ला सेहरा वो रङ्ग लगामा।
गूंध ला रो मालन फूलां दा सेहरा
अछो बनो सें लागा नेहरा वो०।
४२
राज सुण लोजो म्हांरा हेला नन्दजो रा
छो जी अलबेला।
घणे दिनांमें आएगो जो उभा तो रहो हो जी
थें तो बांको रस छैला॥
नींद न आवे मण अत अकुलावें मदन सतावे
मैं छां जी अकेला।
व्रजनिध निपट नवेलाजो रसिया जावा न देशां
थांने राखोंजो भेला॥

४३

मैंनू फन्द क्यों गया वे इश्कदा जाल सरापा मुखड़के
न लीती सेरी खबरां ।
मारा किश्ती:ततबोर नफरदी अजब सङ्ग दिल
पाया वे ॥

४४

तैंनू हुसनेदा झमका वेखला जा तैंनू हसनदी
कसम माहिड़ा ।
तन मन अन्दर भाय इश्कदा सोला चमका चमका
झमक वेखला जा हुसनेंदा ॥

४५

घोलमें जांदियां लाखां परियां तैंड़े परीदे मुखड़ेदो
बहोत यांपर मार मरियां ।
उरियां न सकदी हुसन वेखण नू पर परे परे
हांपे परा बांध खरियां ॥

४६

कांई कर से[!]मतवारो राज सदारङ्ग कांई करसे
सुनियो मोरी हो सखीरी ।
गरेबां चाक सु दिल जो दममें गर दस्ते आयद
वमादा ग़ाफ़िलेम् शोरमस्त मी आयद ॥

४७

मैं तो भूलियां जानी यार वे सैंदियां मैं तेरियां मियां ।
जो तुं करम करी रब ड़ाव्या कोसी बहाने तूं
मिलियां जनियां ॥

४८

सोणी महबूबांदी गलियां लगदियां तेरियां
मियां वे सोणी० ।
वेखणनू सब जटियां चलियां मिलियां रलियां
गलियां घुलियां झलियां मियां सोणी० ॥

४९

कैसी बजाई वंशी कान्ह मोह लिया मन मोरा रे ।
तनक भनक सुन मुरलीकी धुन
निकस जाय प्रान मोरारे ॥

५०

जालम तेरियां वे मैं तो तेरियां कदर नी जानी
तुसी मेरियां ।
नाजक यार दिलवर दे वर दे रहंदे बक्स गुणा बन्दी
चेरियां मैं तो० ॥

५१

सोणा तूं तो सेड़े नाल नाहीं बोलदा
असी केहोतकसीर पाई है असाड़ो गाढ़ी
दिलदी गुंडो नहीं खोलदा ।
विष्णुदास दी गुणा माफकर तैडडे चरण
मैंड़ा मन डोलदा ॥

५२

तेरो चितवनने मुझे मारा रे एक नजर
नाल आसक दिल ।
पीत करी तो विसारम जानी अपने आसक
शोकरङ्गदी कीरे घाट मोह्किं उतारा रे ॥

५३

हो जी हो जी हो केसरिया म्हांरा मारूजी
ए मैं ना बोलोंगी थांसो टहल करो रहो
सोतनियाके रूड़े जो ।
अङ्गना बहारूं सेज संवारूं फुलवन सेज बनाऊं
शोकरङ्ग थांरे सङ्ग मैं तो पीऊं कू दारूड़ो ॥

५४

पोहरिये म्हांरे रूड़ो छे नवाड़ांरो सेल ।
घर कांका साथीड़ा ले सङ्ग वेगा आज्यो जी छेल ॥

५५

कागद आयो है पन्ना मारूजीरो आज ।
बिचड़ो बनावडां चड़िया जा बिचवाड़ांरो लाज ॥

५६

थें तो जीवो म्हांरा राज जब लग
गङ्गा जमुना जलपानी ।
राज करंता म्हें सुख्या म्हांरा राज थो जी
मैं तो थांरो जोवां बाटड़ी हो राज ।

५७

बोल सुनादियां वे सानू भांदे भांदे।
सहर पनू बिच आलम् बसदा क्यों शोरो
अपना मन सरमांदे भांदे॥

५८

जिसेदा मन लगी सोई जाणे वे बेकदरांदो बला जाणे।
इश्कां दे रमझा नाल दिलांदे महरम्
हो सोई पहचाणे वे० ॥

५९

ओ मेरी जान जादू कीता भला इन
सांवलियांदे दोउ नैन।
मोर मुकुट पोताम्बर राजत वंसी बजाय मन
लीता भला० ॥

६०

आयानी मैंडा प्यारे जटियांदे कोल सानू छड़के।
कीसी तरे समझाऊं शोरीनू आ मिलो लड़ भड़के॥

६१

मियां तांड़े छदड़े जांदियांनो सदके कीतो
कुरबान मैंडा माहिड़ा।
शोरी अटका भटका लटका दे नाल
केहा झेड़ा खेड़ा चाहिड़ा॥

६२

जानो यार वे सोणा वे सेंदियां गिरहंदी सांग लहरा
ले लै ले ले जानो या०।
हो न तो सोरी छड़दे मर चुको सहरां कर दे॥

६३

जिन्द सांड़ो रूंधो वे सोणा कोई आण मिलावो।
इश्कदे अर मैंडेनु आग लगाणावे जबसें पड़ी
साड़ी रूसोवे॥

६४

तू मैंडा दिल जान वे सांवलयार।
घरी घरी पल छिन विन देखे कलन परत
मैंनू रटत रहत मदन दहत नीर नैननतें रङ्ग रस
कर निहर वीन सिखाई ऐसो तान वे॥

६५

काचो कली जिन तोरो मोरे प्यारे डार मुरेगो।
पाकन दे सांवरो हाथ जिन लावो
जब फिर मौज खुलेगो॥

६६

ले कर जी फिर आणा समझाणा।
बैठ रहो मन मार न जाणा जो गुजरो सोई.
खूब मियांवे॥

६७

अब घर कैसे आऊं राज जाओ महाराज
जिय मोरा है बेकरार।
कबको मैं ऊभी सायबां अरज करां छां वे
अबके उतार सवार।

६८

जींदुड़ी साड़ी क्यों कर यार प्यारा तूं तो होरांदे
नाल मिलदा नो माणो जी०।
लख बदनामी तैंड़े कारण ली तो दिल जानो माणे
क्यों कर यजो०॥

६९

झमके चूड़ाजो थांरा म्रगा नैणोरो जोबन सुन्दर
बन्यों मन मोहे राजोन्द राजुड़ा।
सुन्दर सुख तेरे अबते निरखहूं तबतें कांई जाणे
रहत उदास मारूड़ा॥

७०

साईं रब जानदा वे मियां दिलांदी फिरयाद
सोणा वे तू को जाणे कमलां नदाणा मियां।
तांड़े दिलां बिच कामिल रहंदी को पया बिच
हमलां नदाणे मियां सांई॥

७१

आलो जांपना जो म्हांने प्यारा लागो आप।
रङ्ग भीना राजीन्द्र राजे सुरकर प्रवीन प्रताप॥

७२

झांझरी झनके मोरो रे।
कैसे कर आंउं पिया तेरो सेज मोरो रे॥

७३

घड़ी वेग बजाव रे घड़ियाले आज पियाके
मिलनको बारी।
शुभ सायत सों पियासों मिलोंगी बार बार
गई मैं वारी ॥

७४

कागद आयो छे जी मारू जीरो आज।
बहोत दिनन पाछे कागज आयो हंस हंस
गरवों लगायो छे ॥

७५

बिरमि रहो जी कौन देश देश हो बालम राज उजली।
सुरङ्गी मेंणि गुड़ो रङ्ग लाल छे जी छैला
राजी रहणा इश्कदी वे हिवारी ना चढ़ं थर थर
कांपे म्हांरा जो उजली ॥

७६

केतिक दूर भला वो म्हांडे माहिड़ा गाढ़ो राज
साथिड़ा लशकरिया।
पलङ्ग बैठो मौजां मारे मुजरा लीजो म्हांरा
नाथिड़ा ल० ॥

७७

सुणीदा विनाही मैंड़ा दिल दां हवालनो सइयो वे
मैं किसनु जाय सुनावां।
कुछ न पूछो अए अजीजो यार जानो को तरां
हर बात मैंड़ी सुनके को जाता है पानीको तरां ॥

७८

नैणांदे निजारे नाल दिल लीता मैंड़ा अपना
बस कीतावे।
फन्दियांमें तांड़े दिल तो ना आदम केहा पयानो
मैंड़ा इश्कदा जाल दिल० ॥

७९

मांनू भांदे नैन सिपाइया दे अंखियादे बीच सोहै।
इश्कदी डोरे नैन सिपाइया दे खू्न करेंदे ॥

८०

लोभी आजरे धनवारी जीरे मंझला सवाणा
घोलती रातरे धन०।
माशूक रे कई कपट की नेहकी बातेंहो
मारूराज थेई एई ॥

८१

हो राज कमरिया राज गहेरी लगा जो राज
घर घर चम्पा फूली मिलियारे इश्कदी फुलरी
सेज बिछाजो ॥
आप सोवे और सुन्दरी सोलावे मुझे राज
वेग मगाजो ॥

८२

अनी वैषी सइयो फन्दड़ा तकेंदी दिल वयारद।
चञ्चल अचपल सुन्दर नार नीके रङ्ग सो जा कहियो ॥

८३

मिलनेदा तैड़ा मैंनु चाह वे कि करां तुसो जाणदा
वो नाहीं।
गरल गणेन् जिय तरसेंदा रब करे तुसी वेग मुड़ आमो
साड़ो गलां तुसी माणदा वो नाहीं ॥

८४

वीरो नागर बेलरो अपनी बालमजूके कारनेका
पांनां जेहो पातलीजो कांई केसरजेहो रङ्ग।
चम्पासा कोमल कहीं झुकझुक लागे अङ्ग ॥

८५

आवो सजण गर लाग मिलां व्रजमोहनकी
जुदाइयां वे।
वलिहारियां तैंनू सब कोई चाहे रूब मिमाणां
मैंड़ो अरजतुज ताइयां वे ॥

८६

द्रतोम् तनन दीम् तन दिरना
तन दिरना दिरना आहे दोस्त नाद्र दिर दानो
तुम दिर दिर दानो तदरे दानो तार दांनो दोस्त
मियाने आशको महबूब माशूक करम जो करो
मनका तवारह सुखवसेस्त ॥

८७

काल न परेंदिया वे तुज बिन दिलबर मेरे ।
बिछोहानी दुख सालदानी सइयो वेषण दे मैंनू
चाव घणेरे ॥

८८

जादुड़ा कीता मन लीता ढोलणदे निजारे नाल केहा ।
दुतां वेड़ा दुश्मन मापे जर प्याला असा पीतां ढो० ॥

८९

गुमानी घुमाई जांदियां वे सोणा जीन्दा रहो वे
बाल सनेहो ।
चन्द जेहा मुखड़ा सानू भांदा वे सोणा जीन्दा रहियो
गबरू घनेहो ॥

९०

जानी यार वे मियां मैंनो छड़के न जाओ ।
आतो रातीतें काला बेला भूलीनू राह बताओ ॥

९१

मारुड़ा म्हांरी हैली ने बताजो पना मारुड़ा ।
म्हांरे री आंगन चम्पेदो बूटिला सात सखी मिल
छोटा लाड़ीनें बताजो पन्ना मारुड़ा ॥

९२

घर आवो सजन कदी कर फेरा ।
घोल घुमाइयां सदके कीतो हुण तेरे मिलन नू जी
चाहे मेरा ॥
मुखडावो तेरा वारो अजब बहारांदा वल वल जांदियां
मैंडा प्यारा घोल घुमाई सदके कीती कीती
लख लख वेरा ॥

९३

जाहे लागी चोट सोई जाणे ।
इश्क दा लहरां रब्बा हरगिज किसी कूं न होवे
ज्ञानरङ्ग दीठ लगी जाणे ॥

९४

दिल तो तेरे हाथ बिक गया ।
कणा तैंडी पाक असनाइयां वे
ज्ञान रङ्ग साडा नेह नित नवा ॥

९५

मैं तक आइयां वे रांझा जान वे साडडी गली कर
फेरा साड़ा तूं दरद पहंचाण वे ।
राजा तूं तखत हजारां दा वे लख लख लेंदी
बलाइयां वे० ॥

९६

गाढ़ा मारू हां वे म्हांरा गाढ़ा मारू आया वे ।
चार महीने थांने चलन न देश्यां बहुत दिनन पाछे
आया जो म्हांरा राजा वे मारू हां वे ॥

९७

रसिया ना बोलूं थां से लगा जो म्हांरा नेह रसिया
ना बोलो कोहीं ॥
बेसरदा मोती अनविधो छे वा राखो नथड़े बीच ।
सांई हमारा एक पल राखे मैं राखूं पल बीच ॥

९८

खेड़ांदे नाल नहीं जांदियानी मैं जिन्द कीती
कुरबानियां ।
हुसण सोणा आनके वे खाओ भली लगदी तैंडी
आनी मैं० ॥

९९

माड़ी बातड़ी सुणजाओ सोणा इश्क लगा तो
निभावो वे ।
तुज्जेहा मानू होर न दीसदा साड़ो जीन्द आणके
जिवावो वे ॥

१००

उरझ रहे री दोउ नैन नथपर ।
चञ्चल अचपल चतुर छवीली तन मन वारूं सुन्दर
छवगत पर ॥

१०१

किया रे वंशी ने टोना रे ।
तेरी वंशीमें मेरा मन हर लीनो तोरूंगी पात
बनाऊंगी दोना रे ॥

१०२

बनरा अनमोला ढोला रे चाव घनेरा बे ।
नोको वरोंसे बना व्याहन आया गल बिच पहरे
सुआ चोला रे० ॥

१०३

केला जोर काई बे जटियांदा रङ्ग माणा ।
इस नगरी विच बे जालम बसदा बे
बिच महबूबांदा थाणा ॥

१०४

फन्दड़ा तकेदियां दिलवर यारदा आणो वेवो सइयो ।
बिन दोठे चेन नहीं आवे नीको रङ्गसों जाय कहियो ।

१०५

को करां बे मैंड़े बेलियां में का मन कोता ।
सूहेदा रङ्ग बे चार दिणांदा वो मियां आसकदा
रङ्ग तैं लीता ॥

१०६

कहीं टेरो रे मोहन बांसरो ।
बांसरी बजाय कर मन हर लीनो
उपज करत और सांसरी ॥

१०७

मैं तो तैंनू चदियां चहदियां यार बे वलाय लेदियां ।
मुखड़ा तांड़ा वारो बे अजब तरादा सुभरङ्ग कहेंदे
सोई मैं सहंदियां ॥

१०८

मेरा बे मनमोहन प्यारा बे वंशी बजादा भांदा ।
मुरलोदी धुन सुन भई है कमलो
साडा जिय ललचांदा ॥

१०९

बंशी बाजे सन ननसन ।
श्रवण सुनत सुर नर मुनि गुनी जन
मोह लिए तान तन ननसन ॥

११०

पिया बिन नैनां नींद न आवे ।
सगरी रैन तरफत बीते भोर भए जिय घबरावे ॥

१११

असी तैंनू दवाइयां दे दे बे मियां मैंड़ो जिन्द लग
तैंडे नाल ।
पंजतन पाकदा साया तैंनू बे दोस्त शाद
तैंड़े दुशमन पैमाल ॥

११२

तांड़े कुरबान सोणा मैंड़ो गल सुण जामो ।
बन्दो हुइयां तैंड़े नेणादो सोणा बेखणो
माणो गल लग जामो ॥

११३

बिरम रहे जो कौन देश देश रे बालम राज ।
जबके गए अजहुं नहीं आए कोठे बिरमा छो महाराज ॥

११४

रब्बा मैंड़ा माहिड़ानू आनके मिलामो बे रब्बा ।
पण्डित पूछे दो वारो बे सगुण मनादो बे
सांचो आखो दर कद आमो बे० ॥

११५

मोहो चोरे वालियां बे मैंनू यार
सोणे न देंदा मेरा सोणा मैंनू यार ।
जंचेनो थल कूके दियां बे रांझण मिला मैंनू प्यार ॥

११६

नन्ददे गुमानो म्हांरो बात न माणो बे ।
औरांदे नाल तू हंसदानो मिलदा बे
हमसों करत हो सयाणो बे ॥

११७

सालू वालोने मन मोह्यो रे पट्टो पावां मांग सवारां
अंखियन काजल पावां ।
म्हांरो राज रमक झमक थांरे घुंघटड़े वर वालो रे० ॥

११८

हो राज गाढ़ा मारू जो मैं नहीं आवना
हो हो हो हो हो हो जो ।
जंचेनो मैंड़ो बे दूरि देशां बे रङ्गरसनू ललाजो
तू म्हांरे घर आइलो सायवां हो हो हो हो हो हो जो ॥

११९

मोकों नींद न आवे रे गिनत तरैयां।
बितत सारी रजनी बिहानी सुन मेरी सजनी रे
आवन आवन हमसों कहि गए निश बीतो आए भोरैयां॥

१२०

गिनत गिनत तारे रैन विहानो रे।
सेज सूतो वारो नींद न आवे वो पिया मोरो
पोर न जानो रे॥

१२१

तैं मैंडो सुध लीजो जी वो जानेवाले।
इतनो अरज मैंडी मनरङ्ग मान ले
जो चाहो सुख दीजो जी०॥

१२२

कीहा जादुडा कीता वो जाणेवाले।
आप न आवे वारो ना लिख भेजी मियां
इश्क लगाय जीन्द लीता वो०॥

१२३

वों पंछी दानियां दिलवर मैंडा वो।
जो तूं चला वारो नाल चलेदियां आसरा के
रब सब तैंडा वो॥

१२४

मारुडा थांने आवण देशां।
पायल मोरी रुणझुण बाजे सास ननद घर जागां॥

१२५

गुइयां बालम है परदेश।
हमरे बालमको खबर न पाई
करहुं जोगनियांको भेश॥

१२६

निंदियांके माते जाग रे।
सगरो रैन मोहि तलफत बीतो
भोर भए गर लाग रे॥

१२७

मैं तो मोही वे मैड़ा माहिड़ा मैं।
तुज जेहा मानू होर न भांवदा वे
जित देखुं तित तूं ही वे०॥

१२८

नैणांदे गुलाम लगी सगी परी।
वरज रहो वरजो नहीं माने रूप सलोने जगी॥

१२९

दिलभर सोणा तुसो मैंडरे आवणा।
अदारङ्ग तुसो महदो लावणा पोर पोर
छलडे रचावणा॥

१३०

नजर झरोखा मुजरा लीजो।
कान्हा क्यों नाराज कहीं गुण मानो॥

१३१

नैणांदे निजारे नाल वे दिल लीता मांड़डे
अपने वस कीता वे।
आन पया तांडे दिल तों नादम की पया वे
तांडे इश्कांदे जाल वे०॥

१३२

रखो साडो लाज वे क्यों न करे फरियाद जान वे।
या रब्बा मिल वे देवो मुराद वे प्यारा मिले मैं
आज वे॥

१३३

बैरन किन बिरमायो राज।
घोडो लीजे कुन्दनोरे चाबुक है गुलजार
पानका डिब्बा मोरे हाथ में रे
मृगा नैणीका ढोला साथ॥

१३४

तांडी वालियां वे मियां झूम रहियां सालुडे वे
चन्द छपावण मियां।
यारों नूं नेह जतावण मियां अंखिया रङ्ग खिला लरियां॥

१३५

साजन मोरा अत हो रङ्गीला देखन कों सब
आईं सखियां।
हमसों अवध बद अनत बिरम रहे जियको
करत है अनसन बतियां॥

खम्बावती—चक्रताल

मनमोहनके पास न जा न जा न जा।
हौं जो कहौ तो सौं मानत नाहीं लजा लजा लजा ॥

खम्बावती—तिताला

दिलवर यार बे मियां मैंनू छडके न जामो।
आधी रातीतें काला वेला भुललानू राह बतलामो ॥

२

केहा जादुडा कीता वे गोरिए जटियन।
ए परी तेरी ताहीम रोज चो आरस्तन
नर्द हरके आईना बदस्ते तो देहद दुशमन ॥

३

कल न पडेदियां बे तुज विन दिलवर मेरे।
विछुहेदा दुख सालदानो सइयो वेषणदे
मैंनू चाव घनेरे ॥

४

ऊभो रे रङ्ग माणे लाडो बे रङ्ग माण।
केसरिया बणा छे निपट निदान वो उभो
बांकोड़ घोडो थांरो बांकोड़ जोडो मूडे
थांरे सबज कमाण ॥

५

अजो हां जो बलमा कांई जाणो ए महाराज।
राजदुलारे म्हांरो बात सुण लोजो सायबां हो
राज कांई गुण मासों रूस रहो छे ॥

६

यलल लो यलुम यलुम यल लूम।
तर लूम तर लूम तर लल लूम उदन तूम तनन तूम
नित नारे दोम ॥

७

जान बख़्शो चु मो आयदम।
आख़र नवा शोख़ आखरे कार हसन जो हो
गवां बैठे तुम ॥

८

जीन्दुडा साडो क्यों कर यार तैंडे नाल दीतो वो यार।
लख बदनामी तैंडे कारण लीती
सुण मन मोहन यार ॥

९

मैंनु जा यार छडके जिन्द कीतो बे तांडे सदके।
मुलका विगाणा शोरी लोग पराया
लाख तरे दिल खटके ॥

१०

गुजारा दम्दा बे आदम् दा किसो तरे
होय होय जीयदा।
आदम दा को मरदा शोरो तूं क्या डरदा बेचारा दम्० ॥

खम्बावती—अष्टताल

साजन मोरा अत हो रङ्गोला देखन कों सब आई
सखियां।
हमसों अवध बद अनत बसोला जियको करत है
हमसों घतियां ॥

२

स्वरन मनि रचित अति दिव्य परजंक पर कलित
सज्या बनी सुमन राजे।
सेन वस नैन श्रीराम अरु जानको भूषण जटित
तापर विराजे ॥
अष्टसिद्धि नौनिद्धि दासिका घेरि रहो
ढरत कर चौरस फूल चारि भ्राजे।
यक्ष गन्धर्व नारद सहित सारदा करत कल गान
वर बाजे वीण विराजे ॥
कुसुम वरषत ब्रह्म रुद्र इन्द्रादि सुर
मुदित मनसा वसा दरस काजे।
तड़ित घन मिलित सुख पाव जो परसपर
निरखियत कोटि रति काम लाजे ॥
विमल राका रजनी मनहु कर जोर रहो गनत मणि
सुभाग्य निज भुरी आजी।
दासलछन जुगलरूप धर ध्यान जो करत
कलि कलुष दुःख दूरि भाजे ॥

खम्बावती—चौताला

लटकि लटकि चलत मोहन आवे
भावे मन अधर मुरलो मधुर मधुर बाजे।

श्रवण कुण्डल चपल डोलनि मोर मुकुट चन्द्र कलनि
मन्द हंसनि जियकी वसनि मोहनि सूरत राजे ॥
भौंह कुटिल कमल नैन अधर अरुण कोमल वैन
गज मतङ्ग गवन तिलक भाल वर विराजे ।
लछनदास श्यामरूप नख सिख अङ्ग अङ्ग अनूप
रसिक भूप वदन निरखि कोट मदन लाजे ॥

२

लाडलीलाल दोउ कुञ्ज भवनमें राजत रूप नवीने ।
मुकुट विराजत मोहन जूके पीताम्बर कटि श्रीप्यारो
छवि नख सिख भूषण कीने ॥
लाल भाल केसरि चन्दन को तिलक वन्यों अति
सुमन गुहे सिर प्रिया छवीली कुङ्कुम बेंदी दीने ।
लछनदास परस्पर ले आदर विलोकत मन्द मन्द
मुसकात लिए करत मनसिज कोटि कोटि छवि छीने ॥

खम्बावती—तिताला

भजु रे मनुवा कोशिलराज ।
सुन उपदेश मानु चित हित करि
नाहित बड़ोइ अकाज ।
वेद पुरान सन्तमुख सुनियत है प्रभु लाज जहाज ॥
लछनदास राम करुणामय दशरथ सुत महाराज ॥

२

विनै कुंवर दोउ फूले जमुनाके कूले ।
नन्दनन्दन वृषभानु नन्दिनी नवल वैस समतूले ॥
रङ्गरङ्गके सुमन सुहाए तिनपर मधुकर भूले ।
ख्याल खुशाल करत पिया प्यारी भरे नेहरस मूले ॥

३

प्यारी पियाको मनावै पइयां पर पर विनती सुनावै ।
हा हा करत निहारत नैनन सैनन चाह लुभावै ॥
कोई लीन्हा पट पीताम्बर खैंच
कोइ कर पकर रिझावै ।
कोइ गलबहियां डार नवेली गिरिधर लाड लडावै ॥
ख्याल खुशाल करत व्रजवनिता नव निकुञ्ज दरसावै ॥

४

निरतत रासमण्डलमें आली
श्रीराधे पिया सङ्ग वनमाली ।
कुञ्ज निकुञ्ज सुहावनो सोभा
हरो भरो तर झुक रहो डाली ॥
चितवत ललित चखन छवि व्रजको
फूले रङ्गरङ्ग सुमन विशाली ।
ख्याल खुशाल करत जसुदासुत
निरख रसिक जन करत निहाली ॥

५

लाई अबीर गुलाल बनाके होरी खेले मृदु मुसिकाके ।
व्रजकी सखी सब बन बन आईं चोवा चन्दन लिपटाके ॥
नन्दकुमार सो फाग खेलत होरी
फगुवा मागै मनाके ।
ख्याल खुशाल प्रीतके निशदिन नैनोंसे नैन मिलाके ॥

६

सांवला सुझे रङ्गहोमें बोरे
सुन री सखी सङ्ग लागोइ डोरे ।
जित जाऊं तित रसिया ठाड़ो
अबीर गुलाल मलत वरजोरे ॥
गारी गावत फगुआ मांगत नैनन वैन सैन मन चोरे ।
ख्याल खुशाल करत है निशदिन
उमंग आवत है मोरी ओरे ॥

७

रङ्गमे रङ्गत है कन्हाई भरी गुइयां पिचकारी
चपल चलाई ।
चञ्चल मलत गुलाल कपोलन जोवन उमंग उमंगाई ॥
ख्याल खुशाल करत वस अपने वंसीकी टेर सुनाई ॥

खम्बावती—धार

रसमाते कुञ्जनमें खेलत हैं दोउ होरी री ।
नन्दनन्दन वृषभानु नन्दिनी रङ्ग तरङ्ग वरजोरी री ॥
अबीर मलत सुख अङ्ग लिपटावत
करत नैन चित चोरी री ।

मृदु मुसक्यान कलत मन चितवन
वसकर पिया वरजोरी री ॥
ख्याल खुशाल दिखाय लुभावत बांध प्रेमको डोरी री ॥

२

कैसे होरीके खेलार कन्हाई सारी बोरी रङ्ग
अब हीं रङ्गाई ।
अत उधमी अपार नन्दकी बात मीठी मीठी सुनाई ॥
उमंगाई आवत कर पिचकारी
वरजोरी अबीर लगाई ।
छैल कुंवर खिलवार बड़े हो ख्याल खुशाल लोभाई ॥

३

टुक वेखला जा मैंनू जीवे मांड़ा सोणा यार ।
तैंड़े वेषण दे असी रहंदो मुस्ताक लो मियां
मौला वेष वे तांड़ो दीदार ॥

खम्बावती—तिताला

करुणामय प्रभु गुणनिधि दीनन दरन दुःख दारुणम् ।
सरनागत पालन प्रभु समरथ जुग जुग सन्त उवारणम् ॥
कमलनयन रघुनाथ कृपानिधि हो दयाल बिनु
कारणम् ।
लछनदास सुखद कोमलचित राम प्रणत जन
तारणम् ॥

२

ऊधो तुम हो निकटके वासी ।
यह निरगुन ले उन हो सिखावो जे मुड़िया वसे कासी ॥
मुरली धरन सकल विधि सुन्दर रूपसिन्धु गुणरासी ।
जोग बटोरे लिए फिरत है ब्रजलोगनको फांसी ॥
राजकुमार भले हम जानत घरमें कंसकी दासी ।
सूरदास जदुकुल हि लजावत व्रजमें होत है हांसी ॥

३

ऊधो या विध व्रजमें रहियत ।
जागत जामन जुगसें जात हो जतनन निरबहियत ॥
सागर विरहो अगम है ऊधो अब कैसे ठहरैयत ।
तुमसों काज कौन कह वे को जल बूड़त तण गहियत ॥

एक बार दरसनको आसा ता कारण सब सहियत ।
अबकी बार मिलो प्रभु सुरको
बहोर नहीं कुछ कहियत ॥

४

ऊधो यह मन बिगर परे ।
मानत नहीं ज्ञान गीताको मृदु मुसक्यान अरे ॥
बांको भौंह वक्र द्रग राचे याते अधिक खरे ।
सुध न होत स्वान पूंछ जों पच पच वेद मरे ॥
जोग गभीर अन्धकूपनसों याते दूर डरे ।
सूरदास प्रभु एसे रहन दे श्याम वियोग भरे ॥

५

रुकमनी मोहे व्रज बिसरत नाईं ।
वा क्रीड़ा वा केल जमुन तट सघन कदमको छांईं ॥
गोपबधुनके भुजाकण्ठ धर विहरत कुञ्जन माईं ।
और विनोद कहां लग बरनों मो सुख बरणि न जाईं ॥
सुरभी सुत और नन्द जशोदा वह चित ते न टराईं ।
जद्यपि सुखनिधान द्वारावति वा व्रजको सर नाईं ॥
सूरदास सुन्दर घनमोहन समझ समझ पछताईं ॥

६

बसा जो भंवरवा मोरी प्रीत कलो ।
कृपा निवास श्रीअवधविहारी प्यारे अब रङ्गरलो
बनी बात भली ॥

७

हमारो औगुण चित न धरो ।
समदरसो है नाम तुमारो सोई पार करो ॥
एक लोहा पूजामें राखत एक घर बधिक परो ।
सो लोहा पारस नहीं जानत कञ्चन होत खरो ॥
एक नदिया एक नार कहावत मैलो नीर भरो ।
जब मिलियां तब एकवरन ह्वै गङ्गा नाम धरो ॥
तन माया जो ब्रह्म कहावत सूर सुमिल बिगरो ।
को इनको निरधार कोजिये को प्रण जात टरो ॥

८

जागबे पियारा मत नींद करे उठ सुमरण कर हरे हरे ।
माया नींद अविद्या सोयो राम कहत भव पार परे ॥

लख चौरासी भटकत भटकत शरण सुमेरमें आय अरे।
रागसागर प्रभुको रट ले नित कृष्ण कहे सब दुःख हरे॥

९

ऊधो रे जाके माथे भाग।
विलसत फिरत सकल ब्रज जुवती चेरी चपल सुहाग॥
आए जोगकी बेलि लगावत काटो प्रेमको बाग।
कुवज्या को पटरानो कीनो हम हीं देत वैराग॥
निलज भरे खेलत हैं दोऊ बारामासी फाग।
सूरदास प्रभु जख छाड़ कर चतुर चचोरत आग॥

१०

कहियो रे जसुमतको असीस।
जहां रहो तुम नन्ददुलारे जीयो कोट वरीस॥
मुरली दई दोहनो घ्रत भर ऊधो धर लई सीस।
ए माखन उन हीं सुरभीको जो पाली जगदीश॥
ऊधो चलत सखा जुरि आए मिल दश पांच पचीस।
अबकी वार ब्रज फेरि वसावो सूरदासके ईस॥

११

मैं हरिकी मुरली वन पाई।
सुनि जशोवत सङ्ग छोड़ आपनो कुंवर जगाय
देन हों आई॥
इतनी सुनत विहंस उठ बैठे अन्तरजामी कुंवर कन्हाई।
मुरलीके सङ्ग हुती मेरी पोंची दे राधे ब्रषभान दुहाई॥
हों चित लाय उहां नहीं ढूंढ़ो चलहु ठौर सोइ देहु
देखाई।
सूरदास प्रभु नागरी नार दोउ बुध एको चतुराई॥

१२

नन्द घर लेले बधावा धाय आई।
नारी नार उमाह भरे अङ्ग सुखछबि वरनि न जाई॥
देख रही मनमोहन सोभा उर आनन्द प्रगटाई।
ख्याल खुशाल विशाल प्रेमके जोवनका फल पाई॥

१३

बजाई कान्ह मुरली जमुनाजीके तीर।
भनक परे श्रवननमें सजनी मिटी विरहकी पीर॥
ख्याल खुशाल भरे अङ्ग अङ्गमें चले मिले बलवीर॥

खम्बावती—जत्

लगीयानी नैन निजारेदे नाल।
देख आई नन्दराय लाडला सुनरी सखी मन
मगन जाल॥
चेटक नेह बैन सैननमें करी री प्रीत वस ख्याल
खुशाल॥

२

प्रगटी महालछमी आन।
वरसाने में छाय रही छव भवन मध ब्रषभान॥
सिद्ध सकल नौ निध तहां राजत ध्यान सकल
गुन खान।
पावत फल जे निरखत आनन पूरन चन्द समान॥
आवत घर घरसे नर नारी हिल मिल करत वखान।
रसिक खुशाल विलोकत जीवन श्रीवल्लभके प्राण॥

३

मुरली बजांदानी सइयो मन भांदा श्याम।
ललित कदम तले ललित त्रिभङ्गी रस भरी तान
सुनांदा श्या०॥
चल सखी देख भेख नट नागर नैनन मृदु
मुसक्यांदा श्या०।
ख्याल खुशाल दयाल सांवरा चितवन चित हो
चुरांदा श्या०॥

४

श्याम रे सलोने प्यारे मेरे कने आ रे।
तेरी सूरत पर मायल हुइयां नैनों सैन मिला रे॥
ख्याल खुशाल उमाह भरे है वंसीको टेर सुना रे॥

५

रासमें निरतत विवस कुमारे।
राजत गौर श्याम तन सोभा नख सिख रूप अपारे॥
नैन मैन सुख चाह बढावत गुन रित लखन लखारे।
उरझ रहे सुरभे नहीं कबहूं प्रेम प्रीत लपटारे॥
मृदु मुसकात दिये गलबहियां ख्याल खुशाल निहारे॥

६

ब्रजकी बाला फूल बीन बीन लाई।
नख सिख रूप अगाधा राधा सकल मध्य दरसाई॥
सेवती गुलाब चमेली चम्पा बेला नवेली दरसाई।
निरखत रसिक खुशाल ख्याल नित वृन्दावन छव छाई॥

खम्बावती—धीमा तिताला

कर ध्यान याही धर ध्यान महादेव भोला मन भाता
रिद्ध सिद्ध सब सुखके दाता जो।
बिच कासी कासी बसे अवनासी सकल सम्पत
सुख सङ्ग लीने सन्त अपनेकों सुख दीने जो॥
नो निध नो निधि भगत अरु मुकत प्रास गुण चार
वेद गाता के जैसो भुजग विख्याता जो।
हरि धावो धावो महावर पायो करो निशदिन
प्रभु की सेवा जो होइ है प्रेम खोद देवा जो॥
जिय प्रीत प्रीत बढ़े रस रीत बतावत भेद अगम
बाता दयानिध ख्याल राम राता जो॥

२

त्रिपुरारी त्रिपुरारी मूरत प्यारी भवानी सङ्ग सोभा
धारी निहारी छव सिङ्गार अपारी।
हित प्राणन प्राणन उरगत जान रसिक रसकन
सिरसात दिष्ट कृपा कर मुसकाता जो॥
श्रीगङ्गा गङ्गा घाट सुहाए रङ्ग रङ्ग राजत ललित
घने सुहावन भावन ललत बने जो।
नरनारी नरनारी रूप संवारी मोद पल पलमें
सरसा जो हिरदे बीच जन खुशाल लाता जो
कर ध्यान॥

३

हमारे प्रभु पूरण ब्रह्म अवनासी वृन्दावन विलासी।
महाराज तिहूँ लोक उजागर राधे कृष्ण नाम उपासी॥
जाको जश गावत ब्रह्मादिक देवन देवन प्रकासी।
नाम सच्चिदानन्द प्रगट जग अत उदार सुखरासी॥
ख्याल खुशाल करत मन भावे महा रूपकी रासी॥

४

वल्लभ रसिक रसिक रसिकाई।
कों कहे सकत अब ना मध कविकुल निगम चार
गत लखो न जाई॥
विहरत वन निशदिन ललित मोहनो रूप बनाई।
जेइ निरखत तेई बड़ भागी प्रेम लच्छना जिन मत
पाई॥
निरमल इन्द प्रगास आनन सुख अङ्गनी बल रितु
मदन लजाई।
रूप रास गुन खान माधुरी मृदु मुसकानि क्रान्ति
प्रगटाई॥
वोह निरगुन सरगुन सोभा रही छाय त्रिभुवन भाई।
यह रस ख्याल खुशाल विलोकत पाई भगत फल
गुरु सरनाई॥

५

हठड़ो सेज सवारूं सहेलो कब घर आवे म्हारा
सामी।
सुनियोरी म्हांरी सखिय सहेली तन मन धन
जोबन वारी॥

६

चले स्यां थांके साथ सुनो जो म्हांका ए सांवरा प्यारा।
थांको म्हांको पीत नित नई छे म्हारा राज अलगा न
रहजो रहजो भेला नाथ सु०॥

खम्बावती—तिताला

हों जो हो थें जीवो म्हांरो राज जब लग गङ्गा
जमुना पानी।
थें विधना दीनो पन्ना साहेब लाड़ लड़ो ठकुरानी॥

२

थांसो मन लागो जी म्हांरा राज कुंवरजी।
राव राजा राज सुहावे थें मांने प्यारा लागो सुन्दरजी॥

३

बनरा अवधविहारी लख आई।
जनक भवनमें श्याम सलोना बनरीके गल बांई॥

मुसकावत मन भावत मोहनी सोहनी सूरत लोभाई ।
रसिक खुशाल राजा महाराजा दूलह रूप सुहाई ॥

खम्बावती—जत्

बनरा दशरथ लाल निहारा ।
जनक भवनमें समें व्याहके नख सिख रूप अपारा ॥
नवल हो मूरत सूरत मोहनी नवल बेस छव भारा ।
ख्याल खुशाल सकल बन आए देखा राजदुलारा ॥

२

विहारी सरद रात मन भावै ।
वृन्दावनमें चारहु दिशतें रितु गुन मन्द दिखावै ॥
तैसेइ फूल खिले रंग रङ्गके द्रुम बेली छव छावै ।
पवन सुगन्ध उमग उर लावतु कुञ्ज निकुञ्ज सुहावै ॥
करत विहार पियारा ब्रजमध रागरागणी गावै ।
निरखत रसिक खुशाल ख्याल सुख सकल
विधी सुख पावै ॥

३

बेला चमेली हार गूंध लाई ।
मनमोहनके कारण सखियां जाही जुही मन भाई ॥
चम्पा यार बेल दाऊदी सेवती गुलाब सुहाई ।
दोना मरुवा केवड़ा सब्बो केतकी सुगन्ध महकाई ॥
कमलकली कमोद तुर्रा गुलेबास दरसाई ।
गेंदा कुञ्जकली अरसरफी जाफरी ललित वनमाई ॥
गुलाला गुलकलंगा हजारा इश्कपेचा छव छाई ।
मोतिया मोलसिरी औ निवारी मालती अत सरसाई ॥
यह शोभा निरखत निशदिन प्रभु ख्याल खुशाल
लुभाई ॥

४

निजारे दियां लालियां वे सानू आन ।
उठियाना ख्याल खुशालांदी मिठिया मुखड़े सोनी
दी मुसकान ॥

५

वस रहा रीझ श्याम पियारा बांके नैनां वारा ।
मनमोहन मनमांह विराजि कबूं न होवत न्यारा ॥
प्रेम प्रीत वस कर लियानि छैला प्राण हमारा ।
रसिक खुशाल भरे गुण सैनन रङ्ग रहा रङ्ग अपारा ॥

६

पिया नैणां लगी तेरे नाल वे ।
कुलकत भरे मदन रितु राते निरखत करत
निहाल वे ॥
रुकत न चपल चोप वस दिठियां रसिक ख्याल
खुशाल वे ॥

७

यार मैंड़े नाल आमी वे वंशीवाले नेक वंशी
बजामी वे ।
कोल तू साड़े इश्क लगामी ख्याल खुशाल लुभामी वे ॥

८

ओ रङ्गीलो राधा पिया प्राणन प्यारो ।
मोहनी मूरत सोहनी सूरत चन्दवदन उजियारो ॥
करत विहार विपिन वृन्दावन निरखत सब सुखकारो ।
ख्याल खुशाल ध्यान मन निशदिन याही प्राण
अधारो ॥

खम्बावती—धीमा तिताला

राधा मुख वे घलामो तो जिवामो वो ।
मनमथ गुन मन उमग उमग रहे अधर सुधा रस
पामो वो ॥
मान मनोहर आगर नागर याही बात मनभामो वो ।
ख्याल खुशाल विलास निहारो प्रेम प्रीत उरझामो वो ॥

२

दरशन देना प्राण पियारे नन्दलला मेरे नैननके तारे ।
मनमोहन मन रुकत न रोके यह चित चाह हमारे ॥
दीनानाथ दयाल सकल गुण नवकिशोर सुन्दर
सुकवारे ।
रसिक खुशाल मिलनकी आसा निशदिन सुमरन
ध्यान लगारे ॥

३

बनरा प्यारा देखो नी देखो लाडला रङ्गीला ।
राजा जनक घर व्याहन आया नखसिख छैल छबीला ॥

सिर सोनेदा मोर विराजे बागा सुगन्ध विशाला ।
भूषण हार चमेली बेला कङ्गना हाथ सजीला ॥
जीवन फल पावै जो निरखत भर भर नैन रसीला ।
ध्यान खुशाल सदा निश्च वासर चितवन माह बसीला ॥

४

मैया मोरी कामर कौन लई ।
कोउ कहे तेरी कामर देखी जमुनामें जात बई ॥
एक कहे हम नाहीं लीनी सुरभी खाय गई ।
एक कहे तुम नाचो गावो ले दें मोल नई ॥
हों जो गए थे धेन दुहावन औचक भेंट भई ।
एक कहे तुम आवो हो आयो हों तुम रसिक मई ॥
सूरदास जशमतके आगे असुअन धार दई ॥

५

नेंक चलो री चलो नन्दरानी ।
देखो जाय कान्हको का गत दूध मिलावत पानी ॥
हमरे शिरकी नई चुनरिया ले गोरसमें सानी ।
हमें उनै रसवाद कहांको आन देखावत ज्वानी ॥
यह ब्रजको बसवो नहिं नीको हम निहचे कर जानी ॥

६

बिहारीलाल ठाढ़े जमुनाजीके तीर ।
मधुर मधुर बांसुरी बाजी सुन मन धरत न धीर ॥
भूषण मणिगण अङ्ग विराजत सुन्दर श्याम शरीर ।
कृष्णरङ्ग स्वामी लख आई फेर चली मेरो वीर ॥

खम्बावती—तिताला

ऊधो भाग बड़े इत आए ।
उत हरि गए घने दिन बीते समाचार नहीं पाए ॥
कुशल तो है वसुदेव देवकी हमरे हित चित भाए ।
कहो कुशल बलदेव कान्हकी रहे उते सुख पाए ॥
बिरधापन कों पूत पालियत तहां तज हम हिं सिधाए ।
धायहु को ना तो हरि धोयो बिनु कछु दोस लगाए ॥
चलत बार बलदेव कान्हतें साथ न प्राण पठाए ।
ताके ए परपाक गदाधर जीवत ही फल पाए ॥

२

काहू फिर न कही वह बातें ।
जो भर गए सुकृत किरियातें वा मगकी कुशलातें ॥
जैसे चढ़त रङ्ग भीतर सहत सैलकी घातें ।
वाको स्वाद पूछिए कासों सैले सही है तातें ॥

३

अब तो सहाय करो प्रभु मेरे बह्यो जात जन तेरो ।
माया नदिया लिये जात है हात गहो प्रभु मेरो ॥
काम क्रोध लोभ मोह जलचर दियो चहुं दिश घेरो ।
नाना भंवर भरमके भीतर भरमत रहै जों फेरो ॥
बार बार नहीं गिनत है मोकूं कियो खोज बहुतेरो ।
विष विकार चित तातें तवपद गहो जात नही मेरो ॥
माणक और उपाय न सूझे चरण कमल दृढ़ हेरो ॥

४

हो मुरलीमें गावत तान ।
पढ़ पढ़ मोहन मन्त्र सखी री सुन्दर श्याम सुजान ॥
परत न चैन रैन दिन तबतें भनक परो मेरे कान ।
जानकीदास कोइ आन मिलावे रसिया नागर कान्ह ॥

५

थें म्हांरे घर आज्यो जी नन्ददुलारे ।
मत टोको जी म्हांने मारग जातांई सास ननद
म्हांने मारे ॥
गुरुजन दुरजन चाव करे छे हित चित कोन विचारे ।
प्रेमरङ्ग घड़ी घल नहीं विसरों तन मन वस छे थांरे ॥

६

रतनाली वे तेड़ी आंखड़ियां असो जिन्द बेष ले
असो जिन्द बेषी वो मुस्ताक रहेंदे ।
मुए पएके हो राह मुसाफिर नाजो भरोखेनू क्यों
खड़ियां अ० ॥
याणे नाल स्याणों क्यों दरस तुसी दें दी पलकों
दे नाल क्यों लड़ियां अ० ।
प्रेमरङ्ग दरस दे दिवाणे इश्कदी बेड़ो तुसी क्यों
जड़ियां अ० ॥

७

रसिया भजन हो जगमें सार ।
सुक नारद भीष्म श्रुति देवा भजन हो भए भव पार ॥
ध्रुव प्रह्लाद उपमन्यु विभीषण अचल पदके सिरदार ।
शिव सनकादिक आदि ब्रह्मादिक और हु
व्रजको नार ॥
भजन रङ्ग रङ्गीले जे भए पाए साक्षातकार ॥

८

जो तूं छोड़ा माझो ताझो भेद ।
तू माहं छूं हं मातूं सो झूट नहीं कहं सांच कहे
छे वेद ॥
अणपाम्यूं पामवाना दुखथी सुख सारूं निरवद ।
जो तूं जो हं होऊं एक अनेक होय बी जा तो
देहि करे खेद ॥
प्रेमरङ्ग प्रभु थी रङ्ग रमतां नहीं पामा विछेद ॥

९

राघोजीकी नीको लागी नव रङ्ग पाग ।
कबहुं छैल छविसों सुन्दर निरखत आनन्द है अनुराग ॥
झलक लाल मोतिन की कलङ्गी उपजावत सुख लाग।
राम सखे प्रभु शोभा सागर देखत सो वड़ भाग ॥

१०

थांरो छब प्यारी लागे राज राघावर महाराज ।
रतन जटित शिर पेंच कलङ्गी केशरिया सब साज ॥
मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल रसिकों रा सिर ताज।
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर म्हांने मिल गया ब्रजराज॥

११

हेलां म्हांरे मङ्गलरो दिन आज ।
श्यामसुन्दर जी आया म्हांरे पावणा सज
केसरिया साज ॥
वीण मृदङ्ग बजा स्यां गास्यां भुजभर मिल स्यां
ब्रजराज ।
रसिक गोविन्द रसिया जोसूं हिल मिल करस्यां
सुफल सब काज ॥

१२

आज बन बंसी बाजे छे ।
लोक लाज कुलकान सखोरी सुन सुन भाजे छे ॥
वैरन घन जो गाजे छे म्हांरो चित चोटो छबि छाजे छे ।
रसिक गोविन्द जो सास ननद जिय छिन छिन
लाजे छे ॥

१३

म्हांरो मन मोह लियो छे वो कान्हा थांरो बांसरो ।
तोषो तोषो तान बान सों म्हारों मन गैलो
कियो छे वो० ॥
थें तो म्हांरा रूड़ा राजीन्द छो मैं तो थांने आपो
दियो छे वो० ।
अब जुग बिच म्हांने खालो लागे आनन्द घन
रस नीको पियो छे वो० ॥

१४

ऊधो कबसें भए हरि ज्ञानी ।
छिन छिन भात ग्वालनको पावत मांग लयो
दध पानी ॥
अब कछु ज्ञान भयो तिनहीको करो जो चेरो रानो ।
होय भोगी और जोग सिखावत कौन बेद या बानो ॥
महीदास अदभुत यह गत कछू जात नहीं जानो ॥

१५

गुजर दे यार बे जानो यार तेरे नैनांके मारे भाले
आले ओ मिजगांवाले ।
दिठोयानो ख्याल खुशाल कमाले साजो जमा माले
ढाले मिठोया आदे नाले ॥

१६

बनरा कुञ्जविहारी मन भावै ।
छैल छबीला रङ्ग रङ्गीला श्याम सलोना मुसकावै ॥
शिर सोने दा सेहरा विराजे कर कङ्गना छब छावै ।
सुगन्ध बसोला सुहाग लजामा पीतमवर सरसावै ॥
सङ्ग सोभा प्यारो दुलहनके चितवन चित उरझावै ।
निरखत जन खुशीयाल मनोहर निशदिन प्रेम बढ़ावै॥

१७

कौन गुण बांसरी बजाई रे भनक परी श्रवनन मेरे।
नन्दरायके कुंवर लाडले बलदाजकी भाई रे भ० ॥
ख्याल खुशाल करन चित चाहै ब्रज कुञ्जन छव
छाई रे भ० ॥

१८

थें म्हांरे गरे लागो जी श्याम सलोना।
कृपा भई म्हांरे महल पधारो मोहन मन ही लगोना ॥
सुन्दर सुखद सरूप कृपानिधि जन्त्र मन्त्र धो टोना।
भई दासी मैं थांरी ब्रजनिध अब कछु और न होना ॥

१९

सुघर हो राजेन्द्र पना आवो या ही माझली रात।
पान फूल और अतरदान लिए ठाड़ी मारवण
गोरे गात ॥

२०

मोहनी मूरत ललित श्यामकी जबसें नैन निहारी।
विन देखे कल परत न आली वनमाली वनमालीरो ॥
याही चाह चित लखो कीजिए ख्याल खुशाल
अपारी ॥

२१

बल बल जांदी श्याम मैं तेरे अरे मोरे प्यारे हो यार।
सुनिए कुंवर कन्हाई विनती मोहनी रूप दिखावो
हो यार ॥
ऐसो चाह हमारे चितमें आंखन आगे आवो हो यार।
बहुत दिननतें उमग भरी है देखन मुख ब्रजचन्दा
हो यार ॥
आवो चित विम हांस मनोहर नव जोवन नन्दनन्दा
हो यार।
जो लीला तुम ब्रजमें कीनी दिए प्रिया गल बांही
हो यार ॥
वृन्दावन वो बंसीवट ललित कदमकी छांई हो यार।
नितप्रत आस लालसा जियमें लिखिए श्रीगिरिधारी
हो यार ॥
कुञ्जन माह नेहरस माते रास हुलास विलासो
हो यार।
मदन मोहन नन्दराय लाड़ले रसिया रसिक विहारी
हो यार ॥
गोकुल नाथ सकल सुखदाई भक्तनके हितकारो
हो यार।
विसरत नाहीं वसी उरमाहीं प्रीतम प्रीत तिहारी
हो यार ॥
महाराज राजोंके राजा पूरन ब्रह्म खिलारो हो यार।
तिरलोकीपति अन्तरजामी करुणासिन्धु कृपाला
हो यार ॥
ख्याल खुशाल करो निशवासर राधावल्लभ लाला
हो यार ॥

२२

श्यामसुन्दर वनमाली बुला ला आली।
विन दरसन मन धीर धरत ना मोहन मदन गोपाली ॥
करत विहारी कुञ्ज कुञ्जनमें हिलमिल उर भुज डाली।
मोहनी सूरत सोहनी सूरत रसिया ख्याल खुशाली ॥

२३

काची कली जो न तोड़ माड़े बालम डाल मुड़ेगी।
पाकन दे पिया हात मत लावो अपनी उमगसें आप
खुड़ेगो ॥

२४

वा विन जात नाहन कोय जाव न विसरी दुहद
बांसरी नोय।
सुरम केस सुरेस असवट और पै नहीं होय ॥
धरनीमां अली भाल मानो रही कमल भिगोय।
रूप सैलो फनिन निद्रित जननी सों कहै रोय ॥
विसरी रही अङ्ग अङ्ग भोय बांसरीमें प्राण मेरो
देख हिरदे टोय।
सूर जाके अङ्ग विथा व्यापी पीर जानत सोय ॥

२५

मोरो बौरो भोला आज लागत मोहे नीको।
सीस जटा वाघाम्बर ओढे शोभित हार फनीको ॥

बूढ़े बैल पर धर असवारी खबर लेत धरनीको।
कृष्ण रङ्ग छव देख मगन भए भाङ्ग धतूर धनीको॥

२६

अधर धरी मोहन बांसरिया।
सोवत चौंक परी सेज पर तानन वेध गई फांसरिया॥
जो जैसे सो तैसे धाई डार दई गरे प्रेम फांसरिया।
कृष्णरङ्ग प्रभुके मिलवे को कुलके लाज करी
नासरिया॥

२७

लाग रहो मन राधावर सों
और कहे कछु और उपरसो।
दिन रतियां अंखियां आगे मेरो
ठाढ़ो रहे कछु रूप सुघरसो॥
लोक लाज कुलकान तजी आली
निठुर भए घरवार नगरसो।
आनन्द घन प्रभु लाए नेहा
प्रेमरङ्गीगो मैं गिरिधर बरसो॥

२८

उरझ रह्यो मन श्यामसुन्दर सों।
उरझ तो रहो पर सुरझत नाहीं
केते जतन किए बाहरसों॥
लोग कहे कछु लाज करो आली
लाज गई है नेह जकरसों।
हरदम घरी घरी पल पल छिन छिन
चरण गहे है दोऊ करसों॥

२९

मौला देली देलदे मुहा णैनू सैंदियांनू पार लगावणा।
नौबहार रब तैंडों बनाई ससौदा मुल्क सुहावणा॥

३०

दिल मैला मत रखियो प्यारे उजला दिल चांदनी चौंक।
तज दे कपट तुसी सुन वे सोणा याहो सचे इश्कदियां
नोंक॥

३१

सांवला मोहना मैं तैंड़े कुरवाण।
विन देखे सानू कल न पड़दो तू मैंड़े है प्राण॥

३२

कौन देश जाए रे बालम बिरमाए राम कहो री
सखी अजहूं नहीं आए मोर मन्दिरवा मीत पियरवा
काहें कहूं को पतियाए।
धाम छोड़ तोरे मोर रहत फिरत है जो उनसे
नेहा लाए वे तो मौज करे सौतनके जो मेरे आवनी
नहीं पाए॥

३३

बालम तोर कौन विध जइहूं मोरे राम।
ननदिया बैरन जागे डरपत हूं को मत देख पावे चरचेगो
मई खिजावन कारन कर गई एक ठोर सब धाम।
एक तो यह डर दूजो पायल बिछुवा बाजे झनन झनन
तीजे रैन उजारो चौथे मौज करनकों मन करे नहीं
मानत काम॥

३४

परदेशवा मत जाइयोरे पानन छाई पनवरिया भंवरा।
काहेको तेरो नाव नेवरिया काहेका तेरा वासा
तेरा खेवनहारा बताय दे भंवरा।
सोनेदी मेरो नाव नेवरिया रूपेदा मेरा वासा
खेवनहारा गुसैंया भंवरा॥

३५

बना जो थांरे सेहरड़े रङ्ग रूड़ो।
तन मन धन नोछावर करहूं
चिरजीयो छोटो लाड़ो जोरो चूड़ो॥

३६

दीजो जी सांवलिया म्हांने हो नजरांरो मेलो दीजो।
छछन्दपना थांरा म्हांने न भावे
इतनो अरज सुन लोजा॥
थें तो म्हांने प्यारा लागो सायबां
मन माने सोई कोजो।
यह उपकार नहीं भूलस्यां व्रजनिधि मेहर कीजो॥

३७

प्यारेदे मिलदो मैंनू आस घणेरो मियां।
यार खड़ा बे रांझण कूं केदो दिल विच चुभ गई
फांस घ०॥

३८

प्रीत भलेरी निभाईं सुन मेरा मियां वे ।
तुज विन मैंनू कल न परेदियां देहीं दुहाई
घनेरी नि० ॥

३९

किन बिरमायो सखी साजन मोरा रे ।
कबको मैं ठाढ़ी ठाढ़ी अरज करेशां
किन विलमायो सखी लालन मोरा रे ॥

४०

अरे टुक धीरा रहो बालम मोरा रे ।
कबको मैं ठाढ़ी ठाढ़ी अरज करत हूं
मानत नाहीं जिया तोरा रे ॥

४१

चिरैया हमरा जियरा कहां लेके जइवो रे ।
छतीस कोठा बहत्तर नाड़ी कौन गली छिप रहिवो रे ॥
हमसे तुमसे लगन लगी है क्या करेगा कोइ वे ।
छुरी कटारी मारके अब गला काट मर जइवो रे ॥

४२

मत बरैयाकी दुकनियां मोरा हियरा लरजे राम रे ।
एक तो विरहिया मोरी पनवाको तारन टोकुलियां
हिरानी ढूंढ़ो ढूंढ़ो रे तंबोलनियां मो० ॥

४३

मोरी दुह दे रे नन्दाजूके लाल हो गैया ।
कारी काजर धोरी धूमर प्रीत लगी गोपाल तैया ॥

४४

गेंदुवा मोरा चोराय ले गई लो काहेको चोरिया
लाज' राम ॥

४५

श्रीवृन्दावन फूलो फुलवारी हो ।
मोतिया राय वेल छव राजि सेवती गुलाब चमेली साजि
शोभा केशर लहलहात मिल क्यारी क्यारी ॥
केवरा फूल केतकी लाला मालती चम्पा नवल गुल्लाला
खिल रहा बेला कुन्दकली छव न्यारी न्यारी ।
निरगिस सोलसरी छव छाई दाउदी गेंदा प्रफुलाई
झुक रही लता हरी द्रुमनन छव झारी झारी ॥
जमुना घाट रङ्ग रङ्ग राजे निरखत काम कोट मन लाजे
निशदिन ख्याल खुशाल विलोकत प्यारी प्यारी ॥

४६

हमारे सइयां बोलिया म बोलो म्हांरे साथ ।
रागरङ्ग सइयां तोरे पइयां लागूं जिन छुवो म्हांरे
गात ॥

४७

गइलो भंवर मोरी वारी कानन ।
अतर गुलाब चहूं दिश रमि रह्यो कौन लेवैया वाको
नाम भंवर० ॥

४८

सियानि काहे कुञ्ज जगाइ सारी रात ।
सगरी रयन मोहे तलफत बीती मानो जी मानो जी
मोरी बात ॥

४९

कन्था बालम राज तोसे ना बोलूं म्हांरा ।
रैन चांदनी दीद निजारा खासा वाग बहारा
मिठ बोला मतवारा साजन दो नैणां दा मारा ॥

५०

सुमर सनेह सों तो राम नाम रायको ।
सबल निबलिको सखा है सहायको ॥
भाग है अभागको गुण गुणहीनको ।
गाहक गरीबको दयाल दानी दीनको ॥

५१

हिरनू कोई आनके मिला मोता कीं वे ।
या रब्बा जिन्द बे रांझे दा बेलो हिरदा मुलक
पञ्जाबदा वे ।

५२

कोलो आमो मैंड़े सोणा बे मोहना यार ।
नैन लगी नहीं छुटत छुटाए तुम सों श्याम हमार ॥
हो करन चाह रसके वृन्दावन कुञ्ज कुञ्ज पिया
प्यारे हो मोहना यार ।

विपनविहारी प्राण हमारे चाहत मिलन तुम्हार ॥
कृपा करो मत विलम लगावो नन्दरायके वार ।
वंसीवट जमुना तट सोभा निरख प्राण लुभावे हो ॥
रङ्ग रङ्गके फूल खिल रहे बनबन सुगन्ध पवन
मह्कावे हो ॥

५३

मुरलीधर बनवारी गिरधर सुनना छैल गुमानी व ।
चितवन चित उरझाय लियो है अब क्या चितमें
ठानी वे ॥
मिठियानी बतियां कहूं मेरे प्यारे हुइयां मुस्ताक
दीदारों को ।
नेह लगाके जुदा न होना यह रीत है यारो को ॥
रसिक रसीले बीर दाउके मोहन मदन गोपाला हो ।
हो जीवन खुशियाल ख्याल तुम राधावल्लभ
लाला हो ॥

देशी खम्बावती

अमलारो मातो झूम झूम झुक आवे ।
सना सनेह नन्दका नन्दन नैनन नैन मिलावे ॥
अलबेला सखो श्याम नवेला मुरली मधुर बजावे ।
ख्याल खुशाल करत ऋतु राता चितवन चित उरझावे ॥

२

परियानू सब कोई चाहदां वे बेखलो यार ।
हीरा मोती लाल जवाहर वासल दिल विच
भांदा वे बेखलो यार ॥

३

मोरी लरकइयांको देहियां सइयां मैं बररी जाय ।
बारा दुआरोका बंगला छाया कोई आवे न जाय ॥

४

हो मैं पइयां लागूं तोरे मोरे सइयांका
सन्देशवा बतातरी ।
हमसे न हंस बोले सुनरी सखी जुग सम दिवस
सरातरी ॥
बजहनके पिया कबधों मिलेंगी समझ समझ
पछतातरी ॥

५

मेरो मन हरलोनो रे सलोने सजना ।
सांवरी सूरत रस भरी मूरत बसो तट जमुना ॥

परज—चौताला

यातेंतुव चम्पकलो क्यों न होय कमल कली
नाहीं होत जाहींजुही करण केलि षटपद पिया सङ्ग ।
केवरो अजान जान नेक मेरो कह्यो मान मागुर
ना बहोत प्रभु गुलाब सङ्ग ॥
मोगरा हार गयो केतोक वार भई चमेली सी
ह्वै रही भंवर नाहन तोह अङ्ग ।
कर मोद मनमें चन्द्र देख फूलरो मोलसिरो
मनमोहनके बेला बीतत है श्रीफलसे कुचनसों
कर आनन्द रङ्ग ॥

२

आइए जु कैसे आवन पाए भले हो आए मेरे
नवल लाल ।
तुम हो चतुर सुजान बूझत सब गुणनिधान
महाजान मूरत हो अतरसाल ॥
हमसों अवध बद अनत विरम रहे ऐसो न कीजे
दीनदयाल ।
तानसेनके प्रभु तुम बहुनायक दीजिए दरस कीजिए
निहाल ॥

३

वारण निरवारोरो आलो नवसत सिङ्गार सों
प्यारो मोह लियो चोपन अत निरख निरख मारग
रहे जो तुव तन ।
दिरगन अञ्जन खञ्जन देहमञ्जन कर कर भूषण पहरे
प्यारी बेग बस कर ले तू रूप जोवन गुणवान कवन ॥
पिय समीप तुव बिन पल पल बरखसे जात हैं
क्यों न जाय अपने रस पगाय अनुराग बढ़ाय
ले हो उन मन ।
साह आजमको प्यारी तेरे जोर सकल सोते रहे
दबजाय ऐसे जैसे दब जात तरैयन जोत शशी-उदय
होत गगन ॥

४

मो नयना मृग मोरि है सब तनमें बहराय काम कियो
लहलाय द्रष्ट घात लगाय पिय चकचौंति कीने ।
चोप तुरङ्ग चढ़ाय पीत पटा बैठाय सकुचत छोर छिड़ाय
अपनी चाट चटाय क्षुद्रा बढ़ाय कपट फन्दो
उतराय छव दिखाय तुम और छोर दीने ॥

५

सो है हसन री तो कूं दशन झलक यों लागत
मानो चन्द मध बीज चमक गई ।
अतही सुन्दर बतीसी मेरे जान लछन बतीसी को
सभाकों प्रतिबिम्ब देखत हो नवल कमल बीच
हीरा खान भई ॥

६

सुध आइयें आइयें जु उनके जिय कछु मेरी सुध ।
अवध बदी मोसों दुती न लगाई है प्यारे नीकों
छबसों पिय मेरे गृह धाइये जु० ॥

परज—तिताला

जोगी जती सती सन्यासी अवधूत जोग अडम्बर
भावै तू जो भेख धरे ।
जपतपतें सञ्जम जमकत दुख हरे करत सब सुख
दुख हरे ॥
मन सुमरण ज्ञान ध्यान चित न हरि हरि करे।
कहे बैजु बावरे रसना रटना नाम जातें पाप
सब हो टरे ॥

२

मन जोगिया आसन कीने चिबुक गुफामें जाय ।
रही समाय लगायके तिल मुल द्वारे लाय ॥

३

शरद-शशीवदनी सारदा सरस्वती हंसवाहनी धरे
बीन वरदानी ।
वाक्‌वाणी शेष सुरता सबनको जीवनमूल देवो तैं
जगजानी ॥
जय जय जगदम्ब निरालम्ब अवलम्ब तुही तातें विनो
बार बार जोर जुगपानि महारानी ।
जीवन धन तुव प्रसाद पावै नाद वेद भेद गोबिन्द
गुण गाय गाय पीत मनमानी महारानी ॥

४

जित देखों तित कृष्ण मनोहर दूजो द्रष्ट ना परे री ।
चित सुहावनो छवि अति सुन्दर रोम रोम
रस हो भरे री ॥
शिब विरञ्च जहां ढूंढ़त फिरे सो मन मेरे अरे री ।
निशदिन राचो गुण गोविन्दके और उपाय न करे री ।
जा कारन हां अटको फिरो जगमें पायो
निज घर मेरे री ।
परमानन्द लह्यो सुख दरशन चित कारज सबही
सरे री ॥

५

श्याम सखी नीके देखे नाहीं ।
चितवत ही लोचन भरि आवत बार बार पछताहीं ॥
कैसेहुं करि एकटकमें राखति नेकहि मैं अकुलाहीं ।
निमिष मनो छवि पर रखवारे तातें अति ही डराहीं ॥
कहां करे इनकों कहा दोषन ईन अपनोसी काहीं ।
सूर श्याम छवि पर मन अटक्यो उनि सब शोभा लाहीं ॥

६

गोपी श्याम रङ्ग राची ।
देह गेह सुध बिसारी बढो प्रीति सांची ॥
दुबधा डर दूरि गई उघर उघर नाची ।
हरि तजि जो और भजे पुहमो लोक खांची ॥
माता पिता लोक बन्धुको बात नहीं बांची ।
सकुच जबहो उर बार बार झांची ॥
अब तो छिन हू न छांड़े नाहि न मत कांची ।
सूर श्याम पद पराग ताहो मैं मांचो ॥

७

मेरो लाल रंगीलो रंग भरो ।
जो भावे सो करहु किशोरीमोहन तेरे वस परो ॥
जमुना-पुलिन निकुञ्ज-भवनमें सर्वसु सचो तोकों धरो ।
विट्ठल विपुल विनोद विहारी सगुण गांठो देवर वरो ॥

८

मेरो शुभ मतो कहियो हरिसों जायके ।
दूध भात कुञ्जनमें खाते पहले हम हीं खवायके ॥
जलको प्यास जबे हरि होती पीतें हम हुं पिवायके ।
अब तो छान छान जमुना जल पीवत है अचवायके ॥
वहां जाय कुवरो नहीं उबरो ब्रजको सबै भुलायके ।
अब सुनियत हरि घण्ट बजावत तिन्ह तिन्ह
वार नहायके ॥
नमस्कार कहियो सूरकी कबहीं अवसर पायके ।
जप लगबै कों लगी है बोलें यासह अचुए खायके ॥

परज—चौताला

हो लाल आइए मेरे गृह धरिए द्रगन पर
चरणकमल ।
करोंगी बधाई आनन्द मन भाई शुभ दिन घरी
पल मुबारक करिए कृपा प्राण प्यारे नवल ॥

२

कारे री कान्हा कुञ्जन कारे नयन अञ्जन कारे
कांधे कामर सोउ कारी री ।
भौंहे कारी द्रग कारी मुरली अत हितकारी
धुनीमें कस सोउ कारी री ॥

३

ए सखी कारो री सारो सोहत अङ्ग कारो हो
कारो है सिङ्गार ।
कारे हो रेष मिशि कारे हो नैन अञ्जन कारो हो
मुख मञ्जन कारे हो कृष्ण सों करत प्यार ॥

४

सोहे सीस मुकुट श्रवण कुण्डल भाल तिलक
गुञ्जमाल पीताम्बर कट काछनी विराजे ।
शङ्ख चक्र गदा पद्म कर मुरली अधर धरी वृन्दावनचन्द्र
मध श्रीगोपीनाथ छाजे ॥
धनुष वज्र जम्बुक फल जर्द्ध रेष त्रिकोण षट्कोण
अष्टकोण मीन चन्द्र जब भ्राजे ।
गोविन्द है मदनमोहन श्रीनारायण वद्रीनाथके प्रभु
सप्त सुर छाय रहे लेत तीनो ग्राम मधुर मधुर गाजे ॥

५

प्रथम आदि शिव शक्ति नाद परमेश्वर नारद तुम्बरु
सरस्वती फणपतिरे ।
अनाहत आदि नाद गुणसागर स्वरूप ब्रह्मा विष्णु
महेश लक्ष्मनरे ॥
आदिधरणी शेष आदि चन्द्र सूर्य आदि पवन पानी
आदि अनगनरे ।
आद बैजूके प्रभु कब गुरु प्रसाद सुध बुध
मत गुन गनरे ॥

६

पलकन जुहार कर ले हो आये घर तेरे मुरार ।
नीची मार किए ऊंचे न चितवत काहे बढ़ावत रार ॥

७

मोकों तो जब लग चैन तब लग देखों तुम्हांरो
दरसन ।
नैननके तारे प्यारे कर राखों जेहर धन्य धन्य रावरे
तुज चरण परसन ॥

परज—तिताला

जोगिया मन मेरे चित भटकत अलख ।
आप आपी लख ज्ञान सुमरनको करत सो तो
सब व्यापत है रोम रोम नख सिख ॥
घट पर घट घर आंगन जित तित पवन वृक्ष
सब वाहो सुरत रख ॥
चन्द्र सूर्य उड़गण मदगण पशु पक्षी जल थल
बिच लख ॥

२

मोहे कोउ देहो बताय मोरे कल न परत छिन
वा बिन ए जोगियारा ।
सैली स्याम भभूत मुख सोहे नैन चातुर मन
भोगियारा ॥

३

ए हो दच्छिण सारो दलमलो वाको चहुं देश
भयो नाम ।
जब हीं चढ़ो महा मरदान एक दरस परस सब काम ॥

४

जाके दान खिर रह्यो मेदनी एसो वीरभानको नन्दन
राजा राम बघेलो वीर।
इन्द्र नाहीं धरत धीर दान वाको सुनि शेष
उकसत बलवीर॥

५

नाद ब्रह्मको साधो आराधो।
योगिनको गत परम पद पावे अनहद आहद
उपवेद पठंते तत वित त घन सिखर प्रवाध्यो॥

६

बरसानेते आये अरसाने हम जाने जू लक्षण तिहारे
पहचाने।
कहूं काजर कहूं पीक लीक अनगन सुभाय
मोपै न जात बखाने॥
नैनन नींद ध्यान मन हिरदे बसत तीय ताही के
लगत गुण गाने।
धन्य रे नेह तोहे एसे नटनागर छल कर नाच नचाने॥

७

मनमोहन देखत ही सजनी क्यों गई नन्दके द्वार री।
दशन हसन कर बसकर डारो कासे करौं पुकार री॥
मोहन सोहन जोहन छवि निरखत कौन मन्त्र पढ़
डार री।
रागरङ्ग मुरली अधरन धर मधुरी तान उचार री॥

८

श्याम सुजान आए सखी मेरे अब हौं उठ चल
हिल मिल करो टैल तन मन धन सब वार वार
डारो फेरे घने रे।
वे महाराजाधिराज कृपाल दयाल कृपासिन्धु
करुणामय जब गुण अवगुण सब ही विसरे राखे
अपने शरण तरे रे॥
धन धन भाग सुहागरी सजनी धन घरी पल मूहूर्त
आज सांवरे रावरे चरण धरे रे॥

नन्दनन्दन आनन्द कन्द मोहनी मूरत ब्रजराज चन्द्र
मेरो मन रस बस कर लियो मन चीते काज
भये मेरे रे॥

९

श्यामसुन्दर मन मेरा सोहावे।
सोहनी सूरत और माधुरी मूरत आलो हंस रस
बस कर कस भुव नैना निरख निरख द्रग बांको
चितवन सों मोहे सखी जो आवै॥

१०

एरी मैं क्यों गई जमुना पानी।
देखत ही मन मोह लीनो मेरो सांवल हाथ बिकानी॥
मेरे मन बसो है सांवरो सूरत लोक कहे बोरानी।
प्रकट भई बलिहार श्याम सों लागी प्रीत न छानी॥

११

न जानूं तेरी यह माया कामी कुटिल कुचाल
कुसङ्गत में ही भ्रोरघुराया।
करत करे फिर मेटे काहू भेद न पाया जो
बलिहार द्रवो दीन पर गुरुमुख भेद बताया॥

१२

वृन्दावन फूल रही फुलवारी।
विहरत लाडलो लाल अस भुज चांदनी रात
उजियारी॥
झुक रही श्याम लता द्रुम द्रुम को
पल्लव क्रान्ति निहारी।
कुञ्ज निकुञ्ज विराजत राजत देख विहार विहारी॥
सङ्ग सखा नव रङ्ग रङ्गीलो नख सिख रूप अपारी।
निरखत रसिक खुशाल सदा सुख ओराधे बनवारी॥

१३

कारी पीरी धुंधरी धुमारी पिया प्यारी घटा घिर
आइयां।
बोलत मोर पपोहा कोकिला कोयल कूक सुनाइयां॥
वृन्दावन में छाय रही छवि ख्याल खुशाल लुभाइयां॥

१४

राजत ललित रैन चांदनी छिटक के खिल रहे
तारे तूं आ मिल मेरे यार पास रहो प्यारे ।
बिच रङ्गमहल छवि छाई फूलों की सेज बिछाई
उर मदन उमग उमगाई नहीं रोकी रहत रुकाई
तेरी चितवन उरझि प्राण जानी सुलझारे ॥
वे बातें मोहे सुनावो जो सैनन माह बतावो
चित अपनी चाह लखावो जानी सनमुख आवो
उर लगो हमारे आय कांन्ह सुकवारे ।
मैं कहती हूं मेरे जानी प्रेम प्रीतकी बानी
उर नेह चोप उमगानी तू लेना श्याम मेरी मानी
मेरी नई चाहकी चाह मेन लिपटारे ॥
काम जो ऐसका आया रस ख्याल खुशाल बनाया
मनमोद काम प्रगटाया क्या बखत सुभूका छाया
साअली महोबत कली खिली सुसुकारे ॥

१५

प्यारो पिया सङ्ग करत बियारी ।
नानाविध पकवान मिठाई कई कई रङ्ग संवारी ॥
अनगिन जिनस सलोनी चाषत सुसकावत सुकुमारी ।
निरखत रसिक खुशाल सदा दोउ नव निकुञ्ज
छवि छारी ॥

१६

व्रजमें कुञ्ज कुञ्ज छवि छाई ।
रास समाज कियो नन्दनन्दन लीला ललित बनाई ॥
फूले फूल नवल द्रुमनन पर गुञ्जत मधुप लोभाई ।
बोलत पञ्छी रङ्ग रङ्गके सुगन्ध पवन महकाई ॥
झुक रही लता कूल जमुनाके पुलत पिवत सुहाई ।
प्रीत खुशाल श्रीराधावर सुख रसिक फल पाई ॥

१७

दूले जदुराई सुखदाई वो मनमोहन कुंवर कन्हाई वो ।
रासमण्डलमें छाय रहो छवि अङ्ग लखि अनङ्ग
लजाई वो ॥
रूप मोहनो मदनमोहनको उपमा वरनि न जाई वो ॥
विलसत सुखरस केलकुञ्जनके शोभा व्रज प्रकटाई वो ।
गावत राग रागिनी सखियां आनन्द हृदय बढ़ाई वो ॥
ख्याल खुशाल निरख पिय प्यारो जोवनके फल
पाई वो ॥

१८

सखी वनमाली विहरे विपन मंझारी ।
निरखत द्रुमद्रुम लगी फूल फल हरियल झुक
रही डारी ॥
मन अति प्रसन्न सुगन्ध सुगन्धित वोनत सुमन अपारी ।
हार हमेल बनावत निज प्रिय रसिक खुशाल लुभारी ॥

१९

बना दूलह अवधविहारी वो दुलहन जनकदुलारी वो ।
जनक नगरमें छाय रहो छव निरखत नर औ नारी वो ॥
शिर सोनेका सेहरा विराजत गल फूलोंके हारी वो ।
सुए वसन अङ्ग आभूषण पहरे नख सिख रूप अपारी वो ॥
विश्वामित्र वशिष्ठ आदि सब देत असीस उचारी वो ।
नौबत बाजे घन जो गाजे गावत मङ्गलचारी वो ॥
करत नोछावर दशरथ राजा दरब अनेक लुटारी वो ।
पावत रसिक खुशाल जुगल सुख प्रेम प्रीत
रस सारी वो ॥

२०

छिप छिप कहा करत नन्दनन्दा कौन चूक जो हमें
बतावो रूठ रहे व्रजचन्दा ।
महा प्रवीण सकल विद्यामें कीजी वेग आनन्दा ॥
ख्याल खुशाल कुड़ो जनमें रसिकन आनन्दकन्दा ॥

२१

आवत मृदु मुसक्यात किशोरी ।
रासविहार करन उर रुच मन निरख सरद निशा
उमग उठोरी ॥
अति विचित्र प्रवीण वैरन धन्य आन अब छाई
एकठोरी ।
जो शशी पूरण उदित पूर्व दिशि चलत प्रकाश
करत चहुं ओरी ॥

भूषण वसन दिव्य अङ्ग राजत साजत शोभा मदन
करोरी ॥

२२

मोहे धनुष चढ़ाए पल शिर तुरङ्ग नयन रसराज चटोरी।
चावक अलक लिए सुख राजत नेह पंकर चितवन
कर डोरी ॥
श्रवण कुण्डल निशान मनसिजके फहरत सुन्दर
कपोलन ठोरी ॥
अवली सुभग सुहावन केसर नथ मुक्ता लालरो
ठगोरी ।
अधर अरुण दमकत दशना बोली बोलत मोहनी
मन्त्र पढ़ोरी ॥
विवस करत पिया प्राण मनोहर प्रेम प्रीत
गुणसिन्धु झकोरी ॥
सङ्ग सखी नव रङ्ग रङ्गीली आवत गावत व्रजकी खोरी।
ख्याल खुशाल ध्यान निशवासर चरणकमल सों
चित उरझोरी ॥

२३

पियाजीके चरणन की वलिहारी।
जिन चरणन शरणकी महिमा गावत वेद अपारो ॥
जिन चरणनका ध्यान किएतें तुरत मिल कुञ्जविहारी।
भ वदुख मेटन नाम मनोहर श्रीराधा सुखकारी ॥
र सिक खुशाल मनोरथ पूरन कारन विपिन विहारी॥

२४

घर आवो सजन मिठ बोला।
तेरे वे खातर सब कुछ छोड़ा काजर तेल तमोला ॥
जो नहीं आवे रैन बिहावें छिन मासा छिन तोला।
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर कर धर रहे कपोला ॥

२५

दर दो दम दर दो दर दो दम दर दो दम आहे आहे
दर दोदम।
गनीमते सुमर ए शमा वसलो परवानाको दम
आ मिलाता शबोदमन ख्वाहदमन्द॥

२६

आहे नादृदोम तन दिरना तन दिरना यललो यला
यला ललेयारे यल यल यल यल लले।
मुकयदान तो अजो करे गेरखा मुसन बखा तेरेके
तुंहि दिगसारा फ्रासन् ॥

२७

मंजड़ी रात आइला छे जी।
हाथो आवे तिहारे हारे नो साहबदीन सुभ दिन
सुरङ्ग हाथमें कमदानिया सात आइला छेजो ॥

२८

मरदाना हो राजेन्द्र माणे वारी केसरिया राजेन्द्र।
बागां थांने ढोलण आइला हो राजजी राजेन्द्र ॥
राजा थांरे घोरलारो हो राजेन्द्र थांरे घोरलारो
बाजो परता लाहो सक्त माणे वाजे छे घूंघरू हो
राजेन्द्र ॥

२९

दारुडा राज पीवो क्यों न दारुड़ा राज लाड़ो
राज देशां थांने दारुड़ा मारुड़ा।
म्हेंतो थांसे अरज करे शां हमलांरा हात घालो
सालुड़ा मारुड़ा ॥

३०

हो राजा मैं वारो वारो जावां गाहो राज थांसों
म्हांरो मण लाग्यो मैं कांई जाणो।
अमलांही सेंज पर सुखवा करोलो सायबां बैठो
पटी तले चपोकरां थांरो ॥

३१

होरी तार ठाड़े प्यारो पिया कुञ्जन वन में गौर
श्याम शोभित तनमें।
उन पहरी वाको मोतिन माला उन पहरो कुण्डल
श्रवनमें ॥

३२

सइयां विन घर मोहे रह्यो न जाय को मोरे
प्रीतम देह मिलाय

वारे सइयां परदेश निकस गए समझ समझ
मोरा जिय पछताय।
दिन न चैन निश नींद न आवे कोटि करो नहीं
मन ठहराय॥
भुषण भार शृङ्गार सबे सखी अस जिय होय के
देहों बहाय।
जावक सो पावक सो लागत कछु निल नागन होय
डस जाय॥
लोग कहे धन भई है बावरी हियकी विथा
कोउ नहीं लखाय।
यह दुख कासों कहों सुन सजनी नवल श्याम सों
कछु न वसाय॥

३३

फरकत वाम नैना प्यारीके।
आवन हार भए मनमोहन हर्ष भए सब नर नारीके॥
कसमसात अंगिया बन्ध टूटत फरहरात
अञ्चल सारीके।
लगि लगि श्रवण भ्रमर गुञ्जारत सगुन होत
गिरवरधारीके॥
उड़ो काग आबे मनमोहन भाखत युवती
बारबारीके।
देहों भात दूध सिघागरी जुर अञ्चल अपनी फारीके॥
होत मगन मन प्रीत शकुन शुभ भयो प्रेममद
अधिकारीके।
रामदास दरस यह मनमोहन मिलवे तेई
चातक गति घन कारीके॥

३४

सतगुरु पूरा होय दयाल एक पलकमें करे निहाल।
आदि पुरुष उपजायो नाद विन समुझे वो पूरी व्याधि
यन्त्री मन्त्री नृत्य कर रागी उनकी
सुरत न आवे ताल॥
ब्राह्मण क्षत्रिय शूद्र वैश्य सैयद मङ्गल पठान कुरेश
चाल बड़ोंकी छाड़ दई है अपनी अपनी कहत
निकाल।
ब्रह्मज्ञान क्षत्रियपन छोड़ा युद्ध करन तेई मुख मोड़ा
कहा भयो खड्ग कटारी बांधे सजे धनुष औ
बरछी भाल॥
धोती कण्ठी औ जप माल छापे तिलक
लगाये भाल।
धरम चीन्हे मल मल न्हाय मन भीतर वस रहो
चण्डाल॥
रती न माया मन सों त्यागी बाहर भेख धरो वैरागी
तृष्णा भूख रहे नित लागी सों क्यूं करे भक्तका
ख्य़ाल।
पञ्च इन्द्रिय वस हो हो रोगी तो शिव कैसे पावे जोगी
कहा भयो विभूति रमाय मुद्रा धारे आंखे लाल॥
संन्यासी की रीत न जानो जटा बढ़ाय भये निर्वानी
खैंच खाल सिंहनकी आनी बैठा तले बाघम्बर डाल।
भगवा भेष दण्ड कर मांय टुकड़े कारण घर घर जाय
तिन की दण्डी कैसे कहिये डोलत मन नहीं
रखी सम्भाल॥
मू बांधे और जूठा खाय बाल खसोटे कबू न जाय
प्रभु त्यागन जग स्थिर कर माना अतिही कुटिल
महाविकराल।
पढ़े सुखमनी अमृत नाम करे खोटाई आठो जाम
अपने मनमें सिद्ध कहावे क्यों कर उतरे पार अकाल॥
घरमें तिरिया व्याही आवे आकर पीपर हुकम चलावे
माता पितासे जुदा करावे यह देखो कलियुगके ख्य़ाल।
जगत् बीच रीति भई नई लोक लाज आंखनतें गई
लख उपकार जो होय शिरपे एक घड़ीमें देवे डाल॥
जा मधु पीवे जीभ सुहाती चोर पारनिन्दक अपघाती
जन्म गंवावे फिर पछतावे जब शिरपे आ
कड़के काल।
अहङ्कारमें ऐंड़े फिरे ठगठग लाय उदरको भरे
अन्तकाल कोई नेक न चीने आगेको कहा
होगा हाल॥
याचक कों दे यश नहीं लीनो पुण्य दान उपकार न कीनो

जो काहू सों बांट न खायो कहा भयो
वर सञ्चो माल।
या देहीको बनत बनावे भूषण वस्त्र बहोत उड़ावे॥
तापर अतर सुगन्ध लगावे खास निकल गयो रह
गई खाल।
जो जो दृष्टि बीचमें आई सोई देख हदीस बनाई
प्रेमी प्रभुको आज्ञा पाई नहीं तो हमरी कौन मजाल॥
सत् गुरुका जो शब्द विचारे कामकों जीत क्रोधकों मारे
दया सन्तोष गरीबी धारे सोई कहिए सिक्ख
खुशाल॥

२५

सतगुरु जारे जग जञ्जाल कृपा करके किए निहाल।
कण्ठो बांध कियो जिन सेवक नाम सुनायो श्रीगोपाल॥
ओंकारको तिलक बतायो नाम जपनको तुलसीमाल।
पूजाकी सब रीत बताई ऐसे क्रिया करो तिरकाल॥
तिमिर दूर कर ज्ञान दिढायो घटमें दीपक दीनो बाल।
महान भावनके पद बतलाए समय के सुन्दर ख्याल॥
सप्त सुरन और तिन ग्राम लो राग रागिनी और
सुरताल।
ऐसे डण्डो रामगुरु स्वामी विष्णुदासको करि
प्रतिपाल॥

२६

माई इन अंखियन लगन लगाई।
पैले ही जाय आप ही उरझी फिर मोको उरझाई॥
विन देखे सुखकमल कन्नोनो मोपे रहो न जाई।
नागरीदास कई विच पावक कैसे रहत छुपाई॥

परज—धीमा तिताला

मन मेरोरी बरजो नहीं माने।
प्रकट करत है अन्तरको सब रहन न देत नछाने॥
विरह बाय बीरानेको गत जो जाने सो हो जाने।
खिजो रहे तन जाय लगत है नागर रूप निशाने॥

२

आवे रसिया मोहना गज चरावे छहो राग सुध
श्रीमुख गावे
लकुट कामर मुरली कर लिए दोहना सोहना मोहना।
मुकट झलक दृग हंसनि अलक छवि अङ्ग अङ्ग
नखसे सोहना मोहना॥
यह छवि निरख शिव ब्रह्मा सुर नारद वीन ले
सुध जोहना।
दीनदयाल ख्याल अब गतको अगम अगोचर ताहे
नचावत ग्वाल बाल सङ्ग गोहना मोहना सोहना॥

३

आधीरात चांदनी छाय रहो।
अति सुकुमारी लड़ेती प्यारी प्रीतम उर लपटाय रहो॥
मनसों मन नैनन सो नैना तन सों तन उरझाय रहो।
नागरिया नागर दोउ राजत लाजत मृदु
मुसकाय रहो॥

४

कुञ्ज पधारो जी रङ्ग भरो रैन।
रङ्गभरी दुलहन रङ्गभरे दुलहा श्याम सुन्दर सुख दैन॥
रङ्ग भरी सेज रचो है रङ्ग सो जहां रङ्ग भञ्यो
उलहत मैंन।
रसिक विहारी प्यारी दोउ मिलकर करो रङ्ग
सुख चैन॥

५

चतुरङ्ग गायन गाइये रिझाइये रघुनाथकों स्वर तान
ताल सों राग डाट सो स्वर सम सो मान मनाइये।
तननन नूं द्र द्र तूं तदीम तदीम नादर दर दर द्रद्रद्र
द्रद्रतूं तनुम उद तद्रनूं द्रतनूं यलल यललन्लूं लाइये॥
सा नि ध प म ग रे सा सा रे रे ग गम म प प
ध ध नि नि सस प सस प स धाइये।
सप्तस्वर तीनग्राम एकईश मूर्च्छना गुणीजन सममान
ज्ञान पाय परस पाइये॥

६

ऐय ऐय्य ऐय ऐय्यं धा धिलांगता धिधि कुकु झाइये।
धिकिटित छ्त न थूंन थूंन मृदु मृदङ्ग मिलाइये॥
परन प्रति प्रति पधति मन उवति यदुराइये।
पद तराना पराक्रम प्रेमरङ्ग लवट सुनाइये॥

७

सिया रघुवरके चरण उर ध्याऊं ।
दशरथनन्दन जनकनन्दिनी दोउअनको शिर नाऊं ॥
और नाम तारा जो जानो राम नाम चन्द्र ज्यों गाऊं।
जानकीदास राम राम इति शङ्कर शाख सुनाऊं ॥

परज—तिताला

चरनन सीस धरि दे वो देवा तेरे ।
मधु कैटभके मारन कारन हरिको जाग्रत दे दे वो० ॥
तारे देव मार महिषासुर मारे धूम्रलोचन चण्डेदे वो० ।
सब वलदान भए बलगल सुन शुम्भ निशुम्भ डरेदे वो० ॥
ज्यों ज्यों मारे त्यों त्यों बढ़दे रक्तबीज सुखमें दे वो०।
शुम्भ निशुम्भ मारे राक्षस कुल वाहन सिंह सोहदे वो०॥
ब्रह्म ईश जगदीश इन्द्र सुख जय जय कार करेदे वो० ।
देवो सुरत समाधि वेश वरदे तुसो बिन्द पहाड़ा रहेदे वो० ॥
प्रेमरङ्ग कहि सप्त शतिक जश शरण तु सांड़ां लहेंदे वो० ॥

२

प्यारी तेरे नैणां लगेंदे केबर वारो ।
नैना नाल लगदे वारो दिल बिच चुभदे वो प्रेमरङ्गदी जिन्द वारो ॥

३

भज मन कृष्ण गोकुलके वासी ।
मोर मुकुट शिर छत्र विराजे कुण्डलकी छवि खासी ॥
वंशीवट कट निकट यमुना तट वंशी बजावे सुखराशी ।
सांवरी सूरत देवकृष्ण मन वसो जन्मको दासो ॥

४

कान्हा रसिया वृन्दावन वासी ।
यमुनाके नीरे तीरे धेन चरावे मुरली बजावें मृदुलासी ॥
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे श्रवण कुण्डल झलासी ।
मीरांके प्रभु गिरधर नागर विना मोलको दासी ॥

५

लागोलो म्हांरो प्राण सजनी श्याम सुन्दर नट नागरसों ।
नेक न होत पल ओट सांवरो नैन सैन व्रजराज कुंवरसों ॥
एकटक रहत निशवासर गुरुजन निडर निडरसों ।
हो तन मन धन ऊपर वारो चतुर सुवर युगराज सुन्दरसों ॥

६

आवो शलोना श्यामजी थांने सुकडी आपुरे ।
शुकड़ी आपु भुकड़ो भागु है इड़े राखुरे ॥
आतां जातां आंखड़ लो लागो केण पेरे लाज ढापुरे ।
धमक घुवरड़ो छन्द हुतो घूंघट मा ढापुरे ॥
श्यामाटे नथी घेर आवो नरशोना सामो हैड़ो चापुरे ॥

७

रचो री वृन्दावन रास गोविन्दा ।
चलो सखी देखन चलिये नवल अनन्दा ॥
खञ्जिरी सारङ्गी बाजे और मोरचङ्गा ।
हैलो धन वंशी बाजे मधुरी मृदङ्गा ॥
नारद आए ब्रह्मा आए गौरी गणेशा ।
नन्दी चढ़ कर शम्भू आए अद्भुत वेषा ॥
यमुनाके नीरे तीरे शीतल सुगन्धा ।
ए पद गावे स्वामी रामानन्दा ॥

८

निरख ऋतुराज वारोरी निरतत रासविहारी ।
सब गुण भरी किशोरी राधा प्रीतमके सङ्ग प्यारी ॥
तातथेई ततथेइ बोलन सुखते पग नूपुर झनकारी ।
उरपति रपगत लेत सुलेप सो सरद रैन उजियारी ॥
बाजत बीन मृदङ्ग सुरस सुर मिल गावत ब्रजनारी ।
केलकुञ्ज वृन्दावन वीथिन सुख वरषे वलिहारी ॥

९

अंखियां श्याम मिलनकी प्यासी आप तो जाय द्वारका छाये लोक करत मेरी हांसी ।

आंबकी डारी कोयल बोले बोलत शब्द उदासी ॥
मेरे तो मनमें ऐसी आवत है करवत लूं जाय कासी।
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर चरण कमलकी दासी ॥

१०

लेवो रे भैया गोविन्द नाम हरी।
ज्या मुख में नहीं नाम हरिको वा मुख धूल परी ॥
राम कहत कछु दाम न खरचे नहीं छूट परे गठरी।
कहत कबीर सुनो भाई साधो जे बोले हरी हरी ॥

११

गऊ चरावनहारा मेरी जान वंसी वाला नन्ददुलारा।
मोर मुकट औंर कम्बेनी कमल मुरली मधुर बजावे
नन्द महरदे धेन चारायें साड़ा चितचोरा मेरी० ॥
लोकांदे घर रातनो चोरी में लुटिया दिन बे चोर
असांड़े मन विच बसदा उस बिन पलक नथारा मेरी०।
आवन दे सोवादे नो कोतें एक न होया पूरा
तेरा दोष नहीं कछु प्यारे भाग असाड़ा कुड़ा मेरी० ॥
ममा प्यो दी मैं खरी पियारी साहरड़े मनमानी
कन्थ बिना कोइ बात न पूछे इमें उमर बिहानी मेरी०।
देश बिगाणा लोगा धिगाणा कौन करे दिलदारी
तैं बाजु साड़ा होर न कोई मोहन बुधविहारी ॥

१२

मेरी जान लोई वाला तू यार तू साड़ा बे भूरेवो
कमल वारा मेरी जान०।
काले बागांदी काली तूती कुदरत माल पवाई
उड़ गई तूती टूट गया पिञ्जरा तोड़े चला आशनाई
मेरी० ॥
काहे कारण सूरमा पांवा काहे कारण न्हातो
तफलांदी गल हार हमेलां मेनू बितरी दो
नथबेली मे०।
काले कगांदावी सोयर काला डरदी बाल न गुदधी ॥
चलोनी सइये जोर्थे बेखन चलिये आशक शूली
चढ़दा शूली खिल खिल हंसदा मोतों मूल
न डरादा मे० ॥

१३

चारो राजकुमार शिकार सों आवत है जू।
अवध मारग मानुष खरे अभिनव सज सिङ्गार शि० ॥
बाल वृद्ध तरुणी घरुणी मिल निरखत हर्ष
अपार शि०।
सुन सुरपुर सो सुरस बधाए जय-जय करत पुकार शि० ॥
पटरानी निज द्वार बधाए भरभर मोतिन थार शि०।
रावण असुर संहारण हारे बार बार बलिहार शि० ॥

१४

सुनियो बिथा रे गुसाईं व्रजको।
रथकी ध्वजा पीतपट भूपन लखत सबी उठ धाईं
व्रजकी ॥
जे तुम कहिये जोगको बातें से सब उनहि
सुनाई व्र०।
श्रवण मूंद गुण रूप निहारत नयनन नीर भर आई ॥
बहोर एक सन्देसो यशोमत कहत दूरलो चाई।
कछु आतो नाती हतो हमोसन दीनबन्धु बिसराई ॥
सूरदास स्वामी बालपन में तब तुम धेनु चराई।
सो अब धेनु ग्वाल नहीं घेरत मानो भई है पराई ॥

१५

सुन लीजे विनती हमारी मैं शरण गही है तेरी।
तुम केते पतित उधारे भवजालसे पार उतारे
मैं सबको नाम न जानूं मैं कोई कोई भक्त बखानूं ॥
अम्बरीष सुदामा नाम पहुंचाए हैं निजधामा।
प्रह्लाद टेक तुम राखो जे जानत हैं सब साखो ॥
तुम खेत धनाको जमायो प्रभु विनही बीज उपजायो।
पाण्डवनकी करी सहाई द्रुपदाकी लाज बचाई ॥
ध्रुव पांच बरसको बाला ताहे दरस दिए गोपाला।
सदना से ना ना नाऊ प्रभु बहोत किए मुकताऊ ॥
मीरां तुमरे रङ्ग भीनो नरसिंहको हुराडो लीनो।
करमाको खींचड़ी खाई गणिकाह पार लगाई ॥
शिवरीके फल तुम खाए त्रिलोचनके घर आए।
में काम क्रोध मद घेरा प्रभु ललदही कर निरबेरा ॥

तेरो शेष आदि यश गावे तेरो वेद पार नहीं पावे ।
कृष्णानन्द यश गावे तोपि बार बार बल जावे ॥

१६

आनन्दे नाचे जटाधर रे कैलासेर माझि ।
फणीर माला फणीर बाला फणीर कुण्डल काने ॥
दुई आंखी मुदिये हरिध्यान मने मने ।
वामे शक्तिधर दक्षिणे लम्बोदर परमानन्दे माति
बामे अङ्गे शोभे गौरी दक्षिणे गोबिन्द तार माझि
भोला नाचे ॥
देव सदानन्द नाना यन्त्र बाजे भोमर गाजे
त्रिताल धरिया नाचे कालशशी मोर बिछे आन० ।
डिमि डिमि डमरु बाजे रामनाम लया सिङ्गा
माथार ऊपरि जटार भितरी बिराजित गङ्गा
सुरधुनी नाचे नारद रङ्ग साजे करि हरिध्वनि
बीणा बाजान सुनि आन० ॥
महादेव शिव शम्भु कैलासेर पति महेश्वर
त्रिपुरारि ईश अम्बापति
रास ताण्डव नाचे धुमकिट मृदङ्ग बाजे नन्दो भृङ्गी
साज साजे बम बम बम बोले बोले आछे हर हर
कहे डोले डोले गिरिजा देखे मोहे आ० ।
हरिके कहे द्विज नित्यानन्द भज विश्वनाथे
एड़ाबे यमेर ज्वाला चलि देशो पथे
हटावे मेरु मध्य भज गोविन्दपद आनन्दे वल
हरि चलिवे स्वर्गपुरी ॥

१७

पापी महा सतावो । अकलङ्की महाकलापी ॥
सुखदेव गुरु मैं पायो । जिन तेरो हो नाम बतायो ॥
चरण दास आपना कीजे । प्रभु भक्तिदान मोहि दीजे ॥

१८

कारे सबही बुरे रे ऊधो ।
कारनकी प्रतीति कहा बेखत जतन करे रे० ॥
कोयलके सुत परम पियारो बारे उदर भरे रे० ।
जाय मिलो जब कुल है आपनो कागा जाय करे रे० ॥
जैसे मधुकर जाय पद्मपर मदमाते मदन भरे रे० ।
ले सुबास अनत उड़ बैठत ऐसे कुटिल खरे रे० ॥
जे बातें प्रभु जोसे कहियो प्राणन जांच परे रे० ।
धरो उतार सुखते गठरो बहोतक बोझ भरे रे० ॥
हमको योग भोग कुबजाको धन्य भाग हमरे रे० ।
सूरश्याम मधुपुरी सिधारो व्रजबाल बंशी बिसरे रे० ॥

१९

ऊधोजी कहे ठकुर सुहाती ।
हमको योग भोग कुबजाको सुन सुन फाटत छाती ॥
जो यश कियो सोई फल पायो सोचत
दिन अरु राती ।
सूरदास दुख तब ही मिट है जब प्रभु लग है छाती ॥

२०

घाट पर ठाड़े मदन गोपाल ।
कौन यत्न करि भरों यमुना जल परे हैं मेरे ख्याल ॥
एक चितवनि दूजे हियको रहो लगन उठत
प्रेमकी जाल ।
अवार भई घर सास रसी है जान देहु नन्दलाल ॥
इतनो सुन छाड़ो नन्दनन्दन गोपी करी बेहाल ।
परमानन्द स्वामी मन हर लीनो वेणु बजाय रसाल ॥

२१

कदम तले ठाड़े श्रीमदनगोपाल ।
आस पास सब ग्वालमण्डली बाजत वेणु रसाल ॥
मोर मुकुट कुण्डलकी झलकन मृगमद तिलक
लिलार ।
आशकरण प्रभु मोहन नागर प्रेम मगन व्रजबाल ॥

२२

गोविन्दा गुमानी असाड़ो गली आउरे ।
हे प्रीतम तुज विन अति व्याकुल जैसे मीन विन
पानी अ० ॥
मोर मुकुट घुंघवारी अलके निरखत रूप लुभानी अ० ।
रसिक प्रीतम सुखसागर मोहन दरसन दीजे
दधिदानी अ० ॥

२३

कान्हा थारे श्रीलभहारी।
दूध दही घर माखन म्हांरे और मिठाई सारो ॥
आ मारग न बजैये कुंवर जो हूं तुहें राखूं बारो।
अनदीखानी दोष लगाड़े ए हैबो छे व्रजनारो ॥
तू तो व्रजनो ठाकुर कृष्णजो हूं थारी वलिहारो।
नरसीनो स्वामी भले मलीयो हा हा हूं अब हारो ॥

२४

हरि सुमर सुमर भव तरणा हो भला करणा।
कालजाल मद लोभ मोहमें काहे पच पच
मरणा हो० ॥
झूंठ सांच कर कर जग ठगिया एक उदरके
भरणा हो०।
विषय विकार कुमति सङ्गतको देख दूरसे
डरणा हो० ॥
यह संसार सार एक श्रीपति समझ परे क्यों न
चरणा हो०।
कामिनी कञ्चन देख लुभाना विसर गयो
हरिशरणा हो० ॥
यह उपाय दाव तो पायो चिन्तामणि चित
धरणा हो०।
भाव भक्ति ऋतुमान युगल पद जो चाहे भवदुख
तरणा हो० ॥
कामक्रोधको लहर ज़हर सब विषय आंच क्यों
जरणा हो०।
राधाकृष्ण कल्पतरु शीतल जहां जाय तन
परणा हो० ॥
रतन जनम पायो नरदेही कौड़ीका क्यों
करणा हो०।
अधम उधारण दीनवन्धु प्रभु वलिहारो
भवतरणा हो० ॥

२५

काहू फिर न कही वे वातें।
जे जे नर इहां सुक्रत कर गए वा घरको कुशलातें ॥
जैसे सती सरा चढ़ बैठे अपने स्वामीके जातें।
वाको भेद काहू नहीं जानो सियरो जरो क्षिधो तातें॥
जैसे शूर पिलत रण भीतर सहो है अनीको घातें।
वाकीं दरद काहु नहीं जानो सेल लगो क्षिधों सातें ॥
यह संसारउको सब अद्भुत आवत जात कहातें।
कहे सूर देह गति एसी समझ न परे इहातें ॥

२६

इतनो सन्देशवा को सुनावे प्यारे हरिको जिय
प्राण रहै।
तलफि तलफि दिन रैन विहानो उनहो
कोज जाइ कहै ॥
माहे नहीं भावै कछु न सोहावे छिन छिन विरह दहै।
लच्छमणदास दया करि आवो को यह शूल सहै ॥

२७

रावरो नेह भयो मेरे जियको जाल घेरे रहत करि
वरवस।
जोरि रह्यो इतउत न जात कहूं थकित भयो पर्यो
परवस ॥
काह कहों तन मनकी वतियां मोल लियो मानो
सरवस।
लच्छमणदास कठिन ह्वे लाग्यो देखत देखत लोग
सहर वस ॥

२८

मेरी गति एक श्रीविदेहनन्दिनी।
जाके गुणगण अपार पावत नहीं निगम पार
ध्यावत चर अचर सकल जगत्वन्दिनी ॥
शङ्कर ब्रह्मादि शेष नारद शुकमुनि गणेश
भजत उर निरन्तर यमभय निकन्दनी।
जाके पदपद्म मूल वन्दत जरि त्रिविध शूल
नाम जाल प्रवल असुर विहग फन्दनी ॥
वैकुण्ठ वास चारि लोक प्रकट प्रणत हरत शोक
कोटि कामधेनु जननि दनुजदण्डनी।

कोमल चित विदित वानि सेवकप्रद अभयदानि
जन्म जन्म करनि कलिमल विहरखनी ॥
जय जय जननी उदार सुरहित महि हरनि भार
अद्भुत त्रैलोक्य विदित विमल चन्दनी।
लच्छमण तव दास मूढ़ वरणै कह यश अगूढ़
छन छन दिन रैन राम उर अनन्दनी ॥

२९

रावरे निबाहे बनेगो मेरी लाज।
आयो है शरण खल कुमिति शिरोमणि अधमनको
सिरताज ॥
पाप आपने कहंलो गनाऊं कोटिन चलत जहाज।
लच्छमणदास पुकारत तुमसो दशरथसुत महाराज ॥

३०

नयनन मेरे मोहनी मूरति श्याम पीअ हितकरि
आनि बसावो।
निश दिन घरी पल छिन नेकु न करो न्यारो निरखि
निरखि मन सुख पावो ॥
इन्दु सो वदन जलजात से युगल लोचन मदन
धनुष भौंहे कुटिल रूप समावो।
लच्छमणदास सुखविलास रावरो दरस माह निमिष
न बाट जावो ॥

३१

रङ्गभोमि रासमें नृत्यत लाड़लो लाल।
यमुना तीर शुभग वृन्दावन कर मण्डल व्रजबाल ॥
ठुमक चलत गति ललित त्रिभङ्गी हावभाव मिलि ताल।
बांह जोर वृषभानुनन्दनी लटकि लटकि गजचाल ॥
बढ़ो है कामको कामकुतूहल अवलोकत नन्दलाल।
तृण तोरत वलिहार सखी जब गावत मदनगोपाल ॥

३२

मिल गावत नार अयोध्यापुरकी।
घर घर कोजी सब घर घर पुरकी ॥
होत उछांव अवधपुरमें नार फिरत हरखी हरखी।
बजत मृदङ्ग घन घन ज्यों गरजत मोतियनको
वर्षा बरखो ॥

लघु तरुणो बाल शशिवदनो गावत राग सत सुरको।
अग्रदास वलि जात कौशल्या वार बार दशरथसुतको॥

३३

झूठा जवाब दीज्यो महाराज।
भलाही पधारो शो करके महलां घणाहो घड़ा देश्यो
गहना ॥
लखो न जाय करमको गति कहीं लाखां पड़त
या लहना।
हंसाराम हरि अब कांइ हारूं बोल वचन
लाखो सहना ॥

३४

आइलो रे मोर मन्दरवा आ आ गुणन भरे गुणवन्ता
सइयां देखत हो नैननमें अति हो छबीलरा।
जन्म जन्मलो सङ्गवा न छाड़ों हो चरण न गहे
रहो हो देहो असीसवा सदा रङ्ग युग युग जीवे दिन
दुलहा महम्मदशा चतुर रङ्गीलरा ॥

३५

आयो आयो रे कन्हैया म्हारे ढिग कहा करों
मिझमाणो।
मुरलीवाला म्हारो सुधबुध लोनो जानरङ्ग सुनके
सोचको तान मानी ॥

३६

मूलन मूड़ सां ताड़ी राइयां वे लखो लोग करण
बदखाइयां।
चूचक दे घर घणोयानो धोयां हो रसिया लेदो जाइयां॥

३७

केसरिया केतिक दूर भला वो म्हारो मारूड़ा गाढ़ोड़ा
साथीड़ा।
पलंगां बैठो मोजां माणे मेरा मियां मुजरा
लीज्यो म्हारो नाथोड़ा ॥

३८

थें म्हांरे डेरे आइयो हो राजेन्द्र राजा उन्ह उन्ह
आई बादरो।

सदा रङ्गीलरी व्यथा कौन सुनै मोविन महम्मद
मोविन आदरी ॥

३९

ढोलन मैंड़े आया मैं की करां मिझमाणी ।
तैनू फकीरांदी मदद होई अली नवीदा साया मैं० ॥

४०

रांझड़ा ढोलीयांणें मारुजी थें म्हांके वलिहारणा
मारुजी ।
सुनियो म्हांरी सखी सहेली वे म्हें थांके चाकर रहना
वे म्हें थांके वलिहारणा मारुजी ॥

४१

बाला राज बांका म्हांरा राज बांका ।
बांका घोड़ला बांका कमर कटारा राज० ॥
माथे पंच-रङ्गलो पाग कुसुम्भो पाग कुसुम्भो
माणा राज० ।
अधिक सुहावै घूंघट उलट पट में तक
झांका राज० ॥

४२

ऊभीजी रसमाणे लाड़ो वै रङ्ग माणें छे ऊभी म्हांरी
लाड़ी माणे केसरिया बाणा छे निपट निदान वो० ।
बांकोद्द घोडी थारो बांकोद्द जोड़ो सुण्ड थारे सब्ज़
कमान वो० ॥

४३

म्हारी जिन्द लगी वे तांड़े नाल सोणा मियां तुसी
वैजोवो ।
आट पहरोला अदारङ्ग कतार टुक वेख माड़ी
हाल सो० ॥

४४

सुधबुध मोरी मति गइलो प्राणते पिया बिन एमा ।
जिया की लग्न कोउ कहा जानै जो जानै तैपे
भइलो प्रा० ॥

परज—धीमातिताला

सेझड़िया सूनी रे थे वाझो आज म्हारे राज ।
म्हारो सायबां विदेशो विरमो जोवन शो आ छैल वे ॥
होजी म्हारो लाज म्हारो अरजी सुन सुआवा ।
म्हारो शायबां राजीन्द्राना खाल मरगङ्गो आज ॥

२

वे मानू सठियां मार जगाइयां ।
इन वेंदरदा नाल की समझाइयां
दरद जानै रब साइयां वे मानू ॥
याहीं रम रहणा वो भला सोणा ।
आश्कींदा याणा महबूबांदा मिलणा ॥

३

अरे मेरो चावोरो आयो छे । रङ्गरो बातां लायो छे ॥
बनरीको बनरो आयो रङ्गरो बातां लायो छे ।
आजां मांरो सकरड़ी गीणां लायो छे ॥

४

थें तो म्हारी कदर न जाणदा वे मारुड़ा ।
इतनी अरज म्हांरी मानले प्रतापसिंह दिलदी
गिला नहीं माणदा वे० ॥

५

नयनी मूलन मारी वे ।
नयन तुसाड़ो बरछी दी नोकां सान चढ़ी तरवारी
चम्पेदी माला गरे फूलोंदा माला तारी वे ॥

६

अणी अणी मेड़ा ढोलनो सइयोनी सें साहब
सुरजन लो धानी ।
अणी भोली मा ए मेरा लान अनी जोन वे सराइयां
माण कलधा अरी ए मा मालकल धानी ॥
सोसर भीजे णी चोलनो ।
रूपा मैं देदियां सोना मैं देदियां यार न देशां तोलनी ॥

७

सायबां वे राज म्हांसो अबरे लगावो निलजी
गावो गारी ।
ले कोनबन लगो अगव ड़े पिछवारे दे तारो
वलिनहारो बोल सभारी साय० ॥

८

तू करले जालम फेर वो मन मेरा मेरा मुश्ताक़ तेरा ।
सगरी रैन मोहि तलफत बीती किसका तम्बू डेरा ॥

९

सवाजी म्हारे वो तुम मनरी बात थे काई जाने ।
आप रङ्गीला थारी सेज रङ्गीली आपही आप पहचाने ॥

परज—यत्

माधो जी म्हांरी चुड़ियां करके सारी सरके जियरो
धरके हियरो फरके नूपुर जेहर तेहर धरके ननदी गुरुजन जागत धरके ।
छाहा खात हूं पइयां परत हूं दरक दरक अंगिया दरके तनिया तरके ॥

परज—पञ्चायतन

खण्ड मण्ड ब्रह्माण्ड शिव शम्भो महादेव देवदुख भञ्जन ।
वैजनाथ विश्वनाथ पिनाकपाणि शङ्कर गिरिजापति मनरञ्जन ॥

२

अबतो हरि हरि लव लागी ।
सब व्रज को यह माखनचोरा नाम धरे वैरागी ॥
कहां छोड़ी मोहन मुरली कहां छोड़ी गोपी ।
मूंड मुंडाय डोर क्यों बांधो माथे मोहन टोपी ॥
मात यशोदा माखन कारण बांधो जाको पाऊ ।
श्याम किशोर भये नव गौरा चैतन्य जाको नाऊ ॥
पीताम्बर को भाव देखावत कटि कौपीन कसे ।
दास भक्तकी दासी मीरां रसना कृष्ण बसे ॥

३

बड़ी वंशी बाजे कालिन्दो तीर ।
उमग चली सांवन सरिता ज्यों व्रज युवतिनकी भीर ॥
हाय दई निर्दयी मोहे रोको अब कित जाऊं मोरो बीर ।
नागरीदास प्राणपति आगे पहुंचो छाड़ शरीर ॥

परज—झपताला

आदि मध्य अन्त योगादि योगी शिव भांग अफीम रिझ ए मलङ्गी ।
नाभिके कमल ते तीन मूर्ति भई भिन्न जाने सोइ नरक भोगी ॥
जटा मध्य गङ्ग हर सङ्ग नित बालके भस्म लगाये और भङ्ग खाये ।
कनकफल रच्यो आपके आपमें आप पाये ॥
जाके माद अनादि पूरे भानु पच्छ पूरे खाक मुखर धेनके अफीम खाय किये ।
भालमें चन्द्र आनन्द निर्भय सदा सीसको चंवर पवन किये ॥
वाघाम्बर वृषभ वाहन त्रिशूल डारा नयन न्यारा ।
सुमर हरिराय सदा शीतलपुरी भुक्ति मुक्तिको देनहारा ॥

परज—तिताला

धन्य बलिहारी जी म्हांरो राज हो राज कुमार छे बुंदोलड़ो राज ।
राजेन्द्र फूल गुलाबरो थारो बनरो केसर क्यारो रिझण रिझण बाजे है घन ॥

२

मान निहोरा मोरा अब हो जात रजनी सुन सजनी ।
रूप यौवन धन दिवस चारको घटत जात थोरा थोरा ॥

३

जो मुख देखत सोई मोहत है हरि रस बस भये तोरा ।
हस्तराम लटू भये भटू चाड़े दोउ कर जोरा ॥

४

सुन लीज्यो जी मांड़ा वेग सजन थे रसिक भ्रमर मैं तो कलियां ।
बागां री सैल करो राज म्हांरा सायबा थें म्हांके मन रङ्गरलियां ॥

तरे तरे रा फूल फूल रहाके महल करी
हिल मिलियां।
हस्तराम हरि कबरे मिलोगे अबही मिलो तो
भलियां॥

५

ना जानूं हरि तेरी हो माया।
कामी कुटिल कुचाली कुसङ्गति मेरी है यादुराया
प्रगट करकर फिर मेटे काहू भेद न पाया॥
राई होय पर्वत पर्वत होय राई रङ्क करें राजा
राजा रङ्क दाया।
जो वलिहारी द्रवो दीन पर गुरुमुख भेद बताया॥

६

कब आवेंगे म्हांरे वल्लभा पियारे अब श्यामसुन्दर
सुख देना हो।
उड़ रे कागा सगुण मनाऊं वेग जाय तुम वाहणा हो॥
पल पल पन्थ निहारत बीती कल न परत
निशदेणा हो।
हस्तराम हरि कुवज्या सों मिलो सुख पलङ्ग
सुख सेणा हो॥

७

ते काहे वजाई वीण वे तें सांवरे मनमोहन
गोपाललाल।
श्रवण सुनत सब सुध बुध विसरी एसे डारे हरि
प्रेमकी जाल॥

ऊधो इतनी विनती जाय कहो मनमोहन सांवरेसों
अबही।
हरि विन कल न परत घरी पल छिन निशदिन मो
जीवत बीत गइलो एतो प्रीति काहे करी प्यारे
तबही॥

९

तुम विन वृन्दावन वन घन घन गऊ गो ग्वाल वाल।
और नन्द यशोदा व्रजको बाल आवनहार कहे
भए है श्यामसुन्दर रटना
रसना लाग रही कान्ह कान्ह कर रहे सबही तबही
तबहीरे।

परज—धीमा तिताला

हो राज महलां करो हो राज मोतिड़ा अलसावे
हो खुमारी राज।
डावर नयनी चिम्मा लङ्की छके छकावे सुणे भावे गुण
अवगुणमें मत जिय धरो हो०॥

२

छांड़ मत जइयो वे यार॥
वृन्दावनके घाटपर उलटी देखी चाल।
जिन गिन मारिव एक दिन में सो सो वार॥
प्रेमनगरके घाटपर उलटी देखी चाल।
घायल चुन चुन मारिए खूनो फिरे खुशाल॥

परज—खम्बावती

मौन दीन धांजा तूतो बड़ोहो दिवान बड़ो दीवान
हो मान।
पंजतन पाकहाज दे ईमान आनहो में॥

२

हरियाला बना आया रे लाड़िला बना।
सर मोतियनको सेहरा विराजे हीरा लगी मोती पनारे॥

३

तैरो राजा वो मैंनू प्यारी जो करदा सों दिलदारी।
शोरी उमग उमग महरवान आज़म मियां मोहन
होदा वलिहारी॥

४

झालनी पइया इस्क रंझिटे दे नाल अनो वेखो
सइयो हाल वे।
दुखांदी रोटी वारी सूलांदा मालना वे मियां डुब्बांदा
वालन सानू बाल वे॥

५

चल वे दरियावांदे कूंड़े अवे।
असो सोणिया सांवल लुभानो हां हां हां मीं॥

६

भङ्ग वे रावीदे मेनू दरसन लाइयां वे यांणा मे
तेरहो यानि दूरचीनावांदे मैं तो वारो वे दाना साईं।
जांवोङ्ग घोड़ा थारो बांकोड़ जोड़ा माथे पञ्चरङ्ग
पाग सोहनोजो म्हांरा ॥

७

खेंड़ेदा गिर साईं चाखदा बना मैं तो तेरे नामदा
लेवां बलाईं ।
सेलाहुणा वीना वरनाईं ॥
चढ़ोइया वीर जा कहियो उस यारसो संदेशवा हमारे
ताके कासमरमे बकदमे ।
हैं खड़े तेरे इतज़ार काज़म गुन्हे चि करदे
खरीदारा बाज़ार ॥

परज—तिताला

नैवरिया राम तुमही लगाओ पार ।
जग दरियाव लोभ मोह ममता सूझत वार न पार॥
केते पतित उधारे गिरिधर जहां तुहीं खेवनहार ।
सुन वलिहार कान ए विनती अबके मेरी बार ॥

२

आली मोहे नागरनन्द डगर बीच गहियां ।
डगर बीच गहियां हो वरजोरो अङ्ग लइयां ॥
रोकत टोकत यमुना निकट हट निपट खोट जइयां।
मैं वरजोरी झकझोरी मोरी सखियां गहे वहियां ॥
एसे ढीट कन्हैया सुन मैया हो कैसे व्रज रहियां ।
लपट झपट दपट लागन जाय मोरे ठइयां ॥
नयनन के सैन देन वैन के बजैया बोलत मृदु बोल
बोल हंस हंस गारी दइयां ।
ज्ञानदास प्रभु नेक न माने अपने जियकी बतियां
ठाने कछु न बसात मेरो लागूं वाके पइयां॥

३

माधव विलम विदेश रहे ।
अमरराज सुत नाम रैन दिन निरखत नीर बहे ॥
कुन्तीपति पितु तात नार घर ता अरि अङ्ग दहे ।
घट सुत अरि तनया पति सजनो नाह नेह निबहे ॥
मारुत सुत पति नन्दग्रहको हरिभख वचन कहे ।
जस ऋतु नाम जानि अब लागि ताके नेह रहे ॥
शैलसुता पति ता सुत वाहन बोल न जात सहे ।
सूर श्यामके दरश लहे विन व्रज छिन नर न रहे ॥

४

व्रजके निकट जाय फिर आयो ।
गोपी नयन नीर सरिता मह उतरत पार न पायो ॥
तुमरो सीख नाव सरिता मह चावत पार गयो ।
योग ज्ञान जो तुम कहे दोनो सब परिवार लह्यो ॥
इत ते चलगो जाय नौका उत ते पवन झिकझोरो ।
सुरत हृच्च सो मार डार मद्दि तोरो ॥
केते दूरलो हों वह जलमें अङ्गन बुड़को खाई ।
ना जानो यह योग कुन्द के कत वह गयो गुसाई ॥
जानत हतो थाह वा जलको तोखे इको दोर ।
सूर सो कथा कहा कहूं उनको करो प्रेमको भोर ॥

५

ऊधो व्रजकी दशा विचारो ।
ता पाछे पुनि आपनि योग कथा विस्तारो ॥
परम चतुर बिजदास श्यामके सन्तत निकट रहत हो।
जल बूड़तु अवलम्ब फेनको फिर फिर कहा
गहत हो ॥
हो वह ललित मनोहर आनन कौनो यत्न बिसारो।
योग युक्ति और मुक्ति वारी वा मुरली पर वारो ॥
जाके उर बसत श्यामसुन्दरघन तहां निर्गुण कैसे
आवे।
सूरदास सोई भजन बहाऊं जाहे दूसरो भावे ॥

परज—कलिङ्ग

थारो देश रूड़ा छे जी म्हारो राज मारवण ।
उदियांपुरदी कामनी गढ़ बांकों चित्तोर
घूमघुमालो घाघरा बांको नयनांको कोर
बिजियापुरदो कामनो नरवरगढ़ो रूड़ो लाग छे जो।

२

तसादीयां मैंड़ीयां आखीयां सोणे यारदे मिलणनु ।
अब आमो वे वी बांक स्ताब जियाको मेड़ा वास्ता
सांवलियावे घटाकारियां दिन रात पई बरसे दीयां ॥

३

मारूजी थाने जाण न देशां मारे ।
पायल मोरी रुनझुन बाजे सास ननद मेरो
जागे मे कैसे आऊं ॥

४

ऊंचे नी डंगरला साडे कोल चढो नहीं जाणदा जे ।
एक लडीवारी निकली नाजुक दूजे बुलावे भनभादा
साडेकूं ॥

५

रांझण मेडो जिन्दड़ी तरसामी वे आद्या जङ्ग
सिहाल वेण जामो ।
है कोइ रांझेनू आन मिलावे नवरङ्गदे दिलांदी
पर न पामो ॥

६

समधन री तू दादड़ीनो कुड़िए गोदो में यार
छिपाय लेनो ।
तुझनू हाथीदा भावे चूंडा तेरी खरको अनमोलो ॥

७

हो राज मे से बोलो म्हासे बोलो ।
मैं तो थारो दासो वारो जनम जनमको वे ते
घूंघट पट खोलो ॥

८

माझली रात मारूरड़ो मारू ढोलो अघक
छकावे जी थे म्हारा मन ।
सगरी रैन जगावो सदारङ्ग कहीं सखो अरज
म्हाको राज माण ॥

९

सांडे पेर नालवे वन्दांदे अनबट नाल वे ।
झांझर हलोहलो वांसोड़े पेर मादरे दे कदम चलो
मेड़ा मियां यार माणावन चल चललो वे ॥

१०

हाड़ो थाने जान न देशां ।
कमर कटारो थारो बांकडोरे धर बून्दी तरवार
बरे बून्दे बचे ॥

११

चञ्चल नयना मतवारे रे तिहारे कौन बिरमाए
हांरे कजरारे ।
देखो प्यारे दिल घायल कीते जिन्द पुकारे हुणकारे
बिसियारे ॥

१२

साड़े पेर नाल वे बन्दी दे अनबट नाल वे ।
झांझर हलो माड़े पेर नाल वे साड़रे कदम चलो
सोरो मियां यार मनावन चलो चलो वे साड़े
पेर नाल वे ॥

१३

दारुड़ी हो महाराज पिवो क्यों न राज
दारुड़ी रे पिये मोहे आवे दूनी लाज ।
रैन खुमारो थारो भलो ए लगत है
भर भर प्याले म्हाणे दोज्यो म्हारो राज ॥

१४

ए री हो तो परूं पायन बाजो कोई आन मिलावे
चतुर सुघर सुरजन बालमुवा ।
जानो पीउ तन मन जिउ तुम बिन कल न परत
हां रे मोत पियरवा सुरजनवा ॥

१५

कमलोदो वारो वे नदाना मियां
अला कमलो दी वारो वे ।
नदाना मियां अल्ला दरक तु साड़ड़ो बान पई वे
यार वे ॥

१६

दारुड़ी री वाते कजरा करे हो राज प्याला
पीवो चतुर सुजान ।
मे तो थारो दासो वारो वे तू म्हारा सायवां निकसो
रोप्या थाने ऊभो म्हारो राज ॥

१७

मारूजी सो कहज्यो राज अमलांरी अमलांरी बात।
चन्द्र सरीखो तांडो मुखडो बिराजे हांजी कांई
गोरो गोरो गात॥

१८

मोती रोड़ी आटो थासे लागो म्हारो राज लाधो
होते दीज्यो जी।
सालुडारी सलवट मोतिडा मैं भूली छे राज
नोदडियांमे घूला छो राज॥

१९

नयनां नींद न आवे मांडी सइयोनो राझण नजर
आवदा मैंडे।
चश्मके दारी खारं बूद चुं खुशपसन्द आरा के गमेयार
बुवद चुं खुशपसन्द सुथडाई इश्क जगाया मैंडे॥

२०

ठाकुर रे तू आइयो म्हारे डेरे सुन मारूजी हो राज।
सोने दा सुराई मोनेदा प्याला आप पीवे
म्हाने प्यावे॥

२१

हो जी हो जगो जो म्हारे निदरा नदान।
मतवारे ढोला सुन मारो बात॥

२२

छाड़दे लङ्गर घर जान दे छेलवा।
यमुना जल भरन जात रहो हमसो करत बरजोरीरे
लङ्गरवा॥

परज—एकताला

प्रकट प्रीति करि रसके बस भए सरस वदे बिसर गये
बरबस पिय परबसमें परके।
केसरका रङ्ग लाल बेसरका रङ्गराग मोतिनसो
माग भरे प्रेम भरके॥
चुनरी सुरङ्ग रङ्ग कुचको अङ्गिया उतङ्ग बसके अनङ्ग
अङ्ग अङ्ग अङ्ग करके।
सुन्दर तनके सिङ्गार जोवन निरखो बहार जोवन
सो कर पियार हार हिये दरके॥

२

मारा डाने जगावे छे म्हे तो कांई राज लाज
पाज म्हाने धनी आवेछे म्हे कांई जानो राज।
सुनियोरी मेरो यार परोसन आधो आधो रतियां
म्हाबे जगावेछे म्हे कांई॰॥

३

हेली हो कांई करो माई नन्दनन्दन बिना कछु
न सोहाई।
मोर मुकुट की लटकमें मन अटक्यो भावे नहीं
खान हर विन सुध बिसराई॥

४

निपट हेतको सुध बिसराय डारो मोहन प्यारे
कठिन भये श्यामसुन्दर जियते बिसराय डारो।
नई प्रीति नयो रङ्ग कोनो हरि अनत जाय एसे निर्दयो
व्यथा नेक न विचारो मारो॥

परज—धीमा तिताला

ऊधो प्रीति करी पछुतानी।
हम जानी एसो निबहैगो उन कछु औरही ठानी॥
और सो छिया कोई न पतीजे बोलत मधुरो बानी।
औरनको वैराग सिखावत आप भए रजधानी॥
अब तो सेज सुहावत ना हरि सोचत रैन बिहानी।
जब ते गमन कियो मधबनको नयनन बरषे पानी॥
ऊधो कहियो श्याम सुन्दर सों उर अन्तरके जानी।
सूरदास प्रभु मिलकर बिछुरे तातें भई हे दीवानी॥

२

ऊधो सुन सुन आवत हासो।
कहां वे तीन लोकके ठाकुर कहां कंसको दासो॥
इन्द्रादिक को कौन चलावे शङ्कर करत खवासो।
नोस मनेतो बन्दो जम जाके सेस सोसके बासो॥
कमला जाके बसे निरन्तर कोन गिने कुब्जासो।
सूरदास प्रकट कर बांधे प्रेम प्रीतिको फासो॥

परज—तिताला

विछो बे मारी बेलोको।
लगीयाणो विरह सांईदे नाल इश्क दे नोको झोकां
आवो बे सुनु यार बे नयनरो दोजार मजारो ॥

२

अहो वेख पई सुराइयां या रब्बा मैंड़े पाले कोल
पे बल देनी रहे मुसाफिरां यार।
मैंडे सङ्गण लड़के गए मेहर न पाइयां उना जाल
मा मानू सूतोनू छड़के गए
केते विछो है विछड़े या रब्बा ओ गया सो गया
गए आमो ॥
मैं सूतियां सुहाग बीच यार।
पुनूदे गले लगमें वांहट टोला मे राग्रो नहीं या रब्बा ॥
मेरी बूकुल गदो अगर लागि लोनो सहेलियां
या रब्बा तुसी वहोत तोदे कोल।
सभो थीयो जोगणा या रब्बा मेंडे पुनू नू लावो ढोल ॥
इत विणा वो तकड़ी या रब्बा तुसि एंद
विणा वो तोल।
मेंडे शिर बदनामो दे गया या रब्बा ओह घड़ियन
बेठा कोल ॥
भूली साची थलां दे या रब्बा मैंनू मोत आयके बलो।
इथे न कोई तकियां न आसरा या रब्बा ना कोई
कुञ्जगली ॥
मेकूं का तरफ खुदा यदीयां मेकर कर वांह खलो।
नारो धोया ससोये या रब्बा ॥
कोई तेनू बोलोच घणे मेड़े पुनू दो एहियां सूरत या
रब्बा कोई विरलो माव जाण।
आधी रात निखण्ड है या रब्बा इना होताने लाई
सनदेके पुसराबदो या रब्बा ॥
मैंडे पुनूनू ढूंढता वनन पनत ठदे दो या रब्बा।
मैंड़ो पेंड़ो पड़न बबूल हो केते पूनू नू मिले
या रब्बा नाहो तो मरणा कबूल ॥

३

हो जो सोलाल लागीहो राज पानि सायबा जो
नित निहोरा राज।
म्हे तो थारो दासो वारो थे म्हारा सायबां अरज
कछे महाराणो ॥

४

मैं वारो वारो वारोवे राजेन्द्र वारो मे तो बलिहारो
थारो मे।
रसिक रङ्ग थारे मिलवे कूंदो नेणांको मारो बे
राजेन्द्र ॥

५

अछा गोरो दा साबला यार।
सांबरा मेरो जान बे मैंड़ा रब्बा लाया सांबला
लोकांदे भावे चाक सहेलो सांडे भावे रावला यार ॥

६

आज म्हारे मङ्गलरो है रात।
आवो म्हारे बमना बैठो म्हारे अगना
किस गुण बिचारो शुभ छे सोहागको रात ॥

७

तूं करलेरे जाल फरेब मनमे मुश्ताक रहेदेरा।
तेड़ेरे बेखणनू चतुर सुघर सुन्दर बालमुवा
मेरा जिय चाहे घनेरा ॥
सगरो रयन मोकूं बाट जोवत भई किसका तंबू
किसका डेरा।
आवो सजन मिठबोलना साजब तनमन वार वार फेरा ॥

८

सबाजो म्हारे बे तू मनरो वात थे कांई जानो।
आप रङ्गोला थारो सेंज रङ्गोलो आपही आप
पहचानो ॥

९

रांझा तेड़े मुखड़ेदो लेवें बलिहारो मैंनू लगदो
तेडो सूरत प्यारो।
इश्क महोवत आद्या कितवलकु वां सोहनी
सूरत बेकरारो ॥

१०

भावदियां बे मैंनू तेंडी अंखियां।
मेरा बांगू बे करण कलाची धावदियां।
नावे मैंनू कर तेडा दिलम मेडी लाग रखियां॥

११

नयनो मूलन मारीरे।
नयन तू साडी बरछी दो नोकां सांन चढ़ी तरवारीरे॥

१२

चमेली माला गले फूलदी माला।
नयन बजहन तन कोन सो पूछिए कोई लाल
चम्मे वाला॥

१३

मारवण बाला बन्द तो मोछो है।
रांज हांजो कांई अमलारा छाक्यो म्ह छे राजकुमार
राजथाने खमाजो खमा कर लेश्यां॥

१४

बरछी मारो बे नयना बीच तोल।
सुन्दर श्याम मनोहर मूरत तू मोरा अनमोल॥

१५

कांई करां मनुहार बे साजण आया।
छत्रपति म्हारे महल पधारना बे तन मन दोनो
वार बे सा०॥

१६

बोरती बुलावे दमदे वो।
घडो पल मैंनू चेन न दे दे शोरो नज़ारे कमदे वो॥

१७

ड़ाबर नयनोरो मानो गरशाने म्हाने शानें बुलावे।
थे कि जानो म्हारो मनडो लाग्यो छेवो माणी
गर पोढ्यो माणे आन जगावे॥

१८

मारू जी सो कहे दीजो राज मारेरे मनकी बात।
मैं तो थारी दासी सायबां जन्म जन्मको थां सो
लग्योछे म्हारो काज मा०॥

१९

श्याम डनोदा तू मेरे घर आया वो।
पंथुड़ामे जोई जोई दरस देखावो
खूब बलिहारयांदां सांवल सानूकी जुदा वो॥

२०

साजननू वेग मिलामी मेरा प्यार हो जिन्दडोनू
आन जीवामी हो।
सेज सूमती वारो नीद न आवे वाधी तो दरस
बेखामी हो॥

२१

महाराज मोसो कुंड़ी बे कहियोजो।
बालम रूस रहो छे होजो बलमा सइयां
जाणे छे जी वारी राजदुलारोको बात सुनजइयोजो॥

२२

कांई जाणा राज म्हारा मनको हांजो म्हारा
मनको हो बात।
छत्रपति म्हारे महल पधाख्यो राज पको पायल
म्हारी झमको हो राज॥

२३

आवां न करेस्था राज म्हांरे डेरे आवन।
अनघट बाजे म्हारा पगका बिछुवा लगो याद नहीं
भूलदी॥
आप न आवे थारो ना लिख भेजे जिन्द तु साड़े
नाल घूलदी।
राजा पछछजी जोजो राजा राणा
राजदुलारो रो बात सुन जाइयो लोग कहे छें
थाणे साजणा राज॥

२४

थे तो मो सोभलो वो राज कोनो राजवर म्हासे
नहीं महाराज थे।
छत्रपति म्हारे महल पधाख्यो राज पायल
म्हारो हलो वो राज थे केसरियाजी म्हारे॥

२५

क्यों गई यमुना पानी जानी मनमोहन मिल गयो ।
बरवस मोरी बइयां झकझोरी चितवनमें
रसबस कर डारी न जानु कौन चेटक चित ह्वै गयो ॥

२६

तातें न बधा भक्त भली तिन तिनकी मत
नेकु न अनत चली
श्रवण परीच्छित तरे राज ऋषि कीर्त्तनक शुकदेव ।
सुमरण करि प्रह्लाद निर्भय भयो कमल हरिपदसेव ॥
अर्चन प्रथु वन्दन सुफलक सुत दास भाव हनुमान ।
सखाभाव अर्ज्जुन बस कीने श्रीपति श्रीभगवान ॥
बलि आत्मा समर्पण करि करि राखे आपने पास ।
अति मति प्रेम बढ्यो गोपिन सों बलि परमानन्ददास ॥

२७

किसी बहाने आव सांवल ।
नयन लगी तुसी नाल असाड़े सोहन रूप देखाव ॥
इन गलियां विच फिर वो महरदे मेनू वेखणदा
चाव ।
चलत चाल सुघड़ रंसबो विहारी बलिहारी
थानू जोवाव ॥

२८

आयारे मेरा सांवल प्यारा ।
मोर मुकट पीताम्बर सोहै उर वैजन्तीमाल सांवरा ॥
लटकन चलन मुसकान चितवन मोहत प्राण हमारा ।
नन्दनन्दनको छब निरखतही उमानाथ तानको वारा ॥

२९

भइलोरे आज मिलनवा मनमोहन सुन्दर सनवा ।
राजबहादुर निरख दुख गइला नन्दनन्दन
मनमोहन कनुवा ॥

३०

देखियें तो समान एक ठौर ।
छतीश उपर चन्द्र बिराजे तापर शोभा और ॥
घर पर गगन गगन पर धरणी ता उपर विस्तार ।
कोटिन कोटि तरैयां सोहैं रवि उनये भिनसार ॥
गुण निर्गुणकी शोभा बरणू सब पर एही भाव ।
सूरदास यह दृष्ट कथा नहीं पण्डित अर्थ बताव ॥

३१

राधे तेरे नयन किधो बटपारे ।
चितवत चित वाणसे लागे घूमत ज्यों मतवारे ॥
अञ्जन दे पियाको मन मोहत करि कटाच्छ
बिसहारे ।
सूरदास प्रभु भक्तनको सम्पदा नृत्यत ज्यों नटवारे ॥

३२

राझन जोगी जोगी जोगी कर मेंड़े नयन लगाए हो ।
पलकां सेलियां भोहें जटयां सइयो गरदन
पेती विभूति रमाए ॥
हुण की करां रूस रहो मैं थो मूलन मणदे मनाए ।
मथेदी मठी बिच आसन मारे बैठे फिर थे ना
फिराए ॥

परज—धीमा तिताला

मूलन दिसदे मियां मारवाण लढ सिधाने
कथे कारवान ।
कार दे हिजरां मेखु कित कारण लाए कारीगरी
कर गए बेकार ॥
दान पुरनू कले जैनू असी न जुदा कर ले गए
जालिमा जान जान ॥
रात भरी हिजरे अज चश्म पुर आवम् वह दे हम
चुना बदानम् ॥

२

हे हे हो हो ताए कीं हां सरस्ताबे ना होदा
आलम विचारस्ताने सनुबनके ।
वनोनु विन केले आए असवारीनू फिरश्ता
लिखदियां
सरसण कानियाते कागज बनदा अहवाल गुजस्ता ॥

३

कलापी थासे दारूड़ो मांगे जभो वांको मारूड़ो ।
राज मतवारों राज सारी रैनके काम उनींदे छे ॥

४

अमलांरो रातो छे क्यां म्हारे आइलो।
सदारङ्ग हो जी म्हाणे साहबां आप पोवे सुणे
पिलावे छे क्यां० ॥

५

राह देखावो सोणा तेरे दरवाज़े बैठा कोई कब
लग तेरो राह देखे वो।
जो तू अपने घरको घर जानता नाहीं इस
मालूम हुवा अपने लेके आवे ॥

६

इस प्यारे नाल लठगियानो मैं ठगियां।
रांझन मैंड़ आपी आदा हंस हंस गरे लगादा
इन बन्दियां कोलन डरदो चटपट अंखियां लगियां ॥

७

इश्क लगा तेंड़े नाल सुन साजन सांई।
जो भामो त्यो पाल तुज बिन मैंड़े हेर न कोई
सुन नन्ददे गुमानो गोपाल ॥

परज—धीमा तिताला

रात चांदनो बनी चांदनोके देखे मोहे प्यारो
याद आवे।
फूलन कोरा ज़रद गजरा फुलवाको सेज पर फूल ले
बिछावे ॥

२

एरी मैं तो लाग रहो चरण।
महमद शा पिया सदारङ्गोले जन्म जन्म हो शरण ॥

३

गुरुजी म्हाने मोल ले दे कारो कारो कामरिया।
राम जपन को माला ले दे पानो पोवन कों तुमरिया ॥

४

सायबांजो म्हाड़ो चम्पा वरनो राज।
इद चम्पा इद मोगरारे इद चमेली फूल
मारवण बैठो सेज पर कांई माणिक ढिग मन झूल ॥

५

इण तो नयन लगी वो मेरो जान अणो वो यार।
नयन तु सांड़े वारो बरछोदो नोके वे इश्क तु
साड़े नाल फन्दे वो ॥

६

वो मैं तर गइयां रांझा वो।
पांच रुपैया वारो पानादा बोड़ो नजर यारांदा
कोतो वे ॥

७

मैंड़ा अनवेलड़ा रावलको आंखदा।
पांच रुपैया वारो पानादा नजरानो मांगत
सारो रातदा ॥
मैंड़ा काल आमो वे भला वे मनडा लग्या तेड़े कोल।
साड़े दिलादो वारो मोला हो जाने वो हरगुण
कहे दे भाला मोल ॥

८

मारुजी वो मारो हेलो हेलो न बताय जापन मारुड़ा।
मारुदे आंगन चम्पेदा बूटा साथ सहेलो मिल
जुड़ो छे जुड़ो छे ॥

९

दारुडारो बात झलक रहो वो।
सोनेदो सुराहो वारो मोनेदा प्याला आप पोवे
भंवर सुजान आलो जो वो ॥

१०

कलाला थारो दारुड़ो ए अजब तमाशा
पोवत करे मतवाला।
सोनेदो बतक जोबन मद भरये वो नयना जलाउदा
प्याला ॥

११

आंगण आ वे मारु जोवे।
सोनेदो सुराहो वारो रूपेदा प्याला
वे भर भर प्याला तू पोवे ॥

१२

नहीं भावे नहो भावे छे गुमानो अनबोलनाजो
थारा नहीं भावे।
सोनेदो सुराहो मोनेदा प्याला वे मद छक्या छक्या
घर आवे ॥

१३

ना झूकड़ी म्हारो जीव छे गोरी बहियां छार दे।
लटपटो पाग केसरिया बांगा वो नीलो घोड़ोरो
असवार छे॥

१४

राजाजी म्हारो कांई बेगुन्हा नज़रो नज़रो करो।
अबको बार पिया मानत नाहीं मान पियारे
म्हारो यो झगरो॥

१५

छैला मेरी कदर न जानो।
कर मुकरी वो तु जी वो विहारो वो राजा बे बहादुर
गर्व गुमानो॥

१६

थे कांई जाणा छे घांटो राज आमि वो छे गाज।
अनवट बाजे थारा पग का बिछुवा घुंघरिया बे
घननन गाज॥

१७

नज़ारा मेरा चोलो दा रङ्ग वे।
चोलीदा वारो अजब कसीदा कठिन वालोदा
तिखड़ा नोदोदा तेरो जुल्फ कुण्डलवल खायानो बे॥

१८

लायवो दिल जोरो भो।
एक अंधेरो दूजे बादर घेरियां वो मियां
जिन गलां तोमें डरियां सोई गलां॥

१९

म्हारा मारूजी ने कामन थाकियो वे।
हूं तो थारी दासो सायबां जन्म जन्म रो राजमें
तो थाई देखा देखा देखा देखा जो वो म्हारो॥

२०

जारे जारे सिपैया मै तो मोहो रे।
मैंरो कह्यो तू एक न मानो तेरो बात मैं तो सह्यो रे॥

२१

मै तो भूलो नवेलो का मै नू भूलो नाहो वे
भूलो रांझा तेरो चाल।
रब करे तूसो आनके मिलामो मेरा मियां
सांड़ा दिल तेंड़े नाल धूलो ना०॥

२२

दिल महर यार दा वे वेखो सइयो पेड़डा तकेदो वे।
लिख भेजो मेरो जानकूं कांसो विहार ईमऋतुके
वासो बे॥

२३

कित गए रो श्याम कन्हाई।
इत यमुना उत गोकुलनगरी कितहु ढूंढे नहो पाई॥

२४

गेह नीक न भावे आली कासे कहूं वोत।
आप तो जाए द्वारका छाये कौन अनोखो रोत॥

२५

मानै है राजेन्द्र श्री जो भावे छे अर्णा भात मानै दे।
चन्द्रवदन मृगनयनोरी सायबां गोरो गोरो गात मा०॥

२६

मुरलिया ते वस कोनोरी कोनो हे जग सगरो।
अधर मधुर ध्वनि बाज बाज उन गाज गाजरो
पहोचत धाय धाय सब वनमे छाड़ दई
सब कुलको कान॥

२७

प्यारे ते तु मतनु मत नर्दर रहदा वो नाहो
तनदे रतन मन जपतू रामनाम।
नादर दर दर दर दर दर फिरे मत मूं तन मन
हरिसो लगाव समझ बूझ नहो तेरे कोउ
आवे काम॥

२८

कांई मो सो वैर परोरी मुरलिया।
जातिपांति तेरो कछुअ न जानो तू जङ्गलको
लकरिया॥

२९

निरख ऋतुराज वारो।
सब गुण भरो किशोरो राधा प्रियतमके सङ्ग प्यारो॥
नोलाम्बर पोताम्बर राजत झमकत कोरकिनारो।
युगल खड़े कुञ्जनमे विहरत शोभा पर वलिहारो॥

३०

थारो वर रूड़ो छे जी हो राधारानी ।
धन्य धन्य भाग्य सुहाग तिहारो और अविचल
बांही चूड़ो ॥
सांवलियो पातलियो सुन्दर जैसे शरद शशि पूरो ।
जानकीदास हरि बालहो लागे और जग लागे
म्हांने कूड़ो ॥

३१

थांरो बातें लागी म्हांने मोठोरे बालहा ।
सांवलियारो मुखड़ो यौवन मान्दुर जनलोक
मानू दोठोरे बा० ॥
सास ननद मोरो दोरानो जेठानो जैसो बलतो
अङ्गोठोरे बा० ।
नरसोनो स्वामी सांवलियो उघोरो कर्म नो
चोठोरे बा० ॥

३२

वंसीके बजैया जू वैसेही बजावो सांवरे ।
छ राग छतोस रागिणो न्यारो न्यारोके सुनवैयाजू ॥
भैरव मालकोश हिंडोल श्रीमिश्र दीपकके गवैयाजू ।
चेतसिंह कहे गिरिधर नागर अब के होहु सहैयाजू ॥

३३

मन मेरे लाग रही मैयारो मनमोहन
पिया कान्ह कुंवर प्राण प्यारेको मूरत ।
कल न परत घरो घरो पल पल छिन चित गति
जात न कहो ॥
चटपटे घरे अटपट नयना मिलनेको टेक गही ।
सब सुख सरस मिलगो यशुमति सुत आंसा सुख
आज सहो ॥

३४

चांदनो रात अति भावे सखो मोहे ।
वृन्दाविपिन विपुल वंशोवट यमुना निकट सोहावे ॥
मण्डल निरत करत प्रिया प्रियतम कोउ मृदङ्ग कोउ
वोन बजावे ।
जानकोदास श्यामको मुरलो सुनि सुनि मन ललचावे ॥

परज—तिताल।

खुल रहो चांदनो पुलिन यमुना तट ।
रास रच्यो वृन्दावन मोहन सखिन समेत जहां
वंशोवट ॥
हावभाव कर लेत चोर मन नृत्य करत बहुबिध
नागर नट ।
जानकोदास विलास रास सुख निरखत छवि सुख
लागो हरि हरि रट ॥

कलिङ्ग राग

हमे राम रघुनाथ हो मारत नाहीं लागत यमराज
जगायत ।
काम क्रोध मद ममता बनजो कुटिल कपट
अभिमान बिसारत ॥
सुमिरन राम सिया रस पारस राव सो बना रस
लगन लगावत ।
प्रेमरङ्ग प्रभुको सङ्ग प्यारा चाल सुचाल कुचाल
कफायत ॥

२

मन उरझो श्याम सुजान सो बाज आई मेरो बान सो ।
कल न परे छिन पल घरो घरमें लाज तजी
कुलकान सो ॥
गुरुजन बकत चबाव करत है सुनत नहीं मानो
कानसो ।
बौरो भई खिरकिनको फिरकिन तनक वंशोको
तानसो ॥

३

तन मन मेरे रामचरण है ।
जबते सत् गुरु नाम दियो है तबसे रघुवर दास
शरण है ॥
सुख दुख सहो पूर्व जन्मके वरवश आयुर्बल देन
भरण है ॥
प्रेमरङ्ग हमारे प्रभु तुमरे भक्तवत्सलके विरदसे
तरण है ॥

४

बांसरिया किने बजाईरे
मेरी श्रवण सुनत सुध बुध सारी विसराईरे।
सुनरी वीर तीर यमुनाके मधुर मधुर सुखदाईरे॥
पञ्चबाण सम तान लगत है अङ्ग अङ्ग शिथिलता आईरे।
तकझक रही जिह्वा दशनन गहि जानकीदास मुख चाईरे॥

५

श्याम तोरी अजब रङ्गीली अंखियां।
आप रङ्गीला वारो सेज रङ्गीली और रङ्गीलो सखियां॥
खड़ी यां कछुक सुना बानी वे तेंडरे कारण भई कोयल रगियां।
पाक इश्क रखदी ता नामदार हीर मही तो पावा मेमरियां॥

कलिङ्ग—ठुमरी

सांवलिया बिलमायोरी।
सुनयोरी मोरो बगर परोसन उन बिन कछुन सोहायोरो॥

२

सांवलिया तोरे नयनवा रसीले लागें प्यारियां
बड़ी बड़ी अंखियन कजरा दीनो तोरो चितवन मोहे मारियां।
व्रज वनिता सब कहत प्रेम वस लागी प्रेम कटारियां॥
मन मोहत जोहत मनभावन लोक लाज कुल डारियां।
अमृत स्रवत रैन दिन प्यारे कृष्णरसिक वलिहारियां॥

३

नीकी लगत मोहे अपने पियाकी आखर सोली लाज भरीहो
खञ्जन मीन कमल मद गञ्जन रञ्जन मनसुख सीमा धरीहो।
श्याम सेत मनसिज सरसावत तामें अरुणकी रेख परीहो॥
नवनि विलोकनिकी छवि घन ह्वै उर बिच वर्षत प्रेम झरी हो।
कृष्णरसिक मैं हेरत ठाढ़ो नित प्रति कृपा कटाक्ष धरी हो॥

४

सइयोनी मैं की करां कांइ रांझण मिलदा नांही वे।
रांझण मेड़ा मे रांझणदी राणा सोरदा सांई वे॥

५

मोपे भरइ न जाय राम पानिड़ारे।
कङ्कर कुइयां पाताल जल पानो गगरो न डूबे मोरो कमर पिराय राम०॥

६

मोरे ललना हो हो नीचवा बसेरे कलबरो।
या उचवा बसे मोरे ललना हो हो और मोरे मतवरवाकी लाल पगरी॥
या अरे मोरे ललना हो हो लचकत आवे मतवरवा मो०।
दहने हात सरवा बायें हात करवा मोरे ललना हो झूमत आवे गज चलवा मो०॥

७

चांदनी रात छिटक रहे तारे आधो रात पहरके तरके किन सोतन सिखलाए पिय प्यारे॥
कृष्णरसिक मन मान लेडु अब होडु न एक पल मोहि सन न्यारे।

८

रुड़ अन्दर भायल वे काहो।
हीरां रांझेणदे इश्क नी पगियां दिल कीता सइयो मायल वे॥

९

चला जारे गुमानी मैं नहीं बोलूं।
ना मे बोली ना मे चाली काट कटीला छड़ी मारी मैं०॥

१०

सांचो कहोरे विरहिया जिय डूबो डूबो जाय।
माथे की टिकुलिया मोरी गई बिसराय कंगणा
चुभि चुभि जाय ॥

११

मोरी अंखियां लजाइरी ननदी तोरे अगवा।
आगे देखें पाछे देखें अगर बगर के लोगवा ॥

१२

बेंदिया दोज्यो मोरीरे कैसेके आऊं तोरे पास।
बेंदियां मोरी काहे छीन लीनो कैसे कटे सारी रात ॥

१३

मेरोरी मादान बनरा बाजूबन्द महरको कंगना।
बने पियारे डेरे डारे नीके मैदान बनरा ॥
गले तेरे खासेका जामा चोलो लहर रहो बनरा।
सिर तेरे ककरेजी चीरा गल सोहे फुलवनको हरवा ॥

१४

मैं काके सोइ हूं साथरी सूनो परी उन बिन सेजरियां।
एक तो अंधेरो राती अति डर पाऊं दूजे तरफ
तरफ जिय जातरी ॥

१५

मैं नहियां राजी नहियां छाड़ दे मोरी बहियां।
ग्रानबाज पिया चुनरी रंगाय दे बिनती मानो
मोरी सइयां ॥

१६

नजरियां लागीं मोर गुइयां हमारे सइयां को
ढाल तरवरिया सईयो कमर सो लागी।
फुलवा बीनन गई बगिचवा सईयांके सङ्गमें पागी ॥

१७

काहे कु लगाई ऐसी प्रीति दैया मोरे मनमें रहोरी।
जो मैं ऐसा जानती प्रीति किये दुख होय तो नाहक
करती सहोरी ॥

१८

मोहे नीको लागो तेरो गांव।
आगे चलत हूं चल न सकत हूं पाछे परे मेरो पांव ॥

१९

मोकूं गारी दीनो आपो गरजे आपो बरसे।
हंसोखुशी सो पिया मोरे डेरे आइला रसभरी
बतियां कर कर मइ कूं गरवा लगाय लीनो ॥

२०

एरी मोहे गरवा लागन देरी निशि अंधियारी कारी
घन गरजे।
उमड़ चहूं ते आये बदरवा मोरो जियरा लरजे ॥

२१

कागा बोले दाहनेरी मनमोहन आवेंगे मेरे धाम।
जबसे कागा बोले तबसे मनरस पागी और रसरङ्गसे
दिल उन सङ्ग लागा ॥

२२

तुमसो नयना लागेरी जासो मेरो मन अटक्यो।
सगरी रैन मोहे तलफत बीती भोर भए गरवा लागेरी ॥

२३

बंसरी बजाय मन मोहोरे कान्हा।
हरे हरे बांसकी बंसी बजाई ऐसे बजा तोको
राम दुहाई मइकूं नींद न आईरे कान्हा ॥

२४

बटोइया जियरा जातरी।
सगरी रैन माहे तलफत बीती तरफ तरफ घबरातरी
छब्बारसिक हंस मो उर लागो होन चहत अब प्रातरी ॥

२५

गारी दूंगी मैं ना डरोंगी लालारे।
दूंगी गारो मैं अपनो उमङ्गसे सौतन की मैं ना सुनूंगी ॥

२६

सुवावाली बनो मैं पाया अब मेरी जान लाड़ो मैं पाया।
हाथ तेरे जराउदा कंगना महदो देख लुभाया ॥

२७

लोगोरे विरना जागे।
एक चन्द्र दूजे निर्मल तारे पायलिया मोरी बाजे ॥

२८

ननदी तारा विरना मई छेड़त।

तोरे विरना कूं कित समझाऊं निशदिन मइकूं झेड़त
सगरी रैन मोहि तलफत बीतै सिरको गगरिया
तोड़त ॥

२९

श्रामार बंशी के ले गइलो चोरारे सांवल भला भला वे
श्रामार बाड़ो श्राश्रो बैंधू खाश्रो नागर पान ।
बैठन देवो शीतल पाटो जौवन देवो दान ॥
एक सखी तोरि घरमें गई तो एक सखी तोरि द्वार ।
तन भीगो चोखे काजल कनको मारि जाय ॥

कलिङ्ग—खेमटा

बंशी बाजाय मन लेगयो रे श्याम रे काला रे कान्हर
श्रामार वन्धु श्रामार जीरो प्राण म० ।
कालिन्दीर तीर कान्ह बजाईलो वंशिया
श्रामार बंशी रड़ डर दीलो प्रेमे री तरङ्ग ॥

२

बेड़ा पार कोरिया श्रीराधारी ब्रजनाथ ।
सबसखी को पार कोरी लो लेवे श्राना श्राना
राधाजीको पार करी लो लेवे कानेर सोना ॥

३

किंगरी निर्वाण बाजे बाजे बाजे एरो सजनी
ज्ञान सिरोही बांध कमरमें शूरा रणमें श्राया।
प्रेम मगन ह्वै शूरा खेले एक एक पर धाया ॥
शूरा ज्यों मैदानमें क्या कूरा को काम ।
शूराको शूरा होय मिलिये तो पूरा सब काम ॥
कहे कबीर सुनो भर्तृहरि मीजो सुन रोझे मन ज्ञान।
प्रेमकी डोरी लागो गगनमें त्रिकुटी संयम ध्यान ॥

४

गगरिया मैं कैसे ले घर जाऊं ।
सास बुरी मोरी ननद हठीली देवरा करे तरकैया ॥

५

मन ले गयो ले गयो पिया बातनमें ।
एक दिन काजम गरवो लगायो हाथ दियो मोरे
हाथनमें ॥

६

मोर परदेशिया कब घर अइ है ।
ना जानूं कौन देश विलम रहो कबहूं तो सुध मारी
लइ है ॥

७

यह बंसी किने बजाईरे जिया माने न मोर।
छोटी करिलो के लम्बे लम्बे पात
छोटोका जियरा छोटो के हात ॥

८

उनींदा हो जो काँई रातरा वैन शिथिल
अरु नयन झुक्या हो आवे लगि बैठा परभातरा ।
पलकाँ पीक अधरन अञ्जन अलसाया हो गातरा
रसिकविहारी बेनिया ढुलावाँ कहाँ कहाँ कर
आए यातरा ॥

९

मारुडारे देश मैं तो जास्यां ।
सुन मारवन कहे अलबेलिया लिख हक हग
फरमास्यां॥
दुर्जन लाज पाजरे ऊपर ह्वै आतुर ललचास्यां ।
जो माने हस लाज दिवासे तुमसे अति अरखास्यां ॥

१०

बना मेरा सांवला हो मैं वारी ।
ऊंटोंदे गल घुंघरू बाजे ठाढ़ो मैं देखों हो अटारी ॥

११

गई झुलनी टूट दगा हो गई बालम ।
हरे हरे बाँसको बांसुरीरे टेरत मति बौराई ॥
घर बाहिर मोहे कल न परत है पूंछत कुंवर कन्हाई।
कृष्णरसिक फिर नेक सुना वह मनमोहन सुखदायी ॥

१२

मोरे बहोत दिनन के बिछुरे सइयां वोलो नांही रे ।
कहा मोसे चूक परी मोरे काजम हंस हंस घूंघट
खोलो ॥

१३

तरसाए रखियोजो कबतक सुख देखे पाऊं

छक छक दरस देत कहूं तनक तनक ।
प्रस्तर मणि शशि गुरु अपनेको प्रेमको जब लागो
चकमक ॥
निकसि पड़ी कहीं ज्योति तकसी देख ज्योति लागो
चेटक ।
परख परख अब कहां जाय काजम ठुसक ठुमक कहूं
चटक मटक ॥

१४

उजियारो भई सारी रतिया तूं जो उजियारा पिया
जग अंधियारा निरख निरख पियाको छवि न्यारी ।
घट घट बढ़ बढ़ सम्पूरण भई हम हूंको दोनो
उजियारो काजम हमारे सङ्गको सबहो ज्याति भइ
कैसे रहे जगमें अंधियारो ॥

१५

पिया छाड़ दे मोरी बहियांरे अपने गरजके सइयां ।
लगर झगर के लिपटत जात हा ठइयां ॥
हंस हंस धस रस बस पड़ गइलो ऐसे मनके छइयां ।
गई सो गई मेरो वयस अकारथ अब हूं समझ
गुसइयां ॥
सब तजके धाम तेरे अइलो और आय परो पइयां ।
अवगुण बखशो नित दर्शन पइये चरण कमल
बलिजइयां ॥

१६

बीत गई सारी रातियां पियके लाग छतियां ।
सोच सोच जिय जात है मेरो सोच सोच रही
मनही मनमें जात रहो जोबनवा जगमें
कोऊ न पूछे बातियां ॥

१७

मत करोरे कोई बात अयानो ऐसो बातां
का रब निगहबानी ।
समझ समझ कर मुखते निकासो निकसी बात
और हुइ है बेगानी
मुरादअली अब सांची कहत है किस बिरते
पर तत्ता पानी ॥

१८

मैं पूछत हूं तोसे नायक बनजारे ।
तू सङ्ग लादे फिरत है इतने ठांड़ा इतने भारे ॥
काहूसे भरत काहूसे बेचत लेत नफा छोड़ा दूना
हर भरतोमें धड़ाधड़ो करत नफा तापे सेर न होत
यह कोन पनसेरोते बांट तेरे आई ।
तू पा संग या को जो भयो है वह चतुरजू और
पूरो तौल रहो है यह कह दे साच भाव मोसे ॥

१९

खींच न आवे कमनिया बे नवला जान ।
सुनवाको थरियामें जेवना परोसो देखो मैं थारो
छैला मिजमान ॥
मानकचन्दो सावरिया चाबो न जाय बंगलादे पान ।
ढाल तरवरिया बांधे हूं न जान हमसे करत तू काहे
गुमान ॥

२०

मइकूं गारो दोनोरे सुनो ननदिया वीर तिहारे ।
ना मैं बोलो ना मैं चालो काठ कटोलो छड़ो मारो ॥
अपनो मरज़को मेरे कने आवे बहियां मरोर मोंहो
गरहो लगावे।
सौतनिया कछू कहत आवे और कहूं तो सइयां
रिझावे मैं तो वाहोके रङ्गरस मोनोरो ॥

२१

फलवा खिल खिल जातरो मलिया तोरो बगियामें ।
आपो बोये आपो तोरे आपो पाले देखो रो गंवार
ठाढ़ो बगियामें ॥

२२

जान जान जियरा लगाय दुख दे गयो ।
विरहको रातो मातो जरो जात हूं तन मनको
रस ले गयो
हमरे पिया परदेश सिधारे ना जानूं कछु ले गयो ॥

२३

सइयांरे नइयां नइयां जइ हूं मैं तोरे साथरो ।

Acc. 36

सास मोरी वैरन ननद हठीली ताने दे दो
आधी रातरी ॥

२४

सइयांकी खबरियां मइकूं आन सुनारे कागा।
जारे कगवा लारे सइयांकी खबरियां सोने चोंच
मढेहूं कागा॥

२५

पिया बिन आज मइकूं बादरवा डरावे ननदी।
कहा करूं कछु बस नहीं मेरा रैन दिना मइकूं
विरह सतावे ॥

२६

बादल गरजे बोले मोर ननदी छुवो छोर।
मनरङ्ग पिया तोरे पइयां परूंगी फिर आऊंगी भोर॥

२७

ननदी दिवरा वानर कोठरी पैठा चोर।
अलख झलक मोरा बिछुवा उतारे मैं जानूं सइयां
मोर ॥

२८

न छुवो न छुवो न छुवो अरे सइयांरे मोरा
जियरा डरे।
सगरी रैन मोहिं तरफत बीती जावो आशक
तुम बैठो परे ॥

२९

भोरइ भवा मइका नीक सगुनवा आवेंगे पियरवा
मन्दिरवा सखीरी मोरो पहर सिंगरवा करहु
भेंट जोबनवा।
मौज भई जियरा सुख पाइलो आनन्द से चमक
रह्यो धाम अङ्गनवा ॥

३०

कोई इतनो मेरी जाय कहो वा प्रियतम प्यारे सो
सजनो।
कल न परत मोहिं घरी घरी पल पल छिन छिन
निश दिन ओर मग हेरत बार भई कितनो ॥

३१

इशतियाक बन्दी दार तु दारद दिले मन दिले मन
दांन दो मन दोम्रो दान दिले मन।
अब तो दया कर अपनी मौजसे करले बेदरदो चाह
जितन ॥

३२

फुलवारी हूं देखन जातरी जोबनमें मदमातीरे।
मोतिया केवरा चम्पा चमेली मालन फूलन लातीरे॥
मोहन वास आई जो मोहती फूलती हो कुम्हलातीरे।
हाफ़िज़ मदन बान परो मोरे अङ्ग अङ्ग रङ्गरातीरे ॥

३३

प्यारे मोसों जिन बोलो जावो सौतनके सङ्ग डोलो।
भोर भए सकल जन जागें अब घूंघट मत खोलो ॥
मानो रसरङ्ग विनती मोरी गढ़ मढ़ बतियां छतियां
छोलो।
जिनके सङ्ग सब निश जागे हो उनके अङ्ग टटोलो ॥

३४

चांदनी रतियां कर ले बतियां।
आज पियरवा मनमोहनवा तुहारे दरस मोरी
शोरीं हो छतियां
तिहारे कारण मैं सेज बिछाई रागरङ्ग आवो
हम तुम मिल ले चकि छकि झकि रहो वेग
आये प्यारे बीत जात है सब रतियां ॥

३५

हेरा फेरामें गुज़र गई सारी रतियां।
सास मोरी सोवे ननद मोरी जागे करने न पाई
सइयां सङ्ग बतियां
सास मोरी देखे दोरनिया जेठानियां ननद
निगोड़ी कर रही घतियां ॥

३६

बगिया बिरानी जिन छूवोरे बलमा मोरा।
एक तो वोगन बामलिया तोरो बगियामें
दूसरे वेगनवा मोरो छतियां ॥

३७

मुलक देगना नहीं जइयो रे सइयां मोरे ।
काहेको गमन करो परदेशवा याही घरवा बैठ
रहियोरे सइयां मोरे ॥

३८

जोवनवा मोरा जायरे ।
चकवा चकवी दोय जन वारो इन मत मारो कोय
ए मारे कर्तारके ज्यों रैन बिछोहा होय ॥

३९

मोरा मन धीर धरत नहीं सुन सुन श्याम बंशरियाकी
लोक लाज कुल सकुच रहूं डर दारुण सासु
ननदियाकी ॥

४०

बोलो बोलो रे हरिनाम भोर कंथा बालमराज ।
एक पिञ्जरामें दोय जन वारो एक मुनिया एक लाल
लाल बेचारा उड़ गया तेरी मुनिया पै कुरबान ॥

४१

वंशीवारे हो कान्हा मोरो रे गगरी उतार ।
गगरो उतार मेरो तिलक संभार ॥
यमुनाके नोरे तीरे बरसीलो मेह ।
छोटे से कन्हैयाजी सो लागो म्हारो नेह ॥
वृन्दावनमें गउएं चरावे तोर लियो गरवा को हार ।
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर तोरे गई बलिहार ॥

४२

रातके सुपनवा हां सांवरे सों जुलम भइला ।
बारह वर्ष की व्रषभानु दुलारी सोलह वर्षके कान
वंशी बजावे वृन्दावनमें मोह लियो मेरो प्रान
मन बस गइला ॥
गोरे वदन पर सीतला जो निकसी दे गई दिलपै दाग ।
मेरो मन सांवरे सों उरझो प्रीति पुरानी लाग
नइल वा ॥

४३

बारह वर्ष पर मोर सइयां आइल दुर गयो
जोवन वाला हो ।
अब पछताये क्या होत है वयस उमर सब टाला हो ॥

४४

सास मोरी बैरन ननद हठीली छोटो देवरा बड़ो
हो नदाना ।
सइयों बेदरदी खबर न लीनो गयो यौवन नहीं आना ॥
सबही जइल वा हो हां सइयां गइलो गाजीपुरमा ।
देवरा गइलो पटना ससुरा गइलो पूर्व तैयां
आवो मोहन करो हठ ना बे बलमा ॥

४५

बोले बोले रे चिरैया वनके मोरवा ।
परदेश वालो तोरी आस लगी कुम्हलाय गइलो
यौवन वास नहीं ॥
एक अंधियारी दूजे पिया बिछुरे तीजे सावनको
डबरवा भर गइलो नीर ।
उमग आलु तरवा यौवन गम्भीर कैसे काटि
है रजनी ननदी विन तोरे वीर ॥
मोरे कौन पवरिया पहुंचावे ललना नयो रे भयो ।
चलना परदेसिया ललना तैंने कछु न कियो
मोरे आवत हो यौवनवा परदेश कियो ॥

४६

सगुण विचारो पियके मिलनको ।
विन देखे कल न परत है लागत प्यारो वाके चाल
चलनको ॥

४७

आनो अनो मेरा ढोल ढोलनो अरो ए सूर्यमल धाल
धा भोलो मा अनमोलनो ।
जिन वे राखियां माना कल था सो सर भोजो चोलनो
सोना देवीं रूपा देवीं यार न देवीं तोलनो ॥

४८

हां रे चोरेवालिया ओ रो नयनवालिया तैं काहे कूं
जादू डारा रे अरे ।
तेरे हाथमें खरबूजा तेरा यार मिलेगा दूजा ॥
अरे तेरे हाथ में करेला यार मिलेगा छैला ।

तेरे हाथ में नारङ्गी तुझे यार मिलेगा रङ्गी ॥
तू खावे शकरकन्दी तुझे यार मिलेगा गन्धो ।
तेरे हाथमें बताशा तेरा यार करे तमाशा ॥
अब तू रङ्गी रङ्गी रङ्गी तू तो सदा रहैगा चङ्गा ।
तुझे यार मिले फिरङ्गी तुझे यार मिलेगा जङ्गी ॥

४९

ना कछु ना कछु होई पछो गए पोछे खोज न होई ।
जैसे हैं कालिन्दीके खम्भा तैसे परब्रह्म को रङ्गा
सब जगमें वो एक ही चिन्ना सन्त कबीर कहे रङ्ग भिन्ना ॥

५०

मद कूं मारी दोनो री सुनो ननदिया वीर तिहारे ।
ना मैं बोली ना मैं चाली काट कटीली सुरमारी री० ॥

५१

मोरा पार करिया दे रे गोकुल व्रजनार ।
सब सखिनको पार करी ले लेवो आना आना
राधा जोको पार करी ले लेवो कामा सोना ॥

५२

भीजे चुनरी प्रेम रस बूंदन ।
आरती साजके चली है सुहागन अपने सइयां को ढूंढन ॥
चढ़ी गगन खुल गई किवाड़ी गुरुके चरण लागी
भूलन ।
कहे कबीर गोरी याही विध भीजे मिट गये
दुःखद्वन्दन ॥

५३

आज मोरे जानीके मिलनेकूं आईरे मो मन चीते
कजवा भइले मन्दरवा ।
आवो गावो नाचो सब सखो रे सहेली सदारङ्ग
कहीं मिल है सुन्दरवा ॥

५४

ननदियाके विरना मद कूं ले चलो रे ।
पहले पार मोरी खेती बोई समुद्र किनारे
हरि भरो तामें बोए पांचो विरवा तामें सइयां
मो मिलो रे ॥

५५

बेदरदी मोरा सइयां रे मरोरी मोरी बहियांरे ।
क्या करूं कछु बस नहीं मेरो विनती करूं परूं पइयांरे
कृष्णरसिक यह केलि देखावत मन महियां
सुख नहियांरे ॥

५६

श्याम बजावत वीणा री आली ।
आठ मास कार्तिक नहाए दान पुण्य बहु कीना
एरी दई तेरो कहा बिगड़ो छोटा कन्त मोहे दीना ॥
करके शृङ्गार पलंगपर बैठो रोम रोम रस भीना ।
चोली केरे बन्द तरकन लागे श्याम भए प्रवीणा ॥
मीरांके प्रभु गिरधर नागर हरि चरणन चित लीना ।
अब तो आन पड़ो फन्दे बिच लोक लाज तज दीना ॥

५७

मोर मुकट पीताम्बर राजे उर सोहे वनमाला
बांके कन्हैया प्यारे वो छैला ।
मुकुटकी लटक छवि अजब बनी मन्त्र जन्त्र टोना
बस कीनो व्रजनारी सारी दीनदयाल गये कौन गैला ॥

५८

गोपाल रङ्ग राची मैं श्याम रङ्ग राची ।
कहा भयो जल विषके खाए तोन छुते मैं बाची ॥
तात मात लोग कुटुम्ब तिन कीनो उपहासी ।
नन्दनन्दन गोपी ग्वाल तिनके आगे मैं नाची ॥
और सकल छाड़िके मैं भक्ति वाञ्छ काची ।
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर मेरो जानत झूठी
और सांची ॥

५९

हरि बिछुरनको शूल न जाई ।
कबहुंक दये आलिङ्गन कबहुंक दीरत
निहोरत गाई ॥
एक समय वृन्दावन महियां अचरा झपट मोरी
लाज छुड़ाई ।
बलि बलि जाउं मुखारविन्दको वह मूरति चित
रही है समाई ॥

वे दिन ऊधो बिसरत नाहीं अम्बर हरि यमुना
तट जाई।
सूरदास स्वामी गुणसागर सुमिर सुमिर हरिको
सुध आई॥

६०

द्वारे द्वारे फिरे नहीं सुध राम भजनको।
औरनको उपदेश करत है अरे सुध न रहो तन मनको॥
लोभ ग्रस्यो रहत निशि वासर आशा लागी है धनको।
देवकृष्ण प्रभुको सुमरण कर ले गैल गहो
श्रीवृन्दावनको॥

६१

हमारे मन्दिरके झारू झारे सब पाप।
हरि मन्दिरमें पवित्र होत है गावत मङ्गल आप॥

६२

तन हारो रे सुवा हरि नाम बना।
मट्टीको पिञ्जरा पवन सुवा पांच तत्व मिल
प्रकट हुवा॥
काम क्रोध मद जरत धुवा पांच पचीस सङ्ग ले न डुवा।
तामें राजा एक सटुवा भूला रहत दरदम घटुवा
कहत कबीर वृथा जन्म मिटुवा॥

६३

श्याम मोहिं बावरी कर डारी।
अंबुवाकी डारी कोयलिया बोले कुहू कुहू भयकारी॥
दिन नहीं चैन रैन नहीं निद्रा विरह व्यथा भई भारी।
सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनको तुम जीती हम हारी॥

६४

हां रे दई मारे योगी काहेको वेणु बजाईरे।
कानन कुण्डल गले विच सेली घर घर अलख
जगाईरे॥

६५

हम व करी हरिको सेवकाई।
कोमल चरण सहाकण्टक मग ता पर वन हम
धेनु चराई॥
अपने सुख सम्पतिके कारण आगे कर दीने
दोऊ भाई।
सूरश्याम मानत है नाता प्रेम सहित कहे नन्दराई॥

६६

ऐसे राम दीन हितकारी।
अति कोमल करुणानिधान बिन कारण पर उपकारी॥
साधनहीन दीन निज अवश शिला भई मुनिनारी।
गृह ते गमन परसि पदपावन घोर शापते टारी॥
हिंसारत निषाद नाम सब पशु समान वनचारी।
भेंटो हृदय लगाय प्रेम वश नहीं कुल जाति विचारी॥
यद्यपि द्रोह कियो सुरपति सुत कहि न जात
अति भारी।
सकल लोक अवलोकि शोकहत शरण गए भय टारी॥
विहङ्गयोनि आमिष आहार पर गृद्ध कौन व्रतधारी।
जनक समान क्रिया ताकी निज कर सब बात संवारी॥
अधम जाति शिवरी योषित शठ लोक वेदते न्यारी।
जानि प्रीति दे दर्श कृपानिधि सोउ रघुनाथ उधारी॥
कपि सुग्रीव बन्धुभय व्याकुल आयो शरण पुकारी।
सहि न सके दारुण दुख जनके हत्यो बालि सहि
गारी॥
रिपुको बन्धु विभीषण निशिचर कौन भजन
अधिकारी।
शरण गए आगे ह्वै लीनो भेंटो भुजा पसारी॥
अशुभ होय जिनके सुमिरनते वानर रीछ विकारी।
वेद विदित पावन किए ते सब महिमा नाथ तुम्हारी॥
कहां लग कहौं दीन अगणित जिनकी तुमने
विपत् निवारी।
कलिमलग्रसित दासतुलसी पर काहे कृपा विसारी॥

६७

आज गिरिधारी नेक बांसुरी बजाइये।
देखत ही मेरो मन हरलीनो मुरली की टेर सुनाइये॥

६८

सब घट व्यापक ऐसे राम भक्ति मोहिं दीजिए।

अज महेश वेद चार नाम अनन्तको कर उचार
नाद सारद शेषनाम स्मरण निशिदिन कीजिए ॥
वाल्मीक औ वेदव्यास ध्रुव प्रह्लाद विभीषणदास
शिवरी केवट खगसे वायस अपनो जन मोहिं
कीजिये ।
गणिका गृद्ध अजामिल श्वपच कुब्जाको आशा दीनो
रूपक सदन कसाई और सुदामा पाहन होय
पसीजिये ॥
नामदेव औ दास कबीरा रङ्का बङ्का नाई मीरा
द्रौपदी गज और विदुर सुदमासो सुयश लीजिए ।
भक्ति शिरोमणि है भरपूर गावै सूदर सबको धूर
दास गरीबी तुलसी सूर गिनती कहां लग कीजिये ॥

६९

लङ्गरवा मदको छोड़ रे लगोई रहत दर पर थरहरवा
निपट कठिन कहुं डगर बगरवा ।
झमक झमक दृगसो दृग जोरे हरिदयाल हंसि
बहियां मरोरे कैसे बसिये गोकुल नगरवा ॥

७०

कौन गांवको रीति बेदरदी आपु ही आप करत
बरजोरी ।
दधि मेरी खाइ मटकी मेरी फोरी आप चले जग जीत॥

७१

तेरे रसीले नयना जान चितवनमें चितचोरी करें ।
कासों जान करूं फरयाद सब तो वाकी ओरी करें॥

७२

छोटी छोटी चुरियां न पहरूं नरम कलैया मोरीरे ।
दारीजारा है मनहरवा अङ्गिया देख लुभानारे ॥

७३

कजरारे नयना लागे ललक रूप मोहनी वा
प्यारी तक तक चित रहे पिया परे ना पलक ।
उमंग भरे ऋतुराज राजके देख सखी यौवनकी
झलक ॥
प्रेम प्रीति नए नेह रङ्ग में रङ्ग रहे शिरसे पांव तलक।

ख्याल खुशाल करत निशि वासर छैल छबीले
चपल कुलक ॥

७४

सइयां निरमोहिया को मनाय लाई ।
सगरो रैन मोहे तलफत बीतो भोर भए गरवा
लगाय लाई ॥

७५

एरी गुइयां कर्मको बांचो न जाय ।
कर्म ही यार खोटो निकलो भ्रमतही दिन जाय ॥

७६

फिर फिर राम रसिया तन हेरत ।
तृषित जान जल लेने लखनख गए भुजा उठाय
ऊंचे सुर टेरत ॥
अवनि कुरङ्ग विहङ्ग द्रुम डारन रूप निहारत
पलकन फेरत ।
अवलोकत मग लोक चहुंदिश मनहुं चकोर
चन्द्रमहिं घेरत ॥
मग न डरत निरखत पदकमलनि शुभग सरासन
शायक फेरत ।
ते नर भूरि भाग्य भूतल पर तुलसी राम पथिक
पद जे रत ॥

७७

तन धरि सुखिया कोउ नहीं देखा जो देखा सो
दुखियारे ।
आदि अन्तको कहे देत हो इसको करो विवेकियारे॥
योगी दुखिया जङ्गम दुखिया तपसीका दुख दूनारे ।
आशा तृष्णा सब घट व्यापी कोइ महल नहीं सूनारे॥
घाटे दुखिया बाटे दुखिया क्या गृहस्थ क्या वैरागी।
शुकाचार्य दुःखके कारण गर्भ ही माया त्यागी ॥
सांची कहो तो सब जग खीझै झूठी कहो ना जाई ।
कहे कबीर सोइ है सुखिया हरिचरणन चित लाई॥

७८

कोइ सुनता है गुरुज्ञानी गगनमें अवाज़ होती झानी।

पहले जे आए नादविन्द सो पाछे जमाए पानी ।
घट घट पूरण पूर रहा है अलख पुरुष निर्वाणी ॥
वहां से आए पटनो खाए तृष्णा नहीं बुझानी ।
अमृत छोड़ विषको रस पीवै उलटे पाश फंसानो ॥
जो कुछ देखो नजर हो पेखो अजर अमर हो नशानी ।
कहे कबीर सुनो भाइ साधो यह आगम
निगमको वाणी ॥

७९

को मेटै कर्तार करी ।
कहा सुनि शक्ति सगरको सन्तति विनु इन्धनकी
आग जरी ॥
गणिक वशिष्ठ इष्ट सङ्ग लच्छमण दुर्बल रावण आन हरी ।
त्रिभुवन को पति पति पायो है सो सीता कैसे
बन्ध परी ॥
भिषक् विदुर व्यास ऐसे पण्डित ताहि मध्य पुनि
हुते हरी ।
कौरव पाण्डव हैं दोऊ दल तिनके हटकत जूझि मरी ॥
चतुर हतो यदुवंश मण्डलो विन लोहेके जूझ झरी ।
सूरदास जैसी मति उपजै ताके तैसी कर्म परी ॥

८०

हमारे अंखियन हो के तारे ।
राधा मोहन मोहन राधा यह दोउ रूप उजारे ॥
गौर श्याम अभिराम रङ्गभरे ब्रज बरसानेवारे ।
शुक सारद नारद बलिहारी उपमा वरणत हारे ॥

८१

घुटरुन घनश्याम चलेरे ।
कटि किङ्किणी पग नूपुर बाजे नाक बुलाक हलेरे ॥
किलकत विहंसत दूर निकस गए कहत यशोमति
भलेरे ।
सूरदास प्रभु बाललीला देखत मन आनन्द रलेरे ॥

८२

दया मेरो मेरो करतै जन्म गयो कछु हरि न भज्यो ।
बारह वर्ष बालापन बीत्यो बीस वर्ष कछु नहिं न कियो
वृद्ध भए तन कम्पन लाग्यो इन्द्रियको बल
सब हो दह्यो ॥
जिह्वा थको सुख वचन न आवे तब हृदय बिच ज्ञान
भयो ।
आई तलफ गोपाल लोतो माया मन्दिर घेर रह्यो
कहै नानक सुन भर्तृहरि योगी माया डूब गयो ॥

८३

कर तुम ताड़ू निरखेरे निनाड़ू रङ्गा ।
गोविन्द स्वामी अटकूं तेनू दैया मैनू कालुम्
शम शम ताड़ू औरङ्गा ॥

८४

हो म्हारी मारवन थांरो देश रूड़ो ।
उदियांपुरको कामिनी कांई गढ़नरवरको ढोलो चूड़ो ॥

८५

गल्ल कैसी करदा वो मेरी जान वो मेरी जाना ।
दोष काहू न दोजे प्यारो आलो कि़समतदा बदा होना ॥

कलिङ्ग—तिताला

आज म्हारे मङ्गलरो भलो रात ।
आवो मोरे बमना तू बैठो मोरे अंगना
बहियां चढ़ाऊं थारे चन्दन गात ॥

२

कान्हा राजो आवो ने म्हारे ।
थें तो म्हाने प्यारे लागो राज आज सिपर धारे हमारे ॥

कलिङ्ग—यत्

हम जो वे दाना साईं मैं तो वारो वो ।
बांकोइ घोड़ा तेरो बांकोइ जोड़ा
बांकोई कमर कटारो राज साईं वो ॥

२

हम न जीवें तुम जाइलोरे ।
तुम्हीं सों ध्यान तुम प्राणपति पिया जब लग प्रीति
निभाइलोरे ॥

३

मुरलीवारेने जादू कीता हो ।
राजबहादुर तानके मिस कोन मन्त्र पढ़ दीता हो ॥

४

सुआवाली लाड़ो वर पाया ।
जिन सों बतियां रङ्गरस कीनो सोई वर व्याहन आया ॥

कलिङ्ग—धीमा तिताला

नयनन ए कीना वरजोरो ।
रूपलालकी सीख न मानो श्याम एक रङ्ग चितवोरो
उन तन वार वार लजात ब्रह्म सर्वसो वहोरो ॥

२

दोम तन दिरना दोस्त तदानो नाद्र दानो तुम
तदार तद्र दानो ।
खिश्ता खिश्ताके खमजां दर मैयारोन साया चि दारी
अतकिल अत न्यारी दोम ॥

३

लागी लगन कैसे छूटे सैंयां हो नादान ।
लाग गई सब लाज कहां है जानि न जान तू जान
बेईमान
कृष्णरसिक अठिलात छाड़के करहि जान पहचान
मन मान ॥

४

नयनावालीरे जान भो वो खींचे तिरछी कमान ।
टेढ़ो भौंहें बांकी चितवन लागो कलेजे तान ॥

५

समझ बूझके खेयो मुलक बेगाना ।
बालम काचो है सोपरिया काचा बंगला पान
बालम तोरे बगीचारे अन्त बैठा चोरको रखवार
चू चुआ फल सदाफल खावे गंवार ॥

खेमटा

बालम तुम चलो उहां हम गज बैल सारस हंसको
जोड़या फिरे अकेले ।
बालम बालम मत करो मत मरो रोय
चला जाता संसार अमर न कोय ॥

२

खैंचो न आवे कमनिया बिन बलका ज्वान ।
हाथ पकर क्यों जो तरसावत देखा मैं तेरा गुमान
नाहक मुख चुम्बत उर लावत क्यों मेटत कुलकान ॥
अबहो खेल खिलौना सिखहो क्यों खेलत चौगान ।
कृष्णरसिक यह तोहि उचित है मेरो मान तू जान ॥

३

दगा है गा बालम गई झुलनो टूट ।
चुन चुन कलियां सेज बिछायों चढ़त सेजरियां
पर है गई लूट
मनसिज मदन नयनन भर आयो चिते न परत
लाज गई छूट ॥
कांपत तन जोबन सरसाने लपट झपट गहगड़
भई जूट ।
कृष्णरसिक यह सोच छांड़के हिल मिल पिअहु
अमृत नई घूंट ॥

४

पतली कमरकी जनिया तो से लागे मेरे नयन ।
जब ते न देखो तेरो सूरत वाण लागे हैं मैन ॥

५

मज़ा मार ले जान पतलो कामर को गोरिया ।
बैंगनबाड़ो तेरो अजब बनिया तामें नोबू तोरिया ॥

६

ज़रा देखो नज़र भर गोरिया नयन लागे मोर ।
सालू सरस कुसुमको अंगिया नीको तनिया तोर ॥

७

मज़ा उड़ाय ले गोरिया ज्वानी भई मतवार ।
केहरि कटि कदलो सो जङ्घा छाती बनो जैसे के
अनार ॥

८

बांको राम गुजरो नदिया किनारे ।
लहंगा भी लाए फरिया भी लाए अंगिया न लाए
सभी बात बिगरी ॥

९

गोरिया नीके चल रे तेरे सइयां हैं नादान ।
मों बालम को दोष लगावत मत कर मान गुमान ॥

यह यौवन तरुवरकी छांहो समुझ देख कर ज्ञान ।
कृष्णरसिक मन मान ले मेरी छांड़ अटपटो बान ॥

१०

तोरे नयनवां को बान गुइयां जोरे परो बांको
तंबोलन डगरा बैठी चाये नागर पान ।
घूंघट अन्दर सैन चलावे तक तक मारे बाण ॥

११

भावे तू जान न जान गुमानिड़ा हों तो थारो
बन्दी हो रहिया बे ।
गले लगन मानू जो तरसावदा इतनो अरज़ मोरो
मान ले सिपाहिया बे ॥

कलिङ्ग—यत्

नयना काहे को लगाए रसिया बालम ज़ालिम जोर।
रूप रङ्ग रस राते माते मनमोहन चितचोर ॥

खेमटा

माई आज वृन्दावन रहस राधाको नगरी ।
जैसे हो चन्द्र चकोर चहत है तैसे हो गोपो रही
सगरी ॥
राधा सखियां सहेलरी पूंछके माई रहस देखन
हम जात ।
बहियां पकर हरि ले चले री आज सुहागको रात ॥

२

मेरी तू मानो सांवलिया तेरो तो कूंन ऐसी रैन
अंधेरिया अब कैसे आऊं जान ।
पायन चुभो गुजरिया तलफे मेरा प्राण ॥

३

वारा मोरा जियरा सइयां काहेको लगायारे ।
जियको बातें वारो कोऊ न जाने नेह लगे जो
टरत न टारारे ॥

४

आधीरातको अमलमें बिछुवारे बैठा डङ्कमें बिछुवारे
काटा चढ़ी लहर भइल पिय आवनका ।
पिय बिन लहंगा कौन उतारे सोती थी मैं गफ़लतमें ॥

आठ पहरको चोंसठ घड़ियां बायत अपनी दरदमें
बेदरदो वहो मान सजन मैं० ।
लाल पलङ्ग पर ज़रद बिछौना हरा दुपट्टा अतलसमें
पिय बिन लहंगा कौन उतारे मैं० ॥

कलिङ्ग—परज

धन्य धन्य धन्य धन्य विन्ध्यवासनो ए मा ।
कनक मन्दिर मणि सुजड़ित चमकत अति चमत्कार
नव नौबत निशान बाजत गर्जत श्रीशिव
कैलासनो ए मा ॥
छिनमें वृद्ध छिनमें बाल छिनमें तरुण छिन कुमार
असुर दण्डनि सुरन वन्दनि जगनिवासनी ए मा ।
दीनदयालको भक्ति दीजे युगल चरण यश हि लीजे
आदि ज्योति महामाया दैत्यत्रासनो ए मा ॥

२

मेरे मन बसोरी श्रीरघुनाथ क्रीट मुकुट मकराकृत
कुण्डल भाल तिलक उर लसोरी श्री० ।
कोटिक शशिमुख ऊपर वारो अधर सुधारस सिन्धु
बसोरी श्री० ॥
पीवत परम रसिकजन सादर नहीं अघात फिर
मन ललचारी श्री० ।
श्यामसुन्दर कमलदल लोचन धनुष पीताम्बर
कमर कसोरी श्री० ॥
रघुनाथ भक्त सुखदायक पावन जनक ग्रह
आय बसोरी ।
भगवान्दास जानकी वर भजु यह नित सुध्यान
उरमें धसोरी ॥

३

तुम कौन कहांते आए कौन नगरते किस कने
आए यहां किसके कहलाए ।
किसने तुम्हें किस कामको भेजा कामभी उसका
किया के नाहीं वहां जाओगे या यहां रहोगे क्या
मन में ठहराए ॥

ज्ञान ध्यान वासे सङ्ग लाए मूरख हो या मूल गंवाए।
माया मोह लोभमें अखतर सुध बुध सब विसराए॥

५

नींदरिया काहेको आई रे जाग परी रोई पछताई।
रात आए पिय बहुत दिनन पर फिर गए जब मोहि सोवत पाई॥
ठाढ़ रहे यहांके गए तब याकी नींद इको उड़ाई।
सोवे संयोगन जागे वियोगन आंख लगी कहुं आंख लगाई॥
नीके भाग जो होत सखीरी पिया आवत मोहे लेत जगाई।
बलबल जाउं काजमके भागकी भली भई धर तोड़ समाई॥

कलिङ्ग—यत

आजकी रैन सुहाग भरी लालम मेरे पाए।
बाजे बधावा सुहावन सजनी इरां मङ्गल लाए॥

२

योमन हो वन ढूंढ़ूं पिया मैं नहीं पाये।
कानन मुद्रा गल बीच सैली अङ्ग विभूति रमाये॥

३

सुख देखे वे बहार रे ऊधो नहीं प्रीति कुब्जा से सूधो।
जाके आठ पटरानी सुन्दर गोपी सोलह हजार सो पटरानीको जा दी गजमुक्ताके हार॥
झूठो वचन और नाव झांझरी को गए उतरे पार
राजकुल आ धर्म औ अपने वानी राजनीति गई भार।
गावे गूदर ऊधो तुम कहियो प्रभुसे बारबार॥

४

हों तो चली अब देश विदेश बाबुल तेरो नगरी छूटी।
वीरन फिर कठिन है आवन आश मिलनकी टूटी॥
ससुरे जात हों सङ्ग पियाके माता पिता सों रूठी।
सइयां हंसत मैं अस रोवत हूं जैसे मारी लूटी॥
सांचा मित्र कोई नहीं जगमें प्रीति जगत्‌की झूटी।
ससुर के लोक तुराव से पूछो नैहर सों जो फूटी॥

५

अभय मुक्तिप्रद काशी जगमें।
जाको महिमा मुनी पुराणन कहि गए अकथ कथासी॥
कञ्चन मणि रत्न पट भूषण राजत अति सुखराशी।
सकल पुरी तारागणके मध्य शोभित शशि उपमासी॥
अष्ट महासिद्धि पौर पौरियां मुक्ति है जाकी दासी।
महापतित नर लहे परम गति परे न यमकी फांसी॥
जहां राजे गौरीपति शङ्कर जगत् गुरु अविनाशी।
दण्डपाणि गणपति दरबानी भोजनदाता अन्नपूर्णासी॥
पग पग तीर्थ जहां सुर सगरे धर्म्मद्रवी गङ्गासी।
भैरवनाथ करे कोतवाली गणपति विघ्नविनाशी॥
नर ते धन्य वसे नगरीमें धर्म्म कर्म्म सुखराशी।
असन वसन धन धाम नवो निधि बहुविध भोग विलासी॥
मङ्गल मरण जहां जग वाञ्छित अमर सकल पुरवासी।
विधिकी कछु न बसाई मो कर सत्र ते रहत मैं वासी॥
योगी यती साधुजन जहां वसि तप करे सन्यासी।
प्रेमदास जन तारो मिलावहु हरि वैकुण्ठनिवासी॥

कलिङ्ग—परज

पियाके सङ्ग एरी नार चौसर क्यों नहीं खेले।
इस अवसरको निपट सार जानो यह दिन है तीन चार॥
जो जीते तो पियको जीते हारे तो रहे पिया लार।
तेरी तो सब तरह जीत है जीत होत न कर शोच विचार॥
सात पांचको कच्ची पच्ची तो सोलह है हार।
दाव रखे सो रङ्ग है वाको वोहो जीते सो बार॥
अब तो अदिया बन्द चले है कर है धों धत रार।
जब छके छूट जावेंगे तेरे तब क्या करोगे खेलार॥
आठ याम इनकी सुध राखो यह जो खुले दश द्वार।
तेरी भलाई सजीमे प्यारको कामको ले नरद मार॥

और पांच तिथि हैं पन्द्रह को निहार चंवदे भुवन
खुले ता कों जब ते इनको सवार।
ग्रीष भरो ऋतुको प्यास बुझावो दशों लगावो वार॥
निधिको ऋद्धि सिद्धि हो तब हीं के जो तुझे है
अहंकार।
बारह हैं वाट अठारह हैं पैंड़ा और चालें हैं हज़ार॥
तू चल गुरुको बताई चाल याही ते उतरैगो पार।
अब तू रङ्ग कर रङ्ग रहो जो न करत तकरार॥
जाकों जाको सत्रह सोलह हैं कौन करे
पिय को प्यार।
अब कुछ पासोमें पै पासा हाथ एकनके सुख़तार॥
चहिये कुछ और आवे कुछ और याहीते लाचार।
ऊपर चाल कब ह्रं तो सूझे हमको कहो मतवार
युग युग जिये अज़ीज़दीन ऊपर उठना है एकबार॥

कजली—तिताला

कान्ह वंशिया बजावे राधा खेले कजरी।
नयनन अञ्जन आंजि राधिका सोहे शृङ्गार
आभरण सजरी॥
मोर मुकुट काछनो काछे बेसर हार कर सोहै
गुजरी।
इत ग्वाल बाल सब सखा सङ्ग लिए उत राधे सखी
लिए गुजरी
कृष्णानन्द प्रभु सावन मास में धूम मचो खेलत
कजरी॥

२

नाथ नैया रे नेवरिया नेरे लेके आव।
ना मोरे नैया नारे बेड़ा तुमही गुसैयां मोही
पार पहुंचाव॥

३

ककरेजवा मंगाय दे मोरे बांके जमादार
चुनरिया रंगाय दे मोरे लरकैया के यार।
लहरिया पहनके मैं चलली बज़रवा मिल गए
मइकूं बालापनके यार॥

४

मैं तो सइयांरे पवल्यूं न मुवाना।
चल चलनन मुइवा मोर नैहरवा तो के रखे
ओव तीन जुनवाना
सेइनन मुइवा नोकल बाज़ार अरे खेलइके मागे
झुनझुन बाना॥

५

करहैयां नइ नइ जाय गोरी बहियां यार।
रसली चुड़ियां चुभि चुभि जाय सइयां महिकूं रे
गरहो लो लगाय॥

६

मजवा खेले कटरी सुरङ्गी खेले कजरी।
लचकत कटि वा गोरिया आवे सजरी
लचकत करहैयां आवे छमके धजरी॥

७

निबिया लहरिया ले मोरे अङ्गना।
कंहवां बैठा बे हरियल सुगवा कंहवा बैठा बे मोर
कहवासें आइला हरियल सुगवा कहवांसे अइला मोर
मोरे अङ्गना॥
कहंवां पिया बोले हरियल सुगवा कहंवां पिया
बोले मोर मोरे अङ्गना
दुधवा पियाइब हरियल सुगवा मोतिया चुगाइब
मोर मोरे अङ्गना।
जोतहो के कहेलूं मैं खेत खरियनवा जोतिला
डाल चुलिया दुवार मोरे अङ्गना॥

८

खेले कजरी गोरिया सांवनके महिनवा खेले
सुरङ्ग चुनरिया गोरी।
लहरिया लै ज़रद किनारो अङ्गिया तनवा सजरी॥

९

नज़राय गइली बालम तोरे अंगना।
तोरे सोनेको सुराहो मोरा हीरा कङ्गना तोरा
लाख रुपैया मोरा बाला जोबना॥

१०

खेले कजरी गोकुल मध्य कन्हैया छोटे मोटे लरका
सङ्ग सखी राधा लिए रङ्गिया।
नाचत कूदत आवे कुष्नन ठेया कृष्ण रसिक राधा रस
भरियां सांवनके महीना महकूं लागी रलिया॥

११

भले कहलैरे कबुतरी मचवले कजरी।
बाबूके बज.रवामें लुटवे लुंगरी॥

१२

फूल गेंदवा रे खेले गहलुरे हरी।
मोरे स्वामीजी जे मितवा सुन्दरवारे हरी
पुलगेवा छटक झुलनो टूटलरे हरी॥

१३

चल चल वसुमतिया बरैयाकी दुकान।
जहां जहां बरिया कतरल पान तहां तहां
वसुमतिया को टिकुली हैरान॥

१४

फूल गेंदवाके श्राड़े श्राड़े श्रावे गोरिया।
टपकल बूंद चुवल अङ्गिया॥

१५

भला वे भला मोरे बपहो गोरखपुरवा।
गोरख पुकारे जनकपुरवा॥
नथिया मोरो टूट गई नैहरवा।
कैसे जाउं भला वे भला मोरे पुरवारे गोरखपुरवा॥

परज—कलिङ्ग

मृगनयनी बोल्यो के न राज थारे तो देश विलम्बो
राज।
श्रावोजी महरवान सगुन विचारो काहे करो छो
म्हासे खाज॥

२

बदरिया बरसन लागोरो निश अंधियारो कारो
दामिनो दमके प्राण तरफन लागेरो।
निज़ामुद्दीनके श्राजम लाड़ले पग तिहारे परसन
लागेरे॥

३

माई मेरा लाड़ला बनरा श्राया बनरो से रङ्ग
बन बन श्राया।
अचपल छोके गावो मेरासन यह विधिनारे बने
संयोग बनाया॥

४

थे तो म्हांरो कदर न जानदा वे रसिया।
श्राप हो क्यारो वारो श्राप हो मालो श्रापो खेल
खेलारो वे रसिया॥

५

म्हारे मारूजो से कह ज्यो राज अमलांरो
अमलांरी बात।
चन्द्र सरीखो थारो मुखड़ो विराजो उजरे
सेवती से गोरे गात॥

६

वे राज थाने खमा वो राज खमां माने राखे
दिलाशा दे दे मारा जाशां।
म्हांने बुलाया वारो थे नहीं श्राया क्यों कर खाऊं
थारी गमां॥

७

मेरा अलबेलरा सांवलको श्रांखदानो सहयो।
पांच रुपैया वारो पानांदा बोड़ा मुझे मांगे
सारो रातरा॥

८

भला वो चाहको चाकरी कोजे अनचाहत
का नाम न लोजे।
श्रौरांदे नाल हंसदा बोलदा नाहक क्यों सांड़ो
जान दोजे॥

९

घरो घरो मैंनू सतांदा यार वे मैं तेख रहियां
तेनू को वे यार।
तेनू तो नींद न श्रावे सोवन न दे शानू श्रांखो
मलमल जांदा यार॥

१०

रूड़ो मारू आयो है म्हारे घेर ।
कबको मैं ठाढ़ो ठाढ़ो अरज़ करेशां कहां लगाई
एतो देर ॥

११

केशरिया मारूजी हो मान लीजो म्हारी अरज. ।
राजीन्द्र चल श्यो चाकरो लाड़ो जोरा ढोला
साथ लोजो ॥

१२

रूड़ो रूड़ो वे पना रूड़ो मांरो राज ।
घिर घर घड़ा घड़े घर मागर चाल चले रूड़ो रूड़ो ॥

१३

अरे हो राजाजो म्हासे कांई वो गुना महल पधारो
अरज. करो हो पना ।
अबको बार म्हा बख़्शो साहबां मेहर करो अपना ॥

१४

राज थांरो रूड़ो हो रङ्ग मैंने तोरे कारण सब
जग छांड़ो ।
केशरिया जो थारो बाग़ बनो छे बूंदीवारो कमर
कटारो ॥

१५

हाल मेरा तुझ कों है मालूम तू तो मेरा दिल
जानिड़ा ।
की करां कुछ वश नहीं चलदा क्यों कर आऊं सांवल
गुमानिड़ा ॥

१६

नज़रां रो मेलो राज दीजो सांवलिया म्हाने हो ।
छकंदपना थारा दूर करो साहबां इतनो अरज.
सुन लीजो ॥

१७

पइयां पइयां चलूं पियाके मिलन को ए सजनी ।
या ऋतु वर्षामें फ़खर पिया परदेशवा विरम रहे
सतावन लागे मेरा जिया ॥

कालिङ्ग—षट्

अतवित मिल किलक पानकपू शुदबुद आमद
चिनाचे मो न बूद पेशानो दोदारो गोशकानो
बोनो नकू ।
बनियां बकाल दलाल खुशहाल शूद्र ब्राह्मण ज़ुनारदार
बिशियार निहाल शुद पालको सवार शुद आमद है
दोस्तां न मृजा शिरवें गनार ख़ान शेख़ पपू
तिया ज़द आब ज़ूद काबुल कन्धार बूद यार दिलदार
बुरदबार हुशियार बिनो शराब ख्याल बदस्त
गबरू कदोन गायद गुफ़त टपू ॥
अस्प शुतर खर फ़ोल दोद मन गोयम किश्तोनावतेरा
कसना वरवलो चपू अज़मे चमेखाइवे गोग
डूगोर टपू ।
यह फ़ारसो य दोदनो यदनोके साहब मेहरबान
क़दरदान तोशदान लेकन इनशा अल्ला-ताला बशोर
शाख़ नजरू आधोन यगोयद सननन सपू ॥

२

नाचत नाचत सारो रैन रह्यो जब थको भोर भए
तान बैठ बोलेरो ।
ख़फ़ा हो के नाक चढ़ा नोचोसे कहने लगो
तबलेसे सुर कांई अब तू लेरो ॥
सुख फार घुंघरू ठनकने लागे ठन ठन छवि भई
भावको बंक बलेरो ।
सारङ्गो बेरङ्गो भई ताल से बेताल गावे फिटक
फिटक करे तबलेरो ॥

३

रतियां न अइला गइला सइयां विलम रहिल
के ठइयां रे ।
भकुवा भइला रहिला रतियां कवन तिया
विल मइला रे
शेषवा कइला रहिला अंदेशवा नवल तिया गर
लइला रे ॥

४

जय जय राम जय जय कृष्ण जय माधव जय विष्णु।
जय लक्ष्मी मुखकमल मधुव्रत जय दशकन्धर-जिष्णु॥
हरि दामोदर दुरित निवारण अपनय भवभयमोहं।
भक्तजनप्रिय पङ्कजलोचन नारायण तव दासोऽहं॥
जनकसुतापति चरणपरायण राघव राम पवित्रं।
कलिविषनाशन दुष्टविनाशन त्वं हि बन्धु त्वं हित्वं॥
हरि सुरनरकरिपो मधुसूदन केशव कलमषभारं।
मामनुकम्पय दीनमनाथं कुरु भवसागरपारं॥
त्वं जननी जनकः प्रभुरच्युत त्वंहि सुहृदकुलमित्रं।
त्वं चरणं शरणागतवत्सल त्वं भवजलधिविहित्रं॥
अपराधं मे मुरहरि परिहरि कुरु वै चरणं शरणं।
संसारार्णवतरणिकरुणावरुणालयभवतरणं॥
पुनरपि जननं पुनरपि मरणं पुनरपि गर्भनिवासं।
क्षोभमूलभवभीतिविभञ्जन मामुद्धर निजदासं॥
जय परमात्मन् जय पुरुषोत्तम जय वामन जय कंसारे।
मामुद्धर गोविन्द गोपालं पतित विषयसंसारे॥
श्रीगोपीजनवल्लभ विट्ठलनारद कृतमिति गीतं।
तारय नाथ परम पुरुषोत्तम माधवजन्म पुनीतं॥
जय श्रीपति जय केशव कृष्णा जय माधव जय गोपाला।
जय दामोदर सुन्दरमन्दिर नन्दनन्दन जगप्रतिपाला॥
यशोदानन्दन कंसनिकन्दन भक्तनवन्दनकृपाला।
कृष्णानन्द परमानन्द श्रीगिरिधर प्रभुदयाला॥

कलिङ्ग—माढ़ तिताला

भजन बिन तीनो पन बिगरे।
बालापन तो खेल गंवायो तरुण भये अकड़े॥
वृद्ध भये तब कछुअ न सूझत अन्ध होय निवरे।
काहे को देह धरो मानुषको पशु समान गुज़रे॥
मन तो धन यौवन मद मातो बोलत गर्व भरे।
कहे कबीर सुनो भाई साधो कर ले भजन हरे॥

२

मोको रखो यशोदा मैया तेरो लरको।
बचवा छोड़ाय मेरो गउवां चुखाय दीवो और
तारो मेरो छीको॥
दूध दहीको कमारो फोरो मथनिया माट फोरो
गहे छीको।
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर हरि बिन सब जग फीको॥

३

सदा हरि को रस पीजे हो।
हरि रस अमृत छांड़िके विष नाहीं गहोजे हो
तन मन धन हरि ऊपर सर्व वारि दीजे हो॥
सब हरिको अर्पण करि चरण गहोजे हो।
वृथा उमर यौंहो जात है वपु सब छीजे हो॥
दुर्लभ मानुष देह धर यो कारज कीजे हो।
हरि बिनु माणिक और जो तामें चित न दीजे हो॥

४

मारग चूका रे मुसाफ़िर।
हरिपुर मारग छांड़ि के ठग मारगमें ठूका रे॥
देह विषय मन इन्द्रिय सङ्ग ज्ञान ह्न रूका रे।
सज्जन सङ्ग को छांड़के कुसङ्गमें लूका रे॥
भ्रष्ट भए निज धर्मते सुनि वचन तिनूका रे।
ज्ञान धर्म धन को हरे डारे भ्रमके भूका रे॥
महा अनर्थप्राप्त करे जैसे सङ्ग ठगों का रे।
माणिक जो चाहत भलो सङ्ग त्यागो बुरोंका रे॥

परज—माढ़ तिताला

जा कर हम यमुना पछतानो आग लगी है
भरन इं पानी।
घाट पै ठाड़ो है तहां मनमोहन चितवत हो
सुध मोर भुलानो
लोक कहें सब भई का बावरो मोहन लख कोउ
रहत सयानो॥
अब तो गयो मन हाथ से मोरे मोरी चितवन
मोरे मुण्ड बिसानो।
जा तन लागी सोइ तन जाने काज़म पीर
कोऊ नहीं जानो॥

कलिङ्ग—देश

नगरिया चोरको यामें ग़ाफ़ल मारो जावे।
चोर सिरदार अहङ्कार है जामें काम क्रोध जरावे॥
ज्ञान ध्यान कछु मानत नाहीं अपनी अपनी फेरावे।
मन प्रधान चोर है जाको मोह कपट बसावे॥
लोभ राजा अमल है जामें नित उठ धूम मचावे।
भले लोक सब चुप रहे नेक न शीस उठावे॥
धर्म्म ज्ञान डरे दुष्टन सो कब हु न पास सङ्ग आवे।
क्षमा शील सन्तोष नहीं कबहूं तृष्णा जग भटकावे॥
इस नगरीमें बसके माणिक मूढ़ सुख सो सो जावे।
काल राजा मारत है तिनको छिन हो छिन में रोलावे॥

२

बटोही तू क्यों सोवे सोवे भवन माहे दाव लगो
जागी के नाहीं जोवे हो।
तन धन विषय लागिके वृथा वपु खोवे हो॥
विकट पंथ माहि पश्चो कर्म्म बोझ क्यों ढोवे हो।
मृत्युसिंहका दुःख सुनि तू हो क्यों खोवे हो॥
नाम अमृत रस राम को तामें ग़र्क़ न होवे हो।
माणिक राम सों लागिके सुख सो क्यों न सोये हो॥

परज—माड़ तिताला

पन्थोड़ा पन्थ विचारो रे।
विचार विचार कुपन्थमें पग मत धारो रे॥
विघ्न घने वा पन्थमें बड़ो पर्वत पहारो रे।
जो तर जाए नाम सो जिन जीव उधारो रे॥
साधुसङ्ग निर्मल हरिके पुर पधारो रे।
माणिक हरिपद पायके भव छंको डारो रे॥

परज—कलिङ्ग

अब क्यों करी है अबार हमरी वार हो नन्द कुमार।
गज अभिमान ग्राह जब पकड़ो कर गहि चक्र
संभार॥
दुष्ट दुःशासन चोर गह्यो जब द्रौपदी को करो
है सहार।
खम्भ फारि हिरनाकुश माश्चो प्रह्लाद लियो उबार॥
दशो शीस रावणके तोरे सीता लाय मुरार।
भक्त हेत अवतार धश्चो प्रभु भूमि उतारन भार॥
सकल विलोकत ना कोउ अपनो जो जानो तो वार।
रामजीदास शरण तेरो आयो ए मोहि तारणहार॥

२

एरो ए मैं मूकरां मारी माई मैंने छेड़े छे कुंवर
कन्हाई।
मारग रोके जाने न देशी मेरी छीन छीन दधि खाई
नरसीनो स्वामी सांवलियो सब सन्तन मन भाई॥

३

जा दिन ते हरि लगन लगाई।
एक घड़ी बिन मूरत देखे गृह अंगना मोको कछु
न सुहाई
चन्द्रसखी हित बालकृष्ण प्रभु लोक लाजको
सब बिसराई॥

४

कहिये जो कहबेको होय।
जात न लगो सोई तन जाने जा रे वैद्य कहा
परो तोय॥
लाख सयाने पच पच हारे मर्म व्यथा जाने
नहीं कोय।
चन्द्रसखी पीर तब ही मिटेगो मिले सांवरा वैद्य
जो मोय॥

५

जाने रे कोउ वैद्य न मनको।
जा तन लगी सोइ तन जाने अटपटी प्रीति
लगन है कठिनको॥
हीरेको सार सो हीरो जाने सम्मुख चोट सहे
शिर घमको।
चन्द्रसखी हित बालकृष्ण छवि चिन्ता है मोहे वा
सुरगनको॥

६

लीनो री मन मोहन हरके।
वंशीकी ध्वनि सुन भई हूं बावरी लोकलाज सब गई है बिसरके ॥
रूप ठगोरी डारो मोरी सजनी बैंगां मिलो री टोना गयो करके।
वृन्दावन को कुञ्जगलिनमें छूटो री मैं पायन परके
चन्द्रसखी हित बालकृष्ण प्रभु हाथ बिकानी मैं राधावरके ॥

परज—तिताला

चांदनी छाय रही आधीरात।
अति सुकुमारी लड़ेती प्यारी प्रीतम उर लपटाय रही॥
मन सों मन नयनन सो नयना तन सो तन उरझाय रही।
नागरिया नागर दोउ राजत लाजत मृदु मुसक्याय रही ॥

२

रघुवर आसरो म्हाने थारो छे जी।
एक आश विश्वास भरोसो और नहीं छे हमारो
भूल पर्‍यो संसार समुद्रमें भटकत फिरत दुखारो ॥
एक बेर करुणा कर मो पर आपनी ओर निहारो।
ऊधो पतितनाथ तुम पावन मत करो लोक हंसारो ॥

३

म्हारो राखो लाज मुरारीजी मारो मन लागी हरिचरणनसीं।
जिन चरणनको कमला सेवे ब्रह्मा आदि गणेशजी
सारद नारद श्रीशुकदेव शेष महेश फणीशजी
सुरपति नरपति गणपति नायक रस पिये रसना सोजी ॥
ध्रुव तारे प्रह्लाद उबारे राख लियो यात्ना सोजो।
चरणकमल में चित विलग्यो है पायो निगम भना सोजी
जन हरिदास परम पद परसे रोम रोम रसना सोजी॥

४

राधे प्यारी हाथ थारे मेंहदी राची घनो ।
नख पंक्ति छविके ऊपर वारूं लालमनो ॥
फुलड़ी फब रही दोनो करन पर शोभा सरस बनी।
हस्तराम मन ललचो लाल को रीझ रह्यो श्याम धनो॥

परज—कलिङ्ग

राधा प्यारी थारो वर रूड़ो।
बार बार मैल्यां वारना मारग नेह निभावन पूरो ॥
रूप लिए ही रहे नृत्यत सांवल शोभा नेक रङ्ग रूड़ो।
वृन्दावन हित रूप स्वामिनी धन्य सोहागन अविचल चूड़ो ॥

२

वंशीवालड़ेने केहा जादू कीता।
राजबहादुर तानांदे मिश्र अजब मन्त्र पड़ लीता ॥

कलिङ्ग—तिताला

कान्हा रसिया वृन्दावन वासी।
यमुनाके नीरे तीरे धेनु चरावे वंशी बजावे गावे करे सखी हांसी
उरझ रह्यो मन सुरझत नाहीं प्रेम फन्दको फांसी ॥
मोर मुकुट पीताम्बर सोहत मुरली बजावत आछी।
वृन्दावनकी कुञ्ज गलिनमें रास रच्यो अविनाशी ॥
इत गोकुल उत मथुरा नगरी बीच मिल्यो व्रजवासी।
सूरदास प्रभु तिहरे दर्शको लगी प्रेमको गांसी ॥

२

रङ्गरसिया मांका राज।
रङ्गरसियाजी म्हाके अन्तर वसिया जमीय नेह निभाज्योजी ॥
केशरिया अत हंसिया बालम मालमवे के बुलाजो जी।
रङ्गीला प्रीतम म्हारो मनरो आशा तन को तपन बुझा जो जी ॥

३

प्यारो थाने खमा हो म्हाने राख्याजी दिलाशा दे दे दर्मा।

राज बुलाया थे नहो आया कौलो खायो मैं तो गर्मा ॥
मीठा बोला वारो छातो छोला सांच नहीं छे
मूल जर्मा ।
रङ्गीला प्रीतम थारो आश हो मैं वन आई
घांकावाया पगाने म्हे नर्मा ॥

परज—कलिङ्ग

म्हारो मनुडो राजो ।
कांइ जी करेला म्हारा गुरुजन दुर्जन झकमारे
ला पाजो
यार आगे मैं तो केलि करश्यां हां हां जी अब मैं तो
रसिक सनेहो जी सो मिलश्यां परत न हारों बाजी ॥

२

थाको छवि प्यारो राज प्यारो म्हाने लागे ।
छैल छबोला रङ्ग रङ्गीला अङ्ग मरगजे बागे ॥
बड़े हो सवारे म्हारे भले हो पधार्‌यो
म्हारो आंखड़ ल्यारे आगे ।
रसिक गोविन्द अभिराम श्याम थाको मुख देखे
दुःख भागे ॥

३

नयना अमलारा जो माता आए राज ।
रैन कहां थे रह्यो जो सांवलिया सज केशरिया साज ॥
पोक कपोल अधर पर अञ्जन सौंह करो छो
बिन काज ।
रसिक गोविन्द पिया थे बहु नायक कांई थाने
आवे न लाज ॥

कलिङ्ग—तिताला

हां जी म्हाको मारवन थाको देश रूड़ो ।
प्याराजो के पचरङ्ग पाग विराजे प्यारीजो के
पंचरङ्ग गुलालो चूड़ो ॥

परज—तिताला

वंशो ध्वनि बाजे यमुना तीर ।
सांवन भादो नदी चली जैसे व्रजनारिनको भीर ॥
कैसी वंशी बजाई मोहनो मोहन बलके वीर ।
सूरदास रसवश कर लीनो सुन्दर श्याम शरीर ॥

कलिङ्ग—तिताला

सोवत राधे श्याम जगाई श्याम जगाई ।
बैठे निकट श्याम कुञ्जनमें मूदत नयन लेत अलसाई ॥
कानन मोती गले बिच सोहे अलकें छूट भुजन
पर आई ।
सोनेका गड़ुवा लोग दतुनिया सखियन धाय
यमुना जल लाई
सूरदास तुम्हरे दर्शको निरखत रूप हियरे लगाई ॥

२

तुम कहांसे आए जगे परी प्यारे रैनके उनींदे
हम जो पहचाने तेरो अंखियां खुमार भरों ।
अधरन अञ्जन लिलाट महावर पोक कपोलन लगे ॥
अरसाने सरसाने मैं जाने पिय चरण धरत डगमगे ।
चन्द्रसखी जो तुम वहां जावो नहीं लागे तुम्हरे सगे ॥

परज—तिताला

मैं कैसे करि हों बात रो सइयो वा दिन सइयांके
सात रो ।
गुण अवगुण मेरो चित नहीं धरि है जब निर्मल होंगे
गात रो ॥

कलिङ्ग—तिताला

मैं गवने नहीं जइहों रे बालम ।
जो गवनेको चर्चा करि है तापर टोना
चलइहों रे बालम ॥

परज—एकताला

बोलन लागे पपिहरा रो ननदी मइ को न
भवनवा भावे ।
मोरे सइयां सन्देशवा न भेजो अधिक शोच जिय
पछतावे ॥

२

कौनि वन जइहौंरे बिरोगना ।
गोंदलो गह कनो रोवे बार बार जिय भर भर
आवत यत्न जत सों पइहों रे ॥
ले दे मोंहि चुनरिया सइयां सुवे रङ्ग बोरोरे ।
बूटो ज़रद धानो मोको सोहे हमारे ॥

नैया पार लगावो है दरें करारे।
छोटी नाव बिन गुणको ता पर बहुत बयार रे
उमड़ घुमड़ नदिया भर आई क्यों कर उतरों पार रे
तुम बड़े गरीबनिवाज़रे ॥

२

मोर पाये चूड़ा चलो नहीं जाय।
दिल्ली शहर से चूड़ा मगायो चुड़वाकी कील
मोरे चुभ चुभ जाय ॥

कलिङ्ग—एकताला

वाण धनुइयां कित धरे दें री मैया।
तोरों से सब मिल आंगन खेलें चारो भैया ॥
कालो दूरह अन्त गए सब सखा बुलैयां।
एक वाण जो खोय गयो सरयू तट महियां ॥
बाग़ शुभग बैठक बनी आछे बसन बनइयां।
नानाविध पक्षी बोले और परम सुख पइयां ॥
सरयू किनारे ना गए बाबाको दुहैया।
तुलसी घर थे बुलायके पूछो क्यों न मैया ॥

२

बीतो रैन हनुमान न आए को वाको पर्वत
छोहरानो को भारत भाई विरमाए।
कपि चञ्चल कौन भरोसो देख मधुर फल रहे लोभाए॥
भोर होत लक्ष्मण संग जरिबे अनुज उठाय राम
उर लाये।
तुलसीदास प्रभु तुम्हरे दर्शको पर्वत सहित
भोर ले आए ॥

३

गोपाला रामा रे हरि हरि गोविन्दा ररे जो
ककावार जात मन्दर दिलहा सारे सुजलदी भव नीर
तीर वासा रे।
गोपी गोपीनाथ गोपो ग्वाला सारे गणपति
मुखदुग गणपति ड़िढ़कती ॥

४

धन धन केशवा हरत कलेशवा ध्यावत जाको
महेशवा हो।
जाके पद गावल हृदय लगावल गरद मिलावल
अघवा हो ॥
गो ब्राम्हण सधवाके कारण जल वरसत घट
मेघवा हो।
प्रागदास प्रह्लादवाके कारण रघवा हो गइल
बघवा हो ॥

५

भकुवा रे तोय चिन्ता वाय राम कहत हं परल रहो
जाहि जपल शेषवा महेशवा गणेशवा जाहि
जपल है दिनेशवा।
प्रागदास प्रह्लादवाके कारण रघवा होय गइल बघवा ॥

६

कांनुड़ो मारग लूटे हो राज।
ले ले रे कानुड़ा माखन मोपे छाड़ दे
मटुको मेरो फूटे हो राज ॥
वृन्दावनको कुञ्ज गलिन में कञ्चकोके बन्ध
टूटे हो राज।
चन्द्रसखी हित बाल कृष्ण छवि लागी लगन क्यों
छूटे हो राज ॥

जयजयवन्ती—तिताला

हम जान लीनी रे पिया ऐसी तिहारी बात।
मुखकी मोहुंसे जियकी औरनसे घात ॥
आज मैं करन न पाई री पिया सन जियकी बात।
ऊधो जो मैं तिहारो बलैया लैहों मद को ले चलो
उन हो सात ॥

२

कवन बे पियालरी जहां मोर भंवरूरे रहि
लो लोभाय।
वारो हमारी आली उन बिन रही मुरझाय ॥

३

अच्छो वंशो बजाई कान्हा जयजयवन्तो तानसो।
सा रे ग म प ध नि सा नि ध प म ग रे सा
ताल मान बखान सो ॥

४

आज नन्दको नन्दन आलो या मग हो वनको गयो।
शिर मुकुट दीने कर बीच वंशी लीने भाल तिलक
कीने कोटि कामरूप उदयो ॥

५

दामिनी दमके डर मोहि लागि उमगी दल बादल
श्याम घटा।
लिख भेजो सखी उन नन्दनको मेरो खोल
किताबको देखें व्यथा
आधी रैनके कारण सइयां बिछुरे हों तो होंगो
बैरागन खोल जटा ॥

६

हां रे सइयां मोरा रे लुब्धानो कवन देशवा।
जबते गमन कीनो सुध हु न लीनो कासन भेजों
संदेशवा ॥

७

माई नन्द जूके द्वारे कोई माला मोरी ले गयो।
माला तो मैं फेर लाऊं दरशन कैसे पाऊं ऐसो
विश्वासघाती मेरो छाती छू गयो ॥

८

कहा जानो री कहा जानो लालन हंस कर मन
यश कर लीनो।
ससकर मोरा हियरामा राजे कसक कसक मोरो
अंगिया कसके पिय सदारङ्ग अति हो रसभीनो ॥

९

ननदी मोसों बैर परो पियसो कहत न बात।
आवत जात मोरे मनुवारे सदारङ्ग जिय ललचात ॥

१०

म्हांसों कांई बोलो म्हारो राज गयलना परदेशी
मुलक बेगाना।
सगरी रैन सुखसों बीती भोर भए सतरात ॥

११

माई आज तो आवाज़ आई मजनूंके आहकी।
जिन बिन गैल सूनी मेरो सैरगाहकी ॥
चढ़ती अटारी देखती जारी वारी उन बिन सुनी
लागत नगरी संसारकी।
इश्क़ इश्क़ सब कोई कहे आशक़ भए अनेक
इश्क़-चमन के बीचमें पहुंचा मजनूं एक ॥
पयसङ्ग बोसीद मजनूं खुलके, पुरसीदिये।
चि बूद गुफ़ गोश गाहे कूय लैलो रफ़ बूद ॥

१२

मदनमोहन बिन देखे री सजनी घर अंगना न सोहावे।
जब देखत तब होत चैन जिय बिन देखे अकुलावे ॥
चित्त चढ़ी रहे सांवरी मूरत और ध्यान नहीं आवे।
जानकीदास विलास सकल सुख जो पिय दर्श
देखावे ॥

१३

माई आज तो वंशी बाजी वृन्दाबनदी कुञ्ज में।
श्रवण सुनत सब सुध बुध बिसरी सब गोपियनकी
पुञ्ज में ॥

१४

ए री माई कासे कहों पीर मनकी व्याकुल
होत शरीर।
जासों लगी सोई नेक न जाने आखर जात अहीर ॥

१५

ऋतुके आगम ये पच्छी तरुवर छाये पियाकी
सुध नहीं पाई जिया भटकत है।
दामनी दमकत है औरनसों कहा कहों देख देख—
घटा योगी जटा पटकत है ॥

१६

बहुत दिन बीते री अज हूं न आए री लाल।
जबते भवन ते गमन कीनो कीनो विरह बेहाल ॥
नेक न सुरत लई पिय मोरी पाती न पठाई हाल।
श्रवण सुनत युगराजदास प्रभु मोहन वचन रसाल ॥

१७

बिखो दीवाने लोगो दिन दिल दिन जोगी
कोई मजनूं दे कारण ढूंढ़दी फिरदी आई।
उसदी सूरत पर जींद साड़ी कुरबान कीती री
लेनी मानी सदके, गइयां रब करे सो होई ॥

१८

सूरत लागी रे बलमा पिया और आवो गरवा
लाग मिले।
सदारङ्ग महमद शाह रुक ढिग मन्दिर बैठे तब
सुख पावे हैं आनन्द दोऊ जने॥

१९

कौन देश पीउ गइल वा मा।
वहां माई मैं चलों सदारङ्ग परदेश॥

२०

आज तो भवन मेरे ऊधो आए वावना।
मथुरामें कंस माख्यो लङ्का माख्यो रावणा
गोकुल में मारी पुतना स्वर्ग पठावना॥

२१

तुम सुनियो रे तुम सुनियो ऊधो कपट कहांते,
लाया जोग रे॥
लिख लिख वैराग पठावत नन्दनन्दन हमकों
कुब्जासे करें भोग रे।

२२

अजो तुम काहे हो जो तुम काहे रूस रहे
कहो और प्यारे सुरजन मिठबोलना।
अनेक बातन किसे बारत रहत निसा जानो जियमें
और कहा कोउ कैसो अजो॥

२६

तुम्हारे विन कोई नहीं हमारे जी चाहे सो करा
तू घरी भर में रहीम सतार जब्बार जुलफकार।

अपनी करक लीनी मोरी बहियां पिय रखा कर
कलह बोलन लागी दादुर झिंगरवा
दादुर मोर पपीहा बोले और झिंगरवा सदारङ्गीलो
पायल बाजे छांड़ दे लङ्गरवा॥

जयजयवन्ती—तिताला।

कृष्णके नाम ध्यान धरो मन रैन गई सगरो ठरको।
चार दिनाके स्वादके कारण भूल गए सुध वा घरको॥
शोच विचार करो घटमें गुण नाह छियो दूर
अब गुरको।
चाहे निहाल करे छिन में मोहि आश बढ़ी
हरको हरिको॥

२

एक समय वृषभानु सुता अपने घरते निकसी
चपलासी।
बीच ही ठौर मिले जब मोहन छूट गई निकसी
मुख हांसी॥
घूंघटको पट दूर कियो तब दूजते ह्वै गई पूरणमासी।
कोउ कहे अति ही यह सुन्दर कोउ कहे यह
काम कलासी॥

३

तेरो कन्हैया कारो मेरो राधा गोरो है।
अति ही स्वरूप मानो चन्द्रसी उजियारो है॥
चम्पा जैसो कली मानो डाल से उतारो है।
शङ्ख चक्र गदा पद्म पीताम्बर धारो है॥
ऐसे श्यामसुन्दर पर कोटि राधा वारो है।
उत ते आए नन्दनन्दन इत वृषभानु दुलारो है
राधा कृष्ण जोरी पर सूर वलिहारो है॥

इति श्रीकृष्णानन्द व्यासदेव रागसागरोद्भव रागकल्पद्रुमे खम्माच,
परज, कलिङ्ग जयजयवन्ती सम्पूर्णम्॥

श्रीगणेशाय नमः

राग—भैरव

मङ्गल माधव नाम उचार ।
मङ्गल वदन कमल कर मङ्गल मङ्गल जनको
सदा संसार ॥
देखत मङ्गल पूजत मङ्गल गावत मङ्गल चरित उदार
मङ्गल श्रवण कथा रस मङ्गल मङ्गल तन वसुदेव
कुमार ॥
गोकुल मङ्गल मधुवन मङ्गल मङ्गल रुचि
वृन्दावन चन्द्र ।
मङ्गल कर गोवर्द्धनधारी मङ्गल वेश यशोदानन्द ॥
मङ्गल धेनु रेणु भुव मङ्गल मङ्गल मधुर बजावत वेनु ।
मङ्गल गोपवधू परिरम्भण मङ्गल कालिन्दी पयफेनु ॥
मङ्गल चरण पथ मणि मङ्गल मङ्गल कीरति
जगत् निवास ।
अनुदिन मङ्गल ध्यान धरत मुनि मङ्गलमति
परमानन्ददास ॥

२

मङ्गल रूप यशोदा नन्द ।
मङ्गल मुकुट कान मङ्गल मधि कुण्डल झलक
विराजत चन्द ॥
मङ्गल भूषण सब अङ्ग सोहत मङ्गल मूरति
आनन्दकन्द ।
मङ्गल लकुट कांखमें चापे मङ्गल मुरली
बजावत मन्द ॥
मङ्गल चाल मनोहर मङ्गल दरशन होत मिटै
दुखदन्द ।
मङ्गल व्रजपति नाम सबनको मङ्गल गावत हैं
स्रुति छन्द ॥

३

उठो हो गोपाल लाल दुहो धोरी गैयां ।
सद्य दूध मथि पीवहु वैयां ॥
भोर भयो खग तमचर बोले ।
घर घर घोष द्वार सब खोले ॥
तुम्हरे सखा बुलावन आए ।
कृष्ण कृष्ण कहि मङ्गल गाए ॥
गोपी रहीं मथनियां धोवें ।
अपनो अपनो दही बिलोवें ॥
भूषण वसन पलटि पहिराऊं ।
चन्दन तिलक लिलाट बनाऊं ॥
चतुर्भुज लाल गोवर्द्धनधारी ।
मुख छवि पर बल गई महतारी ॥

४

जागे हो मेरे जगत् उजारे ।
कोटिक मन्मथ वारों मुसकनि पर कमलनयन
अंखियनके तारे ॥
सङ्ग में ग्वाल वत्स सब लेके यमुनाके तीर वन
जाउ सवारे ।
परमानन्द कहति नन्दरानी दूर जिन जाहु
मेरे व्रजरखवारे ॥

५

आछो नीको लोनो मुख भोर ही देखाइये ।
निशि के उनींदे नयन तोतराते मीठे वैन भावत
हो जी के मेरे सुख हो बढ़ाइये ॥
सकल सुखकरण त्रिविध तापहरण उरको
तिमिर बढ़ो तुरत नशाइये ।
द्वारे ठाड़े ग्वाल बाल करहु कलेऊ लाल
मिश्रि रोटी छोटी मोटी माखन सों खाइये ॥
तनिक सो मेरे कन्हैया वारी फेरि डारो मैया
वैथो तो गुर्हं बनाय गहरु न लाइये ।
परमानन्द जन जननी मुदित मन फूली फली फूली
उर न समाइये ॥

६

उठो नन्दकुमार भयो भुनसार गावत नन्दरानी ।
झारीके जल वदन पखारो सुत कहि सारङ्गपानी ॥

माखन रोटी अरु मधु मेवा भावे सो लीजे हो आनी।
सूरश्याम मुख निरखि यशोदा मन ही मन मुसिहानी॥

७

उठे नन्दलाल सुनत जननी मुखवानी।
आलस्य भरे नयन उठे शोभाकी खानी॥
गोपीजन थकित हिये चितवनि सब ठाढ़ी।
नयन करि चकोर चन्द्र वदन प्रीति बाढ़ी॥
मात जलभारी लिये कमल मुख पखारो।
नीर ही को स्पर्श करत आलस्य विसारो॥
सखा द्वार ठाढ़े सब टेरत हैं तुमको।
यमुना तट चलो श्याम चारण गोधनको॥
सखा सहित जेंवहु बलि भोजन कुछ कीने।
सूर श्याम हलधर सङ्ग सखा बोलि लीने॥

८

जागिये गोपाल लाल जननी बलि जाई।
उठो तात भयो प्रात रजनी कों तिमिर गयो
प्रकटे सब ग्वाल बाल मोहन कन्हाई॥
उठो मेरे आनन्दकन्द गगनचन्द्र मन्द मन्द
प्रकश्यो द्युतिवान् भानु कमलनि सुखदाई।
सिङ्गी सब पुरत वेनु तुम विना न छुटे धेनु
उठो लाल तजो सेज सुन्दर वर राई॥
मुखतें पट दूर कियो यशोदाको दर्श दियो
और दधि सब मांगि लियो विविध रस मिठाई।
जेंवत दोउ राम श्याम सकल मङ्गल गुण निधान
थारमें कुछ जठ रही सो मानदास पाई॥

९

प्राणनाथ प्रात भयो जागो बलि जाऊं।
सोना केरो गोफन सुवेणुमें गुथाऊं॥
उगत सुरस ज्योति भई कुलही बनाऊं।
पाय बांधों घूंघरू अरु चालिवो सिखाऊं॥
सूरदास मदनमोहन गुण तिहारे गाऊं।
हरषि निरखि छवि ऊपर बलि बलि बलि जाऊं॥

१०

खेलिये आंगन छगन मगन कीजिये कलेवा।
छीकेतें सारो दधि ऊपर तें काढ़ि धरो पहरि
लेहु अंगुली फेंट बांधि लेहु मेवा॥
ग्वालनके सङ्ग खेलन जाहु खेलनके मिश्र भूषण लाहु
कौन परो प्यारे ललन निशदिनको टेवा।
सूरदास मदनमोहन घर हीं खेलो प्यारे ललन
भंवरा चकडोर देहों हंस चकोर परेवा॥

११

मदनमोहन पिय कीजे कलेऊ।
दूध में रोटी सानी माखन मिश्री आनी
जोइ जोइ भावे सोइ सोइ लेऊ॥
खांड़ खीर और घृत मिठाई आप खाहु और
ग्वालन को देऊ।
व्रजपति पिय फेर खेलन को जाहु वन
सबल श्रीदामा को सङ्ग करि लेऊ॥

१२

भोर निकुञ्ज भवन तें भामिनी।
आवति है लटकति गजगामिनी॥
अलक सुगन्ध सगवगी छूटी।
निशिके उनींदे नयन वीरवहूटी॥
पलटित वसन रसन मणिभूषण।
शोभा अङ्ग अङ्ग जित दूषण॥
गुणनिधान वृषभानु दुलारी।
दासगोपाल लाल जूको प्यारी॥

१३

रैन जागी पिय सङ्ग रङ्गभीनी।
प्रफुलित मुखकञ्ज नयन खञ्जरीट मीन मैंन
बिथुरि रहे चूरण कच वदन ओप कीनी॥
आतुर आलस जंभात पुलकित अति पान खात
मदमाते तन सुधि न रही शिथिल भई वेनी।
मांगतें टरि मुक्ताहल अलक सङ्ग अरुझि रही
उरगण फणीश मानो कञ्चुकी तजि दीनी॥

विकसत ज्यों चम्पकली भोर भए भवन चली
लटपटात प्रेमघटा गजगति गति लीनी ।
आरति की करत नाश गिरिधर सुठि सुखकी राशि
सूरदास स्वामिनी गुणगण न जात चीनी ॥

१४

नागरी नवलाल सङ्ग रङ्ग भरी राजी ।
श्याम अङ्ग बाहु दिये कुंवरि पुलकि पुलकि हिये
मन्द मन्द हसनि पिया कोटि मदन लाजी ॥
तरु तमाल श्यामलाल लटपटी अङ्ग अङ्ग बेलि
निरखि सखी छवि सों केलि नूपुर कल बाजी ।
दामोदर हित सुवेश शोभित सखी सुख सुदेश
नव निकुञ्ज भंवर गुञ्ज कोकिल कल गाजी ॥

१५

नवकुञ्ज नयन रतिरङ्ग रङ्गे ।
प्रिया प्रेम वलि रासरस वश अलस वर माधुरी
अङ्ग अङ्गे ॥
रूप यौवन चपलता गुणन आगरे मधुप खञ्जन
मीन मान भङ्गे ।
कहे कृष्णदास कामिनी उरसि मध्यगति
गिरिधरन सुखद प्रतिविम्ब सङ्गे ॥

१६

प्रातकाल प्यारे लाल आवनी बनी ।
उरसि मरगजी सुमाल डगमगी सुदेश चाल
चरण खूंदि मदन जीति करत छोमनी ॥
प्रिया प्रेम अङ्ग राग सगवगी सुरङ्ग पाग
गलित वरुह चूड़ श्रमज वारिकण सनी ।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर कण्ठ सुरत पत्र लिख्यो
कर जो लेखनी सुनि पुन राधिका गुनी ॥

१७

आजु नीके बने नन्दनन्दा ।
वदन इन्दुकी ज्योति निरखि नभ चन्द्रमा चार
अम्बुधि परत सघन चन्दा ॥
श्रम खेद कण गात लाल गिरिधरण सुख
देत मलयज सुपीन मन्दा ।
कृष्णदासचि नाथ डगमगत पग चलत मानो
कुंचर गूंथ्यो प्रेमफन्दा ॥

१८

ललित वदन गलित कुसुम वलित केश
अति सुदेश नयन नलिन रगमगे शशि शरद शर्वरी ।
मरगजी उर माल शिथिल कहुं कहुं चन्दनकी
रेख रसभरे लटपटात गात मधुप अर्व्वरी ॥
शोभित उर उरज लखिम परसत नहीं परत पछिम
नख छवि पर वारि डारों चन्द्र खर्व्वरी ।
वासुदेव लाल कल्याण गिरिधर कों सुयश
गावत श्रीविठ्ठल पद कमल रज प्रताप गर्वरी ॥

१९

भोर अङ्ग अङ्ग शोभा श्यामकी भली ।
मानहु विकसित विचित्र नील कमलकी कली ॥
प्रिया उरसि लग्न राग सरस कुरित छविं पराग
पौन परसि मन्द ले सुगन्ध को चली ।
करि प्रवेश प्राण द्वार हरति युवति चित्तसार
मर्म वेधि समरवाण प्रगटते बली ॥
पलटि वसन सुखनिधान मत्त मधुप करत गान
सुरति समय सुयश सुनि श्रवण दे अली ।
गोपालदास मदन मोहन कुञ्ज भवन वलित रङ्ग
मुदित आवनि भावनी सुमालिके रली ॥

२०

शोभित शुभग लटपटी पाग भीने रसिक प्रिया
अनुराग ।
कुंकुम तिलक अलक सेंदुर छवि अरुण
नयन घूमत निशि जाग ॥
कछु जंभात उर माल मरगजी पीक कपोल
अधर मसि दाग ।
चतुभुज प्रभु गिरिधर नीके लागत आलस वश
सब अङ्ग विभाग ॥

२१

भोर तमचर बोले दोनों जूद रसना ।

आतुर ह्वै उठि धाय डगमगात चरण आए आलसमें
नयन वैन अटपटे रसना ॥
सन्ध्या जू कहि सिधारे वन जियमें संभारे
सकुचिके मन्द मन्द प्रकटित दशना ।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधरण सिधारो तहां जहां
रति रङ्ग रस लपटाए वसना ॥

२२

झूमत मत्त गज ज्यों चलत डगमगे ।
बतियां कहत सैन सुख न आवत वैन
आलस उनींदे नयन शोभित रगमगे ॥
नागर नन्दकिशोर नीको छवि आए भोर
अङ्ग अङ्ग रतिरङ्ग चिह्न जगमगे ।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन हीं लागे पलक चारि
याम जीति काम रहे जू टगमगे ॥

२३

आजु छवि देत नयम आलस भरे रगमगे।
रैन पलक न परो सुरत रण जय करो
भोर आए लाल धरत पग डगमगे ॥
तन और गति भांति कहत कहि न जाति कांति
अद्भुत सकल अङ्ग अङ्ग जगमगे ।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन भलो करो पलटि
आए वसन सौंधे मिले सगमगे ॥

२४

भोर डगममात पग जीति मन्मथ चले ।
सकल रजनो जगी नयन नहीं पल लगी
अरुण आलस चलत नयन लागत भले ॥
कवि नागर नटत चिन्ह प्रकटित करत वसन
आभूषण सुरति रण दलमले।
चतुर्भुज दास प्रभु गिरिधरन छवि बढ़ी अधर
काजर कुंकुम अङ्ग अङ्ग रले ॥

२५

डगमगात आए नटनागर ।
कछु जंभात अलसात भोर भए अरुण नयन
घूमत निशि जागर ॥
रसिक गोपाल सुरति रण को यश सकल चिह्न
लाए उर कागर ।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन कुञ्ज गढ़ रतिपति जीत्यो
रस सुखसागर ॥

२६

भोर भए आए हो ललन नीकी भंतियां ।
जावकके उर चिह्न नील पट प्यारी दीने नयन
आलस भीने जागे रतियां ॥
कुटी ग्रीवा वनदा मन खैंचत अभिराम कैसेके
दुरत श्याम डगमगी गतियां ।
केशवदास प्रभु नन्द सुवन काहे लजात भलेजू
सांवरे गात जानो सब घतियां ॥

२७

आइयेजू भले आए कत सकुचत हो ।
सुरति संग्राम कोने सौतिन को सुख दीने
याही रस भीने हो पै मोकों तो रुचत हो ॥
तुम देखे रिस गई उपजो है प्रीति नई भई सो
भई अब काहे धों सोचत हो ।
नारायण मोहि जानो वहै वैरी करि मानो
कहा जीय एतो अभिलाषजू सुचत हो ॥

२८

अरुण नयन राजत प्रभु भोरे ।
अति सुख सुरति किये ललना सङ्ग जात समद
मन्मथ सर जोरे ॥
राति उनीदे अलसात मराल मति गोलक
चपल रहत कछु थोरे ।
मनहुं कमलके कोष ते प्रियतम ढूंढत रहत
छपि रिपुदल दोरे ॥
सजल कोप प्रतिमें जु शोभियत सङ्गम छवि
तारे पर ढोरे ।
मनु भारतके भ्रमर मीन शिशु जात तरल चितवत
चित चोरे ॥

वरणि न जाइ कहां लों वरणों प्रेम जलद वेला
वलओरे ।
सूरदास सो कौन त्रिया जिनि हरिके सकल
अङ्ग वल तोरे ॥

२९

नाहि दुरत नयना रतनारे ।
जनु वन्धूक सुमन विशाल पर सुन्दर श्याम
शिलीमुख तारे ॥
रहो जो अलक कुटिल कुण्डल पर मोतन चितवत
चिते विसारे ।
शिथिल भौंह धनु गहे मदनगुण रहे कोकनद
वाण विषारे ॥
मंदे ही आवत हैं ए लोचन पलक आतुर उघरत
न उघारे ।
सूरदास प्रभु सोई धों कहो ऐसो को वनिता जामों
रति रण हारे ॥

३०

आवत लाल गोवर्द्धनधारो ।
आलस नयन सरस रस रञ्जित प्रिया प्रेम नवतन
अनुहारो ॥
विलुलित माल मरगजो उर पर सुरति समरको
लगो घराग ।
चुम्बन श्याम अधर रस गावत सुरभि मुख भाव
भैरव राग ॥
पलटि परे पट नील सखोके रसमें झोलत मदनतड़ाग ।
वृन्दावन वोथिन अवलोकत कृष्णदास लोचन
बड़ भाग ॥

३१

भोर भावतो श्रीगिरिधर देखों ।
शुभग कपोल लोल लोचन छवि निरखिके नयन
सुफल करि लेखों ॥
नख शिख रूप अनूप विराजत अङ्ग अङ्ग मन्मथ
कोटि विशेखों ।
चतुर्भुज प्रभु रस रास रसिक को बड़े भाग बल
इकटक पेखों ॥

३२

श्याम सुन्दर भोर भवन आगे होय आवे ।
कबहुं मुख मन्द हास मेरे मेरे सखि सुखको रास
कबहुं वैन कबहुं नयन सेन हीं जनावे ॥
मेरो दधि मथन वार उनको उठनि सवार
रई नेत माट समेत सकल हीं विसरावे ।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन अङ्ग अङ्ग कोटि मदन
मूरति चलत वनको तनरु मन कों चित हो चुरावे ॥

३३

जइये वह देश जहां नन्दनन्दन भेटिये ।
निरखिये मुखकमल कान्ति विरह ताप मेटिये ॥
सुन्दर मुखरूप सुधा लोचन पुट पोजिये ।
लम्पट लव निमिष रहित अंचय अंचय जोजिये ॥
नख शिख मृदु अङ्ग अङ्ग कोमल कर परसिये ।
अरु अनन्य भाव सो भजि मन क्रम वच सरसिये ॥
रास हास भुव विलास लोला सुख पाइये ।
भक्तनके यूथ सहित रसनिधि अवगाहिये ॥
इह अभिलाष अन्तरगत प्राणनाथ पूरिये ।
सागर करुणा उदार त्रिविध ताप चूरिये ॥
क्षण क्षण पल कोटि कल्प वोतत अति भारो ।
परमानन्द कल्पतरु दोनन दुखहारो ॥

३४

भोर भए नोको मुख हंसत दिखाइये ।
रातिके दरशके बिछुरे दोउ पलक मेरे वारि
फेरि डारों नेकु नयननि सिराइये ॥
कोमल उन्नत वाहु ऊपर अमित भाव मेरो
तेरो छातो छवि अधिक बढ़ाइये ।
छीतस्वामो गिरिधर सकल गुणनिधान कहा
काहूं सुख करि प्राण हो ते पाइये ॥

३५

विलुलित करपल्लव मृदु वैन ।
हरषित हुंकरत आवत धेन ॥

कोटि मदन द्युति श्याम शरीर।
विपति कल्पतरु यमुना तीर॥
दच्छिण चरण चरण पर धरे।
वाम अंश भ्रूकुण्डल चले॥
वरुह चन्द्र वन धातु प्रवाल।
मणि मुक्ता गुञ्जाफल माल॥
देखन चलहु छेम नन्दलाल।
ललित त्रिभङ्गी मदन गोपाल॥

३६

तोहि ध्यान लाग्यो सजनी री बारक दृष्टि परे मोहन।
देखियत चित्र लिखीसी ठाढ़ी मदन सिन्धुजल
बून्दसनी॥
रूपनिधान कमलोचन तोहि मिले आजुकी रजनी।
कृष्णदास प्रभु गोवर्द्धनधर रसिक युवति दुखहरनी॥

३७

आंखिनमें दुराय प्यारो काह्न देखन न दीजिये।
हृदय लगाई सुख पाई सुख सब गुणनिधि पूर्ण
जोइ जोइ मन इच्छा होइ सोइ सोइ क्यों न कीजिये॥
मधुर मधुर वचन कहत श्रवणनि सुख दीजिये।
निर्म्मल प्रभु नन्दनन्दन निरखि निरखि जीजिये॥

३८

ऐसे हो धस्यो रे दधि विना मथन किये देहु
यशुमति नेकु अपनो रई।
अपनहुं ढूंढि हारो तैसी निशि अंधिआरो पाऊं न
भवन मांझ कहां धौं गई॥
कछु न जिय सुहाई याही तें आतुर आई लोनीके
लालच जिय चटपटी भई।
दिना चारि करों काज बाढो नन्दजू को राज
जौलों बहुरि हों ल्याऊं नई॥
चतुर्भुजदास रानी मेरी अति चोप जानी है
प्रसन्न मणि महिया आनि दई।
भोर हो देऊं अशोस वारजि निखिसो सीस तिहारे
गिरिधरकी हों बलि बलि गई॥

३९

श्रीनाथ जीको ध्यान मेरे निशिदिना री माई
माधुरी मूरति सोहनी सूरति चित लियो चुराई।
लाल पाग लटकि भाल चिबुक वेसर कण्ठमाल
कर्णफूल मन्दहास लोचन सुखदाई॥
मोर पच्छ शीस धरें मोतिनके हार गरे बाजूबन्द
पहुंचिन कर मुद्रिका सुहाई।
क्षुद्र घण्टिका जेहरि नूपुर बिछिआ सुदेश
अङ्ग अङ्ग देखत उर आनन्द न समाई॥
मुरली अधर धरे श्याम ठाढ़े व्रज युवति माह
सप्त सुरन तान गान गोवर्द्धन राई।
निरखि रूप अति अनूप छाके सुर नर विमान
वल्लभ पद किङ्कर दामोदर बलिजाई॥

४०

श्रीकृष्ण जी को ध्यान मेरे निश दिनारी माई।
मनके महल प्रीति कुञ्ज तामें यदुराई॥
सांवरे वर्ण कोमल चरण नख देखे चकचौंधी
होत पाय नूपुर पैजनी सो विधिने बनाई।
दाहिने पद पद्म तातें ठेढ़े धरत आली री
ऐसे चरण दुखके हरण हैं सदा सुखदाई॥
लाल इजार ताके बीच कञ्चनके तार लगी काछनी
पचरङ्ग तापर किङ्किणी छवि छाई।
वनमाल मुक्तामाल कण्ठ बनी कौसुभमणि
पीताम्बर चटक तामें दामिनी द्युति पाई॥
बाजूबन्द अङ्गुरी मुन्दरी नगन की अति चमत्कार
अरुण अधर मधुर सुर मुरली बजाई।
कमल नयन विमलकान्ति कुण्डल प्रतिबिम्ब
होत आनन्द सो सुख मानो रह्योरी मुसकाई॥
घुंघरवारी अलक झलक किये चन्दन खौर
और मोर मुकुट शीस धरे बनी सुन्दरताई।
कहे भगवान् हित राम राय प्रभु को निहारि
श्रीगोपाल श्रीगोपाल रसना रट लाई॥

४१

सुमिरो नर नागरवर सुन्दर गोपाल लाल।
सब ही दुःख मिटि जैहैं चितवत लोचन विशाल॥
अलकनको झलकन लखि पलकन गति भूलि जात
भ्रूविलास मन्दहास रदन छदन अति रसाल।
निन्दित रवि कुण्डल छवि गण्ड मुकर झलमलात
पिच्छगुच्छ कृतवतंश इन्दु विमल विन्दु भाल॥
अङ्ग अङ्ग जित अनङ्ग माधुरी तरङ्ग रङ्ग
विमद मद गयन्द होत देखत लटकीली चाल।
रतन रसन पीत वसन चारु हार वर शृङ्गार
तुलसी रचित कुसुम खचित पीन उर नवीन माल॥
व्रजनरेश वंशदीप वृन्दावन वर महीप
श्रीवृषभानु मान्यपात्र सहज दीनजन दयाल।
रसिक भूप रूपराशि गुणनिधान जान राइ
गदाधर प्रभु युवतिजन मुनि मानस मन मराल॥

४२

दीन्हों दर्श सुपनेमें आई।
क्षण एक सुख उपज्यो मेरे मन भयो कहूं
हरि विरह बढ़ाई॥
हा हा पांइ परति हों तेरे क्यों हूं करि लावे न बुलाई।
अब न परत मोहे कल पल क्षण विनु भेंटे जिय
अति अकुलाई॥
यह दुःख काहि कहों सखि तो विन मेरे तू हो
एक सहाई।
कहा विलम्ब करति जैबेको तोसे कहति सखि
सौंहें खाई॥
वह मूरति गड़ि रही हियेमें निकसत नहीं
न और उपाई।
उठिए हे सुनि विनती मेरो यशुमति सुत
रसिकनिके राई॥

भैरव—चर्चरी

हरिके विमुखन को मुख जिनि दिखावे
जिनि दिखावे नाथ जिनि दिखावे।
जिनको सङ्गति किये होत दुर्मति हिये
हरिके गुण रूप यश तुर्त विसरावे॥
जिनके परसत सदा सरस मन विषय रस मगन ह्वै
जात अति पाप उपजावे।
करत कछु ना डरे गे रमें चित धरे सत्सङ्ग
परिहरे युवति चितु लावे॥
साधु निन्दा करे झूठ भाषे सदा प्रीति राखे
विषयी वचन मन भावे।
अनेक साधन करि जारि राख्यो भाव छिनकसें
जल अग्नि ज्यों बुझावे॥
तेई जन विमुख जे करें औरे बात कृष्ण न सुहात
संसार धावे।
साधु सङ्गति रहे वचन हरि गुण कहे सतत
निबहे रसिक सोई सुख पावे॥

२

नाथ हा हा मोहि दर्श दीजे।
दोष जिनि मन धरो सहज करुणा करो
बिगर साधन मोहि दास करि लीजे॥
दुःखित क्षण होत जिय वदन देखे विना
रैन दिन तपत चित कैसे जीजे।
कासों कहिए हिये राखिए कौन विधि रहतु
नहीं क्यों हूं करि देह छीजे॥
लेत न उसास उर कैसे हो समाई नहीं सोचु
दृग भरि न पीजे।
वदन लावति अमृत रसिक प्रीतम सुखद पान
विनु सकल तन कैसे भीजे॥

३

नेकु बोलो नाथ अमृत रस वैन।
और न सुहाई ए री करति हों हाई मित चित
न लागत काहूं नेकु नहीं चैन॥
दीनजन मन मनोरथके पूरण करण और तिहुं
लोकमें देखियत है न।

जो मिलत आइ ते लेत सर्व्व स्वभाव करि कहीं
कैसे हरि मनु रहे ऐन ॥
अर्थ सब रावरो है तिहारे हाथ नाथ कहो और
समर्थ है को दैन।
रसिक पिय जिनि करो कठिन मन दीन पर
परसिके तजत यह लक्षण तो घटै न ॥

४

ए ललना जागो भयो भोर।
दूध दही पकवान मिठाई लीजियें माखनचोर ॥
विकसे कमल विमल वाणी बोलन लागी पक्षी
चहुं ओर।
रसिक प्रीतम सों कहति नन्दरानी सुनि आवो
बैठो गोद हा हा नन्दकिशोर ॥

५

वृन्दावन नव निकुञ्ज ठाड़े उठि भोर।
बांह जोरि वदन मोरि हंसत सुरत रतिकी करि
चितवत पुनि कछु लजाइ नयननको कोर ॥
करत कबहुं वेणु नाद अधरनि पाइ सुधास्वाद
पक्षीगण प्रमुदित मन बोलत चहुं ओर।
रसिक प्रीतम छवि निहारि प्रकर्यो घन जिय विचारि
वार वार उमगित ह्वां नाचत हैं मोर ॥

६

श्रीवल्लभ सुयश सन्तत नित उठि गाऊं।
मन क्रम वचन क्षण एक न विसराऊं ॥
पुरुषोत्तम अवतार सुकृत फल फलित
जगत् वन्दन श्रीविठलेश दुलराऊं।
परसि पदकमल रज निरखि सौन्दर्य्य निधि
प्रेम पुलकित कलुष कोटिक वशाऊं ॥
श्रीगिरिधरन भवपति मान मर्द्दन करण
घोषरचक्र सुखद सुयश सुनाऊं।
श्रीगोविन्द ग्वाल सङ्ग गाय ले चलत वन निरखि
नयन सिराऊं ॥

श्रीबालकृष्ण सदा सहज बालक दशा कमल
लोचन सुहर्षित रुचि बढ़ाऊं।
भक्तिमार्ग सुदृढ़ करण गुणराशि व्रजमङ्गल
श्रीगोकुलनाथ हो लड़ाऊं ॥
श्रीरघुनाथ धर्म्मधुरन्धर शोभासिन्धु रूप लहरिन
दुःख दूरि बहाऊं।
पतित उद्धरन महाराज श्रीयदुनाथ विशद
अम्बुज हाथ शिरसि परसाऊं ॥
श्रीघनश्याम अभिराम रूप वर्षा स्वाती आशा
लागि रसना चातक रटाऊं।
चतुर्भुजदास पर्यो द्वार प्रणिपात करि सकल
कुलको चरणामृत भोर उठि पाऊं ॥

७

भज श्रीविट्ठल चरण सरोजं।
नखमणि दीपति दमित मनोजं ॥
यिछ सिय दिसत तं सुखसारं।
त्यजसि न किमिति विषय छत भारं ॥
यदि वाञ्छसि हरिभक्ति सुरत्नं।
कुरु चपलं शरणागत यत्नं ॥
प्राप्य सुदुर्लभ नरवर देहं।
परिहर सकल निगम सन्देहं ॥
मानय हृदय मयोदित वचनं।
तदथासि नोचेदतिशय पचनं ॥
वसुसपद भावय भवजलधिं।
सततमि भवाधिनववधिं ॥
नाथ तवाह मितीरणरावं।
पूरय सतत मिमं मयि भावं ॥
तव गुणगण कथितामृत गाथे।
प्रार्थ्यमिदं दिश तव रघुनाथे ॥

८

श्रीविट्ठलेश विट्ठलेश रसना जप मेरी।
ग्रन्थनको यहो सार याहीमें होत यार
बार बार कहत ता सों तू वहि तू मेरी ॥

अनत ह न भलो तोर वेगि कह्यो करहि मोर
भजि ले सिरमौर नाथहिं सकल सुखद केरो ।
जगत्जनको सहाय प्रेम पुञ्ज सुयश गाय दूर करो
असद् वात विषया अरुझेरो ॥

९

प्रकटित सकल सृष्टि आधार ।
श्रीमद्वल्लभ राजकुमार ॥
धेय सदा पद अम्बुज सार ।
अगणित गुण महिमा जु अपार ॥
धर्म्मादिक द्वारे प्रतिहार ।
पुष्टि भक्तिको अङ्गीकार ॥
श्रीविट्ठल गिरिधर अवतार ।
नन्ददास कीन्हो वलिहार ॥

१०

जय जय श्रीवल्लभ प्रभु विट्ठलेश साथे
खिन्न जन पर करत कृपा धरत हाथ माथे ।
दोष सबे दूरि करत भक्तिभाव हिये भरत
काज सबे सरत सदा गावत गुण गाथे ॥
काहे कों देह दमत साधन मरि मूर्ख जड़
विद्यमान आनन्द तजि गहत क्यों अपाथे ।
रसिक चरण शरण सदा रहत हैं बड़भागी जन
अपनो करि गोकुलपति भरत ताहि वाथे ॥

११

श्रीविट्ठलनाथ जूके चरण शरणं ।
श्रीवल्लभनन्दनं कलिकलुषखण्डनं परमपुरुषं
त्रयताप हरणं ॥
सकल दुःख दारणं भवसिन्धु तारणं जनहित
लीला देह धरणं ।
कान्हरदास प्रभु सब सुख सागरं भूतले दृढ़
भक्तिभावकरणं ॥

१२

जय जय जय श्रीवल्लभनन्द ।
कोटि कला वृन्दावन चन्द ॥
निगम विचारे न लहे पार ।
सो ठाकुर अक्काजूके द्वार ॥
लीला करि गिरि धार्‍यो हाथ ।
चीत स्वामी श्रीविट्ठलनाथ ॥

१३

नयन भरि देखों गिरिधर को कमल मुख ।
मङ्गल आरती करों प्रात ही वारत निरखत होत
परमसुख ॥
लोचन विशाल छवि सचि हृदयमें धरों
कृपा अवलोकन चारु भ्रकुटिनु रुख ।
चतुर्भुज दास प्रभु आनन्द निधिरूप निरखि
करों दूर सब रैनको विरह दुख ॥

१४

मङ्गल आरती गोपालकी ।
नित उठि मङ्गल होत निरखि मुख चितवन
नयन विशालकी ॥
मङ्गल रूप श्यामसुन्दर को मङ्गल छवि भ्रुकुटी
भालकी ।
चतुर्भुज दास सदा मङ्गलनिधि वानिक गिरिधर
लालकी ॥

१५

मदनगोपाल हमारे राम ।
धनुष वाण धरि विमल वेणु कर पीत वसन
अरु तन घनश्याम ॥
अपनो भुजा जिनि जलनिधि बांध्यो रास
नचाये कोटिक काम ।
दशशिर हति सब असुर संहारे गोवर्द्धन
धार्‍यो कर वाम ॥
तब रघुवर अब यदुवर नागर लीला नित्य विमल
बहु नाम ।
परमानन्द प्रभु भेद रहित हरि निजजन मिलि
गावत गुणग्राम ॥

अथ रास-कीर्तन

राग रङ्गनिध मिलवत नई।
नाचति व्रज ललना तनु थई॥
मुखरित कटितट मणि मेखला।
अभिनव यत् चञ्चल करतला॥
नूपुर सञ्चित मोहित जना।
लेति उरप गति प्रमुदित मना॥
कृष्णदास प्रभु दे अङ्कवारी।
रिझए लाल गोवर्द्धनधारी॥

२

नीको मोहि लाग्यो गिरिधर गावे।
ततथेइ ततथेइ भैरव राग मिलि मुरलीको बजावे॥
नाचत नृप वृषभानुनन्दिनी ओघर गति रङ्ग उपजावे।
नूपुर रणित सुखर मणि कङ्कण सखी यूथ
सुखराशि वढावे॥
सुरति देत मधुमत्त मधुपकुल एकताली सबके
मन भावे।
सुरति सिन्धु प्यारी पिय पदरज कृष्णदास
न्योछावरि पावे॥

३

प्यारी ग्रीवा भुज मेलि नृत्यत पिय सुजान।
मुदित परस्पर लेत गतिमें गति गुणराशि
राधे गिरिधरन गुणनिधान॥
सरस मुरली ध्वनि सों मिले सप्तसुर गावत भैरव
राग अवघर तान वखान।
चतुर्भुज प्रभु श्याम श्यामाको नटन देखि रीझि
खग मृग वन थकित व्योम विमान॥

४

नृत्यत गोपाल सङ्ग राधिका बनी।
बाहुदण्ड भुजन मेलि मण्डल मधि करत केलि
सरस गान श्याम करें सङ्ग भामिनी॥
मोर मुकट कुण्डल छवि काछनी बनी विचित्र
झलकत उरहार विमल थकित चांदनी।
परम मुदित सुर नर मुनि वर्षत सब कुसुम अति
वारति तन मन प्राण कृष्णदास स्वामिनी॥

५

नाचत वृषभानु सुता हंस सुता पुलिन मध्य
हंसहंसिनी मयूर मण्डली बनी।
गावत गोपाल लाल मिलवत झपताल चाल
लज्जित अति मत्त मदन कामिनी अनी॥
पदिकलाल कण्ठमाल तरल तिलक झलक भाल
श्रवण फूल वर दुकूल नासिका मनी।
नील कञ्चुकी सुदेश चम्पकली गलित केस
मुखरित मणि दाम वाम कटि सुकाछनी॥
मरकत मणि वलयराव मुखरित नूपुर सुभाव
जावक युत चरण नखनि चन्द्रिका घनी।
मन्द हास भौंह पास रास लास भुव विलास
अलग लाग लेत सुघर राधिका गुनी॥
काम अन्ध कितव वन्ध रीझ रहे चरण गहे
साधु साधु कहत फिरत राधिका धनी।
भेंटत गहि वाहुमूल उरज परस भई फूल
व्यास वचन सानुकूल रसिक जीवनी॥

६

मोरनके मण्डलमें नाचत पिय प्यारो।
सिखवत सब तान मान सोखति लखि दुरनि मुरनि
हां हां हां हांके आप देत हैं कर तारी॥
मधुरे सुर राग लेत रागिणी सों मिले तान
रीझके लपटात दोउ भरि भरि अंकवारी।
श्रीविट्ठल सङ्ग खेलति बोलति ततथेइ थेइ
विहरत गिरिधारी लाल सुन्दरि नव नारी॥

अथ श्रीयमुनाजीके पद

जय जय श्रीसूर्यजा कलिन्द नन्दनी।
गुल्म लता तरु सुवास कुञ्जकुसुम मोद मत्त
गुञ्जत अलि शुभग पुलिन वायु मन्दनी॥
हरि समान धर्म्मशील क्रान्ति सजल जलद नील
कटि नितम्ब भेदन नित गति उतङ्गनी।

सिक्ता जनु मुक्ताफल कङ्कण युत भुज तरङ्ग
कमलनी उपहार ले पिय चरण वन्दनी ॥
श्रीगोपेन्द्र गोपी सङ्ग श्रमजलकणसिक्त रङ्ग
अति तरङ्गनी सुरसिक रस सुफन्दनी ।
चीत स्वामी गिरिवरधर नन्दनन्दन आनन्द कन्द
यमुना जनदुरित हरण दुःख निकन्दनी ॥

२

अतिमञ्जुल जल प्रवाह मनोरमा
सुखावगाहन नव द्युति राजत अति तरणि नन्दनी ।
श्याम वरण झलक रूप लाल लहरि वर अनूप
सेवत सन्तत मनोज त्रायुमन्दनी ॥
कुमुद कञ्जवन विकाश मण्डित दिश दिश सुवास
कूजित कलहंस कोक मधुर क्रन्दनी ।
प्रफुलित अरविन्द पुञ्ज कोकिल शुकसार गुञ्ज
सेवित अलि भृङ्ग पुञ्ज विविध वन्दनी ॥
नारद शुक सनक व्यास ध्यावत मुनि करत आश
चाहत हैं पुलिन वास सकल दुःख निकन्दनी ।
नाम लेत कटत पाप ऋषि किन्नर मुनि कलाप
करत जाप परमानन्द आनन्द कन्दनी ॥

३

श्रीयमुनादेवी कौन भलाई ।
नाम रूप गुण ले हरिजू को न्यारी ये अपनो
चाल चलाई ॥
उन वश देश कियो भ्राता को तुमहि परसि
कोऊ उत हो न जाई ।
जे तन तजत तीर तुम्हरे तें तात किरणमें गैल लगाई ॥
मुक्तवधूको करि दूतत्व अधमनिको ले आनि मिलाई ।
आपुन श्याम आनि उज्ज्वल करि तात तपत
आपु शीतलताई ॥
जल को छल करि अनल अघन को यह सुनिके
कोउ क्यों वपत्याई ।
निशदिन पक्षपात पतितन को तदपि गदाधर
प्रभु मन भाई ॥

४

यमुना यमुना नाम भजो ।
हरिवत् करो आराधन इनको और कुपन्थ तजो ॥
देहैं सकल पदारथ तुमको और को नाहीं गजो ।
व्रजपतिको अति हो प्यारो है तातें सकल
शृङ्गार सजो ॥

समुदाय

अरुझियो नीलाम्बर पीताम्बर महियां ।
कुण्डल सों लर लट वेसर सों पात पट हार हुमें
वनमाल बहियां में बहियां ॥
हंसगति अति छवि अङ्ग अङ्ग रहो फबि उपमा
विलोकिवे कों पटतर नहियां ।
कामके कलोल छूटे सेज हुके सुख लूटे सूर
प्रभु विलसे कदम हुकी छहियां ॥

२

आए लाल डगमगत प्रात ।
माल महावर पीक कपोलनि अधरन मसि
नयननि अरसात ॥
मोतीमाल लसे उर विनु गुण शिथिल पाग
शिथिल सब गात ।
बोलत बोल अटपटे मोहन तापर सोंह
करत न लजात ॥
ओढि नील वसन तुम आए देज चन्द्र छद
सांझ लखात ।
सांचे बोल निबाहे व्रजपति माया करि आए परसात ॥

३

अरुण उदय आए मेरे नन्दलाल ।
शिथिलित अङ्ग उनींदे नयननि धरणी धरत
डगमगी चाल ॥
अधरनि अञ्जन पीक कपोलनि लटपटी पाग
जावक लगी भाल ।
तापर सोंह करत हो व्रजपति उरसि विराजत
विन गुण माल ॥

४

प्रात समय आवत गिरिधारी ।
कुञ्ज महलतें चले भोर उठि सङ्ग राजत
वृषभानु दुलारी ॥
घूमत नयन उनीदे निशिके निरखि सहचरी गई
बलिहारी ।
पीक कपोलनि लगी दुहुंनिके व्रजपति शिथिल
गात अति भारी ॥

५

घूमत रतनारे नयन सकल निशा जागे ।
लटपटी सुदेश पाग अलकनको छलक बीच
पीक छाप युग कपोल अधरनि मसि लागे ॥
विन गुण उर माल बनी बीच नखनि रेख ठनी
पलटि परे वसन पीत कङ्कण सों दागे ।
चाक बन्यो चन्दन वनमाल लग्यो चन्दन सों
डगमगात चरण धरत प्रिया प्रेम पागे ॥
वचन रचन कियो सांझ वेगि आये भोर मांझ
बलि बलि या वदन कमल शोभित अनुरागे ।
जाय वसो वही धाम विलसे जहां सकल याम
गोविन्द प्रभु बलिहारी कर जोरे मांगे ॥

६

आए भोर उनीदे श्याम ।
सकल निशा जागि प्यारी सङ्ग हारे हो रतिरण
संग्राम ॥
शिथिलित पाग भाल पर जावक छिये विराजत
विन गुण माल ।
कुङ्कुम तिलक अलक पर सेंदुर शुभग पीक
सोहत दोउ गाल ॥
कङ्कण पीठ गड्यो उर नख चत जनु घन मांध
दैजको चन्द ।
चीत स्वामी गिरिधरण भले तुम मोहि खिझावत
हो नन्दनन्द ॥

७

सुमिर मन गोपाल लाल सुन्दर अति रूपजाल
मिटि हैं जञ्जाल सकल निरखत सङ्ग गोप बाल ।
मोर मुकुट शोश धरे वनमाल शुभग गरे
सबको मन हरे देखि कुण्डलको झलक गाल ॥
आभूषण अङ्ग सोहे मोतिनके हार पोहे
कण्ठश्री मोहे दृग गोपी निरखत निहाल ।
चीतस्वामी गोवर्द्धनधारी कुंवर नन्द सुवन गाइनके
पाछे पाछे धरत हैं लटकीलो चाल ॥

८

प्रात भयो जागो बलि मोहन सुखदाई ।
जननी कहे बार बार उठो प्राणके आधार
मेरे दुःखहार श्यामसुन्दर कन्हाई ॥
दूध दही माखन घृत मिश्री मेवा बादाम
पकवान भांति भांति विविध रस मलाई ।
चीतस्वामी गोवर्द्धनधारी लाल भोजन करि
ग्वालनके सङ्ग वन गोचारण जाई ॥

९

भई भेंट अचानक आई ।
हों अपने गृहतें चली यमुना वे उततें चले
चारण गाई ॥
निरखत रूप ठगोरी लागी उत कों गगर भरि
चल्यो न जाई ।
चीतस्वामी गिरिधरण कृपा करि मोतन चितए
मुर मुसकाई ॥

१०

जागिये व्रजराज कुंवर कमल कोष फूले ।
कुमुदवृन्द सकुचि गये भृङ्ग लता भूले ॥
तम चर खग रोर सुनहु बोलत वन राई ।
रांभति गौ चीर देन बछरा हित धाई ॥
विधु मलीन रवि प्रकाश गावत व्रजनारी ।
सूर श्याम प्रात उठे अम्बुज करधारी ॥

११

कमल नयन हरि करो कलेवा ।
माखन रोटी सद्य जम्यो दधि भांति भांतिके मेवा ॥
खारक दाख चिरोंजो किशमिशि उज्ज्वल
गरी बादाम ।
सफरी सेब छोहारे सिंघारे जे खरबूज़ा नाम ॥
अरु मेवा बहु भांति भांतिके षट् रसके मिष्ठान्न ।
सूरदास प्रभु करत कलेऊ रीझि श्याम सुजान ॥

१२

उठहु नन्दकुमार भयो भिनुसार जगावति नन्दरानी ।
झारीके जल वदन पखारो सुत कहि कहि
सारङ्गपानी ॥
माखन रोटी अरु मधु मेवा जो भावे सो लोजी आनी ।
सूरश्याम मुख निरखि यशोदा मन हो मनहि
सिहानी ॥

१३

भोर भए निरखत हरि को मुख प्रमुदित
यशुमति हर्षित नन्द ।
दिनकर किरण कमल जनु विकशित उर प्रति
अति उपजत आनन्द ॥
वदन उघारि जगावति जमनो जागहु मेरे आनन्दकन्द ।
मानहु मथि सुर सिन्धु फेन फटि दई दिखाई
पूरण चन्द ॥
जा को ईश शेष ब्रह्मादिक गावत नेति नेति
श्रुति छन्द ।
सोइ गोपाल सुगोकुल भीतर सूर सुप्रकटे परमानन्द ॥

१४

तहिं जाहु जहां रैन हुते ।
काहे को दुराव करत नन्दनन्दन मिटे न अङ्ग
उर चिह्न युते ॥
विन गुण हार मनोहर उर पर परम चतुर हिय
लाइ सुते ।
बिथुरी अलक अटपटे भूषण लुटे काम
कुच बीच उते ॥
दशन दाग़ नख रेख छबीली भामिनि भवन
भाव भुगुते ।
सूर श्याम देखिअत सम शोभा लोचन ललित
उनींद हुते ॥

१५

तहीं जाहु जहां निशा वसे ।
जानति हों पिय चतुर शिरोमणि नागर
जागर राग रसे ॥
घूमत हो मानो पिया उरगण नव विलास
श्रम सेज उसे ।
श्याम उरस्थल पर नख शोभित गगन
दुइज जनु इन्दु लसे ॥
काजर अधर प्रकट देखिअत है नागवेलि
रङ्ग निपट खसे ।
लटपटि पाग महावरके रङ्ग मानिनि पग
पर शीस घसे ॥
विगलित वरस मरगजी माला पोठि
वलयके चिह्न वसे ।
सूरदास प्रभु प्रिया वचन सुनि नागर नगधर
नेकु हंसे ॥

१६

क्यों अब दुरत हो प्रकट भये ।
कहत हैं नयन निशाके जागे मानो सरसिज
अरुण नये ॥
जावक भाल नागरस लोचन मसि रेखा
अधरनि जो ठये ।
वलया पोठि नितम्ब चरण मणि विनु गुण
कण्ठहार बनये ॥
भुज टङ्कता ग्रीव सोइ चन्दन चिह्न कपोल
दसन यसये ।
आलिङ्गन चन्दन कुच चर्चित मानो द्वे शशि
उर उदये ॥

चरण शिथिल अरु चाल डगमगी घूमत घायल
समर सये।
सूर सखी कैसे मन मानै सुन्दर श्याम कुटिल भये॥

१७

लालन आये री रैन गंवाई।
निशि भई क्षीण बोले तमचर खग ग्वालिन
तब हिं हंसी मुसकाई॥
अरुण किरण मुख पङ्कज विकसित मधुप लियो
सुन्दर रस जाई।
चन्द्र मलीन भयो दिनमणितें कुमुद गये
सब ही कुंभिलाई॥
चारि याम जागत बीते मोहि तुम्ह बिनु मोकों
कछू न सुहाई।
सूर श्याम या दर्श पर्श बिनु सब निश गई
मेरी नींद हेराई॥

१८

रति संग्राम वीर रस माते।
हो हरि शूर शिरोमणि अज हूं नहिं न संभारे
सकल अङ्गनाते॥
औरै वरण भये यह लोचन अपने अपने सहज
बिनाते।
मानहु भोर परो श्रीधनकी तातें भये क्रोध अतिराते॥
परिमल लुब्ध जहां अलि बैठत उड़ि उड़ि उड़ि
नहिं सकत तहांते।
जनु मनमथ सर बागे फाब्यो फांक होत सब
बाहरि घाते॥
बैठि जात अलसात उनीदे क्रम क्रम क्रम करि
उठत तहांते।
मन बरछा कटाच नाटसल कढ़ता नाहि चुभ्यो
हियराते॥
डगमगात घूमत ज्यों घायल शोभा अति भई
सुभट कलाते।
सूरदास स्वामी रण जीते अब सकुचत यों हो
तुम काते॥

१९

जानति हों जैसे गुणनि भरे हो।
काहे को दुराव करत मनमोहन सोइ पै कहो तुम
जहां ढरे हो॥
निशि जागत निज भवन न भावत आलसवन्त
सब अङ्ग भरे हो।
चन्दन तिलक मिल्यो कहां वन्दन काम कुटिल
कुच उर उघरे हो॥
तुम अति कुशल किशोर नन्द सुत कहो कौनके
चित्त हरे हो।
औचक हो जिय जानि सूर प्रभु सोंह करन को
होत खरे हो॥

२०

हा हा हो पिय बात कहो।
आपु कछू जिय तर्क गहत हो तो तुम सों हों
मौन गहो॥
कहा चूक हम को पिय लागी रूसि रेहे हो काहे जू।
तब होते वैसे ही ठाढ़े मोतन को नहिं चाहे जू॥
अब हमरो अपराध चमोगी कृपा करो सुख बोलो जू।
सूरश्याम अब तजो निठुरई घुण्डी हृदयकी खोलो ज॥

२१

जाहु तहां कहा सोचत हो।
जा संग रैन विहात न जानी भोर भये तेहि
मोचत हो॥
औरनि को क्षण युग बीतति है तुम निहचीते
नागर हो।
घूमत नयन जम्हांत बार हो रति संग्राम उजागर हो॥
मैं अब कहति तुम्हारे हितकी ताहीके गृह जाइ रहो।
सूरश्याम वैसो त्रिय को है वह रस वाहो बिनु न लहो॥

२२

हम हो पर पिय रूसे हो।

बोलत नहीं मूक क्यों ह्वै रहे अन्तरङ्गहीन
कछू से हो ॥
तब निरखत और हि हित चितवन किधों कहीं
तुम लूसे हो ।
तब हंसि वदन मिलत आजु हि कछु और भये
निठुरूसे हो ॥
डगमगात पग उत हि परत है चित चञ्चल
उत ह्रूसे हो ।
सूरदास प्रभु सांचि भाषि गये त्रिया अङ्ग
अबला मूसे हो ॥

२३

जागिये गोपाल लाल आनन्दनिधि नन्दबाल
यशोमती कहै बार बार भोर भयो प्यारे ।
नयनकमल से विशाल प्रीति वापिका मराल
वदन ललित चन्द्र तनय ऊपर कोटि वारि डारे ॥
उगत अरुण विगत शर्वरी शशाङ्क किरण हीन
दीन दीप मलीन छीण द्युति समूह तारे ।
मानहुं ज्ञान घन प्रकाश बीते सब भुव विलास
आश त्रास तिमिर तोष तरणि तेज जारे ॥
बोलत खग मुखर निकर मधुकर ह्वै वै प्रतीति
सुनहुं परम प्राण जीवन धन मेरे तुम बारे ।
मनो वेद बन्दी मुनि सूतवृन्द मागधगण
विरद वदत जय जय जय जयत कैट भारे ॥
विकसित कमलावली चल प्रफन्द चञ्चरीक
गुञ्जत कलकोमल ध्वनि त्याग कञ्ज न्यारे ।
मानो विराग सकल पाव शोक कूपगृह विहाय
प्रेममत्त फिरत भृङ्ग गुणत गुण तिहारे ॥
सुनत वचन प्रिय रसाल जागे अतिशय दयाल
भागे जञ्जाल विपुल दुःख कदम्ब टारे ।
त्यागे भ्रमफन्द द्वन्द्व निरखिके मुखारविन्द
सूरदास अति आनन्द मेटे मद भारे ॥

२४

जागिये गोपाललाल प्रकट भयो हंसमाल
मिटि गयो अन्धकार उठो जननी मुख देखाई ।
मुकुलित भये कमल जाल कुमुदवृन्द बन बेहाल
मेटहु जञ्जाल त्रिविध ताप तन नशाई ॥
ठाढ़े सब सखा द्वार कहत नन्दके कुमार
टेरत हैं बार बार आइये कन्हाई ।
गैयनि भई बड़ी बार भरि भरि पय थननि भार
बछरागण करें पुकार तुम बिनु यदुराई ॥
ताते यह अटक परी दोहन काज सों हंकरी
उठि आवहु क्यों न हरी बोलत बलभाई ।
मुखते पट झटकि डारि चन्द्रवदन दे उघारि
यशुमति बलिहारि वारि लोचन सुखदाई ॥
धेनु दुहन चले धाइ रोहिणी को लइ बुलाइ
दोहनी मोहि दे मंगाइ तन ही ले आई ।
बछरा दियो थन लगाइ दुहत बैठिके कन्हाइ
हंसत नन्दराइ तहां माता दोउ आई ॥
दोहनी कछु दूध धार सिखवत नन्द बार बार
वह छवि नहिं वार पार नन्दघर बधाई ।
तब हलधर कह्यो सुनाइ धेनु बन चलो लिवाइ
मेवा लीन्हे मंगाइ विविध रस मिठाई ॥
जेंवत बलराम श्याम सन्तनके सुखदधाम
धेनुकाज नहिं विश्राम यशोदा जल लाई ।
श्यामराम मुख पखारि ग्वाल बाल लिये हंकारि
यमुना तट मन विचारि गाइन हंकराई ॥
शृङ्ग वेणुनाद करत मुरली स्वर मधुर धरत
व्रजजन मन हरत ग्वाल गावत सुघराई ।
वृन्दावन तुरत जाय धेनु चरति तृण अघाय
श्याम हर्ष पाय निरखि सूरज बलि जाई ॥

२५

जननी जगावति उठो कन्हाई ।
प्रकट्यो तरणि किरणगण छाई ॥
आवहु चन्द्रवदन दिखराई ।
बार बार जननी बलि जाई ॥
सखा द्वार सब तुम हि बुलावत ।
तुम कारण हम धाए आवत ॥

सूरश्याम उठि दर्शन दीन्हो।
माता देखि मुदित मन कीन्हो ॥

२६

भोर भये भोगी रस विलसि भये ठाढ़े।
जागी यामिनी जगाइ भामिनी अङ्ग सङ्ग समाइ
श्वास शिथिल डरनि डरत देत आलिङ्गन गाढ़े ॥
घूमत रसमत्त मगन सूधे ह्व डग परत पग न
छण छण चितु चोप चोजनि मौज मनोजनि बाढ़े।
अति रस में रसिक राय शोभा वरणी न जाय
वरु विहारनिदास लडाई प्रेमरङ्ग रङ्गि काढ़े ॥

२७

प्रात ही किशोर जोरि कुञ्ज खेलनी।
अङ्ग अङ्ग गुथत रङ्ग गौर श्याम रूपराशि
मदन केलि सुरति सिन्धुकूल झेलनी ॥
तरणिनन्दनी सुतीर गावत पिय भृङ्ग कीर
त्रिगुण मारत गन्धरी श्रम अम्बु झेलनी।
वरविहार राजनी सुनूपुरादि बाजनी
विट्ठल विपुल वारनै भुज कण्ठ मेलनी ॥

२८

श्यामा सङ्ग श्याम नचत राम रङ्ग गुणनि बचत
शशि अखण्ड मण्डल हंसि शरत् यामिनी।
तरणितनया कूल मृदुल अङ्क शशि तरज पुनीत
त्रिविध पौन ताप वदन काम कामिनी ॥
चरण चलित बाहु वलित ललित गान कलित तान
मान सुख निधान तिरप लेति मामिनी।
वर सुधङ्ग रङ्ग ताल मणि मृदङ्ग विन्द चाल
लाल सुघर श्रीवर गजराज गामिनी ॥
रिझै पति हि गति दिखाइ लेत कुंवर कण्ठ लाइ
श्याम घटामांझ मनहुं दुरति दामिनी।
नयन सैन भ्रूविलास मन्द हास सुखनिवास
सुनि ध्वनि सुनि बोलत जय व्यास स्वामिनी ॥

२९

जय गोविन्द माधव मुकुन्द हरि।
कृपासिन्धु कल्याण कंसअरि ॥
प्रणतपाल केशव कमलापति।
कृष्ण कमललोचन अगतिन गति ॥
रामचन्द्र राजीव नयनवर।
शरण साधु श्रीपति सारङ्गधर ॥
वनमाली वामन विट्ठल बल।
वासुदेव वासी व्रज भूतल ॥
खर दूषण त्रिशिरा शिर खण्डन।
चरण चिह्न दण्डक भुवमण्डन ॥
बकोदमन बक वदन विदारण।
वरुण विषाद नन्द निस्तारण ॥
ऋषिमख त्राण ताड़का तारक।
वन वसि तात वचन प्रतिपारक ॥
गोकुल पति गिरिधर गुणसागर।
गोपी रमण रास रति नागर ॥
रघुपति प्रबल पिनाक विभञ्जन।
जगहित जनक सुता मनरञ्जन ॥
काली दमन केशि कर पातन।
अघ अरिष्ट धेनुक अनुघातन ॥
करुणामय कपिकुल हितकारी।
बालि विरोध कपट मृगहारी ॥
गुप्त गोप कन्या व्रत पूरण।
द्विज नारी दर्शन दुख चूरण ॥
रावण कुम्भकर्ण शिर छेदन।
तरु वर सात एक शर भेदन ॥
शङ्ख चूड़ चाणूर संहारण।
शक्र कहै मेरो रक्ष कारण ॥
उत्तर कृपा गन्ध्र कृतकारी।
दर्शन दे सेवरी उद्धारी ॥
जे पद सदा शम्भु हितकारी।
जे पद परशि सुरसरी गारी ॥
जे पद रमा हृदय नहिं टारी।
जिनि पद ते तिहुं भुवन तियारी ॥

जे पद वृन्दावनहि विहारो ।
जे पद पाण्डव गृह पग धारो ॥
जिनि पद शकटासुर संहारो ।
जे पद अहि फण फण प्रतिधारो ॥
जे पद भक्तनके सुखकारो ।
जिनि पदरज गौतम त्रिय तारो ॥
सूरदास सुर याचत वेइ पद ।
करहु कृपा अपने जन पर सद ॥

१०

सोहत घूंघरवारे बार अरुझि रहे मुकुताहल
गिरवारत बार ।
रति मानो सङ्ग नन्दनन्दकी छूटे वन्द कञ्चुकी
टूटे हार ॥
निशिके जागे दोउ नयन उरझि रहे चलति
यौवन मदभार ।
सूरश्याम सङ्ग यह सुख देत रीझि वारम्वार ॥

११

नयन श्याम सुख लूटत हैं ।
इहै बात मोको नहिं भावे हमतें काहु छूटत हैं ॥
महा अक्षय निधि पाइ अचानक आपु हि सबै
चुरावत हैं ।
अपने हैं ताते वह कहियत श्याम इनहिं
भरुहावत हैं ॥
क्षण क्षण प्रति सुखसागर लूटत वरजे
मौहें तानत हैं ।
सूरदास जो देत कछू एक काहो कहा
अनुमानत हैं ॥

१२

श्रीकृष्ण नाम रसना रट सोई धन्य कलि में ।
जाके पद पङ्कज की रेणुकी वलि में ॥
सोइ सुकृत सोइ पुनीत सोई कुलवन्ता ।
जाको निशदिन रहै कृष्ण नाम चिन्ता ॥
योग यज्ञ तीर्थ व्रत कृष्ण नाम माहीं ।
विना कृष्णनाम कलि उद्धार और नाहीं ॥
सब सुखन को सार कृष्ण कबहुं न विसरैये ।
कृष्ण नाम लै लै भवसागर को तरिये ॥
श्रीगोवर्द्धन धरण प्रभु परम मङ्गलकारी ।
उधरे जन सूरदास ताको वलिहारी ॥

भैरव—एकताला

कृष्ण नाम भावे मोहि कृष्ण नाम भावे ।
वलिहारी ताकी जो कृष्ण नाम गावे ॥
वसुधा को सार कृष्ण मेरे मनको आधार ।
कृष्ण श्रवण मङ्गल रूप कृष्ण सब विचार ॥
मन्त्रन कौ मूल कृष्ण हरण सकल खल कृष्ण
व्रज समुद्र को पार ।
कृष्ण शिव को आधार मेरी रसना को भाग्य
कृष्ण ध्यान धार ॥
मन को सुहाग कृष्ण रसना तन्त्रन को तन्त्र
कृष्ण सब मन्त्रन सुधार ।
यह रामराय कहत कृष्ण ताही जपत भगवान्
कृष्ण वारम्वार ॥

२

हरे हरे हरे कृष्ण कृष्ण राम राम राम ।
नारायण नारायण वासुदेव वासुदेव
गिरिवरधर गिरिवरधर श्याम श्याम श्याम ॥
दीनबन्धु दीनबन्धु वैकुण्ठ धाम ।
होत प्रात बड़ पुनीत लेत हरि को नाम ॥
दामोदर दामोदर चक्रपाणि चक्रपाणि
नरहरि हरि नरहरि हरि सुररिपु सुरारी ।
मधुसूदन मधुसूदन सांवरे वनवारी ॥
यमुनाके नीरे तीरे वृन्दावन धाम ।
सूर श्याम रटत रहत राधावर नाम ॥

३

वांशरी बजाइ आज रङ्ग सों मुरारी ।
शिव समाधि भूलि गई मुनि मन तारी ॥
वेद भणत ब्रह्मा भूले भूले ब्रह्मचारी ।

सुनत हर्ष आनन्द भयो लागि है करारो ॥
रम्भा सब ताल चूकी भूली नृत्यकारो ।
यमुना जल उलट रह्यो सुधि ना संभारो ॥
श्रीवृन्दावन बंशो बाजी तीन लोक प्यारो ।
गालवाल मगन भए व्रजको सब नारी ॥
सुन्दर श्याम मोहन मूर्ति नटवर वपुधारी ।
सूर किशोर मदनमोहन चरणों वलिहारी ॥

भैरव—तिताला

दधिके मतवारे कान्ह खोलो प्यारे पलकें ।
शीस मुकट लटा छुटो और छुटी अलकें ॥
सुर नर मुनि द्वार ठाड़े दर्श कारण किलकें ।
नासिकाके मोती सोहैं बीच लाल ललकें ॥
कटि पीताम्बर मुरली कर श्रवण कुण्डल झलकें ।
सूरदास मदन मोहन दर्श देहु मलकें ॥

१

राम कृष्ण कहिए निशि भोर ।
वे अवधेश धनुष धरे वे व्रज जीवन माखन चोर ॥
उनके छत्र चमर सिंहासन भरत शत्रुहन
लक्ष्मन जोर ।
उनकी लकुट मुकट पीताम्बर गायनके सङ्ग
नन्द किशोर ॥
उन सागरमें शिला तराई उन राख्यो गिरिधर
नख कोर ।
नन्ददास प्रभु प्रपञ्च तज भजिये जैसे निरत
चन्द्र चकोर ॥

२

देखो री यह कैसा बालक राणी यशोमत जाया है।
सुन्दर वदन कमलदल लोचन देखत चन्द्र लजाया है
पूरण ब्रह्म अलख अविनाशी प्रगट नन्द घर आया है॥
मोर मुकट पीताम्बर सोहै केसर तिलक लगाया है।
कानन कुण्डल गल बिच माला कोटि भानु
छवि छाया है ॥
शङ्ख चक्र गदा पद्म विराजे चतुर्भुज रूप बनाया है।
परमेश्वर पुरुषोत्तम स्वामी यशुमति सुत कहलाया है॥
मच्छ कच्छ वराह औ वामन रामरूप दर्शाया है।
खम्भ फारि प्रगटे नरहरि जन प्रह्लाद छुड़ाया है ॥
परशुराम बुध निःकलङ्क हो भुवका भार मिटाया है।
कालीमर्दन कंसनिकन्दन गोपीनाथ कहाया है ॥
मधुसूदन माधव मुकुन्द प्रभु भक्तवत्सल पद पाया है।
दामोदर गिरिधर गोपाल हरि त्रिभुवनपति
मन भाया है ॥
शिव सनकादिक और ब्रह्मादिक शेष सहस मुख
गाया है ।
सुर नर मुनिके ध्यान न आवत अद्भुत जाकी माया है॥
सो परब्रह्म प्रगट हो व्रजमें लूट लूट दधि खाया है।
परमानन्द कृष्ण मनमोहन चरण कमल
चित लाया है ॥

भैरव—एकताला

मैं योगी यश गाया रे बाबा मैं योगी यश गाया ।
तेरे सुतके दर्शन कारण मैं काशीसे धाया ॥
परब्रह्म पूरण पुरुषोत्तम सकल लोक जाकी माया ।
अलख निरञ्जन देखन कारण सकल लोग फिरि आया॥
धन तेरो भाग यशोदा राणी जिन ऐसा सुत जाया।
गुणन बड़े छोटे मत भुलो अलख रूप घर आया ॥
जो भावे सो लीजे रावल करो आपनो दाया ।
देहु अशीस मेरे बालक को अविचल बाढ़े काया ॥
ना मैं लेहौं पाट पटाम्बर ना मैं कञ्चन माया ।
मुख देखूं मैं तेरे बालक को यह मेरे गुरुने लखाया ॥
कर जोरे विनवे नन्दरानी सुन योगिन के राया ।
मुख देखन नहीं देहौं रावल बालक जात डराया ॥
काला पीला गोरा रूप है बाघम्बर ओढ़ाया ।
काहु डायनकी दृष्टि लगी कहुं बालक जात दिठाया॥
जाकी दृष्टि सकल जग ऊपर सो क्यों जात दिठाया।
कर पसार चरणन रज लीनी शृङ्गीनाद बजाया ॥
अलख अलख कर पाय छुए हैं हंस बालक
किलकाया ।

पांच बार परिक्रमा करके अति आनन्द बढ़ाया।
हरि की लीला लाल मन अटको चित नहीं
चलत चलाया॥
अखिल ब्रह्माण्डके नायक कहिये नन्द घर हो
प्रगटाया।
इन्द्र चन्द्र सूरज सारद सनकादिक पार न पाया॥
लाग श्रवण जो मन्त्र सुनाया हंसि बालक मुसकाया।
कौन देशके योगी हो तुम कौन है नाम धराया॥
कहां वास यह कहत यशोदा सुन यागिन के राया।
तुम हो ब्रह्मा तुम हो विष्णु तुम हो ईश्वर कहाया॥
तुम हो विश्वम्भर तुम हो जगपालक तुम हो
करत सहाया।
सूर श्याम कहे सुनो यशोदा शङ्कर नाम बताया॥

२

नन्द द्वारे एक योगी आया शृङ्गानाद बजाया।
शीस जटा शशी वदन सोहायो अरुण नयन
छवि छाया॥
रोवत खीजत कृष्ण सांवरे रहत नहीं लराया।
लियो उठाय गोद नन्दराणी द्वारे जाय देखाया॥
अलख अलख कर लियो गोदमें चरण चूम उर लाया।
श्रवण लाग कछु मन्त्र सुनायो हंसि बालक
किलकाया॥
चिरजीवे सुत महर तिहारो हों योगी सुख पाया।
सूरदास रम चल्यो रावलो शङ्कर नाम बताया॥

भैरव—तिताला

राम चरण अभिराम काम प्रति तीरथराज विराजी।
शङ्कर हृदय भक्ति भूतलवर प्रेम अक्षय वट छाजी॥
श्यामवरण पदपीठ अरुण तल लसत विशद
नखश्रेणी।
मनो रविसुता सारद सुरसरि मिलि चलि
ललित त्रिवेणी॥
अङ्कुश कुलिश कमल ध्वज रेखा भ्रमर तरङ्ग विलासा।
मज्जन सुर सज्जन मुनिवरजन मुदित मनोहर वासा॥
विन विराग तप याग योग व्रत विन तन तीर्थ त्यागी।
सो सब सुलभ दासतुलसी प्रभुपद प्रयाग अनुरागी॥

२

यदुवर मेरे दीनदयाल शरणागत को करें निहाल।
केवट गृद्ध ऋच्छ कपि राचस कीट पतङ्ग किए
प्रतिपाल॥
मुनि मनसा पूरण करवे कों गोपीनाथ भए नन्दलाल।
तन मन धन तुम्हरो तुम को दे प्रेमरङ्ग छूटे यमजाल॥

३

चलना रे प्रभुके दरबार।
काल बली ठाढ़ो चोबदार॥
इह हुजूर में याद तिहार।
चलनेको कछु करो तैयार॥
जिसमें हुरमत रहे तुम्हार।
एसी करनी कर ला यार॥
जिसको ख़ादिम पकर बुलावे।
यत्न करे कछु बन नहीं आवे॥
विन मरज़ी कोई रहन न पावे।
क्या गरीब क्या साहु कहावे॥
जब यम आवे कछु न बसावे।
चणमें बांध पकड़ ले जावे॥
तब तोको कहो कौन छोड़ावे।
ढिग बैठा कलपे कलपावे॥
मौजूदातकी तैयारी कीजे।
दर्शन तलब वेग चल लीजे॥
गो ख़ादिम तोहे देख पसीजे।
कण्ठ लगाय रङ्गमें भीजे॥
करणीका कर कमर कटारा।
शील सिपर तप तेग दुधारा॥
धरे तोपकर ध्यान पियारा।
ज्ञान घोड़े हजे असवारा॥
ओ तू ऐसा होय चलेगा।
मालक मनमें बहुत खिलेगा॥

काम क्रोध मद मोह मद यह संसार स्वप्न दहेगा ।
निशि वासर हरिनाम उचारके रसना जप ले
परम पद लहेगा ॥
सूरदास सुख जो तू चावे। गोविन्दके गुण तो तू गावे ॥
पतित उधारण विरद कहावें। चरण शरण नित ध्यावें॥

श्रीकृष्णाय नमः

रामकली—तिताला

मोहन जागि हों बलि गई ।
ग्वालबाल सब द्वार ठाढ़े बेर बनकी भई ॥
पीत पट करि दूर मुखतें छांड़ि दे अरसई ।
अति आनन्दित होत यशोमती देखि द्युति नित नई ॥
जागी जङ्गम जीव पशु खग और व्रज सबई ।
सूरको प्रभु दर्श दीजे अरुणकी किरण छई ॥

२

भोर भयो जागो हो ललना कहा तुम अब हुं
रहे हो सोई ।
पियो धार अपनो धोरीकी जैसे देह बल होई ॥
वेणी गुहूं दोउ दृग अञ्जन मसिबिन्दुका मुख धोई ।
हंसत वदन सुखसदन निहारों नान्हो नान्हो
दतियां दोई ॥
टेरत ग्वालबाल खेलन को गोरम्भण ह्व होई ।
व्रजजन सब ठाढ़े मुख देखन अति आरत सब कोई ॥
उठि बैठे लिए गोद यशोदा सुन्दर सुत तिहुं लोई ।
रसिक प्रीतम लगि गरे जननीके मांगत रोटी रोई ॥

३

मैया तेरे लाल को मुख देखन हों आई ।
काल्हि मुख देखि गई दधि बेचन जात हि गयो
है बिकाई ॥
दिनते दूनो दाम लाभ भयो गाइनि बछिया जाई ।
आई रुचे थंभाय साथको गिरिधर देहु जगाई ॥
सुनि प्रिय वचन विहंसि उठि बैठे नागरि निकट
बुलाई ।
परमानन्द सयानी ग्वालनि चलि सङ्केत बनाई ॥

४

लालको दर्शन भये सवेरो ।
बहुत लाभ पाऊंगी माई दह्यो बिके है मेरो ॥
गली सांकरी जो एक नौकी भेंट भयो भटभेरो ।
अङ्क दे चली सयानी ग्वालिन हरि को वदन फिरि हेरो ॥
प्रात हो मङ्गल भयो सखी री ह्वै है सब काज भलेरो ।
परमानन्द प्रभु मुख निरखत मिट्यो भवसागर उरझेरो ॥

५

डगमग चलति और हो भांती ।
तब निकुञ्जते राधा भामिनि अरुण उदय घर जाती ॥
रतिकी केलि सुमिरि मृगनयनी बार बार मुसकाती ।
वदन ज्योतिते सुन री भामिनि मेटत उड़पति कान्ती ॥
नखके चिह्न प्रगट देखियत है काम केलि कुलकाती ।
प्रियतम प्राण रत्न सम्पुट कुच भेंटि जो गई छाती ॥
नन्दकुमार सुरति सङ्ग लीन्हें शरत् विमलकी राती ।
कृष्णदास गिरिधर पियके सङ्ग अधर सुधारस माती ॥

६

हरि अनुभवति युवति बड़ भागी ।
राधा रसिक नन्दनन्दनके सुखनिधि चरण कमल
अनुरागी ॥
कोककला सङ्गीत निपुण सखि पिय सङ्गम
रतिरस निशि जागी ।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर पिय मुख देखतते नट
नटनी लागी ॥

७

बे सइयां मेरे रैन विदा होन लागी ।
घटी ज्योति मन्द भये तारे फूल वासना पागी ॥
सोरह शृङ्गार बतास आभूषण अपने प्रियतम
सङ्ग जागी ।
सूरदास प्रभु तिहारे मिलन को कृष्ण हमारे
अनुरागी ॥

८

हौं वलि वलि जाऊं कलेऊ कीजे ।
खीर खांड़ घृत अति मीठो है अबकी कवर
बछ लीजे ॥
वेणी बढ़े सुनो मनमोहन मेरो कह्यो जो पतीजे ।
औट्यो दूध सद्य धौरीको सात घूंट जो पीजे ॥
हौं वारी या वदन-कमल पर अञ्चल प्रेम जल भीजे ।
बहुरि जाय खेलो यमुनातट गोविन्द सङ्ग करि लीजे ॥

९

ग्वालिन पिछवारे ह्वै बोल सुनायो ।
कमलनयन हरि करत कलेऊ कवर न मुखलौं आयो ॥
मैया एक गाय वन ब्याई बछरा लाय वसायो ।
वेणु न लई लकुट नहिं लीन्हीं अरबराय कोउ
सखा न बुलायो ॥
चकित सुनयन चहुं दिश चितवत सत्य कहै किधौं
सपनो पायो ।
फले अङ्ग न मात रसिकवर त्रिभुवन पूर रस
छलनि छायो ॥
मिलि बैठे सङ्केत सदनमें विविध भांति कीनो
मन भायो ।
परमानन्द सयानो ग्वालिन उलटि अङ्ग गिरिधर
पय पायो ॥

रामकली—चर्चरी

जयति आभीर-नागरी-प्राणनाथे ।
जयति व्रजराज-भूषण यशोमती ललित देत
नवनीत मिश्री सुहाथे ॥
जयति प्रात प्रभात दधि खात श्रीदामा सङ्ग
अखिल गोधनवृन्द चरै साथे ।
ठौर रमणीक वृन्दाविपिन शुभस्थल
सुन्दरी केलि गुण गूढ़ गाथे ॥
जयति तरणिजा-तट निकट रासमण्डल रच्यो
तत्तता थेइ थेइ थेइ तत्तताथे ।
चतुर्भुज दास प्रभु गिरिधरण बहुरि अब श्रीविट्ठल
प्रकट व्रज कियो सनाथे ॥

१

माखन तनिक दे री माय ।
तनिक कर पर तनिक रोटी मांगत चरण चलाय ॥
कनकभूमि पर तनिक रेखा करन पकड्यो धाय ।
कम्पियो गिरि शेष सङ्क्यो दधि देत अकुलाय ॥
मेरे मनके तनिक मोहन लागो मोहि बलाय ।
तनिक मुख पर तनिक बतियां बोलत हैं तुतराय ॥
यशोमतीके प्राण जीवन धन लियो उर लपटाय ।
नन्दकुंवर गिरिधरण ऊपर सूर वलि वलि जाय ॥

३

लालहि जगाइ वलि गई माता ।
निरखि मुखचन्द्र छवि मुदित भई मनहि मन
कहति आधे वचन भयो प्राता ॥
नयन अरसात अति बार बार जंभात कण्ठ सौं
लगि जात हर्ष गाता ।
वदन पोंछियो यमुना जलनि सो धोइ के कह्यो
मुसकाइ कछु खाहु ताता ॥
दूध औट्यो आनि अधिक मिश्री सानि लेहु
माखन पानि प्राणदाता ।
सूर प्रभु कियो भोजन विविध भांति सौं पियो
पय मोद करि घूंट साता ॥

४

आजु लाड़िलो लालहि जगाय जागो ।
सकल निशि कुञ्ज वसि प्रिये बल बाहु कसि विलसि
अङ्ग अङ्ग अनुराग रागो ॥
रोम रोमनि अरुझि सकति नेक न सुरझि
अति अधर मधुर रस प्रेम पागो ।
विहारनिदास सकाम गौर श्याम सधाम चितै
चितवति याम लतनि लागी ॥

५

राधिका श्याम तन देखि मुसकानी ।
हार विन गुण लीख अधर अञ्जन रेख नयन
तम्बूर तुतरात वाणी ॥

पाग लटपटी बनी उरह छूटी तनी अङ्गकी गति
देखि जीय लजानी।
उपटि कङ्कण पीठ वक्र विह्वल दीठ ईठकी
ईठता लखी छानी ॥
पाणि पल्लव आधार दशन सों गहि रही अर्द्ध
वैन बोलि वचन हार मानी।
सूर प्रभु अङ्ग भरी प्राणपति नागरी नवल
नागर उरह घालि सानी ॥

श्यामसुन्दर रैन कहां जागे।
देखि विन गुण माल अधर अञ्जन भाल जावक
लग्यो गाल पीक पागी ॥
चाल डगमगी अति शिथिल अङ्ग अङ्ग सब
तोतरे बोल उर नख नि दागे।
गयो कङ्कण पीठ निपट विह्वल दीठ शर्वरी
लाल नहीं पलक लागी ॥
कहिये सांच बात काहे जिय सकुचात कौन
त्रिय जाके अनुराग रागी।
दासकुम्भन लाल गिरिधरण एते पर करत
झूठी सौंह मेरे आगी ॥

७

जैये तहां जहां रैन जागी।
बनी बिनु गुण माल ओष्ठ अञ्जन भाल सेंदुर
लग्यो गण्ड पीक पागी ॥
आरक्त नयन अति शिथिल सब अङ्ग गति
डगमगत रात नहीं पलक लागी।
चपल चतुर दीठ उपटि कङ्कण पीठ देखियत
उर मांझ नखन दागे ॥
सकल व्रज-त्रियनमें कौनसी नारी वह जाके
तुम लाल अनुराग रागी।
चतुर्भुज दास प्रभु गिरिधरण काहे को करत
झूठी सौंह मेरे आगी ॥

८

भले आए भोर गिरिवरधरण।
अरुण नयन जंभात आलस धरत डगमगी चरण ॥
पाग लटपटी पलटि परे पट अटपटे आभरण।
शिथिल अङ्ग अङ्ग सबहि देखियत निशाके जागरण ॥
नव त्रिया सङ्ग प्रहर चारो पलन पाए परण।
चतुर्भुज प्रभु जीति रति रण कियो रतिपति शरण ॥

९

नीके आए गिरिवरधारी नागर।
जियकी कृपा हम तब हीं जानी भोर खोलाई आगर॥
तुम्हरे चितवत नयन अरुण भए सकल निशाके जागर।
जिन तुम पें यह खेल रच्यो है ऐसो कौन उजागर ॥
तुम अपने रङ्ग हो रीझि चतुर नारीके बागर।
वलि वलि जाऊं मुखारविन्दकी सुरति कलेवर सागर॥
गुण कहियत कहि पार न आवत मसि पर्वत
छिति कागर।
सूरदास प्रभु हमें लाज आवत है तुम हो सदा उजागर ॥

१०

प्रात भए आए लाल छांड़हु अटपटी।
आजुकी रैन मोहि नचत्र गिनत गई मार्ग जोवत
आंखि न लागो चटपटी ॥
उर नख पदवर सुनु गिरिवरधर गलित वरुहा
चूड़ा पाग बनी लटपटी।
कृष्णदास प्रभु जानतर नित दाम निशान मदन
नृपति रण लीनी मानो झटपटी ॥

११

लाल रसमसे नयन आजु निशा जागी।
अति विशाल अरसात अरुण भए रतिरणके रङ्ग पागी॥
सुन्दर श्याम शुभगता अटपटी अङ्ग अङ्ग नखचत दागे।
मानहु कोपि निदरि सम्मुख शर साथ भए अरि भागी॥
चतुर्भुज प्रभु गिरिधरण अधिक छवि वन्दन
भ्रकुटी लागी।
मानहु मनमथ चाप भेंट धरि रह्यो जोरि कर आगी ॥

१२

आज हरि रैन उनीदे आए।
अञ्जन अधर ललाट महावर नयन तमोल खवाए॥
शिथिल गात वसन मरगजी माला कङ्कण पीठ सुहाए।
लटपटी प्राग अटपटे भूषण विन गुण हार बनाए॥
शिथिल गात अरु चाल डगमगी भ्रकुटी चन्दन लाए।
सूरदास प्रभु यहो अचभा तीन तिलक कहां पाए॥

१३

आवत ललन पिया रङ्ग भीने।
शिथिल अङ्ग डगमगत चरण गति मोतिन हार उर चीने॥
पारिजात मन्दार माल लपटात मधुप मधुपीने।
गोविन्द प्रभु पिय तहां जाहु जहां अधर दशन चत कीने॥

१४

लाल न जागत रैन विहानी।
देखत पथ अंखियां अति हारीं कहां लाल रतिमानी॥
कह्यो लाल केहि काल सखिन सङ्ग पूरव विविध कहानी।
रङ्ग अनङ्ग सुरति चित आवत छतियां अधिक पिरानी॥
भोर भए आए मेरे गृह देखत सखी हिरानी।
रसिक प्रियतम दोउ अंखियां अरुण भईं कहो कहां रैन सिरानी॥

१५

नयन उनीदे भए रङ्गराते।
मनहु गुलाब कुसुम पर सजनी भिरत भृङ्ग मदमाते॥
प्रेम पराग पाखुरी पलदल प्रफुलित मदन लताते।
सदा सुवास विलास विलोकनि प्रकट प्रेमके नाते॥
तैसिये मारत मन्द जंभाई मिलत मुदित छवि ताते।
सींचे सूर श्याम मानिनि निज हित करि केलि कलाते॥

१६

केहि मिस यशोमतीके जाउ।
सकल सुखनिधि मुख निरखिके नयन तृषा बुझाउ॥
द्वारे आरज सभा जुरि रह्यो निकसिवे नहिं पाउ।
विनु गए पतिव्रत छूटे हंसे गोकुल गांउ॥
श्याम गात सरोज आनन ललित लेले नाउ।
सूर है लगन कठिन मनकी कहीं काहि सुनाउ॥

१७

सखी हरि दर्श को मोहि चाव।
सांवरे सों प्रीति बाढ़ी लाख लोग रिसाव॥
श्यामसुन्दर कमललोचन अङ्ग अगणित भाव।
सूर हरिके रूप राचो लाज रहो के जाव॥

१८

नन्द सदन गुरुजनकी भीर तामे लालन वदन नीके देख न पाऊं।
विनु जिय देखे अकुलाइ जाइ दुःख पाय यद्यपि बड़ेइ खन उठि उठि आऊं॥
ले चल री मोहि यमुनाके तीर जहां बलवीर सुन्दर वदन देखि नयन सिराऊं।
नन्ददास प्यासे को पानी पिवाय ले जिवाय जियको तू जाने तो सों कहा हों जनाऊं॥

१९

मन मृग वेधो मोहन नयन वान सों।
गूढ़भावकी सैन अचानक तकि ताग्यो भ्रकुटी कमान सों॥
प्रथम नाद बल घेरि निकट ले मुरली सप्तक सुर बन्धान सों।
पाछे व्यङ्गते मधुरे हंसि घात करो उलटी सुठान सों॥
चतुर्भुजदास पीर पातनकी मिटत न औषध आन सों।
ह्वै है सुख तब हीं उर अन्तर आलिङ्गन गिरिधर सुजान सों॥

२०

अङ्गुरिया छाड़ि रे गति अरग थरग।
नूपुर बाजत त्यों त्यों धरणी धरत पग॥
कबहुंक यशोदा माइ भुज पसारि हंसि डगमगायके उलटि डग।

जननी मुदित मन चिते चिते शिशुतन राखति
कण्ठ लगाइ सुन्दर श्याम शुभग ॥
मृदुवाणी तुतरात मांगि नवनीत खात भुजन भाव
जैसे जनावत बाल खग ।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधरके बाल विनोद नन्द आनन्द
मुख देखें ठाड़े ठग ठग ॥

२१

उपमा धीरज तज्यो निरखि छवि ।
कोटि मदन अपुनो बल हाय्यो कुण्डल तेज
छप्यो रवि ॥
खञ्जन मीन मृग जे हैं जेते दीन रहे क्यों ह्न दवि ।
गिरिधर पटतर हम हि लजावत सकुचत नहीं
खोटे कवि ॥
ईषत् हास दशन द्युति निरखत वज्रशिखर सकुचाने ।
सूर श्याम लीला वपु कछियो पट तर मेटि विराने ॥

२२

ठाढ़ो री खरी माई कौन को किशोर ।
सांवरे वरण मनहरण वंशीधरण कामकरण
कैसो मति जोर ॥
पौन परसि जात चपल होत देखि पियरे पटको
चटकीलो छोर ।
शुभग सांवरी छोटो घटाते निकसि आवे
छवीलो छटा को जैसो छवीलों ओर ॥
पूछति पाहुनी ग्वारि हा हा हो मेरी आलो कहा
नाम को है चितवित को चोर ।
नन्ददास जाहि चाहि चकचौंधी आइ जाइ
भूल्यो री भवन गमन भूल्यो रजनी भोर ॥

२३

माई गिरिधरणके गुण गाऊं ।
मेरे तो व्रत ए है निशदिन और न रुचि उपजाऊं ॥
खेलम आंगन आउ लाडिले नेकहुं दर्शन पाऊं ।
कुलनदास इह जगके कारण लाल चला गिरहाऊं ॥

२४

करत हो सबे सयानी बात ।
जोलों देखे नाहिं म सुन्दरि कमलनयन मुसकात ॥
सब चतुराई विसरि जात है खान पानको तात ।
विनु देखे चण कल न परत है घरि भरि कल्प
विहात ॥
सुनि भामिनीके वचन मनोहर सखि मन अति
सकुचात ।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधरण लाल सङ्ग सदा वसो
दिनरात ॥

२५

निपट छोटे कान्ह सुन जननो कहूं बात ।
होत जब समुदाय करत तब शिशु भाय एको
तपायके नयन भरि मुसिकात ॥
देखि रस रीतिको प्रीति विपरीत गति मखि
मान छाड़ि सङ्ग लगो रहों निशि प्रात ।
जात नहीं विसरि देखि बहुत यत्न धरि समुझि
कहूं चन्द्र देखे कमल ह्न विकसात ॥
दुरत घूंघर जब लाल यशोमति हृदय उझकि धखि
धरणि पांव धरि मुख किनकात ।
मनहुं आषाढ़ घन बादरो सूर तजि होत आनन्द
सब फूल अति जलजात ॥

२६

ग्वालिन आप तन देखि लाल तन देखिये ।
भीति जो होय तो चित्र अवरेखिये ॥
मेरो तो सांवरो पांच हो वर्षको अजहुं यह
रोय पय पान मांगे ।
तू महा मस्त अति ढोठरी ग्वालिनो फिरत
अठिलात गोपाल आगे ॥
मेरे एते श्यामको तनिकसी अङ्गुरिया बड़े
नखनके दाग़ तेरे ।
मष्ट करि सुनो लोग असवारको कहां पाई
भुजा श्याम मेरे ॥

ठगठगी नयन वैनन हंसी ग्वालनी सुख देखि शोभा
अति ही बाढ़ी ।
सुनि सखी सूर सर्वस्व हर्यो सांवरे अन उत्तर
महरके द्वार ठाढ़ी ॥

२७

मेरि गति राधिका चरण रज में रहो ।
इहै बिश्वय कर्यो अपने मन में धार्यो भूलि
कोऊ कछु और हु फल कहो ॥
कर्म कोउ करो ज्ञानहु अभ्यसा मूर्तिके
यत्न अब करि देह दहो ।
रसिकवल्लभ चरण कमल युग शरण पर आशा
धरि यह महापुष्टि पथ फल लहो ॥

२८

मानिनी मानि जिनि मान एतो करै आपु पाइन
परे नाथ तेरे ।
दर्श जाको करण जगत् तरसे सदा सो तो
इकटक तेरो वदन हेरै ॥
हों कहति सुमति उठि वेग मिलि मीत सों मेरो
हित वचन जिनि भूलि फेरे ।
रसिक प्रियतम सङ्ग विहरि रस रङ्ग सों क्यों न दुःख
अनङ्ग को सब निवेरे ॥

२९

जयति श्रीराधिके सकल सुख साधिके
तरुणि मणि नित्य नवतन किशोरी ।
कृष्ण तन नील घन रूपको चातकी कृष्ण सुख
हिमकिरणकी चकोरी ॥
कृष्णदृग भृङ्ग विश्राम हित पद्मिनी कृष्णदृग
मृगज बन्धन सुडोरी ।
कृष्ण अनुराग मकरन्दकी मधुकरी कृष्ण गुणगान
रससिन्धु बोरी ॥
परम अद्भुत अलौकिक मेरी गति लखि मन
सु सांवरे रङ्ग अङ्ग गोरी ।
और आश्चर्य काहूं में न देख्यो सुन्यो चतुर चौसठि
कला तदपि भोरी ॥

विमुख पर चितति चित्त जाको सदा करत
निज नाथको चित्तचोरी ।
प्रकृत यह गदाधर कहत कैसे बनै अमित
महिमा इतै बुद्धि थोरी ॥

३०

चतुर चारु चन्द्रावली सुख चकोरे ।
अस्तमें चरण रति व्रज युवति भूषणी कमललोचन
नन्द नृप किशोरे ॥
मानि मेरो कह्यो अति लाल रस रीति क्यों
करावति सखी बहु निहोरे ।
मिले किनि धाइ अब कुंवर चूड़ा रत्न रसिकवर
भूपाल चित्त चोरे ॥
नवरङ्ग कृष्ण मह तव नाम हित नाथ कुणित कल
मुरलीका ठाठ मोरे ।
सुनि कृष्णदास शुभ लग्न वह धन्य घरो लाल
गिरिधरण सों हात जोरे ॥

रामकली—तिताला

देखो मेरे भाग्यकी शुभ घरो ।
नवल रूप किशोर मूरति कण्ठ ले भुज धरो ॥
जाके चरण सरोज गङ्गा शम्भु ले शिर धरो ।
जाके चरण सरोज परसत शिला सुनियत तरी ॥
जाके वदन सरोज निरखत आशा सगरो मरी ।
सूर प्रभुके सङ्ग विलसत सकल कारज सरी ॥

२

आज हरि पकर न पाए चोरी ।
ले गये चोर चोरि मन माखन जो मेरे घत छोरी ॥
बांधो कञ्चन खम्भ कलेवर उभय भुजा दृग डोरी ।
राखो कठिन कठोर कुचन बिच सकै न कोऊ छोरी ॥
अधर दशन खण्डो रस गोरस छुवै न काहू कोरी ।
काम दण्ड दण्डो पर घर को नाम न लेइ बहोरी ॥
तव कुलकानि आनि तिरछो भई क्षमा अपराध
किशोरी ।
शिर पर हाथ धराइ सूर प्रभु सोच मोच शिर ढोरी ॥

३

गोपाले माई बारे ही तें टेव।
जानौं नहीं कौन पैं सीखे चोरीके छल छेव॥
कबहुंक दूरतें माखन खातो सुनि रहती करि कानि।
अब हमपैं क्यों सही परति है मणि माणिक
की हानि॥
बुद्धि विवेक वचन चातुरी सर्वस लई चुराय।
सूरदास प्रभुके गुण अवगुण कासों कहिये जाय॥

४

माखन चोर री मैं पायो।
जैयतु कहां जान कैसे पैयतु बहुत दिननु ही खायो॥
हौं जु कहति ही होत कहा है नित उठि भाजन
लगन छुकायो।
बहुत बार कोरे लगि देख्यो मेरी घात न आयो॥
वेणीको कर गही चामटो घूंघट मांझ देखायो।
मत रोवो तुम सों कौन कहत है लै उछङ्ग हुलरायो।
श्रीमुख तें उघरि गई' द्वै दतियां तब हंसि
कण्ठ लगायो।
परमानन्द प्रभु प्राण जीवन धन विशद विमल
यश गायो॥

५

धन्य यह राधिकाके चरण।
शुभग शीतल अति सुकोमल कमलके से वरण॥
नखचन्द्र चारु अनूप राजत विविध शोभा धरण।
रणित नूपुर कुञ्ज विहरत परम कौतुक करण॥
रसिकलाल मन मोदकारी विरह सागर तरण।
विवश परमानन्द क्षण क्षण श्याम जीके शरण॥

६

बढ़ि बढ़ि बात लागी करन।
श्याम सुन्दर मदनमोहन आए तेरे घर न॥
उदित उरपर चिकुर छूटे चिकुर उरपर दुरन।
कामको दल साजि आई आड़ दै दै लरन॥
विरह को संग्राम जीत्यो बांधि अपनो परन।
सूरके प्रभु तरण तारण राखि अपनो शरन॥

७

बोलत कोककला निधान।
मम वचन सुनि उठि चलहि सखि छांड़ि सुन्दरी मान॥
तव नाम सहित निकुञ्ज मह प्रिय करत मुरली गान।
केलि कौतुक रसिकनी प्रिय सुनहि दै किनि कान॥
शेष रजनी खसत उड़पति जनु कि भयो विहान।
कृष्णदास प्रभु गिरिधरण पर वारि डौं तन प्राण॥

८

बहूं जो तबहि मानु धरि आवै।
सुन्दर श्याम बहुरि सम्मुख ह्वै अम्बुज वदन दिखावै॥
तबलग मान करहु कोउ कैसे जब लग वह
दर्शन नहिं पावै।
दृष्टि परे मन मधुकर तिहि क्षण सहज सरोजहि धावै॥
त्रिभुवन मांझ होउ वदें युवती आयें पथहि छुड़ावै।
कुम्भनदास प्रभु गोवर्द्धनधर कुल मर्यादा बढ़ावै॥

९

वे लाल तेरी पैंजनिया झनकेंदी।
माथे वे तेरे मुकट विराजै रीझ ग्वाल लटकेंदी॥
भई री चकोर चतुर चन्द्रावली गति मति रति
अटकेंदी।
आशाकरण प्रभु मोहन नागर चरण कमल चित देंदी॥

१०

हमारो दान दै री गुजरेटी।
नित उठि आवत जात चोरि दधि बेचन आज
आचानक भेटी
अति सतरात कैसे छुटोगी बड़े गोपकी बेटी।
कुम्भनदास गिरिधरण लाल सों भुज ओढ़नी लपेटी॥

११

अहो दधि मथति घोषकी रानी।
दिव्य चीर पहरे दक्षिणको कटि किङ्कणी
रुन झुनवानी॥
सुतके कर्म गावति आनन्द भरि बाल चरित्र
जानि जानी।

श्रमजल विन्दु राजे वदन कमल पर मनहुं
शरत् वर खानी ॥
पुत्रसनेह चुचात पयोधर प्रमुदित अति हर्षानी।
गोविन्द प्रभु घुटरुन चलि आये पकरी रई मथानी ॥

१२

मोहि दधि मथन दे वलि गई।
जाउं वलि वलि वदन ऊपर छाड़ि मथानी रई ॥
लाल देहुं नवनीत लोंदा रारि कित तुम ठई।
सुतै हेत विलोकि यशोमती प्रेम पुलकित भई ॥
ले उछङ्ग लगाय उरसों प्राण जीवन जई।
बालबोलि गोपालकी व्रज आशाकरण नित नई ॥

१३

श्रीयमुनाजी तिहारो दर्श मोहि भावै।
श्रीगोकुलकी निकट वसत है लहरन की छवि आवै ॥
सुखकरणी दुःखहरणी श्रीयमुना जो जन प्रात
उठि न्हावै।
मदनमोहन जूकी खरी पियारी पटराणी जू कहावै ॥
वृन्दावनमें रास रच्यो है मोहन मुरली बजावै।
सूरदास प्रभु तिहारि मिलनको वेद विमल यश गावै॥

१४

नमो तरणितनया परम पुनीत जग पावनी
कृष्ण मनभावनी रुचिर नामा।
अखिल सुखदायिनी सर्व सिद्धि हेतु श्रीराधिका रमण
रति करण श्यामा ॥
विमल यश सुमन नव कानन आमोद युत पुलिन
अति रम्य प्रिय व्रजकिशोरी।
गोप गोपी नवल प्रेम रति वन्दिता तट मुदित
रहत जैसे चकोरी ॥
लहरि भांवरि ललितालुका शुभग व्रजवाल
व्रत पूरण रास फलदा।
ललित गिरिवरधरण प्रिय कलिन्दनन्दिनी
निकट कृष्णदास विहरत प्रबलदा ॥

१५

निरखि हर्षि व्रज युवती घोष मुरारि।
थकित जित तित अमर मुनिगण नन्दलाल निहारि॥
विनु वैन शिर केश लट चहुं दिसा छटकी झारि।
शीश पर जानो जटा धरि शिशुरूप कियो त्रिपुरारि॥
रुचिर रचित ललाट केशर विन्दु शोभाकारि।
रोष मनहु तृतीय लोचन रहे रिपुजन जारि ॥
कुटिल हरिनख हृदय हरिकी शुभग छवि अनुहारि।
ईश जनु रजनीश राख्यो भाल तेज उतारि ॥
कण्ठ सीपज नीलमणिमय माल रची संवारि।
नील गिरिवर गरल मानो लाय लइ मदनारि ॥
वदन रज तन श्याम मण्डित शोभा छवि अनुहारि।
मनहु अङ्ग विभूति राजत शम्भु सोइ मधुहारि ॥
त्रिदशपति यशोमतीके आगे असन को करे आरि।
सूरदास विरञ्चि जाको जपत यश मुख चारि ॥

१६

वलि वलि चरित्र गोकुल राय।
दावानल को पान कीन्हो पीवत दूध सिराय ॥
पूतनाके प्राण शोषि रहे उर लपटाय।
कहति जननी दूध डारत खीझि कछुव न खाय ॥
तृणावर्त आकाशतें गहि शिला पटको आय।
डरत लालन झुलत पलना खरे देत झुलाय ॥
यमला अर्जुन तोरि तारे हृदय प्रेम बढ़ाय।
झटक तात पलास पल्लव देहु देत दिखाय ॥
कीर पिञ्जर देत अङ्गुलि लेत श्याम भजाय।
वकासुरकी चोंच फारो दृष्टि अचरज लाय ॥
विना दीपक सदन में हरि नेकु धरत न पाय।
अघासुर मुख पैठि निकसे बाल वत्स जिवाय ॥
हरे बालक वत्स नव कृत हेत दीरी माय।
फूटि पशु जब रहत वनमें दुमनि ढूंढ़त जाय ॥
लिखो हारे नाग कारो देखि श्याम डराय।
नृत्य कालो फणनि ऊपर सप्त ताल बजाय ॥
धस्यो गिरिवर दोहनी कर धरत बांह पिराय।
शकटभञ्जन प्रसत कुच युग कठिन लागत पाय ॥
घोष नारिन सङ्ग मोहन रच्यो रास बनाय।

कहति जननी व्याहको तब लजत वदन दुराय ॥
वृषभभञ्जन हतन केसो हन्यो पुच्छ फिराय।
भजत सखन समेत मोहन देखि व्याई गाय ॥
शेष महिमा कहि न आवे अनेक रसना पाय।
एक रसना सूर कहा कहै अङ्ग अगणित भाय ॥

१७

लटकत आवत कुञ्ज भवनतें।
ढरि ढरि परत राधिका ऊपर जागर शिथिल समनतें॥
चौंकि धरत कबहूं मारग बिच चले सुगन्ध पौनतें।
भए उसास भरम राधाके सकुचत दिवस रमनतें ॥
आलस मिस न्यारे न होत हैं नेक हु प्यारो तनतें।
रसिक टरो जिनि दशा श्यामकी कबहूं मेरे मनतें ॥

१८

चरण कमलको चेरी तेरो छाड़हु लालन नन्दके।
कैसो है दान कहा किनि लियो दियो न कबहूं
वचन वदन अरविन्दके ॥
देखत सखा सखीजन सगरो चरित चपल व्रजचन्द्रके।
लालन सकुचत अञ्चल ऐंचत पार न पावत
विविध अटपटे फन्दके ॥
मटुकी खसत हंसत सब ग्वालिनि निरखि तिहारे
छन्दके।
रसिक सदा मन बसो विविध गुण रसनिधि
आनन्द कन्दके ॥

१९

हा हा लेउ एको कोर।
बहुत बेर भई है भूखे देखि मेरो ओर ॥
मेलि मिश्री दूध औटो पीओ ह्वै है जोर।
अब हो खेलन टेरि हैं तेरे ग्वाल भयो अति भोर ॥
जागी पद्यो द्रुम द्रुमनि प्रति करन लागे शोर।
खेलिवे को उठि भजोगे मानि मेरो निहोर ॥
लेहुं ललन बलाइ तेरो छोरि अञ्चल ओर।
वदनचन्द्र विलोकि शीतल होत हिरदो मोर ॥
बैठि जननी गोद जेवन लागी गोविन्द थोर।
रसिक बालक सहज लीला करत माखन चोर ॥

२०

मानहु बात लालन मेरी।
करो भोजन रोष भूलो हौं जू मैया तेरी ॥
दुग्ध दधि नवनीत घृतपक परुसि राखो थार।
कहा लोटत धरणिमें मेरे लाल होति अबार ॥
गोद बैठो हौं जिवाऊं गाऊं तेरे गोत।
खेलिवे को तोहि बोलत ग्वाल तेरे मोत ॥
कहो जाको ताहि टेरौं बैठे तेरे पास।
करौं दधि मनथान उदयो सूर्य कमल विकास ॥
माइके सुनि वचन हंसि उर आइ लगी गोपाल।
कियो भोजन दियो अति सुख रसिक नयन विशाल ॥

२१

खेलत मदन सुन्दर अङ्ग।
युवतिजन मन निरखि उपजत विविध भाव अनङ्ग ॥
पकरि बछरा पूंछ ऐंचत अपनो दिश कर जोर।
कबहुं बछ ले भजत हरिको युवतिजनको ओर ॥
देखि परवश भए प्रियतम भयो मन आनन्द।
मैन आकुल भई व्याकुल गई लाज अमन्द ॥
कोउ देखति गहति कोऊ हंसत छाड़ति गेह।
करति मायो अपने मन को प्रकट करि निज नेह ॥
अति अलौकिक बाललीला क्यों हुं न जानो जाइ।
मुग्ध तासों महासुख रस देत रसिक मिलाइ ॥

रामकली—चर्चरी

व्रजानन्द कन्द व्रजानन्द कन्द घोषपति भाग्य
भुविजातं।
रसिकवर गोपिका पीत रस माननं तव जयतु
मम दृशि सुजातं ॥
रुचिर दर हास गल विमल परिमल लुब्ध मधुपकुल
मुख कमल सदनं।
अमृतचय गर्व निर्वासनाधर सिन्धु पायस
मनोजाग्नि शमनं ॥
स्मित प्रकटित चारु दन्त रुचि वदन विधु कौमुदी
हत निखिल तापे।

विल सलिलता छद कनक कलस इये मरकत
मणिरिव दुरापे ॥
शुभग-सुमुखी कण्ठ-निहित निज बाहु रति-मत्त
गजराज इव रुचिरं ।
विरही विरहानलं चारु पुष्कर चलन शीकरै
रूप शमय रुचिरं ॥
अरुण तरलापाङ्ग शर निहत कुलवधू धृति
तव विलोचन सरोजं ।
मम वदन सुखमा सरसि विनशतु सततमलमगति
निर्जित मनोजं ॥
नन्दगेहाल बालोदित खोरागसेवारुवृड सुरवृत्तं ।
व्रजवर कुमारिका बाहु हाटक लता सततमाश्रय तु
क्षतलत्तं ॥
व्रजस्लाघ गुण रसिकता गुण गोपनातिशय
रुचिरालापलोलं ।
तात्गीक्षणजनित कुसुम शर भाव भर युवतिषु
प्रकटतर निखिलं ॥
रुचिर कौमार चापल जय व्रीड़या वल्लवी हृदय,
गृह गुप्तं ।
प्रकटयन्निज नख शरचयै रसमशरमिह
जयति हत भाव चित्तं ॥
घोषसीमन्तिनी विधुदुग्धदेगु केलिनिनाद गर्जित
रुवमिह सततं ।
वचन करुणाकूत दृष्टि वृष्टि रङ्ग नव जलद
मपि कुरु सुहसितं ॥

२

हरि यश गावति चली व्रजसुन्दरी श्रीयमुनाके तीर ।
लोचन लोने बांह जोटि करि श्रवणनि झलकत वीर ॥
वेणी सुथिर चारु कांधे परे कटितट अम्बर लाल ।
हाथनि फूल लिये डलिया भरि अरु मुक्ता मणि माल ॥
जल प्रवेश करि मज्जन कीन्हों प्रथम हेमन्तके मास ।
ए वर होहु नन्द सुत मेरे व्रत ठान्यो इहि आश ॥
तब ही चीर हरे हरि नागर चढ़े कदमकी डारि ।
परमानन्द प्रभु वर देवेको उद्यम कियो मुरारि ॥

३

हो मोहन हौं हारी तुम जीती ।
नागर नट पट देहु हमारे कांपत है तन शीते ॥
रसिक गोपाल लाल अबलनिपर एती कहा अनीतें ।
परमानन्द प्रभु हम सब जानत गाल बजावत रीते ॥

४

मोहन देश्रो वसन हमारे ।
कहेंगी जाय व्रजपति जूके आगे करत अनीत ललारे ॥
तुम व्रजराज किशोर नन्दसुत सब हिनके प्राण प्यारे ।
गोविन्द प्रभु पिय दासी तिहारी सुन्दर वर सुकुमारे ॥

५

बनत नहीं यमुना जू को न्हैवो ।
चोली चीर कृष्ण ले भाजे कठिन भयो घर जैवो ॥
जो हरि हमसों ऐसी करि हो तो इह घाट न ऐवो ।
श्रीविट्ठल गिरिधरण लाल सों विनतो करि घर जैवो ॥

६

ग्वालिन मांगति वसन अपाने ।
शीतकाल जल भीतर ठाढ़ी आवत नाहीं दयाने ॥
तुम व्रजराज कुमार प्रबल अति कौन परो यह बाने ।
हम सब दासी तिहारी व्रजपति तुम बहु निपट
सयाने ॥

७

मोहन वसन हमारे दीजे ।
बारनें जाउं सुनो नन्दनन्दन शीत लगत तन भीजे ॥
कौन स्वभाव तथा अन अवसर इन बातन कैसे जीजे ।
सुनि दुःख पावे व्रजमहर यशोमती जाइ कहें
अब छीजे ॥
ए सब अबला जल मांझ उघारी दारुण दुःख
कैसे सहीजे ।
प्रभु बलराम हम दासी तिहारी जो भावे सो कीजे ॥

८

हमारो अम्बर देहो मुरारी।
लेकर चीर कदम पर बैठे हम जल मांझ उघारी॥
सुन्दर श्याम कमलदल लोचन हम हैं दासी तिहारी।
जो कछु कहो सोई हम करि हैं चरण कमल पर वारी॥
अङ्ग अङ्ग कम्पत मनमोहन विनती सुनहु हमारी।
सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि तुम जीते हम हारी॥

९

ग्वालिनी अपने चीर लेहु।
जलतें निसरि निकट ह्वै दोऊ कर जोरि के
शीस देहु॥
कत हो शीत सहत ब्रजसुन्दरि होत असित
कृश गात सबै।
मेरे कहे आनि पहिरो पट इतनो अङ्ग
विधि हीन अबै॥
हौं अन्तरयामी जानत सबन की कत दुरावत
लाजके।
करि हौं पूरण काम कृपा करि शरत् समय
शशि रातके॥
सन्तत सूर स्वभाव हमारो कत डरपति हो
काम भय।
कैसीयें भांति भजे कोउ मोकूं ते सबै संसार जय॥

१०

जयति श्रीवल्लभ सुवन उद्धरण त्रिभुवन फिरि नन्दके
भवनकी केलि ठानी।
इष्ट गिरिवरधरण सदा सेवत चरण द्वार चारो
वरण भरत पानी॥
वेद पथ व्यास से हनूमान् दास से ज्ञान को
कपिल से कर्म योगी।
साधु लच्छण निपुण मनु ब्रजराज प्रकट सुखराशी
मनो इन्दु भोगी॥
सिन्धु सम गम्भीर मिलन रङ्ग मीर प्रीति को जल
चोर ब्रज उपासी।
ध्यान को सनकसे भक्त को सनन्दनसे याही तें
वश कियो ब्रह्मराशी॥
मनहु इन्द्रको जीति कृष्ण सों करी प्रीति निगमकी
चल नीति अति विवेकी।
रहित अभिमान ते बड़े सन्मानके शील अरु
दान गोविन्द टेकी॥
सदा निर्मल बुद्धि अष्टसिद्धि नवनिद्धि द्वार सेवत
जहां मुक्ति दासी।
रामराय गिरिधरण जानि आयो शरण दीनके
दुःख हरण घोषवासी॥

११

रुचिर तर वल्लभाधीश चरणं।
अस्तु मे सर्वदा सुन्दराकृति जगन्मोहनं हृदि हृता
त्रिहित करणं॥
विहित माया वादनादि दनुजादि जन सङ्ग
जनितात्मजन कुमति हरणं।
अखिल साधन रहित दोष शत कलुष मति
विमति भरभरित निज दास शरणं॥
अञ्जसा काम कोपादि बहु नक्रयुत वासना भङ्ग
भवजलधि तरणं।
वदत हरिदास इति निज वरण मात्र कृत
गोकुलाधीशपद कमल वरणं॥

१२

जयति राधिका रमणकर चरण परि चरण
रति वल्लभाधीश सुत विट्ठलेशे।
दास जन लौकिका लौकिके सर्वथा कैव चित्तो
दयति हृदय देशे॥
स्थापयति मानसं सतत कृत लालसं सहज सुखमा
रुचिर रूपवेशे।
भाल गत तिलक मुद्रादि शोभा सहित मस्तकावद्ध
सित कृष्ण केशे॥
सहज हासादियुत वदन पङ्कज सरस वचन रचना
पराजित सुदेशे।

अखिल साधन रहित दोष शत सहित मति दास
हरिदास गति निज लवलेशे ॥

१३

मनो वल्लभाधीश पदकमल युगले सदा वसतु मम
विविधर सभाव वलितं ।
अन्य महिमा भाव वासना वासितं मा भवतु
जात निज भाव चलितं ॥
भजतु भजनीय मतिशयित रुचिरं चिरं चरण
युगलं सकल गुण सुललितं ।
वदत हरिदास इति मा भवतु मुक्तरपि भवतु मम
देवसुत जन्म फलितं ॥

१४

जयति भट्टलक्षण तनुज कृष्ण वदनानल
श्रीमदिल्ल सुगारुगर्भरत्ने ।
देवहृत जनसमुद्धृति करणकृत निजाविर्भवन
विहित बहु विविध यत्ने ॥
महालक्ष्मीपती गोपीनाथ श्रीविट्ठलाभिध
शुभगतनुज तापे ।
प्रथित मायावाद वर्त्ति वदन ध्वंसि विहित निज
दास जन पक्षपाते ॥
पुष्टि पथ कथन रचितानेक सुग्रन्थमथित
भागवत पीयूष सारे ।
रास युवती भाव सतत भावित हृदय सदय मानस
जनित मोद भारे ॥
निज चरणकमल धरणी परिक्रमणकृति मात्र
पावित वितत तीर्थ जाले ।
कृष्ण सेवन विहित शरणागत शिक्षणक्षपित सन्देह
दासैकपाले ॥
निज वचन पीयूष वर्ष पोषित सतत साहित्य
पुरुष जन भृत्य युक्ते ।
विविध वाचोयुक्ति निगम वचनोदितैरपि च
दुरित दुष्ट जन दुरुक्ते ॥
ईदृशे सति शिरसि सर्वदा वल्लभे सकल कर्तरि
दयालौ ।
कैव परिदेवना भवति हरिदासके सकल साधनरहित
जन कृपालौ ॥

१५

श्रीमद्वल्लभ रूप सुरङ्गे ।
नखशिख प्रति भावनके भूषण वृन्दावन सम्पति
अङ्ग अङ्गे ॥
दर्श स्पर्श गिरिधर जूकी नाईं एन मैन व्रजराज
उछङ्गे ।
पद्मनाभ देखि बनि आवे सुधि रही रास रसा भ्रूभङ्गे ॥

१६

हेली नव निकुञ्ज लीलारस पूरित श्रीवल्लभ वन मोरे ।
अङ्ग अङ्ग विपुन छिपुन घन दामिनि द्युति
फल फल प्रति दोरे ॥
करत आवे सविरह विरहनी श्रुति भूतल बहुत
कठोरे ।
पद्मनाभ मथुरेश विचारत श्रीलक्ष्मण भट सुत ओरे ॥

१७

सखी री शोभा-रस-मय भाव प्रकट करि श्रीवल्लभ
वर देह ।
अङ्ग अङ्ग व्रजवधू विरहनी व्यापी युगल सनेह ॥
श्रीवृन्दारण्य इन्दु प्रकटित हृदय निगूढ़ कान्दरा देह ।
पद्मनाभ सुतहित कियो मारग नेह मुरलिका वेह ॥

१८

श्रीगोकुल नाथ निज वपु धस्यो ।
भक्त हेत प्रकटे श्रीवल्लभ जगते तिमिर हस्यो ॥
नन्दनन्दन भये तब गिरि गोप व्रज उद्धस्यो ।
नाथ विट्ठल सुवन ह्वैके परमहित अनुसस्यो ॥
अति अगाध अपार भवनिधि तारि अपनो कस्यो ।
दास माधव त्रास देखि चरण शरणों पस्यो ॥

१९

सुमिरो श्रीविट्ठलेश कुमार ।
अति अगाध अपार भवनिधि भयो चाहो पार ॥
रहत करुणासिन्धु कोमल सदा चित्त उदार ।
गोकुलेश हृदय वसो मम माल पाल निहाल ॥

माल तिलक नत जीत कहुं परो यदपि पुकार ।
भक्त भक्तन दियो धीरज भए पद दातार ॥
चार युगमें विशद कीरति भक्त हित अवतार ।
नवकिशोर कल्याणके प्रभु गाउं बारम्बार ॥

२०

रुकमनि चलन सिखावति पाइन ।
सुतको गहे अङ्गुरिया डोलति शोभा कोटिक भाइन॥
ठुमकि ठुमकि पग धरत धरणी पर ले उछङ्ग
डर लाइन ।
वृन्दावन को चन्द्र श्रीवल्लभ ले बलाय हुलराइन ॥

अथ श्रीयमुनाकी कीर्तन

नमो देवि यमुने नमो देवि यमुने हरिकृष्ण
मिलनान्तरायं ।
निजनाथ मार्गदायिनो कुमारो कामपूरके कुरु
भक्ति रायं ॥
मधुपकुल-कलित कमलावली व्यपदेश-धारित
श्रीकृष्ण युत भक्त हृदये ।
सतत मतिशयित हरि भावना जात तत्सारूप्य
गदित निज हृदये ॥
निज कूल-भव विविध तरु कुसुम-युत नीर शोभया
विलसदलिवृन्दे ।
स्मारयसि गोपीवृन्द-पूजित सरसमीश
वपुरानन्दकन्दे ॥
उपरि चलदमल कमलारुण द्युति रेणु परिमिलित
जलभरेणासुना ।
व्रजयुवती कुच-कुम्भ कुङ्कुमारुणसुर: स्मारयसि
मारपितुरधुना ॥
अधिरज निहरि विहृति मोचितुं कुलतयाभिध
शुभग नखनान्युशति तनुषे ।
नयन युग मर्त्यमिति बहुतराणि च तानि रसिकता
निधितया कुरुषे ॥
रजनीजागर-जनित रागरञ्जित नयन पङ्कजैरहनि
हरि मोचसे ।
मकरन्द भर भिषेणानन्द पूरिता सतत मिह
हर्षस्रु मुञ्चसे ॥
तटगतानिक शुकसारिका मुनिगण-स्तुत विविध
गुणसिन्धु सागरे ।
सङ्गता सततमिह भक्तजन ताप हृति राजसे
रासरस सागरे ॥
रतिभर-श्रम-जलोदित कमल परिमल व्रजयुवती
जलविहृति मोदे ।
ताटङ्क चलन सु निरस्त सङ्गीत युत मदमुदित
मधुप क्रत विनोदे ॥
निज व्रजजनावनायात्त गोवर्द्धने राधिका हृदयगत
हृद्य वारजामले ।
रतिमतिशयित रस विट्ठलस्याशु कुरु वेणु
निनादाह्वान सरले ॥

२

व्रजपरिवृन्दवल्लभे कदा त्वच्चरणसरोरुह मोचणा-
स्पदं मे ।
तव तटगत वालुका कदाहं सकलनिजाङ्गगता
मुदा करिष्ये ॥
वृन्दावने चारु बृहद्वने मन्मनोरथं पूरय सूरसुते ।
दृग्गोचर: कृष्ण विहार एव स्थितिस्त्वदीये
तट एव भूयात् ॥

३

पिय सङ्ग भरि रङ्ग करि कलोले ।
सबन को सुख दैन पिय को करत सैन चित न
परत चैन जब ही बोले ॥
अति हि विख्यात सब बात इनके हाथ नाम लेत हि
कृपा करी अतोले ।
दर्श करि स्पर्श करि ध्यान हियमें धरें सदा व्रजनाथ
इन सङ्ग डोले ॥
अति हि सुखकरण दु:ख सबको हरण यह लीन्हों
है प्रण द्विज ही कूले ।
ऐसी यमुना जानि तुम करो गुणगान रसिक
प्रियतम पायनङ्ग मूले ॥

४

नयन भरि देखि अब भानुतनया।
केलि पिय सों करें भंवर तब हो परें श्रमजलनि
भरत आनन्द मनया॥
चलति टेढ़ी होइ लेति पियको मोहि इन विना
रहति नहिं एक छिनया।
रसिक प्रियतम रास करत यमुना पास मानो निर्द्धनन
को हो जु धनया॥

५

श्याम सुखधाम जहां नाम इनके।
निशदिन प्राणपति आय हियमें वसे जोई गावें
सुयश भाग तिनके॥
एहि जगमें सार कहत बारम्बार सबनके आधार
धन निर्द्धनके।
लेत यमुना नाम देत अभय पद धाम रसिक
प्रियतम प्रिया वश जो जिनके॥

६

कहत सुख सार निर्द्धार करके।
इन विना ऐसी कौन करि है सखी हरत दुःखद्वन्द
सुखकन्द वर्षे॥
ब्रह्मसम्बन्ध जब करत हैं जीव को तब हि इनकी
वाम भुजा फरके।
दौरि करि शोर करि जाय पिय सों कहें अति हि
आतुर मनमें जु हर्षे॥
नाम निर्मोल न गले कोउ ना सके भक्त राखत हिये
हार करके।
रसिक प्रियतम को होत जापर कृपा सोई यमुना
जूको रूप परशे॥

७

यमुना सो नाहिं कोउ और दाता।
जे इनकी शरण जात हैं दौरि के तिन्हें चण
करें सनाथा॥
एहि गुणगान रसखान रसना एक सहस्र
क्यों न दई विधाता।
गोविन्द बलि तन मन धन वारने सबनको जोवन
इन होके हाथा॥

८

श्याम सङ्ग श्याम ह्वै रही री यमुने।
सुरति श्रमविन्दुतें सिन्धुसी बहि चली मानो
आतुर आली रही न भवने॥
कोटि काम हि वारौं रूप नयन निहारौं लाल
गिरिधरण सङ्ग करत रमने।
हर्षि गोविन्द प्रभु देखि इनकी ओर मानो
नव दुलहनो आई गमने॥

९

यमुनयश जगत्में जोइ गायो।
ताके आसक्त ह्वै रहत हैं प्राणपति नयनमें वैन
में रस जो छायो॥
वेद पुराणको बात यह अगम है प्रेमको भेद
कोउ न पायो।
कहे गोविन्द यमुनाकी जापर कृपा सोई वल्लभ-
कुल-शरण आयो॥

१०

चरण पङ्कज रेणु यमुना देनी।
कलियुग जीव उद्धारण कारण काटत पाप
अवधार पेनी॥
प्राणपति प्राण यह आय भक्तन नेह सकल
यह सुखको हो जु सैनी।
गोविन्द प्रभु विना रहत नहिं एक चण अति हि
आतुर चञ्चल जो नयनी॥

११

धाइके जाइ जे यमुना तीरे।
तिन होकी महिमा कहां लों वरणिये जाइ
परशत प्रेम अङ्ग नीरे॥
निशदिन केलि करत मनमोहन प्रियके सङ्ग
भक्तनको ह्वै जु भीरे।
छीत स्वामी गिरिधरण श्रीविट्ठल ता विना
नेकु नहीं धरत धीरे॥

११

जोई सुख यमुना यह नाम आवे।
ता ऊपर कृपा करत श्रीवल्लभ प्रभु सोई
यमुना जीको भेद पावे॥
तन मन धन अब लाल गिरिधरणको दे करि चरण
जब चित हि लावे।
छीत स्वामी गिरिधरण श्रीविट्ठल नयननि प्रकट
लीला दिखावे॥

१२

धन्य यमुने निधि देनहारी।
करत गुणगान अज्ञान अघ दूरि करि जाहि
मिलवत पिय और प्यारी॥
जिन हो सन्देह करो बात जियमें धरो
पुष्टिपथ अनुसरो सुख जो कारी।
प्रेमके पुञ्ज में रासरस कुञ्जमें एहि राखति
अति रङ्ग भारी॥
यमुना अरु प्राणपति और सब प्राण सुत चहूं
जन जीव पर दया विचारी।
छीतस्वामी गिरिधरण श्रीविट्ठल प्रीतिके लिये
यह सम्पदारी॥

१४

गुण अपार एक मुख कहां लो कहिये।
तजो साधन भजो नाम यमुनाजी को लाल
गिरिधरण को तबहिं पइये॥
परम पुनीत प्रीति रीतिको जान हो दृढ़ करि
चरण कमल जो गहिये।
छीत स्वामी गिरिधरण श्रीविट्ठल एहि निधि
छाड़ि अब कहां जो जइये॥

१५

चित्तमें यमुना निशिदिन जो राखो।
भक्तके वश कृपा करत हैं सर्वदा ऐसो यमुना जो
को है जो साको॥
जाहि मुखते यमुने नाम यह उचरे सङ्ग कीजे
अब जाइ ताको।
चतुर्भुज दास अब कहत हैं सबन सों ताते
यमुने यमुने जो भाषो॥

१६

प्राणपति विहरत यमुनाके कूले।
लुब्ध मकरन्दके वश भए भ्रमर जे रवि उदय देखि
मानो कमल फूले॥
करत गुञ्जार मुरलीके सांवरो व्रजवधू सुनत
तन सुधि जो भूली।
चतुर्भुज दास यमुना प्रेमसिन्धुमें लाल गिरिधरण
अब हर्षि भूले॥

१७

बार बार यमुने गुणगान कीजे।
एहि रसनाते जो नाम रस अमृत भाग्य जाके
सोई जो लीजे॥
भानुतनया दया अति हि करुणामया इनको
करि आशा सदा जीजे।
चतुर्भुज दास कहे सोई प्रिय पास रहे जोई
यमुनाके रसमें भीजे॥

१८

हित करि देत यमुना वास कुञ्जे।
जहां निशि वासर रासमें रसिक वर कहां लो
वरणिये प्रेमपुञ्जे॥
थकित सरितानीर थकित व्रजवधू भीर कोऊ
न धरत धीर मुरली सुनिञ्जे।
चतुर्भुज दास यमुने जो पङ्कज जानि मधुपको
नाई चित लाइ गुञ्जे॥

१९

भक्त पर करि कृपा यमुना ऐसो।
छांड़ि निज धाम विश्राम भूतल कियो न प्रकट
लीला दिखाई जो तैसो॥
परम परमार्थ करण है पवनि को रूप अद्भुत
देत आप जैसो।
नन्ददास जो जानि दृढ़ चरण गहै एक रसना
कहा कहूं वैसो॥

२०

नेह कारण यमुना प्रथम आई।
भक्तकी चित्त वृत्ति सब जान हीं ताहिते अति ही
आतुर जो धाई॥
जैसी जाके मन हती मन इच्छा ताहि तैसी
साध जो पुजाई।
नन्ददास प्रभु नाथ ताहि पर रीझत
यमुनाजूकी गुण जो गाई॥

२१

यमुने यमुने यमुने जो गावो।
शेष सहस्र मुख गावत निशदिन पार नहीं
पावत ताहि पावो॥
सकल सुख देनहार ताते करो उच्चार कहत हौं
बार बार भूलि जिनि जावो।
नन्ददासकी आशा यमुना पूरण करी ताते कहूं
घरी घरी चित्त लावो॥

२२

भाग्य सौभाग्य यमुना जो दे री।
बात लौकिक तजे पुष्टि यमुना भजे लाल गिरिधरण
को ताहि वर मिले री॥
भगवदी सङ्ग करि बात उनकी लै सदा सान्निध्य
रहे केलि में री।
नन्ददास जो जाहि वल्लभ कृपा करे ताके यमुने
सदा वश जो रहे री॥

२३

नाम महिमा ऐसो जो जानो।
मर्य्यादादिक कहें लौकिक सुख लहें पुष्टिको
पुष्टिपति निश्चय मानो॥
स्वाति जलबुन्द जब परत हैं जाहिमें ताहिमें
होत तैसो जो बानो।
यमुना कृपा जान सिन्धु जल वहिमान सूर गुणपूर
कहां लो बखानो॥

२४

भक्त को सुगम यमुना अगम ओरे।
प्रात ही न्हात अघ जात ताके सकल यम हू रहत
ताहि हाथ जोरे॥
अनुभवी विना अनुभव कहा जान हीं जाको
प्रिया नहीं चित्त चोरे।
प्रेमके सिन्धुको मर्म जान्यो नहीं सूर कहि
कहा भयो देह बोरे॥

२५

फल फलित होत फलरूप जाने।
देखि हू नहीं सुनो ताहि कहि आपनो ताको
यह बात कोउ कैसे माने॥
ताहीके हाथ निर्मोल नग दीजिये जोई नीके
करि परखि जाने।
सूर कहि क्रूरते दूर वसिये सदा यमुनाको नाम
लीजे जो छाने॥

२६

यमुनापति दासके चिह्न न्यारे।
भगवदीको भगवद् सङ्ग मिलि रहे ताके वसत हिये
प्राण प्यारे॥
गूढ़ यमुना बात जोई अब जान ही ताके
मनमोहन नयन तारे।
सूर सुखसार निर्द्धार वहे पाव ही जापर होय
वल्लभ कृपारे॥

२७

यमुने रसखानि को शीस नाऊं।
ऐसो महिमा जानि भक्तको सुखदानि जोई मांगों
सोई जो पाऊं॥
पतित पावनकरण नाम लीन्हें तरण दृढ़ करि
गहे चरण कहूं न जाऊं।
कुम्भनदास गिरिधरण मुख निरखते एही चाहत
नहीं पलक लगाऊं॥

२८

यमुना अगणित गुण गने न जाई।
यमुना तट रैन इतने होय वैन इनके सुखदेनको
कारूं बड़ाई॥

भक्त मांगत जोई देत तेही छिन सोई ऐसो करे
कौन प्रण निभाई ।
कुम्भनदास गिरिधरण मुख निरखति कहो कैसे
करि मन अघाई ॥

२९

यमुना पर तन-मन-प्राण वारौं ।
जाको कीर्ति विशद कौन अब कहि सके ताहि
नयननतें नेकु न टारौं ॥
चरण कमल इनके जो चिन्तत रहौं निशिदिन
नाम मुखते उचारौं ।
कुम्भनदास कहे लाल गिरिधरण मुख इनको
कृपा भई तो निहारौं ॥

३०

भक्त इच्छा पूरण यमुना जो करता ।
विन हि मांगे देत कहां लो कहूं हेत जैसे काहूको
कौज होय धरता ॥
यमुना पुलिन रास व्रज वधू लिये पास
मन्द-मन्द हास मन जो हरता ।
कुम्भनदास जो प्रभु को मुख देखत एहि जिय
लेखत यमुना जो मरता ॥

३१

रासरससागरा यमुना जानो ।
प्रति क्षण नूतन वहत धारा तनें राखत अपने
उर मांझ ठानो ॥
भक्तको सहे मार देत प्राण आधार अति ही
बोलत मधुर-मधुर वानी ।
श्रीविट्ठल गिरिधरण वरवश किये कौन पै
जात महिमा वखानो ॥

३२

भक्त प्रतिपाली जञ्जाल टारे ।
अपने रस-रङ्गमें सङ्ग राखत सदा सर्वदा जोइ
यमुना उचारे ॥
इनको कृपा अब कहां लो वरणिये जैसे राखत
जननी पुत्र वारे ।
श्रीविट्ठल गिरिधरण सङ्ग विहरते भक्तको एक
क्षण ना विसारे ॥

३३

कौनपै जात यमुना जो वरणो ।
सबहिन को मन मनमोहन हरत सो प्रियको मन
ए जो हरणो ॥
इन विना एक क्षण रहे न जीवन धन्य ब्रजचन्द्र
मन आनन्द करणो ।
श्रीविट्ठल गिरिधरण सहित आय भक्तके हेत
अवतार धरणो ॥

३४

यमुना जो नाम ले सो सभागी ।
सोइ रस रूप को सदा चिन्तन करे नेक नहिं
कल परे जाहि लागी ॥
पुष्टि मार्ग परम अति हि दुर्लभ छाड़ि
सगरे कर्म प्रेम यागो ।
श्रीविट्ठल गिरिधरण सिद्धि निधि अब भक्त को देत हैं
विन हि मांगो ॥

३५

यमुने तुमसी एक हो जु तुम हो ।
करि कृपा दर्श निशि वासर दोजिये तिहारे
गुणगान को रहे उद्यम हो ॥
तुम ज पाए ते सकल निधि पाव हो चरण कमल
चित्त भ्रमर भ्रम हो ।
कृष्णदास नि कहे कौन यह तप कियो तिहारे
ढिग रहत है लताद्रुम हो ॥

३६

एसो कीजे कृपा लीजिये नाम ।
यमुना जगवन्दनो गुणन जात योगिनो जिनके
ऐसे धनो सुन्दर श्याम ॥
देत संयोगरस ऐसे प्रिय हैं जो वश सुनत
सुयश तिहारो पूरे सब काम ।
कृष्णदास नि कहे भक्तके कारणे यमुना एक क्षण
नहीं करे विश्राम ॥

३७

यमुनाके नाम अघ दूर भाजे ।
जिनके गुण सुनिके लाल गिरिधरण प्रिय आय
सम्मुख ताके विराजे ॥
तेहि क्षण काज ताके जो सगरे सरत जाइके
मिलत व्रजवधू समाजे ।
कृष्णदास नि कहे ताहि अब कौन डर जाके
ऊपर यमुनासो गाजे ॥

३८

यमुनाके नाम तेई जो ले हैं ।
जिनकी लग्न लागो नन्दलाल सों सर्वस्व देके
निकट रे हैं ॥
जिनहि सुगम जानि बात मनमें बानि
विना पहिंचानि कैसे जो पे हैं ।
कृष्णदासनि कहे यमुना नाम नौका भक्त भवसिन्धु
ते यों जो तरे हैं ॥

३९

यमुनाको आशा अब करत हैं दास ।
मन-क्रम-वचन कर जोरिके मांगत निशदिन ,
राखिये अपने ही पास ॥
जहां अब रसिकवर रसिकनी राधिका दोउ जन
सङ्ग मिलि करत हैं रास ।
दास परमानन्द पाय अब व्रजचन्द्र देखि सिरावे
नयन मन्दहास ॥

४०

यमुना सुखकारणी प्राणपतिको ।
प्रिय जो भूलत जिन्हे सुधि करि देत तिन्हे कहां
लो कहिये अति हि इनके हितको ॥
पिय सङ्ग गान करें अति रस उमगि भरें देत
तारी करें लेत जितको ।
दास परमानन्द पाय अब व्रजचन्द्र एहो जानत
अति प्रेम गतिको ॥

४१

यमुनाके साथ अब फिरत हैं नाथ ।
भक्तके मनके मनोरथ पूरत सबे कहां लों कहिये
अब इनको जो बात ॥
विविध शृङ्गार-भूषण अङ्ग-अङ्ग सजि वरणो न
जात शोभा बनी गात ।
दास परमानन्द पाय अब व्रजचन्द्र राखे अपने
शरण बहे जो जात ॥

४२

यमुने पियको वश तुम कोने ।
प्रेमके फन्दते घेरि राखे निकट ऐसे निर्मोल
नग मोल लोने ॥
तुम जो पठावत तहां अब धावत निशदिन
तिहारे रसरङ्ग भोने ।
दास परमानन्द पाव अब व्रजचन्द्र परम उदार
यमुना जो दोने ॥

४३

जगमें ए ही सार भजु तू बारम्बार ।
श्रीयमुना जीको नाम जप निशदिन जातें
उतरेगो भवसागर पार ॥
जाके भजनते हरि हियमें वसें करे कृपा सर्वदा
अपनो पितुमार ।
कहत व्रजपति तुम सबन सो समुझाय परो
इनके चरण और नाहिं आधार ॥

४४

एक रसना गुण अपार क्यों करि वरनो ।
साधन सबे तजो भजो इनको नाम जाके सुमिरन
ते होगो तरनो ॥
एक मनमें निर्धार करिके करो सदा तट इनके
निकट रहनो ।
कहत व्रजपति तुम सबनसों समुझाय जपो
हरिनाम और कछु न करनो ॥

४५

पिय सङ्ग रङ्ग भरि करि विलासे ।
सुरति-रससिन्धुमें अति हि हर्षित भई कमल
ज्यों फूलत रवि प्रकाशे ॥

तनते-मनते-प्राणते सर्वदा करति है
हरि सङ्ग मृदुल हासे।
कहत व्रजपति तुम सबन सों समुझाय मिटे
यम तास इन हो उपासे ॥

४६

यमुनासी नाहीं कोउ दुःखको हरणी।
जाके स्नानते मिटत हैं सब पाप होत है आनन्द
सुखको करणी ॥
महिमा अगाध अपार इनके गुण सकल यश
वेद-पुराण बरणी।
कहत व्रजपति तुम सबन सों समुझाय छूटे
यम डर जो आवे इनकी शरणी ॥

४७

जयति भानुतनये चरण युगल वन्दे।
जयति व्रजराज नन्दन प्रिये सर्वदा देत आनन्द
ज्यों शरत् चन्दे ॥
जयति सकल सुख कारणी कृष्ण मनोहारणी
श्रीगोकुल निकट बहत मन्दे।
जाके तट निकट हरि रासमण्डल रच्यो तहां
नितंत तथा थेइ थन्दे ॥
जयति कलिङ्ग गिरिनन्दिनी देति आनन्दनी
भक्तके हरे सब दुःख द्वन्दे।
चित्तमें ध्यान धरि मुदित व्रजपति कहे जयति
यमुने जयति नन्दनन्दे ॥

४८

श्रीयमुने तुम सों और न कोई।
करो कृपा निज दीन जानिके व्रज निज वासी होई ॥
राखो चरण-शरण तरणितनये जन्म आपदा खोई।
इह संसार अपने स्वार्थको सुत-पति सगो न कोई ॥
प्रेमभजनमें करत विघ्नता सन्त सन्तापन सोई।
ताको सङ्ग मोहिं सपने न दीजो मांगत नयनन रोई।
गरल पान डारत अमृतमें विष को रसमें मोई।
रसिक कहत दीन ह्वै याचूं लहरि समुद्र समोई ॥

४९

श्रीयमुना जी दीन जानि मोहिं दीजे।
नन्दको लाल सदा वर मांगूं सब गोपिनकी
दासी कीजे ॥
तुम हो परम उदार कृपानिधि सन्तजनन सुखकारी।
तिहारे वश वर्त्तत राधावर तट खेलें गिरिधारी ॥
सब सखियन मिलि हरि संग खेलें
अद्भुत रूप निहारी।
तिहारे पुलिन मध्य निकट कुञ्ज द्रुम कमल
पुहुप हैं सुवासी ॥
श्रमजल सहित नाथ अति रस भरे जलक्रीड़ा
सुखकारी।
मनो तारा मध्य चन्द्र विराजत भरि भरि
छिरकति नारी ॥
राणी जूके पाद लागि विनती करि गृहको कारज
सब कीजे।
परमानन्द प्रभु सब सुखदाता इह रस नयन
भरि पीजे ॥

५०

श्रीयमुनाजो तिहारो दर्श मोहि भावे।
श्रीगोकुलके निकट बहत हो लहरनको छवि आवे ॥
सुखकरणी दुःखहरणी श्रीयमुना जो जन प्रात उठि न्हावे।
मदनमोहन जूको खरी पियारी पटराणी जो कहावे ॥
वृन्दावन में रास रच्यो है मोहन मुरली बजावे।
सूरदास प्रभु तिहारे मिलनको वेद विमल यश गावे ॥

५१

श्रीयमुनाजो यह प्रसाद हौं पाऊं।
तुम्हरे निकटे रहौं निशिवासर रामकृष्ण गुण गाऊं ॥
मज्जन करों विमल पावन जल चिन्ता कलुष बहाऊं।
तिहारो कृपा भानुको तनया हरिपद प्रीति बढ़ाऊं ॥
विनती करों यहै वर मांगूं अधम सङ्ग बिसराऊं।
परमानन्द चार फलदाता मदन गोपालहिं भाऊं ॥

५१

श्रीयमुनाजी यह्न विनती चित धरिये।
गिरिधर लाल मुखारविन्द रति जनम जनम
मोहि करिये॥
विष सागर संसार विषम अति विमुख सङ्गतें डरिये।
काम क्रोध अज्ञान तिमिर अति उर अन्तरतें हरिये॥
तुम्हरे निकट बसों निजजन सङ्ग रूप देखि मन ठरिये।
गाऊं गुण गोपाल लालके दुष्ट वादतें डरिए॥
त्रिविध दोष हरि हो कालिन्द्री निज कृपा करि ढरिये।
गोविन्द सदा इहै वर मागूं तुम्हरे चरण अनुसरिये॥

५२

श्रीयमुना जी अधम उद्धारणी मैं जानी।
गोधन सङ्ग श्यामघन सुन्दर तीर त्रिभङ्गी दानी॥
गङ्गाचरण परशतें पावन हर शिर चिकुर समानी।
सात समुद्र भेदि यमभगिनी हरि नख शिख लपटानी॥
आलिङ्गन चुम्बन रस विलसत प्रेमपुञ्ज ठकुरानी।
गोविन्द प्रभु रवितनया प्यारी भक्ति-मुक्तिकी खानी॥

५४

श्रीयमुना जी तिहारो दर्श हों पाऊं।
श्रीगोवर्द्धन श्रीवृन्दावन व्रजरज अङ्ग लगाऊं॥
दिन दश पांच रहूं श्रीगोकुल ठकुराणी घाट न्हाऊं।
दासन ऊपर करो कृपा निज सन्तनके सङ्ग आऊं॥

५५

श्रीयमुना जी पतित पावन कह्यो।
प्रथम हो जब दर्श दीन्हीं सकल पाप जु हर्‍यो॥
भुज तरङ्गन स्पर्श कीन्हीं पयपान दे सुख भर्‍यो।
नाम लेत हि गई दुर्मति कृष्ण-रस-वश तर्‍यो॥
गोपकन्या कियो मज्जन लाल गिरिधर वर्‍यो।
सूर श्रीगोपाल निरखत सकल कारज सर्‍यो॥

५६

श्रीयमुना जी पतित पावनकरण।
प्रथम हो जाको दर्श पायो कोटि कलिमलहरण॥
पैठत हो भुज तरङ्ग परशत मिटत जियको जरन।
नाम उचरत शुद्धवाणी बुद्धि पोषण भरण॥
उपजि उग्र वैराग जाको खैंचि लावत शरण।
सूर हरिको भक्तिदाता विश्वतारणतरण॥

५७

जगत्में श्रीयमुना जी परम कृपाल।
विनती करत तुरत सुनि लीन्हीं भई हैं मोपै दयाल॥
जो कोउ मज्जन करत निरन्तर तातें डरत यमकाल।
व्रजपतिको प्यारी कालिन्द्री सुमिरत होत निहाल॥

अथ रासके पद

गाऊं रसिक नट भूपाल गुण अनन्त न पार
कमलनयन प्रिय यशोदा दुलारे।
प्रकट पुरुष सार पृथ्वीतल हरे भार जानत महिमा
जाके डर हि उरग हारे॥
रामकली एक तार नाचे अमोघ विहार कालिन्द्री
पुलिन सखी लोचन निहारे।
उत्तम भूषण धार तन लेपि घनसार वृन्दावन
चन्द्र चहुं दिशि उजियारे॥
मोहन नन्दकुमार अङ्ग-अङ्ग सुकुमार गिरिवरधर
यश त्रिलोक विस्तारे।
उभय कर उदार व्रजभामिनी शृङ्गार
कृष्णदास प्रभु हरि सर्वस्व दातारे॥

२

रासरस गोविन्द करत विहार।
सूरसुताके पुलिन रम्यमें फूले कुन्दमन्दार॥
अद्भुत शतदल विकसित कोमल मुकुलित
कुमुद कह्लार।
मलय पौन बहै शारद पूरण चन्द्र मधुप झङ्कार॥
सुघराई सङ्गीत कलानिधि मोहन नन्दकुमार।
व्रजभामिनी सङ्ग प्रमुदित नाचत तन चर्चित घनसार॥
उभय स्वरूप शुभगता सीमा कोककला सुखसार।
कृष्णदास स्वामी गिरिधर प्रिय पहरे रसमय हार॥

३

गोविन्द करत मोहन गान।
सप्तसुर गतिभेद मिलवत वेणु सुरति बंधान॥

तरणिजा कर लहर विरचित पुलिन केलि बंधान।
शरत् रजनी विमल उडपति मलय पौन सुठान॥
राग वारि समुद्र ताण्डव नाट्य कला निधान।
व्रजवधू सङ्ग मुदित नाचत लेत अवथर तान॥
वशीकृत गण सिद्ध सुरगण थकित व्योम विमान।
कृष्णदास विलास रस गिरिधरण सब गुण जान॥

४

नृत्यत मोहन रसिक सखन सहित यग्र ता
तत्तथै तत थै तत्ता।
मृदङ्ग ध्रमु ध्रमु ताल उपङ्ग मिलि श्रुति देत
मधुप मधुमत्ता॥
टिपारो शिर पीत अति लाल काछनी बनी किङ्किणी
झिनि झिनि गति लेत गावत सुरसत्ता।
गोविन्द प्रभु गोपबालक जय-जय करत प्रेम अनुरत्ता॥

५

रहो मोहि श्रीवल्लभ गृह भावे।
सुनि मैया तू मो डर माखन दूध दही जो छिपावे॥
तू तो करुण कृपण कहा कहूं नित उठि मोहि
खिझावे।
मेरे प्राण जीवन धन गोरस मोते दूर दुरावे॥
खीर खांड पकवान विविध ले प्रात हि
मोहि जगावे।
तेल सुगन्ध लगाइ प्रीति सों ताते नीर नहवावे॥
भूषण वसन विविध मन भाए पलटि-पलटि पहिरावे।
नयना आंजि तिलक मृगमद करि दर्पण मोहि
दिखावे॥
षट्रस व्यञ्जन मोहि जेंवावे हित सों बीरा खवावे।
भंवरा चकई विविध खिलौना ले करि मोहि खिलावे॥
विविध कुसुम अपने कर गुहि के ले माला उर लावे।
सुखद पर्य्यङ्क संवारि मृदुल अति तापर मोहि
सुवावे॥
डोल झुलावे रथ बैठावे हिंडोरा पलना झुलावे।
ऋतु वसन्त जानि जिय अपने ले सुरङ्ग छिरकावे॥
जन्म दिवस आवत जब मेरो आंगन चौक पुरावे।
बाजे बहुविधि द्वारे बाजे वन्दनवार बंधावे॥
मेरे गुण गुणि जनपै मोंको सम सुरनि जो सुनावे।
हरदी दूर्वाचत दधि कुङ्कुम मङ्गल कलस भरावे॥
धेनु दिवावे द्विजजनका मापै शुभग अशीष पढ़ावे।
केतिक बात कहों हों हितको मापै कहिय न आवे॥
मेरे प्रादुर्भाव दिवस दिन आनन्द उर न समावे।
नव दिन नए भोग करि मोंकों हित सों
भोग लगावे॥
घसि गुलाबके नीर सुचन्दन ले कपूर धों बसावे।
शीतल वारि बयारि अति शीतल दे मेवा मोहिं
रिझावे॥
शीतल नीर सुगन्ध सुवासित करि अधिवासन लावे।
भरि भरि जल जनाय शीस पर मोतन ताप मिटावे॥
मेरे लिये पवित्रा राखी अति सुन्दर जो बनावे।
सबै भांति प्रीति व्रजजनकी आपैं करि जो सिखावे॥
दशमी विजय जानि रघुवरको जब अङ्कुर शीस धरावे।
बहुविधि पाक संवारि मोहि हित मणिदीपदान हो
दिवावे॥
शरत् पूर्णिमा रास दिन मेरो नटवर वेष बनावे।
मोर मुकुट पीताम्बर काछनी मुरली करहि गहावे॥
सुरभी वरद ज्योति कुहूकी निशि पुनि पुनि लाड़
लड़ावे।
सुरपति मानभङ्ग प्रतिपद तब गो गिरिराज पुजावे॥
कातिक शुक्ल एकादशीके दिन कुञ्ज महल
जो बनावे।
पाट सुरङ्ग वसन पहिरावत प्रबोधनी पर्व मनावे॥
अति मन्द कर्म जड़ कलियुग जन वृथा जन्म गंवावे।
रसिक कहै श्रीवल्लभ करुणा विन इह फल कबहूं
न पावे॥

रामकली—चर्चरी

कुंवरि राधिका तव सकल सौभाग्य सीमा या वदन
पर कोटि शत चन्द्र वारों।

खञ्जन कुरङ्ग शतकोटि नयननि ऊपर वारने करत
जियमें विचारों ॥
कदली शतकोटि जङ्घन ऊपर सिंह शतकोटि कटि
पर न्यौछावर उतारों।
मत्त गज कोटि शत चाल पर कुम्भ शतकोटि इन
कुचन पर वारि डारों ॥
कीर शतकोटि नासा ऊपर कुन्द शत कोटि दशननि
ऊपर कहि न पारों।
पक्क कन्दूर बन्धूक शतकोटि अधरनि ऊपर वारि
रुचि गर्व टारों ॥
नाग शतकोटि वेणी ऊपर कपोत शतकोटि
ग्रीवा पर वारि दूरि सारों।
कमल शतकोटि कर युगल पर वारने
नाहिन कोउ लोक उपमा जु धारों ॥
दासकुम्भन स्वामिनी सुनख-शिख अङ्ग अद्भुत
सुठान कहां लगि संभारों।
लाल गिरिवरधरण कहत मोहि तोलों सुख
जोलों वह रूप क्षण क्षण निहारों ॥

अथ मङ्गलारती

मङ्गलं मङ्गलं व्रजभुवि मङ्गलं।
मङ्गलमिह श्रीनन्दयशोदा नाम सुकीर्त्तनमें-
तद्रुचिरोत्सङ्ग सुलालित पालितरूपं ॥
श्रीश्रीकृष्ण इति श्रुति सारं नाम स्मार्त्तजनाशयतापा-
पहमिति मङ्गलरावं।
व्रजसुन्दरी वयस्य सुरभीवृन्द मृगीगण निरूपम-
भावामङ्गल सिन्धुचयाः ॥
मङ्गलमीषत् स्मितयुतमीक्षण भाषणमुन्नत
नासापुट गत मुक्ताफल चलनं।
कोमल चलदङ्गुलिदल सङ्गत वेणु निनाद
विमोहित वृन्दावन भुवि जाता ॥
मङ्गलमखिलं गोपो शितुरति मन्थरगति
विभ्रम मोहति रासस्थित गानं।
त्वं जय सततं गोवर्द्धनधर पालय विज दासान् ॥

२

आरती कीजै श्यामसुन्दरको।
नन्दकुमार राधिका वरको ॥
भक्ति करि दीप प्रेम करि बाती।
साधु सङ्गति करि अनु दिन-राती ॥
आरति व्रजयुवती मन भावे।
श्याम लीला हितकरि हरिवंश गावे ॥

३

आरती कीजै सुन्दर वरको।
नन्दकिशोर जयोशानन्दन नागर नवल
ताप तन हरको ॥
नव विशाल मृदु हास मनोहर श्रवण सुधा
सुख मोहन करको।
विहारीदास लोचन चकोर नित अंश प्रिया
भुजधरको ॥

रामकली—चर्चरी

शुभग श्यामके सङ्ग राधिका विराजे।
नयन आलस्य भरी सकल निशा सुख करी
कण्ठ हरि भुज धरी काम लाजे ॥
माणिक-कञ्चनतनो पीक दृग सोसनो अति ही
रसमें सनो रूप भ्राजे।
छीत स्वामी गिरिधरणके मन वसी मन हो मन
हंसो सुख दियो आजे ॥

२

हारि मानी नाथ अम्बर दीजे।
नन्दनन्दन कुंवर रसिकवर मनहरण सुनहु
गिरिवरधरण नीति कीजे ॥
सकल व्रज नागरी दासी तुम्हरी सदा तन मांझ
शीत अति होत भीजे।
छीत स्वामी अमित गुणगणनि आगरे विनती
करति सबै मानि लीजे ॥

३

राधिका श्यामसुन्दर को प्यारी।

नखशिख अङ्ग अनूप विराजत कोटि चन्द्र द्युति वारी॥
एक क्षण सङ्ग न छाड़त मोहन निरखि निरखि बलिहारी।
छीतस्वामी गिरिधर वश जाके सो वृषभानु दुलारी॥

४

जगावति अपने सुतको रानी।
उठो मेरे लाल मनोहर सुन्दर कहि कहि मधुरी बानी॥
माखन मिश्री और मिठाई दूध मलाई आनी।
छगन मगन तुम करहु कलेज मेरे सब सुखदानी॥
जननी वचन सुनि तुरत उठे हरि कहत बात तुतरानी।
नन्ददास कीन्हीं बलिहारी यशुमति मन हर्षानी॥

५

करत कलेज मोहन लाल।
माखन मिश्री दूध मलाई मेवा परम रसाल॥
दधि ओदन पकवान मिठाई खात खवावत ग्वाल।
छीतस्वामी वन गाय चरावन चले लटकि पशुपाल॥

६

नव कुंवर चक्रचूड़ा नृपति सांवरो राधिके तरुणि मनु पटरानी।
शेष गृह आदि वैकुण्ठ पर्यन्त लौं लोक थाने तव जु राजधानी॥
मेघ छप्पन कोटि बाग सींचत जहां मुक्ति चारो भरत पानी।
सूर्य-शशि पहरुवा पौन परजन्य इन्द्र चरणदासी भाट निगम बानी॥
धर्म कोतवाल शुकसूत नारद चारु बाल सनकादि चर चारि ज्ञानी।
सत्य गण पौरिया काल बडुवा जहां डांड़िये काम जन सुकृत निसानी॥
नील मर्कत धरे कुञ्ज कुसुमित महल मध्य कमनीयसे पठानी।
पल न बिछुरत दोउ जात नहीं तहां कोउ व्यास महल नि लिये पीकदानी॥

७

भली वृषभानु जानकी बेटी।
निविड़ निकुञ्ज कुसुम पुञ्जनिपर श्याम धाम अङ्ग लेटी॥
रति निशि जागी सोवत भोर किशोर कुंवरि गुजरेटी।
पियके हियमें जिय ज्यों राजत नाहु बाहु बल भेटी॥
नयननिकी सैननि कल मानो मन्मथ आमिष खेटी।
लोभीलाल व्यासकी स्वामिनी कञ्चन राशि समेटी॥

८

दधि मथति नन्द नरेन्द्र राणी करति सुत गुणगान।
नील नीरद अङ्ग दिव्य दुकूलवर परिधान॥
नेति कर्षति हर्ष धरकति वलय कङ्कण पान।
स्वेदकणगण वदन विधु पर सुधाविन्दु समान॥
केश कुसुमनि करत मणि ताटङ्क झलकनि कान।
पयोधर पय श्रवत चातक कृष्णपति निधरान॥
सहस आनन कहि सकै नहीं व्यास भाग वखान।
जगत् वन्दत मात पित्तनि गदाधर धरि ध्यान॥

९

खञ्जरीट मोहे अलिकुल मोहे अम्बुजदल मोहे नयननि।
शोभगता मृग शावक मोहे मीन मोहे जल सैननि॥
मुक्ता मोहे मर्कत मोहे विद्रुम मोहे रस ऐननि।
प्रताप बल उड़राज मोहे नटवर मोहे गति नयननि॥
आलस बलित ललित भुव पल्लव वल्लभपति सुत युत चैननि।
बलि कृष्णदास आश परिपूरण गिरिधर मोहे सह मैननि॥

१०

नमो तरणितनया परम पुनीत जगपावनी कृष्ण मनभावनी रुचिर नामा।

अखिल सुखदायिनी सर्वसिद्धिहेतु श्रीराधिका-
रमण रति करण श्यामा ॥
विमल जल सुमन नव काननामोद युत पुलिन
अति रम्य प्रिय व्रजकिशोरा ।
गोप गोपी नवल प्रेम रति वन्दिता तट सुदित
रहत जैसे चकोरा ॥
लहरि भांवरि ललित तालुका शुभग व्रजवालव्रत
पूरणा रास फलदा ।
ललित गिरिधरण प्रिय कलिन्दनन्दिनी निकट
कृष्णदास विहरत प्रबलदा ॥

११

राधे ये ढङ्ग हैं री तेरे ।
वैसे हाल मथत दधि कीन्हें हरि मनो लिखे चितेरे ॥
तेरो मुख देखत शशि लाजी और कहो क्यों बांचे ।
नयना तेरे जलज जीत हैं खञ्जन तें अति नाचे ॥
चपलाते चमकति अति प्यारी कहा करेगो श्याममहि ।
सुनहु सूर ऐसे दिन खोवति काज नहीं तेरे धामहि ॥

१२

दूध दोहनो ले री मैया ।
दाऊ टेरत सुनि मैं आऊं तब लो करि विधि वैया ॥
मुरली मुकुट पीताम्बर दे मोहि ले आई महतारी ।
मुकुट धर्यो शिर कटि पीताम्बर मुरली
कर लई धारी ॥
राधे राधे कहि मुरलीमें खरिकहि लई बुलाई ।
सूरदास प्रभु चतुर शिरोमणि ऐसो बुद्धि उपाई ॥

१३

कुंवरि कह्यो मैं जाति महरि घर ।
प्रात हो आई खरिका दुहावन कहति दोहनी लेकर ॥
तब खरिकहि कोऊ ग्वाल गये नहिं तिहि कारण
व्रज आई ।
जो देखों तो अजिर हि बैठे गैया दुहत कन्हाई ॥
तनक दोहनी तनक दुहत मोहि देखत रुचि लागो ।
तनक राधिका तनक सूर प्रभु देखि महरि अनुरागो ॥

१४

हरि सों धेनु दुहावति प्यारी ।
करति मनोरथ पूरण मन व्रषभानु महरकी वारी ॥
दूधधार सुख पर छवि लागत सो उपमा अति भारी ।
मानो चन्द्र कलङ्कहि धोवत जहां तहां बुन्द सुधारी ॥
हाव भाव रस मगन हैं दोऊ छवि निरखति
ललितारी ।
गो दोहन सुख करत सूर प्रभु तीनहु भुवन कहारी ॥

१५

नन्दनन्दन एक बुद्धि उपाई ।
जी-जी सखा प्रकृतके जाने ते सब लये बुलाई ॥
सुबल सुदामा श्रीदामा मिलि और महर सुत आये ।
जो कछु मन्त्र हृदयमें हरि कीन्हों ग्वालनि प्रकट
सुनाये ॥
व्रज-युवती नित प्रति दधि बेचन वन वन मथुरा जाती ।
राधा चन्द्रावलि ललितादिक बहु तरुणी एक भांती ॥
कालिन्दीतट कालि प्रात हो द्रुम चढ़ि रहो लुकाई ।
गोरस ले जब हो सब आवें मारग रोकहु जाई ॥
भलो बुद्धि यह रचो कन्हाई सखनि कह्यो सुख पाई ।
सूरदास प्रभु प्रीति हृदयको सब मन गये जनाई ॥

१६

प्रात हि उठी गोप-कुमारी ।
परस्पर बोल जहां तहां यह सुनो वनवारि ॥
प्रथम हो उठि सखा आये नन्दके दरवार ।
आइये उठिके कन्हाई कह्यो बारम्बार ॥
ग्वालटेर सुनत यशोदा कुंवर दियो जगाइ ।
रहे आपुन मौन साधे उठे तब अकुलाइ ॥
मुकुट शिर कटि पीत अम्बर मुरली लीन्हीं हाथ ।
सूर प्रभु कालिन्द्री तट गये सखा लीन्हें साथ ॥

१७

भलो करी उठि प्रात हो आये ।
मैं जानत सब ग्वारि उठी जब तब तुम मोहि
बोलाये ॥

अब आवति ह्वै हैं दधि लीन्हे घर घरतें व्रजनारी ।
हंसे सबै करतारी दै-दै आनन्द कौतुक भारी ॥
प्रकृति प्रकृतिके जे सबै राखे सङ्ग पांच हजार ।
और पठाइ दिये सूरज प्रभु जि-जि अति हो कुमार ॥

१८

कहा हम हिं रिस करत कन्हाई ।
यह रिस जाइ करो मथुरा पर जहां है कंस कसाई ॥
हम अब कहा जाइ गोहरावैं वसति तुम्हारे गाऊं ।
ऐसे हाल करत लोगनके कौन रहे येहि ठाऊं ॥
अपने हो घरके तुम राजा सबको राजा कंस ।
सूर श्याम हम देखत बाढ़े अब सीखे एगंस ॥

१९

प्यारी पीताम्बर उर झटक्यो ।
हरि तोरो मोतिनकी माला कछु गर कछु कर लटक्यो ॥
ढीठ्यो करन श्याम तुम लागे जाइ गह्यो कटिफेंट ।
आपु श्याम रिस करि अङ्कम भरि भई प्रेमकी भेंट ॥
युवती न घेर लियो हरिको तब भरि भरि धरि अङ्कवारि ।
सखा परस्पर देखत ठाढ़े हंसत देत किलकारि ॥
हांक दियो करि नन्द दोहाई आय गये सब ग्वाल ।
सूर श्याम को जानति नाहीं ढीठ भई है बाल ॥

२०

हंसत सख निसों कहत कन्हाई ।
मैयाको बाबाको दाऊ जूकी सौंह दिवाई ॥
कहति काहे हंसि हेर्‌यो काहे भौंह सकोर्‌यो ।
यह अचर्य देखो तुम इनको कब हम वदन मरोर्‌यो ॥
ऐसो बातनि सौंह दिवावति अधिक हंसो मोहे आवति ।
सूर श्याम कहि श्रीदामा सों तुम काहे न समुझावति ॥

२१

यह कहि उठे नन्दकुमार ।
कहा ठगी सी रही बाला पर्‌यो कौन विचार ॥
दानको कछु कियो लेखो रही जहां तहां सोचि ।
प्रकट करि हमको सुनावहु मेटि जोरो दोचि ॥
बहुरि यहि मग जाहु आवहु राति सांझि सकार ।
सूर ऐसो कौन जो पुनि तुम्ह हि रोकनहार ॥

२२

राधा सों माखन मांगत ।
और निके मटुकिन को खायो तुम्हरो कैसो लागत ॥
लै आई वृषभानुसुता हंसि सद्य लवनो है मेरो ।
लै दीन्हो अपने कर हरि मुख खात अल्प हंसि हेरो ॥
सब हिनतें मीठो दधि है यह मधुरे कह्यो सुनाई ।
सूरदास प्रभु सुख उपजायो व्रजललना मन भाई ॥

२३

धन्य बड़ भागिनो व्रजनारी ।
खात लै दधि दूध माखन प्रकट जहां मुरारि ॥
नहीं जानत भेद जाको ब्रह्म अरु त्रिपुरारि ।
शुक सनक मुनि वेउ न जानत निगम गावत चारि ॥
देखि सुख व्रजनारि हरि सङ्ग अमर रहे भुलाइ ।
सूर प्रभुके चरित अगणित वरणि का पै जाइ ॥

२४

ग्वारिनो नन्द द्वारे नन्द गेह बूझै ।
इत हो तें जाति उत उत हो तें फिरति इत निकट ह्वै जाति नहीं नेक सूझै ॥
भई बेहाल व्रजबाल नन्दलाल हित अर्पि तनमन सबै तिनहिं दीन्हीं ।
लोकलज्जा तजी लाज देखत लजी श्यामको भजी कछु डर न कीन्हीं ॥
भूलि गयो दधिनाम कहति लै हो श्याम नहीं सुधि धाम कहुं है कै नाहीं ।
सूर प्रभुको मिलो मेटि भली अनभली चूनहरदी रङ्ग देह छाहीं ॥

२५

तब एक सखी प्रीतम कहति ।
प्रेम ऐसे प्रकट कीन्हीं धीर काहे न गहति ॥

व्रज घरनि उपहास जहां तहां समुझि
मन किनि रहति।
बात मेरी सुनति नाहीं न कहति निन्दा सहति ॥
मातपित गुरुजन नि जान्यो भलो खोई महति।
सूर प्रभुको ध्यान चित धरि अति हि काहे वहति ॥

२६

एक गांवको वास धीरज कैसे के धरों।
लोचन मधुप अटक नहि मानत यद्यपि यत्न करों ॥
वे ए ही मार्ग नितप्रति आवत हैं हों दधि ले निकरों।
पुलकित रोम रोम गद्गद स्वर आनन्द उमगि भरों ॥
पल अन्तर चलि जात कलुषवर विरहानल जरों।
सूर सकुचि कुलकानि कहां लगि आरज पथहि डरों ॥

२७

मेरो मन हरि चितवनि अरुझानो।
फिरत कमल द्वार ह्वै निकसे करत शृङ्गार भुलानो ॥
अरुण अधर दशन नि द्युति राजत मोहन
मुरि मुसकानो।
उदधि तनय सुत पांति कमलके वन्दन भुरके मानो ॥
यहि रस मगन रहति निशिवासर हरि तजि
और न जानो।
सूरदास चित भङ्ग होत क्यों जो जेहि रूप समानो ॥

२८

हों सङ्ग सांवरेके जै हों।
होनो होय होय सो अब ही यश अपयश काहू न
डरे हों ॥
कहा रिसाइ करे कोउ मेरो कछु जो कहे
प्राण तजि दे हों।
दे हों त्यागि राखि हों यह व्रत हरिरति बीज बहुरि
कब पै हों ॥
का यह सूर अजिर अवनी तनु तजि आकाश प्रिय
भवन समै हों।
कायह व्रजवासी क्रोड़ा जल भजि नन्दनन्दन सब
सुख ले हों ॥

२९

कबको मही लिये शिर डोले।
झूठे ही इत-उत फिरि आवत यहां आनि पै बोले ॥
मुंह लों भरी मथनिया तेरी तोहि रटत भई सांझ।
जानति हों गोरसको लेवो याहो वाखरि मांझ ॥
इत तो आइ बात सुनि मेरो कहे विलग जिनि माने।
तेरे घरमें तुही सयानो और बेचि नहिं जाने ॥
भ्रमत हि भ्रमत भरमि गई गुआरिनि विकल भई
बेहाल।
सूरदास प्रभु अन्तरयामी आइ मिले गोपाल ॥

३०

भई मन माधवकी अवसेरि।
मान धरे सुख चितवति ठाढ़ो ज्वाब न आवे फेरि ॥
तब अकुलाइ चलो उठि वनको बोले सुनत न टेरि।
विरह विवश चहुंधा भरमति श्याम कहां कियो झेरि ॥
आवहु वेगि मिलहु नन्दनन्दन दानन करो निवेरि।
सूरश्याम अङ्कमें भरि लीन्हों दूर कियो दुःख ढेरि ॥

३१

यह कहि मौन सोध्यो ग्वारि।
श्याम रस घट पूरि उछलित बहुत धरो संभारि ॥
वैसे ही ढङ्ग बहुरि आई देहदशा विसारि।
लेहु री कोउ नन्दनन्दन कहे पुकारि पुकारि ॥
सखी सों तब कहति तू री को कहां को मारि।
नन्दके घर जाउं कित ह्वै जहां है वनवारि ॥
देखि वाको चकित भई सखि विकल भ्रम गहमारि।
सूर श्याम हि कहि सुनाउं गये शिर कहा डारि ॥

३२

कहा कहत है री माता मोसों।
ऐसे वहि गई को श्यामसङ्ग फिरे जो वृथा रिस
करति कहा कहुं तोसों ॥
कही कौने बात बोलि धो तेहि मेरे आगे कहे
ताहि देखों।
तात रिस करत भ्राता कहे मारि है भित्ति विन चित्र
तुम करत रेखों ॥

तुमहि रिस करति कछु कहा मोहि मारि हो धन्य
पिता माता भ्राता तुम हो।
ऐसो लायक नन्दमहरको सुत भयो तिनहि मोहि
कहति प्रभु सूर सुन हो॥

३३

श्याम नग जानि हृदय चुरायो।
चतुर वर नागरी महामणि लखि लियो प्रिय सखी
सङ्ग ताहि न जनायो॥
कृपण ज्यों धरत धन ऐसे दृढ़ कियो मन जननी सुनि
बात हंसि कण्ठ लायो।
गांस दियो डारि कहि कुंवरि मेरो वारि सूर प्रभु
नाम झूठे उड़ायो॥

३४

सङ्ग व्रजनारि हरि रास कीन्हों।
सबनिकी आशा पूरण करी श्याम ले तियन पिय हेत
सुख मानि लीन्हों॥
मेटि कुलकानि मर्यादा विधि वेदकी त्यागि गृहनेह
सुनि वेणु धाई।
सबी जय जय करी मन हि सबजे धरी शङ्क काहू न
करी आप भाई॥
ज्यों महामत्त गजयूथ करनि लिये कूल सब फोरि
डर काहु न मानो।
सूर प्रभु नन्दसुत निदरि निशि रस करी नाग नर लोक
सुर सबे जानो॥

३५

रैन रस रास सुख कहत बीती।
भोर भये गये पावन यमुनाके सलिल न्हात सुख करत
अति बढ़ी प्रीती॥
एक एवा मिलत हँसि एक हरि सङ्ग रसिक एक
जलमध्य एवा तीर ठाढ़ो।
एक एक डरति एक अङ्क भरि ले चलति एक सुख
लरति अति नेह बाढ़ो॥

काहु नहि डरति जलस्थल क्रीड़ा करति हरति
मन निदरि ज्यों कन्तनारी।
सूरप्रभु श्यामाश्याम सङ्ग गोपिका मिटी तन साध भई
मगन भारी॥

३६

श्यामाश्याम शुभग यमुना जलनि भ्रमि करत विहार।
पीतकमल इन्दीवर मानो भोर हि भये निहार॥
श्रीराधा अम्बुज कर भरि-भरि छिरकति बारम्बार।
कनकलता मकरन्द झरत मानो हालत पौन सञ्चार॥
अतसी कुसुम कलेवर बुन्दें प्रतिबिम्बित मनोहार।
ज्योति प्रकाश सुघनमें खेलत स्वाति सुमन आकार॥
धाइ धरे वृषभानु सुता हरि मोहे सकल शृङ्गार।
विद्युत जलद सूर मानो विधु मिलि श्रवत
सुधाको धार॥

३७

रीझि श्याम नागरी रूप।
तैसिये लट बगरी उरपर श्रवत नीर अनूप॥
श्रवत जल कुच परत धारा नहीं उपमा पार।
मनो उगिलत राहु अमृत कनकगिरिपर धार॥
कञ्ज परशत श्यामसुन्दर नागरी रस भाइ।
सूर प्रभु तन काम व्याकुल गये मननि जनाइ॥

३८

श्यामा श्याम अङ्कमें भरी।
उरज उर परशाइ भुजसों भुजा गाढ़े धरी॥
तुरत मन सुख मानि लीन्हों नारी तेहि रङ्ग ढरी।
परस्पर दोउ करत क्रीड़ा राधिका नव हरी॥
ऐसे हो सुख दिओ मोहन सबै आनन्द भरी।
करति रङ्ग हिलोर यमुना प्रेम आनन्द झरी॥
रास निशि श्रम दूरि कीन्हों धन्य धन्य यह घरी।
सूर प्रभु तट निकसि आये नारि सङ्ग सब खरी॥

३९

कहा करों नीके करि हरिको रूप रेख नहि पावति।
सङ्ग हि सङ्ग फिरति निशिवासर नयन निमिष
न लावति॥

बंधी दृष्टि ज्यों गुड़ी डोरि वश पाछे लागो धावति ।
निकट भये मेरो ये छाया मोकों दुख उपजावति ॥
नखशिख निरखि निहारोइ चाहति मन मूरति
अति भावति ।
जानो नहीं कहांते निज छवि अङ्ग अङ्गमें आवति ॥
अपनो देह आपको वैरनि दुरत न दुरे दुरावति ।
सूर श्यामसों प्रीति निरन्तर अन्तर मोहि करावति ॥

४०

मैं मन बहुत भांति समुझायो ।
कहा करों दर्शन रस अटक्यो बहुरि नहीं घट आयो ॥
इनि नयननके नेह रूप रस उनमें आनि दुरायो ।
वरजत हो बेकाज सुपत ज्यों पलव्यो जो न सिधायो ॥
लोक वेद कुल निदरि निडर ह्वै करत आपनो भायो ।
सुख छवि निरखि चौंधि निशि खग ज्यों हठि
आपुन पौ बंधायो ॥
हरिको दोष कहा कहि दीजे यह अपने बल धायो ।
अति विपरीत भई सुनि सजनी सूर सुमरि जो मदन
जगायो ॥

४१

राधा तैं हरिके रङ्ग राचो ।
तोतें और चतुर नहि कोउ बात कहूं मैं सांचो ॥
तैं उनको मन नहीं चुरायो ऐसी है तू कांचो ।
हरि तेरो मन अब हि चुरायो प्रथम हि तू है नाचो ॥
तुम अरु श्याम एक हैं दोउ बाकी नाहीं बाचो ।
सूर श्याम तेरे वश राधा कहत लोक मैं खाचो ॥

४२

राधा हरि अनुराग भरो ।
गद्गद सुख वाणी परकाशति देह दशा विसरी ॥
कहति इहै मन हरि हरि ले गये ए हो परनि परो ।
लोक सकुच शङ्का नहि मानति श्याम हि रङ्ग ढरो ॥
सखो सखो सों कहति बावरो ए हि हमको निदरो ।
सूरदास प्रभु सों रति मानो भुरई हम सिगरो ॥

४३

कुल की लाज कहां लों करि हों ।
तुम आगे मैं कहीं न सांचो अब काहू नहि डरि हों ॥
लोग कुटुम्ब जगत्के जे कहियत पहिले सबहिं
निदरि हां ।
अब यह दुख सहि जात न मोपे विमुख वचन
सुनि मरि हों ॥
आप सुखी तो सब हीं के है उनके सुख कहा सरि हों ।
सूरदास प्रभु चतुर शिरोमणि अब केहों कुछ लरि हों ॥

४४

सुता सों कहति वृषभानुघरनी ।
कहां तू राधिका भोरतें फिरति है तेरी गति मोपें
नहीं जाति वरनी ॥
तोरि मोती लरी तब गुप्त करि धरी कहुं एहि मिस
सकुचि रही सुख न बोले ।
मनो खञ्जन चपल चन्द्र फन्द परे उड़त नहिं
ताहितें कहूं न डोले ॥
कहा तेरो प्रकृति परी है लाड़िलो अब होतें
कहा तू जात गोरो ।
सूर कहै जननो बोलि नहीं आजु तू परुसि
धरि हों आइ खात खोरो ॥

४५

राधा अति हि चतुर प्रवीण ।
कृष्ण को सुख दे चली गृह हंसगति कटि चीण ॥
हारके मिस यहां आई श्याममणिके काज ।
भयो सब पूरण मनोरथ मिले श्रीव्रजराज ॥
गांठि अचर छोरिके मोती लरी लोन्हीं हाथ ।
सखो आवत देखि राधा भई ताको साथ ॥
युवति बूझति कहां नागरि निशि गई एक याम ।
सूर व्योरो कहि सुनयो मैं गई तेहि काम ॥

४६

जागिये प्राणपति रैन वीती ।
चन्द्रकी द्युति गई पहै पोरी भई सकुच नाहीं दई
अति हि मोती ॥
माता पिता बन्धु गुरुजन अब हि जानि हैं लखें
जिनि कहूं यह लाज मारो ।

सखिन आगे नहीं नहीं सब दिन कहो मोंहि
घेरे रहतीं सबै नारी ॥
उठे मुसुकाइ अकुलाइ चतुराइके निकसि गये
श्याम व्रजनारि जानी।
सूर प्रभु नन्दनन्दन दर्श दे गये निरखि एकटक
रही पल भुलानी ॥

४७

राधा सखी मिलि मन भाई।
जबतें इन सों नेह लगायो बहुत भई चतुराई ॥
और भई इतनी तुम को सखी गृह जनसों निठुराई।
काहूको मन हो नहिं आनति हमहुं सबनि बिसराई॥
तुम हो कुशल कुशल हैं एऊ आप स्वार्थी माई।
सूर परस्पर दम्पति आतुर चतुर सखी लखि पाई ॥

४८

यह सखी अब लों कहां दुराई।
इते दिवस हम कबहूं न देखी अब जु कहां ते आई ॥
त्रिभुवनको शोभा सब गुणनिधि है विधि एक उपाई।
विद्यमान वृषभानुनन्दिनी सहचरि सब दुखदाई ॥
अपने मन तकि तकि तनु तौलनि विविजन
सुन्दरताई।
दुसह रूपकी राशि राधिका कहो कौन पुर पाई ॥
राचि रही रस सुरति सूर दोउ निरखी नयन निकाई।
चीन्हे हों चलि जाहु कुञ्ज गृह छाड़ि देहि चतुराई॥

४९

ऐसी कुंवरि कहां तुम पाई।
राधा हूतें नखशिख सुन्दरि अब लों कहां दुराई ॥
काकी नारि कौनकी बेटी कौन गांवते आई।
देखी सुनी न व्रज-वृन्दावन सुधिबुधि हरति पराई ॥
धन्य सुहाग भाग याको यह युवतिन के मन भाई।
सूरदास प्रभु हर्षि मिले हंसि ले उर कण्ठ लगाई ॥

५०

नन्दनन्दन हंसे नागरी सुख चिते हर्षि चन्द्रावली
कण्ठ लाई।
वामभुज रमणी दच्छिण भुजा सखी पर चले
बलधाम सुख कहि न जाई ॥
मनो बिम्ब दामिनी बीच नवघन शुभग देखि
छवि काम रति सहित लाजे।
किधौं कञ्चन लता बीच हि तमाल तरु भामिनी
बीच गिरिधर बिराजे ॥
गये गृहकुञ्ज अलि गुञ्ज सुमननि पुञ्ज देखि
आनन्द भरे सूर स्वामी।
राधिकारमण युवतीरमण मनरमण निरखि छवि
होत मन काम कामी ॥

५१

मन तो हरि हों हाथ बिकानो।
निकासो मान गुमान सहित वह मैं यह होत
न जानो ॥
नयन नि साटि करी मिलि नयननि उनहीं सों
रुचि मानो।
बहुत यत्न करि हों पचि हारी फिरि इत को न
फिरानो ॥
सहज स्वभाव ठगौरी डारी शीस फिरत अवगानो।
सूरदास प्रभु रस वश गोपिनि विसरि गयो
तनु ज्ञानो ॥

५२

लोचन भये श्यामके चेरे।
एते पर सुख पावत कोटिक मोतन फेरि न हेरे ॥
हा-हा करत परत हरिचरण नि ऐसे वश भये उनहीं।
उनको वदन विलोकत निश-दिन मेरो कहो न सुनहीं॥
ललित त्रिभङ्गी छवि पर अटके फटके मोसों तोरी।
सूरदास यह मेरी कीन्हो आपुन हरि सों जोरी ॥

५३

श्याम रङ्ग रंगे नयन।
धोये छुटत नहीं यह कैसे इ मिले पघिलि ह्वै मैन ॥
ये गोधेनु हिं टेरत वहां ते मोसां लेन न देन।
सूरज प्रभुकि सङ्ग सङ्ग डोलत नेक हुं करत न चैन ॥

५४

लोचन भृङ्ग कोषरस पागे।
श्याम कमल पदसों अनुरागे॥
सकुच कानि बनबेली त्यागी।
चले उड़ाइ सुरति रति पागी॥
सुकृति पराग रस हि इन चाखो।
भवसुख फूलरसहि इनि नाखो॥
इनते लोभी और न कोई।
जो पटतर दोजे कहि सोई॥
गये तब छितें फिरि न आये।
सूर श्याम वे गहि अटकाये॥

५५

नयन भये वश मोहन तें।
ज्यों कुरङ्ग वश होत नादके टरत नहीं ता गोहनतें॥
ज्यों मधुकर वश कमल कोषके ज्यों वश चन्द्र चकोर।
तैसेइ ए वश भये श्यामके गुड़िश्रा वश ज्यों डोर॥
ज्यों वश स्वाती बुन्दन चातक ज्यों वश जलकी मीन।
सूरज प्रभुके वश्य भये ए चण चण प्रति जु नवीन॥

५६

नयना मान अपमान सह्यो।
अति अकुलाइ मिले री वरजत यद्यपि कोटि कह्यो॥
जाको बानि परो सखो जैसो तैसो टेक रह्यो।
ज्यों मर्कट मूठो नहीं छांड़त नलिनी सुवास गह्यो॥
जैसे नोर प्रवाह समुद्रहिं मांझ बह्यो सो बह्यो।
सूरदास इन तैसिये कीन्हो फिरि मोतन न चह्यो॥

५७

सजनी मोतें नयन गये।
अब लौं आश रही आवनको हरिके अङ्ग छये॥
जबते कमलवदन उन दर्शो दिन-दिन और भये।
मिले जाइ हरदी चूना ज्यों एक हि रङ्ग रये॥
मोकों तजि भये आप स्वार्थी वा रस मत्त भये।
सूर श्यामके रूप समाने मानो बुन्द तये॥

५८

पिय निरखत प्यारी हंसि दीन्हीं।
रीझि श्याम अङ्ग-अङ्ग निरखत प्यारी हंसि नागर उर लीन्हीं॥
आलिङ्गन दे अधर दशन खण्डि कर गहि चिबुक उठावत।
नासा सों नासा ले जोरत नयन नयन परशावत॥
यहि अन्तर प्यारी उर निरखो झझकि भई तब न्यारी।
सूर श्याम मोकों दिखरावत उर लाये धरि प्यारी॥

५९

श्याम नारिके विरह भरे।
कबहुंक बैठत कुञ्जद्रुम नि तर कबहुंक ताने रहत खरे॥
कबहुंक तनकी सुधि विसरावत कबहुंक तन सुधि आवत।
तब नागरिके गुणहि विचारत तेइ गुण गुणि गुणि गावत॥
कहुं मुकुट कहुं मुरली रह्यो गिरि कहुं कटि पीत पिछोरी।
सूर श्याम ऐसी गति भीतर आई दूतिका गोरी॥

६०

ठाढ़े नन्द द्वार गोपाल।
बोलि लीन्हें देखि ललिता सैन दे तत्काल॥
हंसत गये हरि गेह ताके कोउ न जानत ओर।
मिली हरि को लाइ उर भरि चापि कठिन कठोर॥
कह्यो मेरे धाम कबहूं क्यों न आवत श्याम।
सूर प्रभु कहि आजु नागरि आइ है यहि याम॥

६१

वाम सङ्ग श्याम त्रय याम जागी।
कोक विद्यानिपुण सकल गुणमें सगुण सुरति संग्राम जुरि नहीं भागी॥
अङ्ग आलस्य भरे नयन निद्रा ढरे नीक शय्या परे निशा बीती।
सूर प्रभु नन्दसुत चले अकुलाइके गये ता धाम रस काम जीती॥

६२

आजु बनो प्रियरूप अगाध।
पर उपकार श्याम तन धारो पुरवत सब मन साध॥
धर्मनीति यह कहां पढ़ी जू हम हूं बात सुनावहु।
कहो कहां काको सुख दीन्हों काहे न प्रकट बतावहु॥
धनि उपकार करत डोलत हो आजु बात यह जानी।
सूर श्याम गिरिधर गुण नागर अङ्ग निरखि पहिंचानी॥

६३

कहां हैं श्याम कहां गमन कीन्हों।
कहां तुम कबहूं दर्श देत नहिं धोखे गये आइ हम मानि लीन्हों॥
नयन आलस्य भरे चरण डग लरखरे कहा हो डरेसे कहो मोसों।
रैन कहुं बसे त्रिय कौन सों रसे हो उर करज कसे सो कहो गोसों॥
मले जू भले नन्दलाल वेउ भलो चरण जावक पाग जिन हि रङ्गो।
सूर प्रभु देखि अङ्ग अङ्ग बानक कुशल मैं रहो रीझि वह नारि चङ्गो॥

६४

अणो वो बन्दीदा हाल न जाना।
दर्श पियासे नयन विहारी मिलि महबूबा हुण वलिहार लुभाया॥
तोपै वारी जामी वो आव पिया रे मनदी आशा पूजामी दर्श देखामी।
वलिहारियांदा प्राण विहारी अरज़ हमारी सुन छिन जामी॥
तेनू की परवा नेह लगाय न आय सांवल दरद बन्दी दा हाल विहारिन सुन हनको सलाह।
वलिहारियां दे दिलनू लगी तुझ दर्शनदी चाह॥
पलकादे पड़े पाय घरी घरी जीव जिघाव विहारी।
किसनू भाव पिया निरमोही अरज़ हमारी॥
हुसन तुसाड़ा दिल विच वसियां और न भावै प्यारी।
वलिहारियां नू लग वो गया सांवल रङ्ग करारी॥
जिअरा मोरा रे निशिदिन अकुलाय विहारो दर्शन विनि।
गुरुजन डर बाहर कबहुं निकस न पाऊँ समुझि समुझि वलिहारि रहों घर अरो देखे किनि॥
नितदाना कर फेरा वो नन्ददे।
वलिहारियां तेंनू की सिखलाया लोग हंसे गुरुजन बहुतेरा वो नन्ददे॥
बैठे दम्पती रतिराजे कोटि वारो तन सुदेश अङ्ग अङ्ग भूषण वसन पहिरे वरन वरन।
तैसिये कुञ्ज मृदुल सरस रसपुञ्ज तहां करत भ्रमर गुञ्ज जहां दोउ मिलि करत बातें मधुर मधुर हसन मानो लागे फूल झरन॥
नील पीत पट दुकूल कालिन्द्री कूल मदन सवास कियो आस पास सखिसमूह गावत कलमधुर सुरन।
रङ्ग राग जमि रह्यो जात नाहि कापै कह्यो रीझि रीझि छवि निहारि लेत वलिहारि राधामोहन दोउ मनकी हरन॥
कामकी रति घाय परत।
जीति लोक लोकपति ब्रह्मादि इन्द्रादि सुर नर सिद्ध गन्धर्व नाग जीते अति मद बाढ़ि रह्यो ताहुको मन हासन हरत॥
व्रजयुवती मिलि नाचत गावत रङ्ग उपजावत केलि करत।
वारो विहारी वलिहारी तिहारो सङ्ग राधा प्यारी जियतें न टरत॥
तिहारी लालबाल औरे हाल समुझि न परत धो कहा।
ज्यों-ज्यों सुधि आवत मदन जगावत अति दुख पावत व्याकुल विरह महा॥
गिनति वीती रैन तारे सुनि श्याम नयन हमारे पल न पाये दीन भए हहा।

जो तै जिवावो वलिहारी दर्श देखावो सूनी सेज लेत देखो प्राण अहा ॥
क्यों वो सुनदा श्याम प्यारा मैंड़ी अरज़ ।
कि करा साड़ा वसन विहारी वलिहारी या मन लगानी अपनी गरज़ ॥
तेड़ी वो आशा बंदिया ।
मेहर करी वो मित्ति वलिहारियांनू इश्क़ तु सांड़े फंदिया ॥
मुरली बजाई क्यों रे तु औचक द्वार खड़ा कान्हा
मैनवाणसो तान रस भरी सोवत जगाई क्यों रे ।
भोर भावतें गुरुजन मैंते लाज गँवाई क्यों रे मो सूधे हँसि वलिहारी अनोखे प्रीति लगाई क्यों रे ॥
नन्द दे निमाना यार वे सुनि वंशीवाले गल मैं परो ।
अरज़ हमारी सुन वलिहारी कौतक सिरपई मैं डरी ॥
पखुड़ा नू छेड़ वे मेड़ो पनियांनू जादियां ।
आजिज़ होइ या व्रजमोहन तेंड़े वलिहारियांदे पायँ परेंदो सोंहे खांदियां ॥
लोगवा जागे क्योंकर आवो मितवा व्याकुल होत सुरली सुनि जिअरा आन कान जब लागी ।
हियरा भरो उमंग अनुरागन लाज नहीं मोहि त्यागी
को यत्न वलिहारी मिलनको जाउं बड़ी भागे मोहन रस पागी ॥
तंडेरे मैं वारी वारी जावां सुन प्यारी जीवन हमारी।
कुञ्ज भवन देवो सुरसेवो वलिहारियांनू अनो जिवामो तोहि मिल वो विहारी ॥

९५

आरति करत सकल सुर साधा ।
चिन्तत चरण मिटे दुख वाधा ॥
मनकरि मारुत नन्दनन्दन गावो ।
सन्मुख होत चारि फल पावो ॥
बाल अर्कको तेज विराजै ।
शोभा सिन्धु छत्र शिर छाजै ॥
सीताको सुधि छण में लाये ।
रावणके जिन गर्व नशाये ॥
महावाहु वल विदित जगत पर ।
राक्षस कुल कम्पत जाके डर ॥
केशरिनन्दन कपिकुलनायक ।
मङ्गलकरण सन्त सुखदायक ॥
सीताराम भक्ति रति ताकी ।
लई वलिहारि चरण रज जाकी ॥

९६

और सबै सुख तजिये मन व्रज वसिये ।
कृष्णनाम कल कीरति गावत प्रेमपन्थमें धसिये
योग यज्ञ व्रत ध्यान न आवत काहेको काया कसिये॥
धर्म कर्म बहकाये बौरे कर्म कीच क्यों फंसिये ।
पुलिन पवित्र वलिहारि परश रज ले-ले शिर धर घसिये ॥

९७

वृथा मोह मेटो कि न रघुवर ।
मैं मेरो मायाको चेरो भयो रह्यों नाहीं यमके डर ॥
कपट कुचाल करीं हों कर्मवश सूझत नहि तव चरण कल्पतर ।
जानकीमनभावन सुखसीमा करुणासिन्धु अयोध्या-नागर ॥
जिन सुख पायो दशरथ सुत गायो गयो पार भवसिन्धु अगम तर ।
इह दीन जानि जन अपनो सुनो वलिहारी कृपालु धनुषधर ॥

९८

आनि जिवामो मेड़ा जिया ।
नन्दनन्दन प्यारे लाल दिलोदी दारू वतलामो ॥
जो तू सानू छाड़ि पइती विरह दे हाथ विकामो ।
बूझे नी हाल असाड़ानी सांवल वलिहारियांदे घर आमो ॥
श्याम महोबत तेरी वो मन लोता नी महरदे ।

मुरली बजावदां गावदांनो मोहन इत वलिकरि
गयो फेरदे ॥

९९

बटोही जागु रे कहा सोवै ।
शिर पर काल चढ़ा शर साधे श्वास श्वास भरि क्यों
दिन खोवै ॥

श्रीगोपीजनवल्लभाय नमः ।

विभास—तिताला

जागो जागो हो गोपाल ।
नाहि न श्रति सोइये भयो प्रात परम शुचि काल ॥
फिरि फिरि जात निरखि मुख चण चण सब
गोपनके बाल ।
विनु विकसी मनु कमलकोषते ते मधुकरकी माल ॥
जो तुम मोहि न पत्याउ सूर प्रभु सुन्दर श्याम तमाल ।
तो उठिये आपुन अवलोकिये तजि निद्रा
नयनविशाल ॥

१

जागिये व्रजराज कुंवर कमलकोष फूले ।
कुमुदिनिसुख सकुचि रहो भृङ्ग लता भूले ॥
तमचर खग रोर सुनिये बोलत वन राई ।
रांभत गो मधुर नाद बछरा हित धाई ॥
विधु मलीन रवि प्रकाश गावत व्रजनारी ।
सूर श्रीगोपाल उठे परम मङ्गलकारी ॥

२

प्रात भयो कृष्ण राजीवलोचन ।
सङ्ग सखा ठाढ़े गो मोचन ॥
विकसित कमल रटत अलिश्रेणी ।
उठो हो गोपाल गुहूं तेरो वेणी ॥
खीर खांड़ घृत भोजन कीजे ।
सद्य दूध धोरी को पीजे ॥
सुत हित जानि जगावे नन्दरानी ।
परमानन्द प्रभु सब सुखदानी ॥

४

लाले नाहि न जगाय सकति सुनि सुवात सजनी ।
अपुने जान अजहुं कान मानत सुखरजनी ॥
जब जब हों निकट जाउं रहत लागि लोभा ।
तनकी सुधि विसरि गई देखत मुखशोभा ॥
वचननको बहुत करत सोचत जिय ठाढ़ी ।
नयन नयन विचार परो निरखत रुचि बाढ़ी ॥
इहि विधि वदनारविन्द यशोमति जिय भावे ।
सूरदास सुखकी राशि कहत न बनि आवे ॥

५

भयो पाछलो पहर ।
कान्ह कान्ह कहि टेरन लागे बाबा नन्द महर ॥
ब्रह्ममुहूर्त भयो सांवरे राभन लागी धेन ।
उठे बलभद्र बछरुवा ढीलन गोपन पूरे वैन ॥
गोपवधू दधि मन्थन लागीं विप्र पढ़न लागे वेद ।
परमानन्ददासको ठाकुर गोकुलके दुख छेद ॥

६

प्रात समय उठि सोवत सुत को वदन उघाखो नन्द ।
रहि न सके अतिशय अकुलाने नयन निशाके द्वन्द ॥
शुभ्र सेज मधितें मुख निकसो गयो तिमिर मिटि मन्द ।
मानहु पयनिधि मथत फेन फटि दई है दिखाई चन्द ॥
सुनत चकोर शब्द उठि धाए सखोजन सखा मुकुन्द ।
रहो न सुधि शरोर धीर मनु पिवत किरण मकरन्द ॥

७

भोर भयो जागो नन्दनन्द ।
सङ्ग सखा ठाढ़े जगवन्द ॥
सुरभि न पयहित वत्स पिवाए ।
पच्छीयूथ दशहु दिश धाए ॥
सुनि सर तक्यो तमचर सुर हाखो ।
शिथिल धनुष रतिपति गहि डाखो ॥
निशा घटो रविरथरुचि राजो ।
चन्द्र मलिन चकई रति साजो ॥
कुमुदिनो सकुचो वारिज फूले ।

गुञ्जत फिरत अलीगण टूले ॥
दर्शन देहु मुदित नरनारी ।
सूरदास प्रभु देव मुरारी ॥

८

भोर भयो नन्द यशोदा जौ बोलत जागो जागो
मेरे गिरिधर लाल ।
रत्न जटित सिंहासन पर बैठो देखन को आई
व्रजबाल ॥
नियरे जाइ सुपेती खैंचत बहुर्यो हरि ढांपत
वदन रसाल ।
दूध दही अरु माखन मेवा भामिनि भरि लाई
है थाल ॥
तब हरि हर्षि गोद उठि बैठे करत कलेऊ तिलक
दे माल ।
दे बीरा आरति वारत हैं चतुर्भुज गावत गीत रसाल ॥

९

जागो कृष्ण यशोदा जू बोले इह अवसर कोउ
सोवे हो ।
गावत गुण गोपाल ग्वालिनो हर्षित दही
विलोवे हो ॥
गोदोहनध्वनि पूरि रही व्रज गोपी दीप संजोवे हो ।
सुरभी हूंक वकरुश्चा जागी अनिमिष मारग जोवे हो ॥
वेणु मधुर ध्वनि मद्दुवर बाजत बेंत गड़े कर सेलो हो ।
अपनी गाय सब ग्वाल दुहत हैं तुम्हरी गाय
अकेली हो ॥
जागो कृष्ण जगत्के जीवन अरुण नयन मुख सोहे हो ।
गोविन्द प्रभु जो दुहत हैं धोरी व्रज गोपवधू मन
मोहे हो ॥

चिरइया चुह चुहानी सुनि चकईकी वाणी
कहति यशोदा राणी जागो मेरे लाला ।
रविकी किरण जानी कुमुदनी सकुचानी कमल
विकसानो दधि मथे बाला ॥
सुबल श्रीदामा तोको उज्वल वसन लिये
द्वारे ठाढ़े टेरत बाल गोपाला ।
नन्ददास बलिहारी उठि बैठो गिरिधारी सब
मुख देख्यो चाहें लोचनविशाला ॥

११

उठ गोपाल भयो प्रात देखूं मुख तेरो ।
पाछे गृहकार्य करों नित्यनेम मेरो ॥
विहित निशा अरुण दिशा प्रकट भयो भान ।
कमलमेंके भ्रमर उड़े जागिये भगवान ॥
वन्दीजन द्वार ठाढ़े करत हैं केवार ।
मधुर वैन गान करत लीला अवतार ॥
परमानन्द स्वामी दयालु जगत् मङ्गलरूप ।
वेद पुराण गावत हैं महिमा अनूप ॥

१२

प्रात समय भयो सांवलिया हो जागो ।
नन्द यशोदाके मन आनन्द गाय दुहन को
भाजन मांगो ॥
रविके उदय कमल प्रकाशे ।
भ्रमर उठि चले तमचर बासे ॥
गोपवधू दधि मन्थन लागी ।
हरि जूकी लीला के रस पागी ॥
विकसित कमल चलत अलिश्रेणी ।
उठो गोपाल गुहूं तेरी वेणी ॥
परमानन्ददास मन भावो ।
चरण कमल रज देखन आयो ॥

१३

उठो मेरे लाल गोपाल लाड़िले रजनी बीती
विमल भयो भोर ।
घर घर दधिकी मथनिया बाजे द्विज करत
वेदकी ध्वनि घोर ॥
करो कलेऊ दधि अरु ओदन मिश्री बांटि परोसों
थोर ।
आशकरण प्रभु मोहन तुम पर वारों तन मन
प्राण अकोर ॥

१४

प्रात समय उठि चलहु नन्दगृह बलराम कृष्ण
मुख देखिये ।
आनन्दमें दिन जाइ सखी री जन्म सुफल
करि लिखिये ॥
प्रथम काल हरि आनन्दकारी लखि पाछे भवन
काज कीजिये ।
रामकृष्ण पुनि वन हि जाइंगे चरण कमल
रस लीजिये ॥
को इक गोपिका व्रजमें सयानी श्याम महात्म
सोई है जाने ।
परमानन्द प्रभु यद्यपि बालक नारायण करि
सोई माने ॥

१५

हौं प्रभात समय उठि आई कमलनयन देखन
तुम्हरो मुख ।
गोरस बेचन चलो मधुपुरी लाभ होइ मारग
पाऊं सुख ॥
करत कलेऊ श्याम मनोहर नेकु चिते कीजे
हमतन रुख ।
तुम सपने मोहि मिलिके बिछुरे कासों कहों इह
रजनीजनित दुख ॥
प्रीति जु एक लाल गिरिधर सों इह मिस करि
सब बात जनाई ।
परमानन्ददास वह नागरी नागर सों मनसा
अरुझाई ॥

१६

मैं जान्यों जागे कन्हाई तातें यशोमती तेरे घर आई।
मेरे पिछवारे वैसेइ स्वरनिसों किन इह मधुरी
मुरली बजाई ॥
जन्म सफल करि विनती चित धरि अपने कान्ह
कि न देहु जगाई ।
ले उछङ्ग मोहनको यशोमती आंगन ठाढ़ी गोपी
मुख देख रसिक बलि जाई ॥

१७

प्रात समय घर घरते देखनको आईं गोकुलनारी ।
अपुनो कृष्ण जगाइ यशोदा आनन्द मङ्गलकारी ॥
सब गोकुलको प्राण जीवनधन या सुत पर बलिहारी।
आशकरण प्रभु मोहन नागर गिरिगोवर्द्धन धारी ॥

१८

गोवर्द्धन गिरि सघन कन्दरा रैन निवास कियो
पिय प्यारी ।
उठि चले भोर सुरति रस भीने नन्दनन्दन
वृषभानु दुलारी ॥
उत विगलित कचमाल मरगजी अटपटे भूषण
मरगजी सारी ।
इत हि अधर मसि पाग रही धसि दुहुं दिशि
छवि लागत अति भारी ॥
घूमत आवत रति रण जीते करनि सङ्ग
गरिवर गिरिधारी ।
चतुर्भुजदास निरखि दम्पतिसुख तन मन धन
कीन्हों बलिहारी ॥

१९

रजनी राज लियो निकुञ्ज नगरको रानी ।
मदन महीपति जीति महारण श्रमजल सहित
जंभानी ॥
परम सूर सौन्दर्य्य भृकुटिधनु अनियारे नयन
बाण सन्धानी ।
दासचतुर्भुज प्रभु गिरिधर रस सम्पति विलसी
ज्यों मनमानी ॥

२०

राधे जू हारावली टूटी ।
उरज कमलदल माला मरगजी वाम कपोल
अलक लट छूटी ॥
वर उर उरज करज कर अङ्कित बाहु युगल
वलयावली फूटी ।
कञ्चुकी चीर विविध रङ्ग रञ्जित गिरिधर
अधर माधुरी घूंटी ॥

आलस वलित नयन अनियारे अरुण उनींदे
रजनी खूटी ।
परमानन्द प्रभु सुरति समय रस मदन नृपतिकी
सेना लूटी ॥

२१

आजु श्यामा जूके नयनकी बात सुन री सखी
मोपें वरणि न जाई ।
सुधाकिरण बिच युग शुभ खञ्जन किये पान
मानो सोवत अघाई ॥
सुखन राग रङ्गीले रसमसे कहा कहुं सुन्दरि-
सुन्दरताई ।
मर्कत विद्रुम कमल कोष में ले जावक की
रेखा बनाई ॥
अलस तिरीछे चाहत बिच हीं बिच कछुक
विकसि जब लेति जंभाई ।
मन्मथ जय करि हरि जीतन को दयो बाण
भ्रू-धनुष चढ़ाई ॥
देखि लाल लोचन विथकित भई परम
चतुरता सब विसराई ।
सूर श्याम रस रीझ रहे तहां तुम हम सहचरी
कौन बड़ाई ॥

२२

काहे को दुराव करति है री देखिये फूल प्रकट हिये ।
तू वर मधुप प्रिय सुख कमल आय मकरन्द पिये ॥
शिथिल अङ्ग निशाके जागे बिथुरी अलकें स्वाद लिये ।
यौवनके मद मातो ग्वालिन डगत चरण धरणी पै दिये ॥
नूपुर अरसात तरुणित मानो रति केलि किये ।
कृष्णदास स्वामिनी गिरिधरण रसिक रसिये ॥

२३

आजु पिय सौं तू मिली री मानो ।
श्रमजल कण भर वदनकी शोभा निरखि नभसि
उड़ुराज खिसानो ॥
त्रिभुवन युवतिन को सुख सवस जानति हों तव
मांझ समानो ।
कृष्णदास प्रभु रसिकमुकुटमणि सुवश किये
गोवर्द्धन रानी ॥

२४

आजु कछु देखियत है रगमगी काहे न संभरति
छूटेइ अलक ।
अधरनि रङ्ग कञ्चुकी बन्द टूटे नयन राते आई
आधेइ तिलक ॥
मर्कतस्तम्भबाहु नन्दनन्दन मिलि रही री हेम सलक ।
रतिरणरस जीत्यो काम-छत्रपति ताही तें तेरे
फूल किलक ॥
कृष्णदास स्वामी सौं प्यारी लीन्हीं तें सुरति
हिण्डाल झुलक ।
मोहन लाल गोवर्द्धनधारी वदन कोटि है चन्द्रमलक ॥

२५

नव निकुञ्ज ते आवति बनी राधा चाल सुहावनी
मनको हरणी ।
विकसित वदन कमल को शोभा कहा कहीं देखत
उदित तरणी ॥
तरुण जलद नव श्यामके सङ्गम रस भरि भेंटत
भूतल जरणी ।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर प्रिय सों कीनी तें रसिक
रसीली वरणी ॥

२६

मैं तेरी अधिक चतुराई जानी तें न कछुकी संभारी ।
आनन्दरसवश देह भूल गई मिलत गोवर्द्धनधारी ॥
कहां कहुं गुणराशि अङ्ग अङ्ग चलत मधुर
गति भारी ।
कृष्णदास प्रभु रसिक लाल के तू अति प्राण पियारी ॥

२७

आई तू तिलक मिटाये ।
रतिरण गोपाल सङ्ग नखशर उर लाये ॥
कपोलन पर पीक लागी मैन कषाये ।
हरि सो मिलि मदन जीत्यो दाव उपाये ॥

कृष्णदास प्रभु सों मिलि निशान बजाये ।
ऐसो को निमिष तजे गिरिधर पाये ॥

२८

तें गोपाल हेत कसुम्भी कच्छ को रँगाय लई
भलो भई सुफल करी आजु निशि सुहावनी ।
रोम रोम फूल पाय चपल नयन भृकुटी भाय
आभरण चल अङ्ग चाल डगमगो सुहावनी ॥
शुभग सारी झूमक तन श्याम पाट कुसुम नीवी
तनसुख पचरङ्ग छोट ओढनो सुहावनी ।
सोहत अलक बिथुरी वदन मोहन लावण्यसदन
कृष्णदास प्रभु गिरिधर केलि अति सुहावनी ॥

२९

कच्चुकीके बन्द तरकि तरकि टूटे देखत मदन-
मोहन घनश्यामहि ।
काहे को दुराव करति है री नागरी उमगत
उरज दुरत क्यों यामहि ॥
कछु मुसकात दशन-छवि सुन्दर हंसत कपोल
लोल भूभामहि ।
रवि-शशि युगल परे रति फन्दन श्रवणनि पालक
ताटङ्क के नामहि ॥
वदनकमल पर अलक मधुपवर खञ्जन नयन
लेत विश्रामहि ।
सुन कृष्णदास रसिक गिरिधर रङ्ग रङ्गित
सुमुखि लजावति कामहि ॥

३०

झूमत अलक तेरे वदन-कमल पर अधिक नीके
लागत नयन अलसरी ।
कहा कहूं रूप-शोभा उरज युगल नव ले चली
रसिकवर मङ्गल कलसरी ॥
जानी मैं ते निधि पाई निकुञ्ज-मण्डप महं जाके
करत हो नयन ललसरी ।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर प्रतीति बाढ़ी नख-पद-
पंक्ति सोहे मोहन ललसरी ॥

३१

कहि न परे तेरे वदनकी ओप ।
झलकनि नव मोतिन हि लजावति निरखत
शशि-शोभा भई लोप ॥
पक्ष न लागति चाहति प्रिय तन उन्नत भौंह
घटाटोप ।
चपल कटाक्ष कुसुम-शर तानत फुरत अधर
कछु प्रेम-प्रकोप ॥
प्रात-समय आए श्याम मनोहर तम हीं लड़ावत
अपनो चोप ।
कृष्णदास प्रभु गोवर्द्धनधर अति नागरवर धरे
वेष गोप ॥

३२

प्रात आवत बनी वृषभानुनन्दिनी रणित नूपुर
चरण लटक मन्दालसो ।
सुरति-सुख-भाव अङ्ग अङ्ग भूषण-वसन अलक
फरकत कछु भांति मन्दालसो ॥
अधर अद्भुत रेखा प्रिया प्रियतम वेश सखीमण्डल
रसद नयन मन्दालसो ।
कृष्णदासनि नाथ रसिक गिरिवरधरण मन
हरो चारु चल भौंह मन्दालसो ॥

३३

अरुणउदय नीके लागत सुन सजनी हां-हां तेरे
नयन रसमसे ।
मानहु शरत्-कमल-सम्पुट महं युग अलि
मधुलम्पट विवश वसे ॥
श्याम श्वेत आलस रस भावित भावसमूह
कषाय कसमसे ।
सुन कृष्णदास रसिक गिरिधर प्रिय सुखद
सहज अञ्जन सों मसमसे ॥

३४

ऐसो मानत हो अपने जिय मह पिय सों
मिलत हो करोंगो लड़ाई ।

देखत वदन धीरज न धरो मन लाल गिरिधरण
हौं जानि पाई ॥
कहा करौं सर्वस्व चोरो सखो रूप दिखाय
ठगोरी लाई ।
कृष्णदास प्रभु रसिकशिरोमणि ले भुज बीच
बातन अरुझाई ॥

२५

नयन मन्दालस भरे हैं लसत वदनचन्द्र माहिं
प्रकाशित ।
गति मन हरति सकल जनताके उरज युगल
करलिनु उपदासित ॥
रति तव कोक-कला-परिपूरण भौंह रुचिर चित्रलेख
विकाशित ।
सुन कृष्णदास विविध युवतिनके ले यौवन
गिरिधरण विकाशित ॥

२६

सुर तालसे दुराव कित करत मानहु मिले
गोवर्द्धनधारी ।
अधर सुरङ्गे पीक कपोलन नख पद उरज सोहत
हैं चरणगति भारी ॥
मरगजी ओढनी कञ्चुकीके बन्द टूटे नीवीपट
ग्रीव न होय सारी ।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर सङ्ग जागी ताते
उमगति फूल अङ्ग अङ्ग सुखकारी ॥

विभास—चर्चरी

लाल गिरिधर सङ्ग लाड़िली भामिनी ललित
रतिरस केलि चारु सोहै ।
नव तमाल हि मानो नवल मालती वेलि नवरङ्ग
विलासनिधि आरोहै ॥
कछुक मुसकात चमकत दशन झलमलनि जनु
कहुं मुक्तामणि हार पोहै ।
सुन कृष्णदास अङ्ग अङ्ग वैभव सुमुखि सघन
वृन्दाविपिन मार मोहै ॥

विभास—यत्

राधा रङ्गभरी नहीं बोलति ।
मोहन मदनगोपाल लाल सों अपनो यौवन तोलति ॥
चाहति मिलन प्राण प्यारे को मेरो हो मन
टकटोलति ।
छांटहि बहुत चातुरी भामिनी कहत हम सों
झकझोलति ॥
प्रात होन लाग्यो सुन सजनी अब हीं
तमचर बोलति ।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर-प्रिय-हित सारङ्ग-नयन
सलोलति ॥

विभास—झपताल

श्याम सिन्धु अङ्ग चन्दनादि गन्ध पूजित पट पीत
मदन जलजवत् शुभग तरङ्गिमा ।
युवती सरिता अनङ्ग सम्मिलित शोभा सीमन्त
गुण गरिष्ठ साव सिन्धु सङ्गिमा ॥
वदन-कमल अलक-मधुप नयन-खञ्जरीट बीच
अद्भुत तिल-कुसुम नाक भौंह अङ्गिमा ।
श्रवण श्रुति विमोहन चल कुण्डल ताटङ्क गण्ड
मण्डित मुसकानि अधर रङ्ग रङ्गिमा ॥
नखशिख भूषण अमोल मनहर मादक सुबोल
वैजयन्ती भूषित ओउर उतङ्गिमा ।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर सुरतिनाथ राधावर वेणु-
गान तान-शब्द थुङ्ग थुङ्गिमा ॥

३

तेरे प्रभावति गोपाल प्यारो बोलत वन ।
चलहि मिलहि न राधिका न बसत साजे शृङ्गार तन ॥
तव देहो विद्युत्लता नन्द सुवन सावन घन ।
सोहहि किन कण्ठ लागि रति विलास उलसित मन ॥
नव निकुञ्ज कूजत कलवेणु युवतितापहरण ।
कृष्णदास प्रभु नटवर मोहन गिरिराजधरण ॥

४

जैसे तू कहति तैसे हो बने ।

मेरे जान सखी लेहि संभारि भामिनी अपने धने ॥
सुरति-सुधा-निधि श्याम मृदुल रस यामें कैसेके सने।
कृष्णदास प्रभु गोवर्द्धनधर गुण रसाल कौन गने ॥

५

मोपाले देख हि कि न आई री।
आजु बने गोविन्द नव कमलनयन तो को हों
लेन पठाई री ॥
तरणि-तनया-पुलिन विम्ब-शरत्-निशा जुन्हाई री।
राकापति-कर-रञ्जित द्रुम-लता-भूमि सुहाई री ॥
गोवर्द्धनधरण लाल गान सों बोलाई री।
कृष्णदास प्रभुको मिलन युवतिन सुखदाई री ॥

६

सुन्दर नन्दनन्दन जी हों वाऊं।
अङ्ग सङ्ग लागि मदन-मनोहर या जाड़ेको देश-
निकारो दिवाऊं ॥
मृगमद अगर कपूर कुङ्कुमा मिलें अरगजा
देह चढ़ाऊं।
विविध सुगन्ध सुमन की सुनु सखि सघन निकुञ्जमें
सेज बिछाऊं ॥
रागरागिणी उपज सुलय स्वर तानतरङ्ग के
मधुर हि गाऊं।
कृष्णदास प्रभु गोवर्द्धनधर रसिक-शिरोमणि
सुविधि रिझाऊं ॥

विभास—पटताल

जेहिं फन्द पिउ वेगि मिले करहि कि न सोई फन्द।
विरह-पीर-हरण रसिक सुन्दरी सुन्दर गोविन्द ॥
तू व्रजसरकी कुमुदिनी हरि वृन्दावनको चन्द।
वचन-किरण-विगत अमृत पीवहिं श्रुतिपट स्वच्छन्द ॥
तू करिणी वर ललना नन्द सुवन मदगयन्द।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर रति सुख आनन्द कन्द ॥

विभास—यत्

हरि मोहनको मोहन बानक।
मोहन रूप मनोहर मूरति मोहन मोही अचानक ॥
मोहन विरह चन्द्र शिर भूषण मोहन नयन सलोल।
मोहन तिल भौंह मनमोहन मोहन चारु कपोल ॥
मोहन श्रवण मनोहर कुण्डल मृदु मृदु मोहन बोल।
कृष्णदास प्रभु गिरिधरण मनोहर नखशिख
प्रेम कलोल ॥

विभास—एकताला

तरणि-तनया-तट आवत हो प्रात समय कन्दुक
खेलत देखो आनन्दको कन्दवा।
नूपुर पद कुणित पीताम्बर कटि बांधे लाल
उपरेना शिर मोरनको चन्दवा ॥
पङ्कज नयन सलोल मधुर मोहन बोल गोकुल
सुन्दरि-सङ्ग विनोद स्वच्छन्दवा।
कृष्णदास प्रभु हरि गोवर्द्धनधारी लाल चारु
चितवन तोरे कञ्चुकीके बन्दवा ॥

विभास—यत्

जो भावे सो करति लाड़िली हां री रसिक
गोपाल हि भावति।
गुणकी राशि यत् ताल हि सम्मिलित प्रमुदित
राग विभास हि गावति ॥
तान बंधान सप्त स्वर सांचे गति बहु भांति मिलावति।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर नागर छैल छबीले सुविधि
रिझावति ॥

२

तेरे वदनकी शोभा तोहि पै कहत बने जो
मुख जीभ होय लख कोटिक।
चिवुक सांवल विन्दु छैल चतुर विधाता देखें
जिनको उदियो चखोड़ा टोटिक ॥
तिलक आधो ललाट छूटो उरज सुलट शिथिल
अङ्ग अङ्ग भाव स्फोटिक।
कृष्णदास प्रभु गिरिधरण रसिक सङ्ग सुरति
हिंडोले प्यारी लिये निशि झोटिक ॥

३

रंगीले नयन तेरे हो कब देखों गिरिधरन।
प्रबल् सुख सुन्दरवर त्रिविध ताप हरन ॥

श्याम श्वेत अनियारे भाव विविध वरन।
मीन कमल खञ्जन अलि मृगज भए शरन॥
श्रीराधा रस लम्पट कुच सरोज चरन।
गायक कृष्णदास हेतु मुरली तान ढरन॥

विभास—एकताला

भ्रुकुटि-धनुष-युत नयन-कुसुम-शर जिहिके लगत
सो परि परि तानै।
सहज हि शुभग छवीली सोई गोवर्द्धनधर
जाको मानै॥
हावभाव नव सुरति तरङ्गनि सब विधि कोक-
कला सोई जानै।
कृष्णदास प्रभु युवति-यूथ-पति करि लीन्हीं तिहि
अपनो लानै॥

विभास—यत्

इह मन कैसे के रहे राखो।
जेहि मधुव्रत हो गिरिधर प्रियको वदन-कमल-
रस चाखो॥
जो कछु मैं कीन्हों परवश हो इतनो हो सत् साखो।
बारबार बहुविधि समुझायो ऊंचो नोचो भाषो॥
केहु न मानति महा हठीली कहो तुम्हारो आखो।
कहे कृष्णदास कहां लों वरणों पांच चोर
मिलि काखो॥

२

वलि वलि जाऊं रसिक गिरिधर प्रिय नीके आप
प्रात तमचरके बोले।
इती सङ्कोच कौन को हो मानत अधिक लजाय
रहे विन बोले॥
सन्ध्या वदे बोल सांचे किये अनतसि मैं जानी
करि हैं यहां रहि जाले।
कृष्णदास प्रभु ऐसो कौन तोसों कहि सकै
त्रिजगमों त्रिभुवन तक ताले॥

३

आजु लाल अति राजे बैठे वानिक सो छाजे
सुधि न कछु री गात प्यारो प्रेम मगना।
लटपटी पाग अरु शिथिल चिकुर चारु उपटत
उर-हार प्यारी कण्ठ लगना॥
आलस अरुण रस भरे री विलोचन भरि भरि
आवत प्रियसो अनुरगना।
गोविन्द प्रभु प्रिय जान शिरोमणि सुरति-रङ्ग-रस-
विभव-निशा जगना॥

४

एक रसना कहा कहों सखी री ललनको
प्रीति अमोलो।
हंसनि खेलनि चितवनि जो छवीलो
अमृत वचन मृदु बोलो॥
अति रसभरे मदन मोहन प्रिय अपने कर-कमल
खोलत वन्द चोली।
गोविन्द प्रभुको हों बहुत कहा कहुं री जे-जे
बातें कहो मोसों अपुनो हृदय खोलो॥

५

तू आज देख री मनमोहन ए बलवीर राजे।
मदनमोहन प्रिय मणिमन्दिरतें बैठे वानिकसो
आय छाजे॥
लटपटी पाग मरगजी माला लटपटात मधुप
मधु-काजे।
गोविन्द प्रभुके जु शिथिल अरुण दृग देखत
विथकित कोटि मदन लाजे॥

६

रसमसे नन्दलला रे आये हो उठि मोरे।
अरुण नयन बैन भूषण अटपटे देखियत अधरस
रङ्ग भारे॥
कैतव वाद कत करत गुसाईं तहां जाहु जाके हो
अति प्राण प्यारे।
गोविन्द प्रभु भले जू भले जानि पाए जैसे तन
श्याम तैसेइ मन कारे॥

७

मदनमोहन प्रिय भयो न भोर।

प्राची दिश् नहीं अरुण देखियत अरु सुनियत
नहीं बन खगरोर॥
गृहीत कण्ठ परस्पर दम्पती विश्लेत कातर अति ज़ोर।
गोविन्द प्रभु प्रिय रसिकशिरोमणि प्यारीके
वचननि लियो चित चोर॥

८

लाल प्यारी अति विलचण वश किये री सुहाग।
विविध कुसुम सुवास शीतल विचित्र शय्या रची
जाति मदनमोहन निशा जाग॥
बैठे कुञ्जके द्वार तब पथ जोवत भरि भरि आवत
नयन विशाल तव अनुराग।
दूतीके वचन सुनि प्रेम व्याकुल भई मिलो जाय
गोविन्द प्रभुको मेटो हृदय दाग॥

९

पक्व खजूर जम्बु वदरीफल लेहो काछिनि टेरी द्वार।
बालकयूथ सङ्ग बलमोहन चौके करत विहार॥
सुन्दर कर जननी केनो दियो धाये तब द्वौं कुमार।
हीरा रत्न सुपूरित भाजन ऐसे परम उदार॥
उदर अङ्गुलि लगाय खात खात चले मीठे
परम रसाल।
जूठो गुठली मारत गोविन्द को हंसत हंसावत ग्वाल॥

१०

तेरे वारने जाऊं महर-यशोदाके लाल।
छाड़े उन भावत कैसे नीके लागत मधुरे
स्वर गावत मुरली बजावत परम रसाल॥
विभास राग जमायो मधुर मधुर गायो प्रात शुभकाल।
गोविन्द प्रभु प्रिय सुघर शिरोमणि अहो श्याम तमाल॥

११

जहां नयन लगत तहां सों खगत अङ्ग अङ्ग
माधुरी जु वरणि न जाई।
सुन्दर भाल भ्रू कपोल नासिका देखत रहे जु लुभाई॥
हंसत लालन सुख दशन जुन्हाई होति यह
छवि कहा कहां देखि धों री आई।
गोविन्द प्रभुके जु सुन्दर वानिक घर वलि वलि
वलि वलि जाई॥

१२

तेरो मुख मानो जैसो री शरत्-शशि।
दशन-ज्योति जुन्हाई वचन शीतलताई अमृत
हास सुहाई बोलत नयन मसि॥
कस्तूरी तिलक भाल ऋतु कलङ्क छवि नचत्र माल
मणि मङ्गलसि।
गोविन्द प्रभु नन्द सुवन चकोरवर पान करत
वर मन्मथ तापनसि॥

१३

इन्दु कुमुदिनी समेटी अरु चकवनि त्रिय भेंटी
मुकुलित अलि सरस कमल मुकुलित भए नलिन।
भयो प्रात मुक्ता गात सियरो अति सोनो
लागी बोलन तमचर दीप-ज्योति भई मलिन॥
कैसो जे हौं रसिक राय नन्द-गोप दुहत गाय
जागी व्रजवासी मोहि जात देखि हैं गलिन।
गोविन्द प्रभु प्रेममगन दम्पती अति कण्ठ लगन
बढ़ाए छपा फिरिके शशि पश्चिम सके चलिन॥

१४

नव निकुञ्ज महल रस दोज री राजत रङ्गभीने।
कुसुमित सेज भोर उठि बैठे आलस रस अंशनि
भुज दीने॥
गौर श्याम तन नील पीत पट सम्भ्रम पलटि वसन
तन लोने।
प्रिय विहारी प्रियासङ्ग सुरतिरङ्ग शुभग सिन्धु
ललितादिक दृग मीने॥

१५

बनो प्रिय राधा माधव केलि।
प्रात समय सखि नवनिकुञ्जमें बढ़ी परम रस वेलि॥
प्रियकी मुरली अपने अधर धरि लीन्हीं तान नवेलि।
मोहन रीझि विवश ह्वै दीन्हीं हीराहार हमेलि॥
निरखि कमल मुख कहत भले जू भले सकल कला
प्रवेलि।

ऐसी कबहुं न मोपै बाजी कहें कण्ठ भुजा उर मेलि ॥
ललिता निरखत ठाढ़ी ओट ह्वै रह्यो सुख
सागर झेलि।
भाग सुहाग कहत नहि आवै बढ्यो मन
आनन्द रेलि ॥

१८

अति ही कठिन कुच उच्च दोउ तुङ्गनिसे गाढ़े
उर लगायकै मेटी काम हूक।
खेलत में लर टूटी उर पर पीक परी उपमा
वरणनको भई मति मूक ॥
अधरामृत रस ऊपरतें अचवायो अङ्ग अङ्ग सुख
पायो गयो दुख दूक।
छीतस्वामी गिरिधारी राजा लूट्यो मन्मथ
वृन्दावन कुञ्जनमें मैं हूं सुनी कूक ॥

१९

आज किशोर कुंवर कान्ह देखि री देखि आव
गावत भावत नयनन चैन पावत सकल अङ्ग अङ्ग।
मुरली कुणित शुभग वदन मदन मोचन लोल
लोचन मधुप टोल मधुर बोल गुञ्जित सङ्ग सङ्ग ॥
चरण नूपुर कटि सुमेखला रतिरण रस भरे री
श्याम कनक कपिस अम्बर समर करत मान भङ्ग।
छीतस्वामी गिरिधरण हरण तनके मनके सन्ताप
मिटी री मिटी री विरह-वेदना प्रीति सों जोति अनङ्ग ॥

२०

यमुना-पुलिन शुभग वृन्दावन नवल लाल
गोवर्द्धनधारी।
नवल निकुञ्ज नवल कुसुमित दल नवल नवल
वृषभानु दुलारी ॥
नवल हास नव नव छवि क्रीड़त नवल विलास
करत सुखकारी।
नवल श्रीविट्ठलनाथ कृपाबल नन्ददास निरखत
बलिहारी ॥

२१

भोर ही छवि सों प्रवीण वीण बजावत ठाढ़ी।
ललित राग अनुराग ललित गति ललिता
ललित सुण आढ़ी
लाड़िली लाल महलमें पौढ़े तिन्हे जगाय रिझायवेको
परम प्रीति गाढ़ी ॥

२२

केलि किये हरि नायकके सङ्ग भोर ही मज्जनको
उठि धाई।
नीलकी चोलीमें देह दीपे यमुना-जलमें जैसे
चन्द्रकी छाई ॥
ले डुबकी अलकें बिथुरीं जलते छिटकीं मुख ऊपर
आई।
दोउ कर बार सुधारि लिये निकस्यो शशि फोरि
पहार की ताई ॥

२३

तें निशा लाल सों रति मानी।
पग डगमग मग न परत सूधे मैं तब ही जानी
शिथिल वसन कवरी केश राजत आनन सुदेश
बोलत कछु लटपटात वानी ॥
यह छवि मो मन माई मिटी है चपलताई पीक
लीक अधरन लपटानी।
मदन-मोहन नव किशोर रिझये श्यामा प्यारी
धन्य धन्य धन्य नव निकुञ्जरानी ॥

२४

प्रात समय नव निकुञ्जके द्वारे ललिता ललित
बजाई वीना।
पौढ़े सुनत श्याम श्रीश्यामा दम्पती चतुर नवीन नवीना ॥
अति अनुराग सुहाग लाड़िली कोटि कलान
प्रवीण प्रवीना।
विहारीदास बलि बलि जोरी पर तन-मन-धन
न्यौछावर कीना ॥

२५

जागत ही जागत गई निशा वीति हो देखि
सखी सुख दैन।

अपनी अपनी सुखसे हर्षत कर्षत सखी
भये मग मैन ॥
बिथुरी अलक पलक आलस बलित नयन वैन।
चारो पहर विहरत यों सखी भोर भयो
विहारनिदासके हास टरैं उर ऐन ॥

२६

लाड़तो लाड़िली नव रङ्ग अपने लाल विहारीके सङ्ग।
अलसानि मैं जानि प्राण-प्रिया-पति विपरीत रति सुख
यों दे अङ्ग अङ्ग ॥
विगलित कच-कुसुम शिथिल पाग मरगजो मङ्ग।
विहारनिदासिकी स्वामिनी श्याम हि देख
सखी सुख प्रेमकी परनि ढरनि रङ्ग अनङ्ग ॥

२७

रसिक लालके सङ्ग सङ्ग जागी री सुख चैन
सौं रैन सगरी।
शोभित शीर्ष कुसुम शिथिल अलकैं तामैं कहूं
कहूं री मांग मोती बगरी ॥
अरुण नयन सलोल मोहन मधुर बोल रची है
पीक कपोल प्रेम शुभगरी।
सुवश किये विहारीदास वलि वलि प्यारी सुरति
निपुण नित सोहाग भाग-अनुराग अगरी ॥

२८

भोर हीं कर सौं कर जोरैं अङ्ग अङ्ग मोरैं आलस
लेत जंभाई।
प्रियके अङ्क निशङ्क सबै निशा हुलसि विलसि
आनन्द में उनींदिये उठि आई ॥
अङ्गराग-अनुराग रह्यो फबि छवि वरणी नहि जाई।
अति सुख भरि भरि उमग विहारनिदास सौं
कहति ऐसे हों लाल लड़ाई ॥

२९

धन्य सुहाग अनुराग तेरो तूं सर्वोपरि राधे जू रानी।
नख-शिख अङ्ग अङ्ग बानो प्रियतम प्राण समानी
रसिक किशोर सुरति-सुखदानी ॥

को जाने वरणे बपुरो कबि अद्भुत छवि नहीं
जात बखानी।
विहारी प्रियसों रति मानी मैं जानी सयानी
तोहि सब निशा सुखसों सिरानी ॥

३०

सुख पट ओट न करो पियारी।
काहेको झूठे ही भुक भुकति रसिकनी
जहत हैं रसिक निहारी ॥
तू जो हतो हठ करति चतुर प्रिया रतिके चिह्न
देखिए निहारी।
नवलकिशोरैं मिली किशोरी मान तजि
विहारनिदास वलिहारी ॥

५४

करो कलेऊ बलराम-कृष्ण तुम कहति यशोदा मैया।
पाछे वत्स-ग्वाल सङ्ग लेके चलहु चरावन गैया ॥
पायस सिता घृत सुरभिन को हेत करि भोजन कीजे।
जग-जीवन व्रजराज लाड़िले जननी को सुख दीजे ॥
शीर्ष मुकुट कटि काछि काछिनी पीत बसन तन धारो।
लेहु लकुट मुरली कर मोहन मन्मथ दर्प निवारो ॥
मृग-मद-तिलक श्रवण कुण्डल मणि कौस्तुभ
कण्ठ बनावो।
परमानन्ददास को ठाकुर व्रजजन मोद बढ़ावो ॥

५५

प्रात समय उठि यशोमति-जननी गिरिधर-सुत को
उबटि न्हवावति।
करि शृङ्गार वसन-भूषण सजि फूलन रचि रचि
पाग बनावति ॥
छूटे बन्द वागो अति शोभित बिच बिच चोवा
अरगजा लावति।
सूथन लाल फुन्दना शोभित आजुको छवि
कछु कहत न आवति ॥
विविध कुसुमकी माला उर धरि श्रीकर मुरली
वेंत गहावति।
ले दर्पण देखे श्रीमुख को गोविन्द प्रभु चरणन
शिर नावति ॥

५६

शुभग शृङ्गार निरखि मोहन को ले दर्पण कर
कर पियहि दिखावे।
आपुन नेकु निहारिये वलि जाउं आजुको छवि
कछु कहत न आवे॥
भूषण-वसन रहे ठांय ठांय फबि अङ्ग-अङ्ग
अद्भुत चित हि चोरावे।
रोम-रोम पुलकित तन सुन्दर फूलन रचि रुचि
पाग बनावे॥
अञ्चल फेरि करत न्योछावर तन-मन अति
अभिलाष बढ़ावे।
चतुर्भुज प्रभु-गिरिधर को रूप-सुधा पिवत नयन-
पुट तृप्ति न पावे॥

५७

आजु को शृङ्गार शुभग सांवरे गोपाल को कहत
न बनि आवे देखे हो बनि आवे।
भूषण सब भांति-भांति अङ्ग-अङ्ग अद्भुत कान्ति
लटपटी सुदेश पाग चित्तको चोरावे॥
मकर-कुण्डल तिलक भाल कस्तूरी अति रसाल
चितवनि लोचन विशाल कोटि काम लजावे।
कण्ठ श्रीवनमाल फेंटा कटि छोरनको चौरा
त्रिभुवन त्रियको धीरज मन न आवे॥
मेरे सङ्ग चल निहार कुञ्ज महल बैठे हरि
हितको चित बात कहुं जो तेरे जिय भावे।
चतुर्भुज प्रभु-गिरिवर-धर कोटि मदनमूर्ति बड़
भागिनी ताहि गिनो जो जात हो लपटावे॥

५८

माई री आजु और का हो और दिन प्रति और हो
और देखिये रसिक गिरिराज-धरण।
नित प्रति नव छवि वर्णे सो कौन कवि गित हो
शृङ्गार बागे वरण वरण॥
श्याम नयन अङ्ग-अङ्ग सोहत कोटि अनङ्ग
उपजी शोभा-तरङ्ग विश्वके मनहरण।
चतुर्भुज प्रभु-गिरिधर को रूप-सुधा नयन-पुट पान
कीजे जीजे रहिये सदा शरण॥

५९

मरगजी उर कुन्दमाल लोचन अलसात लाल
डगमगात चरण धरणी धरत रैन जागे।
शीर्ष ते खसि मोर-मुकुट भृकुटीके तट आयो
निकट शिथिल चपल चन्द्रिका सुबांधि पाट तागे॥
अतसी-कुसुम-तन सुभांति कहुं-कहुं कुङ्कुमको कान्ति
मदन नृपति पीक छाप युग कपोल लागे।
छीतस्वामी गिरिवर-धर सौरभ-रस-मग्न मधुप
सङ्गम गुण-गान करत फिरत आगे आगे॥

६०

कमल-नयन श्यामसुन्दर निशाके जागे हो
आलस भरे।
कर-नख उर राजत मानो अर्ध शशि धरे॥
लटपटी शिर पाग बनी खसत वदन तिलक टरे।
मरगजी उर कुसुम-माल भूषण अङ्ग-अङ्ग परे॥
सुरति-रङ्ग उमगि रहे रोम पुलकि होत खरे।
परमानन्द रसिक राय जाहीके भाग्य ताही के ढरे॥

६१

सांवरे भले हो रति-नागर।
अबकी दुराये क्यों दुरत हो प्रीति जु भई उजागर॥
अधर कज्जल नयन रगमगे रचो कपोलनि पीक।
उर नख-रेखा प्रकट देखियत है परी मदनकी लीक॥
पलटि परे पट तिलक गयो मिटि जहां तहां
कङ्कण गाड़े।
परमानन्दस्वामी मधुकर गति भली आपनी चाड़े॥

६२

आलस उनीदे नयन घूमत आवत मूदे अधिक
नीके लागत अरुण वरन।
जागे हौं सुन्दर श्याम रजनीके चारो याम
नेक हु न पाए मानो पलक परन॥
अधरन रङ्गरेखा और हो चित्र विशेष शिथिल
अङ्ग डगमगत चरन।

चतुर्भुज प्रभु कहां वसत पलटि आए सांचो कहो
गिरिराज-धरन ॥

६३

सांझ जु आवन कहि गए लाल भोर भये देखे ।
गणत नक्षत्र नयन अकुलाने चारि प्रहर मानो
युग विशेखे ॥
कीन्हो भलो जु चिह्न मिटाये अधरनि रङ्ग अरु
उर नख-रेखे ।
कुम्भनदास प्रभु रसिक शिरोमणि गिरिधर
तुम्हरे कैसे लेखे ॥

६४

इतनी बार तुम कहां रहे ।
सगरी रैन पथ चाहत चाहत नयन दहे ॥
कुम्भनदास प्रभु भए ताहीके वश जिन हौं गहे ।
गिरिधर प्रिय भले बोल निवाहे सन्ध्या जु कहे ॥

६५

निशा के उनीदे मोहन नयन रसमसे ।
काहे को लजात कहहुं धो कहा लालन कहां बसे ॥
डगत चलत आलस जंभात हो वदन रेखा
देखियत वसन खसे ।
कुम्भनदास प्रभु गिरिधर तुम भुजबन्धन करि
उर हि लाय कसे ॥

६६

अरुण उनीदे आए हो रसमसे निशाके चिह्न
कहां दुराए ।
नख पद प्राण प्यारीके मोहन कान्ति न छिपत
छिपाए ॥
कुङ्कुम रञ्जित उर वनमाला विलुलित सुख
मधुर जंभाए ।
गिरिधर नव केलि कला रस प्रमुदित कृष्णदास
अलि गाए ॥

विभास—चर्चरी

आज सगरी निशा कहां जागे लाल कहो जु
सांचो शुभग सांवरे माधो ।
घोष मन्थन शब्द प्राणपति गृह गृह रह्यो मोहन
स्वर प्रकट भयो आधो ॥
कमल विकसित भए चक्रवाकी हंसी सुमुखि
पुलकित मुदित निज पति आराधो ।
विश्वमोहन वदन निरखि नभ चन्द्रमा सगण
लज्जित भयो प्रेम गुण बाधो ॥
ललित सुन्दर राग चर्चरी ताल धरि मधुप गावत
सुयश पिकनिकर साधो ।
कहे कृष्णदास गोवर्द्धन उद्धरण धीर प्रिय सुन्दरी
कृपण धन लाधो ॥

२

भली कीन्हीं लाल गिरिधर भोर आए बोल सांचे ।
युवति वल्लभ विरध कहियत मोहो सों सब
सुविध बांचे ॥
ताही पै जु सिधारिये पिय जाहीके तुम सुरङ्ग राचे ।
यहां लौं केहिं सिख पठये मानहु मन्त्री मते काचे ॥
अध सूचत श्वास स्थिर नहीं निशा प्रिया
रति वन्ध पाचे ।
सुनहि कि न कृष्णदास नागरी ज्यों नचाए
त्यों हौं नाचे ॥

३

अधिक नीके लागत रगमगी लाल आधी आधी
बतियां कहत मेरे प्यारे ।
खेलत प्राण प्यारी सों मोहन निशा जागी नयन
रतनारे ॥
मरगज्यो मृगमद तिलक माथे पर कञ्चुक
जंभात अधर मसि कारे ।
श्रम जल कण कपोल मण्डलवर सिन्धुर रङ्गराते
भौंह अनियारे ॥
आभरण वसन पलटि पहिरे अङ्ग नूपुर कुणित
चरण सोहें भारे ।
सुन कृष्णदास रसिक गिरिधर प्रिय पाए हों
नेक करहुं न न्यारे ॥

४

आवत बने सुन्दर नन्दनन्दन लटपटी पाग
डगमगति चाल।
अरुण कपोल अधर मसि-कारे चपल नयन
असरौंधे लाल॥
रति जय लेख लिखि उर पद नख जीत्यौ
मदनगोपाल वत् अलिमाल।
तजि न सकत सौरभ-रस-लम्पट कुच कुङ्कुम
रञ्जित वनमाल॥
पलटि परे पट कहहु कहां ते शिथिल ग्रन्थि-
कटि किङ्किणि-जाल।
छूटे बन्द खेद-कणिका तन काहे को लजात विरह-
रिपुसाल॥
कृष्णदास प्रभु कितव दुरत हो मृगमद तिलक
मरगजो है माल।
मोहनलाल गोवर्द्धनधारी प्रकट भयो प्रिय सुयश
विशाल॥

५

अरुण-उदय सुरति-केलि-रत लाल नीको बनो
नव निकुञ्जतें आवनो।
बनमाल रसमत्त सङ्ग अलिमण्डलो ता सों
मिले श्रीमुखहिं सरस गावनो॥
चरण नूपुर दीसि कटि क्षुद्र घण्टिका मधुर
मुखरित नील पट पर सुहावनो।
रगमगो ओढनो प्राण प्यारीकी सुरति-अभिराम
तन देह विसरावनो॥
काम-जय-पत्र रस उरसि कामिनी लिख्यो नख
अङ्क पंक्ति रसिकन हृदय भावनो।
शिथिल अलकावली गलित वरहापीड़ अरुण
लोचन भौंह मन्मथ नचावनो॥
श्रम-स्वेद-कण गात लाल गिरिधरणके निशा-कथा
सुमिरि मन रुचिर मुसकावनो।
मदन-रस रहसि गायक कृष्णदास कहां आपने
पोत पट दिये पहरावनो॥

६

काहे को दुरावत अपुनी केलि जानी हो हरि
प्रियतम नागर।
मोहि दिखावहु बांचि सुनावहु प्यारी करज
अङ्क तव उर कागर॥
निशाको बातें सबै प्रकट भई कत लजात हो
कौतुक सागर।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर चञ्चल युवति-तापहर
सुयश उजागर॥

७

सन्ध्या बदे बोल मनमोहन प्रात आय कीन्हें
सब सांच।
तनमन उहैं अभासत प्रियतम काहेको लाल
करत हो छ-पांच॥
इहा तो व्यथा सो जाने गिरिधर जाको लगी
विरहकी आंच।
सुन कृष्णदास जाऊं बलि ताको जिन लीन्हें
सर्वस दे जांच॥

८

बने हो रसमसे आए प्रात।
आलस भरे वदनकी शोभा निरखि लजित जलजात॥
सन्ध्या बदे बोल किये सांचे काहे को लाल लजात।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर चितवत युवति-मृगी तकि घात॥

९

बने हो रसमसे आए प्रात।
प्यारी नख-पद-रत्नावलि रस-रञ्जित नव रङ्ग गात॥
नखरेखा मोहनि युवतिन मन प्रमुदित पुलक जंभात।
कृष्णदास गिरिधर चित चञ्चल ज्यों तरवरको पात॥

१०

बलि बलि जाऊं रसिक गिरिधर प्रिय नीके आए
तमचरके बोले।
इतो सङ्कोच कौन को मानत अधिक लजाय
रहे बिनु बोले॥

सन्धरा बदे बोल सांच किये अनत बसे मैं जान्यों
करि हैं यहां रहि जोले ।
कृष्णदास प्रभु ऐसो कौन तों सों कहि सके
त्रिभङ्ग भौंह त्रिभुवन तक तोले ॥

११

कौनके भोराए भोर आए हो भवन मेरे ऊंची
दृष्टि क्यों न करो कौनतें लजाने हो ।
जाहीके भवन भावे ताहीके धारीये पायं काहे
ऐसी चाड़ परो कौन गहराने हो ॥
भोरी भोरी बतियन भोरवन लागे मोहि श्रीगिरिधर
तुम अति ही सयाने हो ।
कृष्णदास प्रभु छाड़ो अटपटो रहो हो लाल आज
हों तुम्हें देखि नीके पहिंचाने हो ॥

१२

मदनमोहन प्रिय आए प्रात ।
चार याम जागी प्यारो सङ्ग अरुण नयन आलस
जंभात ॥
बिन गुण मोतीमाल विराजत अञ्जन अधर
पीक लगी गात ।
व्रजपति प्रिय तुम्हें ऐसी न बुझिये हम सों
फिरि तुम हंसि मुसकात ॥

१३

मदनमोहन प्रिय जागे रैन ।
आलस वश जंभात शिथिल अङ्ग अरुण तिहारे नयन ॥
उपटे उरहार प्रकट देखियत प्यारी कण्ठ लागि
दियो सुख चैन ।
व्रजपति प्रियकी चालचलनि पर कोटिक वारों मैन ॥

१४

सुन्दर लाल गोवर्द्धनधारी कहां तुम रैन बसे
मेरे लाल ।
आलस नयन बैन चल बोलत छूटे बन्द
डगमगती चाल ॥
सारङ्ग अधर रुचिर वय नखक्षत कुच प्रसङ्ग
उर विलुलित माल ।
करि रथहीन मीनपति जीत्यो चढ़ो धनुष
मानो भौंह विशाल ॥
नहीं सत्भाव कहति प्रियतम सों फिरत हो
पात पात डाल डाल ।
दासमुरारी प्रीति प्रौढ़नि सों देखति प्रकट
तुम्हारे हाल ॥

१५

आए हो उठि भोर रसमसे नन्दललारे ।
अरुण नयन बैन अटपटे भूषण देखियत अधरन
रङ्ग भारे ॥
कितव विवाद करत हो गुसांई तहीं जाहु जाके
अति प्राण-प्यारे ।
गोविन्द प्रभु भले जु भले जानि पाए जैसे तन
श्याम तैसे मन कारे ॥

१६

निशाके उनींदे अति छवि लागत भरे प्यारी रङ्ग ।
आलस वलित ललित लोचन युग भरि भरि
आवत कुञ्ज केलि सुधिके प्रेम उमङ्ग ॥
शुभग उरसि पर बिन गुण मोतीमाल कुङ्कुम
रचित उपटे हैं कुच उतङ्ग ।
गोविन्द प्रभु कत करहु दुराव ए सब कहत
तुम्हारे अङ्ग अङ्ग ॥

१७

प्रिय बिनु जागत रैन गई ।
अवधि बदि गए न आए बड़ो बैर भई ॥
कछू कहत करत कछू कौन है सीख दई ।
सांच नहीं एको अङ्ग कहा रीति लई ॥
कैसे कीजे विश्वास भए हो विषई ।
रसिक प्रियतम रावरी है क्षण क्षण गति नई ॥

१८

ढीले ढीले पग धरत ढीली पाग ढरकि रही
ढीले से ढहेसे ऐसे कौन पे ढहे हो ।
गाढ़े जु पिय हियके पयि ऐसो गाढ़ो कौन त्रिय
गाढ़े गाढ़े भुजन सों गाढ़े कर गहे हो ॥

लाल लाल लोचन उनींदे लागि लागि जात
सांची कहो पिय यौं तो लाल लई हो।
नन्ददास प्रभु सांचो क्यौं न बोलो भयो प्रात
कहो बात प्यारे तुम रात कहां रहे हो॥

१९

पाग खसी शिर पेंच लटपटो घूमत नयन उनींदे
उजागरि।
पीक कपोल अधर मसि दाग, कङ्कण पीठि
गड़्यो अति सुन्दरि॥
जात उतै इत पांव चले क्यों बोलत हो तुतरात
लिये टरि।
प्रात समय उठि कहांते सूर प्रभु आवत हो
अनुराग भरे हरि॥

२०

चन्द्रावलि-धाम श्याम भोर भये आये।
अति रिस करि रही वाम रैन जागि चारि याम
देखे जो द्वार कान्ह ठाड़े सुखदाये॥
मन्दिर तें रही निहारि मन हीं मन देति गारि
ऐसे कपटी कठोर आये निशा बीते।
रिस नहीं सकी संभारि बैठी चढ़ि द्वार वारि
ठाढ़े गिरिधारी निरखि छवि नख शिख हीते॥
बिन गुण बनी हृदय माल ता बिच नख-च्छत रसाल
लोचन दोउ दर्शि लाल कैसी रुचि बाढ़ी।
जावक रङ्ग लग्यो भाल चन्दन भुज पर विशाल
पीक पलक अधर झलक वाम प्रीति गाढ़ी॥
क्यों आये कौन काज नाना करि अङ्ग साज
उलटे भूषण शृङ्गार निरखत हो जाने।
ताहीके जाहु श्याम जाके निशा बसे धाम
मेरे घर कहा काम सूरदास गाने॥

२१

मैं जानी पिय बात तुम्हारी।
भोर भये मेरे गृह आये ऐसे भोरे मारी॥
ह्यां आये मुख परसन मेरो हृदय टरत नहिं प्यारी।
कपट चतुरई दूरि करो जू अपयश लेत उतारी॥
कहा सांच मैं खोवत करतें झूठे कहा फबावत।
सूर श्याम नागर नागरि वह हम तुम्हरे मन आवत॥

२२

रैन जागी रति-रस पागी अनुरागी नव त्रिय सङ्ग।
मो सनमुख कत आये हो दहनि पिय रसमसे नयन
अटपटात बैननि तहङ जाहु जाके रङ्ग॥
बिन गुण बनो माल पीक कपोलनि लाल जावक-
तिलक कीन्हे रस वश अङ्ग।
सूरदास प्रभु तुम रजनी विहाय आये प्रात भये
मेरे जीति अनङ्ग॥

२३

माई आजु लाल लटपटात आये अनुरागी।
शोभित भूषण अङ्ग अङ्ग आलस भरे रैन उनींदे जागी॥
लटपटो शिर पेंच पाग छूटे बन्दनि बागी।
सूर श्याम रसिक राय रस-वश कीन्हे सुभाव
जागी जहां सोई त्रिया बड़ भागी॥

२४

मङ्गलकरण हरण मन आरति वारति
मङ्गल आरती बाला।
रजनी-रस पागी अनुरागी जागी प्रात नात अलसात
शिथिल वसन अरु मरगजी माला॥
बैठे कुञ्ज महल सिंहासन श्रीवृषभानु कुंवरि
नन्दलाला।
ब्रजजन मुदित ओट हो निरखत निमिष न लागत
नव निकुञ्ज-लता-द्रुम-जाला॥

२५

रतन-जटित कनक थाल मध्य सोहैं दीपमाल
अगरादिक चन्दन अति बहु सुगन्ध माई।
घन-नन-घन घण्टा घोर झन-नन झालर टकोर
तनन ततत थेइ थेइ करति है एकदाई॥
तन-नन-नन तान मान रागरङ्ग स्वर बंधान
गोपीजन गावैं गीत मङ्गल बधाई।

चतुर्भुज गिरिधरण लाल आरती बनी रसाल
वारत तन मन प्राण यशोदा नन्दराई ॥

२६

मङ्गल-आरती कीजे भोर।
मङ्गल जन्म करण गुण मङ्गल मङ्गल यशोदा
माखनचोर ॥
मङ्गल मुकुट वेणु वनमाला मङ्गल-रूप ललन
मन मोर।
जन भगवान् जगत्मय मङ्गल मङ्गल राधा
युगल किशोर ॥

२७

श्रीगोपाल जूकी आरती करतु हैं।
घण्टा ताल पखावज बाजि पञ्चमुखी बाती बरतु हैं ॥
शिव विरञ्चि नारद इन्द्रादिक सब मिलि गावन
वीण बजतु हैं।
श्याम प्रभुको देखत सब तन-मन-धन
वारि वारि डरतु हैं ॥

२८

श्यामसुन्दर प्राण प्यारे चण चण जिनि होहु न्यारे।
निककी ओट मीन ज्यों तलफत त्यों तलफत
नयननके तारे ॥
मृदु मुसक्यानि वङ्क अवलोकनि डगमग चलनि
सहजमें सुढारे।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधर वामक पर कोटिक
मन्मथ वारे ॥

२९

वरणत तज न बने सुन सजनी रगमगो वेष बन्यो
गोपालको।
रसना जो होहि सदा कोटिक रूप गोवर्द्धनधारी
लालको ॥
श्याम धाम कमनीय वरण सखी मानो तरुण घन
तरु तमालको।
युवती-लता गात अरुझानी पान करत मधु
मधुप मालको ॥
नख शिख मदन कोटि लावण छवि भूषण वसन
नयन विशालको।
कृष्णदास प्रभु सुरति सुधानिधि ताप हरण तिय
विरह ज्वालको ॥

३०

श्यामा श्याम सेज उठि बैठे अरस परस्पर
करत विहार।
उन उनको पहरो मोतिनकी माला उन उनको
पहिरी नौसरको हार ॥
लटपटी पेंच संवारति प्यारी अलकें संवारत
नन्दकुमार।
सुरदास प्रभु नागरि नागर विपरीत भूषण करत
शृङ्गार ॥

३१

चिरई चुहचुहानी चन्द्रकी ज्योति परानी
रजनी विहानी प्राची पियरी प्रवानको।
तारका दुरानी तम घटो तमचर बोले श्रवण
भनक परी राग ललितके तानको ॥
भृङ्ग मिले भार्या बिछुरी जोरी कोक मिले
उतरी प्रतिञ्चा अब कामके कमानको।
अथवत चाये गृह बहुरि उदय भानु उठो प्राणनाथ
महाजनन मणि जानको ॥
व्रज घर घर यही करत चवाव लोग बार बार
कहनि करनि डरनि वरनि धरनि पग आनको।
सूरदास प्रभु नन्द सुवन सिधारो धाम सुनत
उठे छवि कृपाल कृपाके निधानको ॥

३२

काहे न सेइये गोकुलनायक।
भक्तनको ठाकुर भगवान् सकल सुखनिको दायक ॥
ब्रह्मा महादेव इन्द्रादिक जाके आज्ञाकारी।
सुरतरु कामधेनु चिन्तामणि वरुण कुबेर भाण्डारी॥
चौरी नृपति कह्यो सब मानें सन्मुख विनती कीजे।
तुम प्रभु अन्तर्यामी व्यापक द्वितिय साखि क्यों दीजे॥

जन्म कर्म अवतार रूप गुण नारदादि गुण गावे ।
परमानन्ददास श्रीपति यश अधम भले बिसरावे ॥

३३

बलिहारी पद-कमलकी जिन मह शत लक्षण ।
ध्वज वज्राङ्कुश यव रेखा ध्यान करत विचक्षण ॥
ते चिन्तत भय-ताप हरत शीतल सुखदायक ।
नख मणिकी चन्द्रिका ज्योति उज्वल व्रज-नायक ॥
वृन्दावन गोसङ्ग फिरत भूतल क्षत पावन ।
गङ्गादिक तीर्थ प्रसाद भक्तन मन भावन ॥
भक्तधाम कमला निवास माया गुण वादक ।
परमानन्द ते धन्य जन्म जे सगुण अराधक ॥

३४

माई हौं आनन्द गुण गाऊं ।
गोकुलकी चिन्तामणि माधव जो मांगों सो पाऊं ॥
जबते कमल-नयन व्रज आए सकल सम्पदा बाढ़ी ।
नन्दरायके द्वारे देखो अष्ट महासिद्धि ठाढ़ी ॥
फूल्यो फल्यो सकल वृन्दावन कामधेनु दुहि लीजे ।
मांगे मेह इन्द्र वर्षावे कृष्ण कृपा सुख जीजे ॥
कहति यशोदा सखियन आगे हरि उत्कर्ष जनावे ।
परमानन्ददास को ठाकुर मुरली मनोहर भावे ॥

३५

बिलगु जिन मनो री कोउ हरिको ।
भोर हो आवत नाच नचावत खात दह्यो घर घरको ॥
प्यारो प्राण दीजे जो पइये नागर नन्द-महरको ।
कुम्भनदास प्रभु गोवर्द्धनधर रसिक राधिका वरको ॥

३६

सखी तेरे चपल नयन अरु बड़े बड़े तारे ।
हरि मुख निरखि न मात पटनिमें निशदिन
रहत उघारे ॥
जो आगे ते पन्थ रोकते न श्रवण तो ना जानो
कहां चले जाते भपटारे ।
कुम्भनदास प्रभु गिरिधरण रसिक ए कृपारस
सींचे अति बाढ़े भारे ॥

३७

तेरे मुखको निकाई मोपे वरणि न जाई ।
अङ्ग अङ्ग छवि छाई नयनन लागी सुहाई
ऐसी रचि पचि विधि विधिके बनाई ॥
भौंहनकी कुटिलाई नयनन अरुणताई नासिका
सुमन बनी अधर सुधाई ।
धोंधो प्रभुके मन ऐसी भाई कहत न कछु बनि आई
और सौंहेंको सौंहे तेरिये दोहाई ॥

३८

कोऊ मैया बेर बेचन आई ।
सुनत हि टेर नन्दराव वरमें भीतर भवन बुलाई ॥
सूखत धान परे आंगनमें कर अञ्जुली बनाई ।
ठुमक ठुमक चलते अपने रंग गोपीजन बलि जाई ॥
लिये उठाय रिझाय कर गोपी मुख चूमत न अघाई ।
परमानन्द स्वामी आनन्दे बहुत बेर जब पाई ॥

३९

नन्दकिशोर पै री करन बोहनी न पाऊं ।
गोरसके मिस रस हो ढूंढत मोहत मोहन मीठी
तानन कैसेके दधि छिपाऊं ॥
गोरस मेरो घर हि बिके है काहेको वृन्दावन जाऊं ।
आसकरण प्रभु मोहन नागर यशोमती जाय सुनाऊं ॥

४०

भोर हो दान मांगत मोसों गिरिधर ।
प्रातहि उठिके चली जो नगर को बेचन दधि
मटुकी धरि शिर पर ॥
जो तुम हमसों रारि करहुगे तो हम सब मिलि
उलटि जाहिं घर ।
सांची कहो धौं बात ब्रजपति प्रभु तुम कौन टेव
परी तिहारी मतहर ॥

४१

हौं तकि लागि रही री माई ।
जब ग्रहते दधि लै निकसे तब मैं बांह गही री माई ॥
हंसि दीन्हों मेरो मुख चितवो मीठी सी बात
कही री माई ।

ठगि जु रही देटक सो लागो परि गई प्रीति
सही री माई ॥
बैठो नेकु जाउं वहिहारो लाजं दौर दही री माई।
परमानन्द सयानी ग्वालिन सर्वस्व दे निवही री माई॥

४२

सुन्दर सांवरे मुरली अधर धरी।
सुनि सिद्ध समाधि टरी ॥
सुनि थके व्योम विमान।
सुरवधू चित्र समान॥
ग्रह नखत तजत न रास।
वाहन बंधे धुनि पास॥
सुनि आनन्द उमगि भरे।
चल थके अचल टरे॥
चल अचल मति विपरीत।
सुनि वेणु कल पद गीत॥
भरना भरे पाषान।
कन्दर्प मोहे गान॥
सुनि खग मृग मौन धरी।
फल तिन दुको सुधि विसरी॥
सुनि धेनु मृग थकि रहे।
तृण दन्त हू नहि गहे॥
वछरा न पीवे चीर।
पञ्ची मनो सुनि धीर॥
द्रुमवेली चपल भई।
नव अङ्कुर प्रकट नई॥
तहां विटप चञ्चल पात।
हरि निकट को अकुलात॥
अङ्कुरित पुलकित गात।
अनुराग नयन चुचात॥
सुनि चञ्चल पवन थक्यो।
सरिता जल चलि न सक्यो॥
सुनि थक्यो मन्द समीर।
उलट्यो जु यमुना नीर॥
सुनि ध्वनि चली व्रजनारि।
सुत देह गेह विसारि॥
मनमोहन रूप धरो।
तव काम को गर्व हरो॥
नव नील तन घनश्याम।
नव पीत पट अभिराम॥
नव मुकट नव वनदाम।
ए लावण्य कोटिक काम॥
मन मोह्यो मदनगोपाल।
तन श्यामल नयन विशाल॥
श्रीमदनमोहन लाल।
संग नागरी नव बाल॥
नव कुञ्ज यमुना कूल।
देखत सूरदासहिं फूल॥

४३

चलोरी मुरली सुनिये कान्ह वजाई यमुना तीर।
तजि लोक लाज कुलकी कानि गुरुजनकी भीर॥
यमुना जल थकित भयो वछरा न पीवे चीर।
सुर विमान थकित भए थकित कोकिल कीर॥
देहकी सुधि विसरि गई विसरा तनको चीर।
मात तात विसरि गए विसरो बालक वीर॥
मुरली धुनि मधुर बाजे कैसेके धरौं धीर।
सूरदास मदनमोहन जानत हो परपीर॥

४४

गोकुल गांव रसीलो पिय को।
मोहन देखि मिटत दुख जिय को॥
मोर मुकुट कुण्डल वनमाला।
या छवि सौं ठाढ़े नन्दलाला॥
कर मुरली पीताम्बर सोहे।
देखत रतिपति को मनमोहे॥

चाल

देखत रतिपतिको मन मोहे चकितसो डोलत फिरै।
और कछु न सुहाय तनको बैठि उठत गिरत फिरै॥

मोहि मदन बाण समान लागे पीर नेकु न आवहीं।
और कछू उपाय नाहीं श्याम वैद्य बुलावहीं॥
मैंतो तजी लाज गुरुजनकी।
अब मोहि सुधि न परे या तनकी॥
लोक कहे इह भई मति बौरी।
सुत-पति छाड़ि फिरत वन दौरी॥

चाल

छाड़ि सुधि न संभार तनकी कृष्ण छवि हिरदे बसी।
मदनमोहन देखि भावे विहँसि कुञ्जन में धसी॥
कुञ्जधाम किशोर ठाढ़े केसर खौर बनाइके।
चन्द्रिका पर वारि डारौं वलि गई या भाइके॥
भार परो इह घर पर वास।
नित उठि कौन करे यह सास॥
इत नयन बांधो प्रण भारो।
निरखत रहत सदा गिरिधारो॥

चाल

निरखिबो करे श्यामसुन्दर सहस कनक प्रकासरी।
कालिन्दीके तीर ठाढ़ो श्रवण सुनिये बांसरी॥
मदन मूरति श्याम देखत मरी मनकी आसरी।
सूर हरिको सुयश गावत सदा चरण निवासरी॥

४५

वृन्दावन नव निकुञ्ज ठाढ़े उठि भोर।
बांह जोरि वदन मोरि हंसत सुरत रतिकी करि
कछु सकुचत पुनि लजात नयनन को कोर॥
करत कबहुं वेणुनाद अधर प्याइ सुधास्वाद
पक्षीगण प्रमुदित मन बोलत चहुं ओर।
रसिक प्रियतम छवि निहारि उदयो जनु घन विचारि
बार बार उमगि उमगि नाचत हैं मोर॥

४६

आजु प्रभात लता मन्दिरमें सुख वर्षत अति
निरखि युगलवर।
गौर श्याम अभिराम रस भरे लटकि लटकि
पग धरत अवनिपर॥
कुच कुङ्कुम रञ्जित मालावलि सुरतिनाथ
श्रीश्याम धामधर।
प्रिया प्रेमके अङ्क अलङ्कृत चित्रित चतुर शिरोमणि
निज कर॥
दम्पति अति अनुराग मुदित कल गान करत
मन हरत परस्पर।
हित हरिवंश प्रशंस परायण गायन अलि
स्वर देत सुघर तर॥

४७

जोई जोई प्यारो करे सोई सोई मोहि भावे
भावे मोहि जोई जोई सोई सोई करे प्यारो।
मोको ता भावतो ठौर प्यारेके नयनन में
प्यारो भयो चाहे मेरे नयनन को तारो॥
मेरे तन मन प्राण हुते प्रियतम प्रिय
अपने कोटिक प्राण प्रीतम मोसों हारो।
हित हरिवंश हंस हंसनी श्यामल गौर
कहो कौन करे जलतरङ्गनि न्यारो॥

४८

प्रात समय दोउ रस लम्पट सुरति युद्ध जय युत
अति फूल।
श्रम वारिज घन विन्दु वदन पर भूषण अङ्ग अङ्ग
प्रतिकूल॥
कछु रह्यो तिलक शिथिल अलकावलि वदन
कमल पर अलिकुल भूल।
हित हरिवंश मदन रंग रंगि रहे नयन वैन
कटि शिथिल दुकूल॥

४९

आजु तो युवती तेरो वदन आनन्द भयो पियके
सङ्गमके सूचत सुख चयन।
आलस वलित बोल सुरङ्ग रंगे कपोल विथकित
अरुण उनोंदे दोउ नयन॥
रुचिर तिल लेस कोरति कुसुम केश शिर सोमन्त
मानो तेन।

करुणाकर उदार राखत कछु न सार असन
वसन लागत जब देन ॥
काहे को दुरत भोर पलटे पीतम चोर वश किये
श्याम सखी शत मैन ।
गलित उरसि माल शिथिल किङ्किणी जाल हित
हरिवंश लतागृह सैन ॥

५०

प्यारे बोली भामिनी आजु नीकी यामिनी ।
भेंटि नवीन मेघ सौदामिनी ॥
मोहन रसिक राय री माई तासे जो मान करे
ऐसी कौन कामिनी ।
हित हरिवंश श्रवण सुनत प्यारी राधिका रमण
से मिली गजगामिनी ॥

५१

कौन चतुर युवती प्रिया जाहि मिलत लाल
चोर ह्वै रैन ।
दुरत क्यों बदुरे सुन प्यारे रङ्गमें गहेल चैन में नैन ॥
उर नख चन्द्र विराजे पट अटपटे से बैन ।
हित हरिवंश सुरति राधापति प्रमथित मैन ॥

५२

प्रात समय उठि हरि नाम लीजे
गोविन्द नाम लीजे आनन्द सों सुखमें दिन जाय ।
चक्रपाणि करुणामय केशव विघ्न विनासन
यशोदा माय ॥
कलि मल हरण तरण भवसागर भक्त चिन्तामणि
कामधेनु ।
ऐसो मीरन नाम कृष्णको वन्दनीक पावन पदरेनु ॥
शिव विरिञ्चि इन्द्रादि देवता मुनिजन करत
नामकी आस ।
भक्तवत्सल ऐसो नाम कल्पद्रुम वरदायक
परमानन्द-दास ॥

५३

छबीले लाल छवि तेरी मोहि नीकी लागतु है हौं
तन मन यौवन वारों रे ।
भोर भए आए मेरे अङ्गना हौं पलकन सों
पग झारों रे ॥
सुख दीजे रस लीजे रैन को हौं चितते नेकु न टारों रे ।
कृष्णजीवन लछिरामके प्रभु सङ्ग नव सत् शृङ्गार
सिंगारों रे ॥

५४

नयन मेरे घूंघट में न समात ।
सुन्दर वदन नन्दनन्दन को निरखि निरखि न अघात ॥
अति रसलुब्ध महामधु-लम्पट जानत न एको बात ।
कहा कहौं दर्शन सुख माते ओट भये अकुलात ॥
बार बार वरजत हौं हारो तऊ टेव नहिं जात ।
सूर रसिक गिरिधर बिनु देखे अलप कलप शत जात ॥

५५

अंखियन वाही टेव परी ।
कहा करौं वारिज मुख ऊपर लागत ज्यों भ्रमरी ॥
चितवत रहत चकोर चन्द्र लौं नहीं बिसरत
एक घरी ।
यद्यपि हटकि हटकि हौं राखति त्यौं त्यौं होति खरी ॥
लुभि जु रही वा रूप जलदमें प्रेम पीयूष भरी ।
सूरदास गिरिधर तन परशत लूटत निशि सगरी ॥

५६

राधे वसन श्याम तन चीन्हीं ।
सारङ्ग वदन विलास विलोचन हरि सारङ्ग जानि
रति कीन्हीं ॥
सुधापान करिके नीकी विधि रह्यो शेष शशि
मुद्रा दीन्हीं ।
सूर सुवेश आहि रतिनागर भुज आकर्षि
वाम कर लीन्हीं ॥

५७

राधे तू अति रङ्गभरी ।
मेरे जान मिली मोहन सों अञ्चल पीक परी ॥
छूटी लट टूटी नकवेसरि मोतिनकी दुलरी ।
मैं जानो तू फ़ौज मदनकी लूटि लई सगरी ॥

अरुण नयन सुख शरत् निशाका सत् कुसुम
गलित कवरी ।
सूरदास प्रभु नगधरकी सङ्ग सुरति समुद्र तरी ॥

५८

श्याम श्यामा सों अति रति कीनी ।
श्रमजल विन्दु वदन यों राजत मनो शशि पर
मोतिन लर दीनी ॥
मुक्तामाल टूटि यों लागति जनु सुरसरी
अधोगति लीनी ।
सूरदास मनहरण रसिकवर राधा सङ्ग सुरति
रस भीनी ॥

५९

श्यामा श्याम सेज उठि बैठे अरस परश दोउ
करत शृङ्गार ।
इन पहिरी वाकी मोतिन माला उन पहरी
वाकी नौसर हार ॥
पंच संवारि वृषभानु नन्दिनी अलक संवारत
नन्दकुमार ।
हंसि मुसकाय करत दोउ बातें वदन निहारत
बारम्बार ॥
लटपटी पाग मरगजी माला कहि न जात शोभा
सुखसार ।
श्रीभटकी प्रभु युगलकी दूती मेरे आंगन करत विहार ॥

६०

सखी री और सुनहु एक बात ।
आजु गोपाल हमारे आए उठत प्रात ही प्रात ॥
कहुंके नयन उनींदे मोहन अपने घरको जात ।
आगी द्वार नन्द हुते ठाढ़े ताते गए न सकात ॥
लटपटी पाग अटपटे भूषण आलस युक्त जंभात ।
मानो शाह दगड ले छांड़े दे दे चुहटी गात ॥
ऐसी भांति कहां हुते मोहन मैं बूझि मुसिकात ।
ताते कछु उत्तर नहिं आयो सूर श्याम सकुचात ॥

६१

सुन्दर घनश्याम लाल पङ्कजलोचन विशाल
आंगन व्रजरानी जूकी ठुमक ठुमक धावे ।
पहुंची कर बनी चारु कण्ठमें विचित्र हार लटकन
लटकें सुढारु कहत न बनि आवे ॥
रुनन झुनन धरे पाइ निरखि मुदित यशोदा माइ
किङ्किणी कटि नूपुर ध्वनि श्रवण सुख बढ़ावे ।
श्रीविट्ठल विहारी अङ्ग कोटि वारिके अनङ्ग ठाढ़ो
युवती अपार मनमें सचु पावे ॥

६२

प्रात समय आवत लालस भरे युगल किशोर
देखि कुञ्जनकी खोरी ।
लटपटी पाग छुटे बन्द प्रियके प्रियाकी वेणी
बिथुरी छूटी कच डोरी ॥
ललितादिक देखति जु नयन भरि अति अद्भुत
सुन्दर वर जोरी ।
विट्ठल विपुल पुहप वर्षत तब तृण टूटत है
अब हो हो होरी ॥

६३

आजु बनी लाड़िली प्रियतम सङ्ग आवति ।
सौंधे भाजी लट छूटी प्रियके अंश भुजा पाछे
सखी सुघर विभास हिं गावति ॥
श्रमजल विन्दु निशाके सुख सूचित मोहन वदनसौं
वदन मिलावति ।
विपुल विपुल कल रसिक विहारीलाल आनन्द
समुद्र मथि मदन झलावति ॥

६४

आई भोर भये प्यारी छूटी लट बगरी ।
बांह जोरि लाल सङ्ग निशा किये कुञ्ज रङ्ग
स्वबश किये विहारी कुंवरि अगरी ॥
निशाके चिह्न फीके गौर श्याम तन छवि पदनख
पर वारों जेती तेरी नगरी ।

विट्ठल विपुल केलि मनहु कञ्चन वेलि अरुझी
कुञ्जतमाल आवे कुञ्ज डगरी ॥

६५

प्यारी तेरी चाल चितवनि बांकी।
बांके बसन आभरण बांके वङ्क रेख उर आंकी ॥
वङ्क स्वभाव मिलन बांको प्रिया वङ्क कोर ह्वै झांकी।
विट्ठल विपुल विहारी बांके मिले ताते तू
फिरत निशांको ॥

६६

ज्यों ही ज्यों ही तुम राखत हो त्यों ही त्यों ही
रहियत है हो हरि।
और अचरचे पाइ धरो सु तो कहो कौन के पेंड भरि ॥
यद्यपि हौं अनभायो कियो चाहों कैसे करि
सकों जो तुम राखो पकरि।
हरिदासके स्वामी श्याम कुञ्जविहारी पिञ्जराके
जनावरलौं तरफराइ रह्यो उड़िवेको कितो कुकरि ॥

६७

काहूको वश नाहीं तुम्हारी कृपाते सब होय
विहारी विहारनि।
और मिथ्या प्रपञ्च काहेको भाषिये सो तो है हारनि ॥
जाहि तुम सों हित ता सो तुम हित करो
सब सुख कारनि।
हरिदासके स्वामी श्याम कुञ्जविहारी
प्राणनके आधारनि ॥

६८

कबहुं कबहुं मन इत उत जात यातें कौन है
अधिक सुख।
बहुत भांतिनतें घर आनि राखो नाहिं तो
पावतो दुख ॥
कोटि काम लावण्य विहारी तामें मुहचहां सब
सुख लिये रहत रुख।
हरिदासके स्वामी श्याम कुञ्जविहारी दिन
देखत रहों विचित्र मुख ॥

६९

आइये जू आइये जिनि दिवाइये मो मन रिस।
शिथिल अङ्ग पग धरत डगमगे झूठे ही करत
मातेको मिस ॥
अब जु आये हो मेरो जो समोध करत तरसाए
प्राण सगरो निस।
गोविन्द प्रभु पिय जाय शिरोमणि ओसन कैसे
जात तिस ॥

७०

नवल निकुञ्ज महल रस दोउ री राजत हैं रङ्गभीने।
कुसुमित सेज भोर उठि बैठे रस आलस
अंशनि भुज दीने ॥
गौर श्याम तन नील पीत पट सभ्रम पलटि बसन
तन लीने।
प्रिय विहारी प्रिया सङ्ग विलसे अति सुरति रङ्ग
शुभगसिन्धु ललितादिक दृग मीने ॥

७१

चंचल ले चली री चित चोर।
मोहन को मन यों वश कर लियो ज्यों चकरी
सङ्ग डोर ॥
जोलों न देखत तव मूर्ति तोलों पलकन लागत
निमिष न ओर।
नन्ददास प्रभु प्रेम मगन भये नागर नन्दकिशोर ॥

७२

प्रात समय जागी अनुरागी सोवत उठी री श्याम
जूकी सङ्गिया।
बार संवारति उठी री दक्षिण कर वाम भुजा बकुटी
भरि अङ्गिया ॥
भालमें सुहाग भारी कञ्चुकी की छवि न्यारी
पहरे कसूंभी सारी सोंधे रगबगिया।
अग्र स्वामिनी लड़ाई बहुत कीन्हीं बड़ाई
फूली फूली फिरे सब रैन रङ्गरङ्गिया ॥

७३

हौं जु निभर्मी बैठो पिय औचक मूंदे री
पाछे ते नयन।
अछन अछन पग धरत धरणिपर आवत जानि मयन॥
हौं इतनें ही चौंकि परी मेरी आली मेरो छतिया
धीर धरय न।
जगन्नाथ कवि रायके प्रभु रीझि हंसे तब हौं हु
हंसी वह सुख कहत बनय न॥

७४

आवति कुञ्जतें पोह पारी।
पिय जंभात अरसात रसमसी ललन खवावत बीरी॥
सुरति शिथिल अङ्ग अङ्ग परस्पर अङ्क भुज
भरि लीन्हीं श्याम रसीरी।
विट्ठल विपिन विनोद विहारी नहीं ललितादिक नीरी॥

७५

श्यामके भुजन बीच राखि है सुरति सींच सोई
सुकुमारी जागी तमचर ररतें।
हा हा कान्ह उदय भान अब हीं होय गो जान
धुकर धुकर छाती गुरुजन डरतें॥
मधुर वचन कहो प्यारे को भलो मनायो चुम्बन
अकोर देति निरवारि गरतें।
आंगनमें ठाढ़े आइ ललिता लेति वलाइ
सूर स्वामीनी राजे आनन्दके भरतें॥

७६

तेरे नयन लोने री जिन मोहे श्याम सलोने।
अति ही दीर्घ विशाल विलोल कारे मारे पिय
रस रिझये कोने॥
वदन ज्योति चन्द्र हुते निर्मल कुच कठोर अति
ठोन वोने।
तानसेन प्रभु सों रति मानी कञ्चन कसोटो कसोने॥

७७

हौं गई बछरा मिलावन श्यामने वाण मारो।
धरणो मूर्छि परी सुन सजनी तन हु को सुधि बिसारी॥
सखी एक जब जल मुख धोयो क्रम क्रम अंचरा
संभारी।
सूरके प्रभु बरजो इन अंखियन ये सब ही ते न्यारी॥

७८

चले उठि कुञ्ज भवन ते भोर।
डगमगात लटकत लर छूटी पहरे पीत पटोर॥
अरुण नयन आलस युत घूमत विवि सुख
चन्द्र चकोर।
गिरि गिरि परत गलित कुसुमावली शिथिल शीर्ष
कच डोर॥
लपटित वसन रसन मणिभूषण कुण्डल सों लट छोर।
परमानन्द मिलो गिरिधर सों रससागर झकझोर॥

७९

गुजरी शशिवदनी सुन्दर यौवन वाली।
शिर कनक मटुकिया गो-रस बेचन चाली॥

छन्द

चली दधि बेचन किशोरी कुंवरि है गजगामिनी।
नखशिख रूप अनूप सुन्दर दशन द्युति मानो दामिनी॥
श्यामा पियारी कुल उज्यारी विमल कीरति जजरी।
यौवन वाली सरस सुन्दर चन्द्रवदनी गूजरी॥
वृन्दावन भीतर श्याम मनोहर घेरी।
हौं तुम्हें जान न देहौं लेहौं दान निबेरी॥

छन्द

लेहौं दान निबेरि आपनी करों नन्द दुहाइयां।
जाति चोरी बेचि नित प्रति आजु पकरन पाइयां॥
बोलि ग्वाल लुटाय दूं दधि करों जो मावे मना।
घेरी मनोहर श्यामसुन्दर ग्वालिनी वृन्दावना॥
छाड़हु मेरो अंचरा हट जिनि करहु गोपाला।
सुन्दर मनमोहन प्यारे अवार होत नन्दलाला॥

छन्द

नन्दलाल होत अवार प्रति क्षण सघन वनमें
अति डरों।
मेरे सङ्गकी सब बेचि बगदीं कहा उत्तर घर करों॥

कब कब तुम्हारो दान लागी वादि झगरो ठान ह्र।
बलि जाउं मानो कह्यो मेरो लाल अंचरा छाड़ ह्र॥
अति चतुर ग्वालिनो अन्तर नेह बढ़ायो।
श्याम मनोहर जिय को प्यारो पायो॥

छन्द

पायो मनोहर श्यामसुन्दर सुरति सुख मानो रली।
नव नेह अति रस रङ्ग बाढ़्यो दान दे उठि घर चली॥
कहत श्रीहरिदास नागर कामिनो गुणसागरी।
जिन रसिक श्रीहरिराय मोहे अधिक चातुर नागरी॥

८०

दधि मथति ग्वालि गतिभेद सों ठाढ़ी।
यौवन मदको झुकति नागलोक लों वेणी हरकत
कटि छवि बाढ़ी॥
तनसुख सारी घनवेलि को लहंगा कचुको
रेशमको बनो उरोज गाढ़ी।
सूरको प्रभु तहां फिरि फिरि देखत मानो
सांचे भरि काढ़ी॥

८१

अति हो अरुण हरि नयन तिहारे।
मानहुं रति सों भए रगमगे करत केलि पिय
पलक विसारे॥
मन्द मन्द डोलत शङ्कित ह्वै शोभित मध्य,
महा रतनारे।
मानहु उकसि कमल सम्पुटमें उड़ि न सकत
चञ्चल अलि बारे॥
झिलि मिलि तमगण रैन जनावत रतिरस चुगत
भ्रमत अनियारे।
मनहुं सकल युग जोति करन को काम वाण
खरसार संवारे॥
अटपटात अरसात युगल पुट कहुं घूमत कहुं
करत उघारे।
मनहु मत्त मर्कत मणि अङ्गण खेलत खञ्जरोट
चटकारे॥

बार बार अवलोकि कुरखियन कपट नेह मन
हरत हमारे।
सूर श्याम देखत सचुपावत दुख मोचन लोचन
रतनारे॥

८२

उठे प्रात तोतरात कहत तोतरो तोतरो बात
मांगत हैं दधि माखन लाइये यशोदा मात।
बाजत नूपुर सुहात नाचत त्रैलोक्यनाथ
देखत सब गोपो ग्वाल नयनन नाहीं अघात॥
नन्द सुवन सुखदायो चिरञ्जीवो री कन्हाई
जोवति सुख चाहि चाहि या निधि को माई।
बाल केलि देखि आई रोम रोम सचुपाई
श्रीवल्लभ हरखि निरखि लेत हैं बलाई॥

८३

कटि पीत पट मुख मुरली मुकट शीर्ष
कांख लकुट नटवरको चटक।
तिलक ताटङ्क काम कुण्डल कपोल वनमाला को
लटक तामें चटक मटक॥
वपु घनघटा तामें मोतीहार बग ठठा सुन्दर शुभग
पग पावरी खटक।
व्रजको भटक दधि चोरी को सटक ऐसो सिंह
मूर्ति पुनि मनको अटक॥

८४

जो लों हरि आपुनपो न जनावै।
तो लों सब सिद्धान्त स्मृति युत पढ़े सुने ते न आवै॥
सुनि विरिञ्चि नारायण पै नारद सों कहि दीन्हों।
नारद कही वेदव्यास सों आपुन खोज न कीन्हों॥
वेदव्यास औषधको नाई बढ़ि मन ताप नशायो।
तिन पै सुनि शुकदेव परीक्षित राजाको जु सुनायो॥
यद्यपि नृपति सुनी व्रजलीला दशम कह्यो शुकदेवा।
सर्वात्मा भाव नहिं उपज्यो ताबे कारो न सेवा॥
श्रीभागवत अमृत रस मथिके श्रीवल्लभ सर्वोत्तम।
करि आवर्श दूरि व्रजजनके हाथ दिये पुरुषोत्तम॥

सज्जा अरु शृङ्गार भोग रस श्रीवल्लभ प्रकटायो।
करि कृपा अपने जीवन पर जगजीवन स्वाद चखायो॥

८५

गोविन्द दधि न विलोवन देही।
बार बार पाय परति यशोदा कान्ह कलेऊ लेही॥
बांधि कटि पट क्षुद्र घण्टिका मुदित नन्दजू की राणी।
कञ्चन चीर हार उर मणिगण वलय घोष मृदु वाणी॥
एक-एक तें होय देव दैत्य सब कमठ मन्दराचल जानी।
देखत देव लक्ष्मी कम्पी जब गही गोपाल मथानी॥
कृष्णचन्द्र व्रजराज रमापति भूतल भार उतारे।
परमानन्ददास को ठाकुर व्रज वसि जगत् उधारे॥

८६

जान्यों जान्यों री सयान तेरो प्राणेश्वर सों
तैं कियो मान भयो है विहान।
प्रिय को तेरो हि ध्यान मेरो सीख सुन कान
जामें बसे प्रान ता सा कैसो धौं गुमान॥
सुन री मुरली गान आछी नीकी मीठी तान
सङ्केत-स्थली रचो कुसुम-वितान।
सूरदास प्रभु जान सकल शिरोमणि मान
मदनमोहन तेरे सुखको निधान॥

८७

प्रिय हृदय राखत हैं निशि दिन आजु कहां तू
रात रही री।
बिच बिच नाहीं नाहीं करत सब तियनमें तुम सी
कठिन कही री॥
मो ग़रीब पर कीजे कृपा ऐसी मति तेरो किन हूं
थोई सही री।
रसिक प्रियतम सों मिलि प्रभात अति रुचि
ता सों निबही री॥

८८

कारो कन्हैया री मोहि भावे।
आछी मीठी तान गावे मुरली बजावे नयनन
मांझ रिझावे॥
निरखि परखि देखि जिय को भरम गयो सांवरो
मूर्ति मेरो सर्वस्व चुरावे।
अति ही अचगरो मैन को प्रभु प्यारो सब गोपिन
को नायक कहावे॥

८९

आली री पौरो पह भई है निकसि ठाढ़ी भई
हार कुञ्ज ऐनके।
रथ खींचो वदन निरखत हा जो मों जान्यो चन्द्रमा
ताते धोखे रैनके॥
नयन कुरङ्ग जानि जियमें आयो सत् भाव
आधो विम्ब द्युति आधो हित रह्या चैनके।
सूरदास सखि श्याम मोतीमाल तारागण और उपमा को
देखि मदनमोहन प्रिय सङ्ग सुख मैनके॥

अथ श्रीयमुनाके पद

तू यमुना गोपाल हि भावे।
यमुना यमुना नाम उच्चारे धर्मराज ताको न चलावे॥
जो यमुना को जानि महातम जो यमुना
जल पान करे।
जो यमुना अवगाहे निशिदिन चित्रगुप्त
लेखो न धरे॥
पद्मपुराण कथा इह पावन धरणी सुख वाराह कही।
तीर्थ महात्म्य जानि जगत् गुरु इह प्रसाद
परमानन्द लही॥

२

दोऊ कूल खम्भ तरङ्ग सीढ़ी मानो श्रीयमुना
जगत् वैकुण्ठ नसैनी।
अति अनुकूल कलोलनके भर लिये जात हरिके
चरणन सुख देनी॥
जन्म जन्मके दुष्कृत दूर करणी काटत कर्म
धर्म धार पैनी।
छीत स्वामी गिरिधरण पियारो सांवल गात
कमल दल नैनी॥

३

निरखत ही मन अति आनन्द भयो प्रात ही देखि
प्रभाकर कन्या।
जल परसत ही सकल अघ भाजे ज्यों हरि देखि
हरिणकी सन्या॥
और जीव का औरनकी गति मेरी गति हो
तुम हो अनन्या।
व्रजपतिको तुम अति हो पियारी तुम सङ्गमति
सुरसुरि धन्या॥

४

मेरे कुल कर्म कलि मष नाशन देखि प्रवाह
प्रभाकर कन्या।
वह देखो पाव जात जित तित बहे ज्यों मृगराज
देखि मृग सन्या॥
दे पयपान पुत्र लौं पोषत जननी कृतार्थ
धन्यवह धन्या।
दियो चाहि गदाधर जूपे चरण शरण अति
प्रीति अनन्या॥

अथ श्रीगङ्गाजीके पद

आगे आगे रथ भगीरथ जूको चल्यो जात
पाछे पाछे आवति तरङ्ग रङ्ग भरी गङ्ग।
झलमलात अति उज्वल जलकी ज्योति अवनि
रवनि मानो शीर्ष भरे मोती मङ्ग॥
जाय परशे हैं भूप कबके भस्म रूप ठौर ठौर
जागि उठे होत सलिल सङ्ग।
नन्ददास मानो अग्निके यन्त्र छूटे ऐसे
सुरपुर चले धरे देव अङ्ग॥

विभास—चर्चरी

जय भगीरथ नन्दनी मुनिचय चकोर चन्द्रनी
नर नाग विबुध वन्दनी जय जह्नु बालिका।
विष्णुपद सरोज जासि ईश शीर्ष पर विभासि
त्रिपथ गाथ पुण्य पाथ पाप छालिका॥
विमल विपुल वहसि वारि शीतल त्रयताप हारि
भ्रमरवर विभङ्ग तर तरङ्ग मालिका।
निज जन पूजो पहार शोभित शशि धवल धार
भञ्जन भवभार भक्त कल्प थालिका॥
निज तटवासी विहङ्ग जलचर खल पशु पतङ्ग
कीट जड़ित ताप शिरस सरस पालिका।
तुलसी तव तीर तीर सुमिरत रघुवंश वीर विचरत
मति मेह गेह महिष कालिका॥

२

श्रीगङ्गा जगतारण को आई।
भगीरथ तपस्या कीन्हीं शिव ले शीर्ष चढ़ाई॥
पापी दुष्ट अजामिल गणिका पतित परम गति पाई।
परम पुनीत प्रीति ब्रह्मादिक वेदव्यास मिलि गाई॥
नाम लेत तुव ध्यान धरत है तारत बार न लाई।
विप्र गदाधर भरद्वाज कुल केवल गङ्गा सहाई॥

३

जो जन गङ्गा गङ्गा कहै।
जन्म जन्मके कोटि दुष्कृत सब छिन ही मांझ दहै॥
स्नान करत ते मन वाञ्छित फल तत्क्षण तुरत लहै।
व्रजपतिको प्यारी सङ्गमति बहु सुख देन चहै॥

श्रीवल्लभ गुणगान

प्रात समय श्रीवल्लभ सुतको श्रीविट्ठल प्रभुको
उठत ही रसना लीजिये नाम।
आनन्दकारी मङ्गलकारी अशुभ हरण जन पूरण काम॥
इहलोक परलोकके बन्धु को कहि सकत तिहारे
गुणग्राम।
नन्ददास प्रभु रसिक शिरोमणि राज करो
श्रीगोकुल सुखधाम॥

२

प्रात समय श्रीवल्लभ सुतको पुण्य पवित्र विमल
यश गाऊं।
सुन्दर शुभग वदन गिरिधर को निरखि निरखि
दृग दृगन सिराऊं॥
मोहन मधुर वचन श्रीमुखके श्रवण सुनि सुनि
हृदय वसाऊं।

तन मन प्राण निवेदि वेद विधि यह अपुनपो
हौं सुभल कराऊं ॥
रहौं सदा चरणनके आगे महाप्रसाद उच्छिष्ट पाऊं।
नन्ददास यह मागत हौं श्रीवल्लभ कुलको
दास कहाऊं ॥

३

प्रात समय श्रीमुख देखन को सेवक जन ठाढ़े
सब द्वार।
जय जय जय श्रीवल्लभ नन्दन दर्शन दीजे परम उदार॥
सुन्दर श्याम सुभगता-सीमा मेघ गभीर मधुर
गिरि धार।
नयनन निरखत होत परम सुख श्रवण सुनाए
वचन सुढार॥
श्रवण मङ्गल जगभवन मङ्गलरस पुरुषोत्तम
लीला अवतार।
जन भगवान् जाय वलिहारी अगणित लीला
महिमा नहिं पार॥

४

प्रात समय उठि के जो सदा श्रीवल्लभ नन्दनके
गुण गैये।
फिरि कर जोरि रूप चिन्तन करि उन हौंके
चरणन शिर नैये॥
सब साधनको सार इहै पद बार बार समुझैये।
कहे हरिदास मानि शिख मेरो श्रीविट्ठलनाथके
दास कहैये॥

५

प्रात समय उठिके जो सदा श्रीवल्लभ नन्दनके
गुण गाऊं।
श्रीगिरिधर गोविन्द जूको नाम ले श्रीबालकृष्ण
जूको शीर्ष नवाऊं॥
श्रीगोकुलनाथ जूको प्रणाम करि रघुनाथ जू
देखे नयन सिराऊं।
श्रीयदुनाथ जू सङ्ग खेलत घनश्याम जू इनकी
प्रीति हौं कहा सराऊं॥

यह अवतार भक्त हित कारण जो गाऊं तो
परम पद पाऊं।
विनती करि करि मांगत ब्रजपति निशदिन
इनको दास कहाऊं॥

६

प्रात समय सुमिरो श्रीवल्लभ श्रीविट्ठनाथ परम
हितकारो।
भवदुःख जात भजन सुख पावत कलि मल हरण
प्रताप महारो॥
आये छोड़ि शरण नहिं कब हूं बांह गहेको
लाज विचारो।
आन आश्रय छाड़ि भजो पद द्वारिकेश प्रभुको
बलिहारो॥

७

प्रात समय श्रीवल्लभ सुतको परम पुनीत विमल
यश गाऊं।
अम्बुज वदन शुभग नयना अति श्रवणन ले
हिरदे बैठाऊं॥
जब जन निकट रहत चरणन तर पुनि पुनि
निरखि निरखि सुख पाउं।
विष्णुदास प्रभु करो कृपा मोहि श्रीवल्लभनन्दन
दास कहाऊं॥

८

विशद सुयश श्रीवल्लभ सुत को प्रात उठत
अनुदिन नव गाऊं।
कलि मल हरण चित्त धरि राखूं उपजे परम
सुख दुःख वहाऊं॥
भक्त भ्रमर श्री भक्तिरस जाने माने मन सों तिन हु
को काऊं।
छीतस्वामी गिरिधारीके सुमिरण अष्ट महासिद्धि
नवनिधि पाऊं॥

९

श्रीलक्ष्मण सुत कमल प्रफुल्लित प्रकटे श्रीवल्लभ
कुलको दिनेश।

आनन्दे तिहुं पुरके सब जन आनन्दे शिव
सनक सुरेश ॥
श्रीभागवत विस्तार करण को निज जन सब को
अति सुख दैन ।
जन त्रैलोक्य जाय बलिहारी शीतल भए श्रीसुख
निरखत नयन ॥

१०

गायो न गोपाल मन लायो न रसाल लीला
सुनी न सुबोधिनी न साधु सङ्ग पायो है ।
सेया न सवाद करि घरी अघ घरी हरि
कबहूं न कृष्ण नाम रसना कहायो है ॥
वल्लभ श्रीविट्ठलेश प्रभुको शरण आय
दीन ह्वै के मूढ़ छण शीर्ष न नवायो है ।
रसिक कहाय अब लाज हू न आवै तोहि
मानुष शरीर धरि कहा धौं कमायो है ॥

११

गायो न गोपाल मन लाय के निवारि लाज
पायो न प्रसाद साधुमण्डलीन जायके ।
धायो न धर्मकि वृन्दाविपिनके कुञ्जनमें
रह्यो न शरण जाय विट्ठलेश रायके ॥
नाथ जू न देखि छक्यो छण हूं छबीलो छवि
सिंह पौरि पर्यो नाहीं शीर्ष हू नवायके ।
कहे हरिदास तोहि लाज हू न आवै जिय
जनम गंवायो न कमायो कछु आयके ॥

१२

रूपरस माधुरी भर्‍या सलोनो पिय मुख देखें
प्रभात बात कछू कछू रतिरी ।
अरसात गात औ जंभात मिले जात दृग
उर भुज ग्रीवा छवि रस उभरतिरी ॥
कुण्डल कपोल अधर अरुण रहे लसि
अङ्ग अङ्ग रङ्ग सों तरङ्गता ढरतिरी ।
प्यारे लाल वल्लभ रसिक पर तन मन
रीझि रीझि अंखियां न्योछावरि करतिरी ॥

१३

भोर ही श्रीवल्लभ वल्लभ कहिये ।
आनन्द परमानन्द श्रीकृष्ण सुख सुमिरे
अष्टसिद्धि पइये ॥
और सुमिरो श्रीविट्ठल विट्ठल श्रीगिरिधर गोविन्द
द्विजवर भूप ।
श्रीबालकृष्ण गोकुलपति रघुपति यदुपति
नवघनश्याम स्वरूप ॥
पढ़ो सुसार श्रीवल्लभ वचनामृत जपो अष्टाक्षर
मन्त्र करि नेम ।
अन्य श्रवण कीर्तन तजि निशिदिन सुनो सुबोधिनी
धरि जिय प्रेम ॥
और सेवो सदा नन्द यशोमति-सुत प्रेम भक्ति
सहित जिय जानि ।
अन्याश्रय असमर्पित लेनो असद् अलाप
असद् सङ्ग हानि ॥
नयननि निरखो श्रीकालिन्दी और निरखो सुखद
व्रजधाम ।
इह सम्पति श्रीवल्लभ तें पैये हरिजन नहीं
काहू सों काम ॥

१४

प्रात ही लीजे श्रीवल्लभ नाम ।
श्रीविट्ठल श्रीगिरिधर गोविन्द श्रीबालकृष्ण सुखधाम ॥
श्रीगोकुलनाथ अनाथके तारण श्रीरघुनाथ
परिपूरण काम ।
विष्णुदास सुमिरो तन-मन सों सुन्दर सुन्दर
श्रीघनश्याम ॥

१५

प्रात समय नन्दनन्दन श्यामा देखे मैं आवत कुञ्जगली ।
नव घनश्याम तरुण दामिनी मिलि राजत रूप
अनूप अली ॥
लटपटी पाग शीर्ष कर मुरली लोचन घूमत
भांति भली ।

शिथिलित चीर मरगजो अंगिया काम कामिनी
देखि छली ॥
चार याम निशि जागत बीती उर उमग्यो
अनुराग वली ।
कज्जल अधर नयन बोरी रङ्ग मदन नृपतिकी
चमू दली ॥
सूर वदन पङ्कज रस पीके अलक मधुपकी पांति चली।
प्रफुलित प्रीति परस्पर निरखति तरणि उदय
जैसे कमल कली ॥

१६

उनींदी आंखें रङ्ग भरी दुरत नहीं पट ओट ।
मीन खञ्जन मृग हीन भए हैं और कमलदल वारि
डारों लख कोट ॥
ढुरत मुरत झपकत अनियारी चञ्चल करत हैं चोट।
चतुर विहारी प्यारीकी छवि निरखत बांधत
सुखकी पोट ॥

१७

पल झपकि झपकि आवत उनींदी अंखियां भई ।
हरबरात उठे पट पलटि परे पह फाटन क्यों न दई।
नेक करो विश्राम वाम बोलिए मेरे हो धाम हौं
करों टहल जो तुम सों है चोप नई ।
सकुचो जिनि सांचो मानिये चतुर विहारी
गिरिधारी पिय जी नई रिझवार रिझई ॥

१८

सपने हू न बिछुरिये हो हरि सों मन यों वाछे ।
श्यामसुन्दर बहु नायक सुखदायक सबहिन को
मोहि कबहूं न पूछे री आछे ॥
नन्दनन्दन जु अनत रस कीन्हीं काम जरावत री
सौति साल दूजे ताछे।
तानसेन प्रभुके बिछुरे ज़रद भई मोहि निहोरन
आबे री जो कोउ पाछे ॥

१९

प्रात समय उठि आये हो मेरे नन्दनन्दन आलस
भरे नीके ।
पीक कपोल अधर मसि सोहत विन गुण माल
विराजत हीके ॥
पाग लटपटी भाल महावर पग परशे तुम काहू तीके।
छीतस्वामी गिरिधरण भले तुम और विराजत
वन्दन टीके ॥

२०

भोर भये नवकुञ्ज सदनते आवत लाल गोवर्द्धनधारी ।
लटपटी पाग मरगजी माला शिथिल अङ्ग डगमग
गति न्यारी ॥
विन गुण माल विराजत उर पर नख च्छत द्वेज
चन्द्र अनुहारी ।
छीतस्वामी जब चितए मोतन तब हौं निरखि
गई बलिहारी ॥

२१

भोर भए आये मेरे तुम आज कहां निशि
वसे नन्दसुत ।
कहा कहों अङ्ग अङ्गकी शोभा पीक कपोल
नयन आलस युत ॥
कहा निहोरत हो मोको अब जिनि परशो
मोहि चले जाउ उत ।
जानी बात तिहारे मनकी छीतस्वामी गिरिधरण
बड़े धुत ॥

२२

लला जिनि मेरी बांह गहो ।
मारग में लोग देखें दूरि ठाढ़े रहो ॥
मनमें है कौन बात सोई क्यों न कहो ।
ढीठो कहा देत ऐसो नेक लाज लहो ॥
कहैगो जाय राय जू सो बाट रोकत हो ।
कैसे हम आवें जाहिं पनिघट पथ हो ॥
तुम्हें हि तो कछु नहीं विचार लरकाई वश हो ।
रसिक प्रीतम छाड़ि देहु हंसत हैं सब हो ॥

२३

पैंजनी पकर मौन रही चूरी चुप कर
सुनिये न वैन व्रजराज व्रजनारीके ।

सांझ होते सोए किधों रिसमें समोए कहे
कालिदास को री जाने चरित्र विहारी के ॥
करणके मनोरथ करण करण चारु
चरणके सङ्गी रङ्गी अति सुकुमारीके ।
जानिये न देहु हा हा एजू महा मुखर है
मुखर हैं मन्द काहे नूपुर प्यारीके ॥

२४

शोध लेत ननद जेठानी देवरानी मिलि
सोइवेके मिसु न उसास लेत सास है ।
कालिदास दोऊ रूप रेख देख पाय तन
यों हो उन मानो काम केलि को विलास है ॥
आलो वनमालो को न ख्यालो परे एक दिन
देखे बिन कियो जात का सों उपहास है ।
दूती सङ्ग रसिक मुरारि को पहुंचि रहे
नारि सुकुमारि जो वयार सङ्ग वास है ॥

२५

स्वामी को कहा है सब नख तन जाई जाके
भीतर सुहाये भांति भांतिके बहुत है ।
कालिदास लागे पुष्प पौनके झकोरन ते
आए चहुं ओरन ते छाय इत उत है ॥
जगत् जलधि मध्य जम्बु द्वीप रचो विधि
सोय सम काशी ताके गुण अद्भुत है ।
पञ्च क्रोस भर जाको क्रोस भर भर सब
जवीन को पुञ्ज होत पलमें मुकुत है ॥

२६

चूमों कर कमल ए अमल अनूप तेरे
रूपके निधान नेक मोतन निहार दै ।
कहे कालिदास मेरे पास हंसि हेर हरि
धरि माथे मुकुट लकुट गहि डार दै ॥
कुंवर कन्हैया मुखचन्द्रको जुन्हैया नेक
मेरी ओर लोचन चकोरन विचारि दै ।
मेरे कर मेहदी लगी है नन्दलाल मेरी
लट अटको है नेक वेसर सुधार दै ॥

२७

प्यारी तन भूमि तामें रूप मार सागर है
यौवन गभीर मुख शोभा को धरत है ।
दोपत तरङ्ग नयन वारिज से शोभित हैं
उरग सो वेणी जिय देखत डरत है ॥
कहै कालिदास गाल गाड़न भ्रमर मध्य
लाल मन वाह तामें दौर पसरत है ।
वेसरको मोती मानो कर है सिकन्दर को
बार बार डोलके मनें सो करत है ॥

२८

प्यारी चलो कि न लालन पै ए री
लालन को मन ताप सिरावन ।
तू को री है मैं तो दूती हों लालकी
आई है क्यों इत ताको बोलावन ॥
ठाढ़े कहां हरि हैं यमुना तट
छोड़े कबे भई बेर मों आवन ।
नोके हैं श्याम कहे सहजा कवि
पाई निकाई कहां मनभावन ॥

२९

द्वादश नयन एकादश से कुच
प्यारी कहां दश है हमतें ।
नव से बने भूपग आठ लसें नहि
सात कोऊ षट् है तुमतें ॥
मणि पञ्च सो मध्य कटि चित चार
यथा बिनु बार तथा विनुतें ।
अटिकै रचि तीन दोऊ मति छोड़ि
कहा रहो एक सी ह्वै हठतेः॥

३०

कोयला भई कोयल कुरङ्ग तन कारो कियो
कूट कूट केहरि कलङ्क लङ्क हदलो ।
जर जर जम्बूनद अधरङ्ग विद्रुम भो
हिया फाट दाड़िम त्वचा भुजङ्ग बदलो ॥
ए री चन्द्रमुखी ते कलङ्की कियो चन्द्र अब
बोले व्रजचन्द्र वे किशोर आप अदलो ।

छार शीर्ष डारे गजराज वे पुकार करे
पुण्डरीक बूझोरी कपूर खायो कदली ॥

३१

नवल नवोढ़ा यह ओढ़नो न वोढ़ जाने
प्रिय पास पोढ़वेको सार कहा जानी है।
मेरे लायवेकी लाज कीजे आज वलि जांव
आतुर न हूजे इह अब हो अयानी है ॥
यह रस रीति कहा जानत है मेरे लाल
रस होमें रस होमें बातें कहे मानी है।
मैना सी पढ़ाई जब पहर अढ़ाई पर-
तीत मैं बढाई तब केहू केहू आनी है ॥

३२

आज लौ अछूती छाती काहू के न रङ्ग राती
यौवनके मद माती मोठे मन रौनेको।
खञ्जन से नयन राते चूनरी औ चुरी राती
देख देख सकुचाती बोल नाहि मौनेको ॥
केतिक मनौती सा मानो यह चन्द्रमुखो
है तो चित चोर नन्दलाल बड़े भौनेको।
झूठ नाहि बोलत यदुनाथ की सौं बार बार
या को ठग लाई हौं वेब्याहो विन गौनेको ॥

३३

मेरो सो जो करि मेरो सो आंखन
जो तै विकोल हो जो वारि गाढ़ो।
आए री आय चितै क्यों न देख
यहै चितचार चितोत है ठाढ़ो ॥
ब्रह्म भनै माई कान्हके भी घर
बाहर वैरीको वारिद बाढ़ा।
यहै सुख देख कहै दुखदाई री
लाज करो और घूंघट काढ़ो ॥

३४

तिय सांझ समय हरि आवन जानि
शृङ्गार संवारि महा सुख दै।
अति आतुर द्वार निहार अटार
विचार मनोभव चित्त मुदै ॥
मणि वेद प्रकाश प्रभाकरनाथ
लखे वकवा नहि होत जुदे!
निश हू दिनको सुख पाय भले
चकई इमि चाहति चन्द्र उदै ॥

३५

विरह अनल वरी खरी प्रेम मनहरी
चटपटी परी विन हरि अकुलात है।
सुध बुध हरी कुलकान लोक लाज टरी
नाथ चित धरी आश अति विललात है ॥
घरी घरी दीरघ उसास ले उदासन री
लगी ठग मुरी खेद कम्प सब गात है।
नयन जल चलै ए री पावसकी झरी जैसे
रैत भरी घरी चली जात दिन रात है ॥

३६

सुख नेह नहीं सुध देह नहीं
तजि गेह वहीं न रहो अटको।
टकि एक तकै कार टेक विके
कन नेक लजै हटको छटको ॥
चकि कै तकि कै छल तै छकि कै
थकि नौथ चितै सुखमा नटको।
फटको मन तै झटको तन तै
भटको अंखियां टटको अटको ॥

३७

सुन्दर सरोवर में बांके हैं कमल किधौं
फूल नरगिस कैसे नये नये जात हैं।
दौरे मधु छके मोन देखत दुरत जल
कैधौं खेलें खञ्जन खरे से न चुगात हैं ॥
कैधौं मृगनाथ सब शीर्ष नाय नाय रहे
कैधौं अलि गुञ्जमाल केतको सुहात हैं।
नाथ नयो ग्वारिनिसो आचका हौं देखि कान्ह
लाज सों लजानि नयन लाज सों लजात हैं ॥

बारहमासा

सुफल फूल सोहै हरो वेलि मोहै
लपटानि द्रुम सो प्रफुल्लित जहां है।

भ्रमर मत्त बोले करें खग कलोले
सखी साथ डोलें रसिक रस महा है ॥
नहीं गरम शीतल पौन त्यों त्रिविध बल
अचल साज सुखकी सुखी सब तहां है।
अहो नाथ मानो सुखद चैत्र जानो
धनुष ले मदन ढूंढ़ विरही कहां है ॥

वैशाख

विमल रूप सर है अचल प्रेम स्थिर है
वरुण नाल कर नयन वरमान लीजे।
कछू कण्ट लाजे रुचे पत्र राजे
चिते मीनलांवन्नका नीर जीजे ॥
मुदित देखि माधव तरण प्रीत बांधव
सहित नाथ साधव सुमकरन्द पीजे।
तुम्हें तो पुहुपको इहै नेम एकै
मधुप कञ्ज मेरे हगन वास कीजे॥

ज्येष्ठ

तरण के दवनमें अवनि के तपनमें
निकसि को भवनतें दिनै रैन जानो।
जहां सदन शीतल तजे तिय न पिय ले
कुटै यन्त्र जल रस बरस मेघ मानो ॥
सघन कुञ्जवन वन तरङ्ग जाग वन गण
सखी साथ बनके बनो केलि ठानो।
तजो द्रोह उरते वसो साथ कर नाथ
सुख जेठ के हो कहां लो बखानो ॥

आषाढ़

घटाश्याम सागर लहरि दौर बादर
गरज फेर धुरवा अनल बीज बोहै।
सुमन भूमि मणि है लसें देव धन है
सो वोहित भरो छबि सुधा वृष्टि मोहै॥
करि मद गवन ऐनहि मकर दवन;
छाड़ कहिये चलन डर न मारुत समो है।
सलिल जन्तु खग मेह गम्भीर पग नाथ
आषाढ़ मानो उदधि ह्वे लसो है ॥

श्रावण

सुशोतें अचल कन्दारा वारि कुञ्जे
सदन फूल फल चारु हरिये वसुन्धर।
वरस मेह बुन्दै छुटै यन्त्र जल त्यों
पुहुप पुष्पहर नीर सारङ्ग पुरन्दर ॥
गरज खग भ्रमर नाद बाजे वधू इन्दु
वामा लसै ज्यों सुमन को धनुर्धर।
प्रिया ले तड़ित् साथ यों श्याम घननाथ
श्रावण बनी है मदन बाग़ सुन्दर ॥

भाद्र

लसे दन्त बकपंक्ति मारुत महावत
नमैं है सो खररगा चाप राजै।
रुधिर सो वलित अङ्ग सौदामिनी त्यों
तजै शुण्ड जल मध्य भरै मेह छाजै ॥
गरज वीर धुरवा धुजा चिन्ह कांपै
देखि गढ़दार खग सैन सङ्ग्राम काजै।
बनो नाथ सुख सैन सज देखिये मोसों
भादो सघन कामहस्ती विराजै ॥

आश्विन

सुमन श्वेत जे तें धरा मध्य तें तें
बिछाए किधौं भूमि हीरा लसैं सो।
सुधा वृष्टि कर पूरके सुरसरी फैल
पारे परो पत्ररूपा विभै सो ॥
किधौं नाथ लै कर खरो सारदा जीन
अस्तुत लिख्यो ऐन क्षीरोद जैसो।
विमल चन्द्र आश्विन विमल चांदनी है
विमल रूप जैसो विमल साज तैसो ॥

कार्तिक

गरम भौन यौवन सो अङ्ग अङ्ग सोहावन
सने हो सगुण ज्योति सुखदायका।
चाह शिरपर बसै श्याम तम नाशक अभिराम
सायक मदनके अलन पायका ॥

बाट कटतें बुझै रात रसमें जगै
कोट सोचै भस्मकै करण लायका।
नाथ नेह न घटै छवि प्रकाश न मिटै
दीप कार्तिक कि धौं यूथ नव नायिका॥

मार्गशीर्ष

पावन सरस जे अपावन सलिल न्हात
पावन परै सङ्ग ले चारु सोहै।
वसै कोक विरहो लखै नायका बन्द
नायक कदाचित् विगसो लसो है॥
बढ़े रैन ज्यों ज्यों दृढ़े शीत त्यों त्यों
सुसंयोम सुखमें बिना गन को है।
बड़ो चाह करके बड़ो बार लो नाथ
हिल मिल रहो नेम अगहन गह्यो है॥

पौष

पौषमास तन व्यापत शीत।
मिल हैं कब सांवरे मीत॥
विन प्रिय को जाड़ा नहिं जाय।
ससक ससक सारी रैन विहाय॥
हरि बिन मोहे नेक न सुहावे।
विरह धूम अत ही मचावे॥

माघ

छिप्यो शीतकर शीतकर और देख्यो
बलो भौतिकरको कुहिर यो छयो है।
छप्यो सूर यों सूरको तेज कर मन्द
डरकै कारण शीघ्र नभ छिपि गयो है॥
बसें घरनि मंदन सबे मारके शङ्क
तू लो अतूलोक वच तन दियो है।
नहीं कम्प ह्वै अति शिशिर माघ त्रास
अहो माथ हो नाथ यह प्रण लियो है॥

फाल्गुन

बने वन सुमन अलि सघन घन चहूं यूथ
वन वन तिया दामिनी सी हसै।
छविन दिशि उमड रङ्ग वरष मेघ पिचका
गरज गान खग आन उरमें वसै॥
तिय गुलाल भरी इन्दु वामा छई वेल
तैसो पवन पथ पथि चलतसे।
नाथ ऐसे समय कौन मग पग धरै
मास फाल्गुनको ए साज पावस लसै॥

३८

आनन तड़ाग पर राजत गभीर नीर
सरल सेवार सम कूल केश छायो है।
भ्रुकुटी भ्रमर पात मानो वितरात जात
तें उर तरङ्ग आड़ अधिक सोहायो है॥
मीन मैन वीशा नयन तारासे करनफूल
ताको झुक झुक आवे मिसाल लिख पायो है।
ललित निचो झिन बीच फरकत ऐसे
मानो मन्मथ घेर जालमें बझायो है॥

३९

लागि मन मूठ और जउसी लगी है उर
औरे ह्वै गई सुध रह्यो न शरीर है।
है है गयो मोहि सो तो पूछ तब है है कोऊ
केतको कहै है न सुनै है ले लगी रहै॥
जाहि लागै प्रेत ताहि केतिक दुख देत याके
लागि जिअत याते अधिक अधोर है।
एरी मेरो वीर मेरी छाती पर पीर तब हो
मिटैगो जो पै छाती पर पोर है॥

श्रीकृष्णाय नमः

पञ्चम—तिताला

जागि हो रैन सब तुम नयन अरुण हमारे।
तुम कियो मधुपान घूमत हमारो मन काहे
तें ज नन्ददुलारे॥
नखक्षत प्रिय अङ्ग पीर हमारे उर कारण कौन
पियारे।
नन्ददास प्रभु न्याय श्याम घन बरसे अनत जाय
हम पर झूम झूमारे॥

३

आलस उनींदे नयन लाल तिहारे कहां तुम
रैन विताए।
पीक कपोल देखियत है प्रिय अधरनि अञ्जन
लखाए॥
जावक भाल उर विन गुण माल हृदय नख चिह्न
दिखाए।
नन्ददास प्रभु बोल निवाहो भोर होत उठि धाए॥

३

प्यारी तेरे आनन दृग आलस्य युत राजत रसमसे।
नव किशोर अङ्ग सङ्ग रैन रङ्ग रसे॥
शिथिल वसन रसन दशन अधरन क्षत लसे।
पीक छाप युग कपोल प्रिय सुख लगि हसे॥
मैं जाने पहिचाने सब विधि प्रियतम गुण ग्रसे।
प्रिय विहारी लाल ललित उरोजन बिच बसे॥

४

कहो तुम सांचो कहां ते जु आए भोर भए नन्दलाल।
पीक कपोलनि लागि रही है घूमत नयन विशाल॥
लटपटी पाग अटपटी बन्दिश उरसि मरगजी माल।
कृष्णदास प्रभु रसवस करि लीन्हों धन्य वही व्रजबाल॥

५

कौन पुण्य करी नारि ह्व अवतरो श्रीहरि दीन
थई मान मांगे।
जेहनी अविगतो अमर जनन बल है तेरे
कमलावर कण्ठ लागे॥
यज्ञ याग करो योग ध्यान धरो बहुत ए
आदरो देह कष्टे।
तोहे ते हरि स्वपने न पेखिये प्रेम दृष्टे॥
शेष सिंहासन सहज सोहिये सदा भुवन वैकुण्ठ
तनु मन्यमावे।
तेह थी अधि धिक छे मन्दिर माहेर प्रेम
पीताम्बर पलङ्ग आवे॥
भक्तवत्सल तनु विरद पोत वहे एम कहे समर्थ
वेदवाणी।
नरसैयानो स्वामी सुखतनो सागर कीधी करुणा
मुनि दीन जाणी॥

६

आज उजागर अङ्ग आलस्य भरो माहेरे मन्दिर केम
आव्या।
भुवन भूल्या वर भामिनी मोगिया साथे साहेलड़ी
सैन लाव्या॥
पीत पट विसारा नील अम्बर धरा अधर
अञ्जन तनी रेख लागी।
धन्य ते पुण्य पूर्व तप करी कामिनी तुम्हारे साथ
जो रैन जागी॥
अलस अलता तना रङ्ग सलता यया तिलक अर्ध रह्यो
भ्रुभग भाले।
श्रमजल केलि करोगोलुं सोहे घनू अधर तनो धक
लोचन विशाले॥
कारज कहो कांई कारण मन तनु भले पधारे
प्रात पेहलां।
मन विना मलबूं तें नरसैयो एम कहे बलीने
पधारजो काल वेलां॥

७

पलङ्गा या थरे कुसुम माला बड़े बांधि सबेङ्ग
कर लाज लोपी।
जोऊं माहरे मन्दिर थी कौन मूका बसे शुरे
करसे पेली रोक कोपी॥
तन्यो वनमालीने अम्यो वन बेलड़ो नीर नहीं
सींचो सोश्याने रोपी।
भ्रमर जायातना फूल मकरन्द मा हृदयकमल
माहां रह्यो रे ओपी॥
प्रीति करो तम्यो प्रेमता पालसों तन मन प्राण
सह्र रहे रे सोंपी।

कहे नरसैयो ताहरो रोस जेम उतरे तेंम
सुख सेन ए मलेरे गोपी ॥

८

ध्यान धरि ध्यान धरि नन्दजीना कुंवरनूं जे थको
अखिल आनन्द पाम्ये।
अष्ट महासिद्धि ते द्वार ऊभी रहे देहना दुष्कृत
ते दूर वाम्ये ॥
मोरना पुच्छनो मुकट मस्तक धर्यो मकराकृत
कुण्डल श्रवण झलके।
नीलवट तिलककृत शुभग केसर तनू कण्ठ मुक्ताहल
हार ललके ॥
पीताम्बर तनो पलवट कटितटे त्रिभङ्गी
उभला वेणु वाए।
कदम ना द्रुमतले राधिका रस भर्या हरि जीने
सङ्गे अलापि गाए ॥
वृन्दावन मद्दा मुरलोकी ध्वनि सुनि गोपिका
के रड़ा वृन्द आवे।
नरसयाने मने आनन्द अति घनो पुष्प मुक्ताफल
लेइ वधावे ॥

९

रहत रजनी ज्यारे पाछली घट् घरो साधु पुरुषे
त्यारे सुइ नरि रेहेवुं।
निद्राने परहरि सुमिर वा श्रीहरि एकतू एकतू
एम केहेवुं ॥
योगिया होय तेने योग संभालवो भोगिया होय
तेने भोग तजवो।
वेदिया होय तेने वेद उच्चारवो बैष्णव होय तेनो
विष्णु जपवो ॥
शुक वो होय तेने सकल ग्रन्थ साधवो दातारे
दन्त धावन करवुं।
पतिव्रता नारिने कन्तने पूछवुं बचन कहेते
शीर्ष धरवुं ॥

आपना धर्म थी कथा कहूं प्रीछवो मन शुद्ध
बुद्धि करी कपट मेहलो।
भणे नरसैयो हरिनो क्षपा थको जोता आवो
रुड़ो बात सेहलो ॥

१०

आजुकी वानिक पर हो लाल हों वलि वलि गई।
विगलित कच सुमन पाग ढरकि रही वाम भाग
अङ्ग अङ्ग अरसई ॥
अरुण नयन झपकि जात अरु जंभात वार वार
कपोलनि छवि छई।
धन्य सुहाग भाग ताको गोविन्द मुरलो प्रभु
सङ्ग सब निश वितई ॥

११

मैया तेरो रो मोहन अति हो सयानो देत
अटपटो गारो।
कुञ्जमहलमें अञ्चल फारो हंसि हंसि दे दे तारो ॥
गोरस ढोरे मनको जोरे माट दह्योके फोरे।
उठाउको डोरो कस बांधो चौदह भवन बन्द तोरे ॥
अधरपान परिरम्भण चुम्बन कहीं कहा लजानो।
शुक नारद सों लोला अगोचर सूर कितिक वर वानो॥

१२

तुमसों बोलिवेको नाहीं।
घर घर गमन करत गिरिधर प्रिय चित नाहीं
एक ठाहीं ॥
कहा कहूं सुन्दर घन तुम सो जो होत मन माहीं।
कृष्णदास प्यारोके वचन सुनि हृदय मांझ मुसकाहीं॥

१३

नन्दजीनू आंगन परम सोहामनुं अतिरलि आमनुं
कृष्णको धूं।
व्यापि वैकण्ठ कैलाश ब्रह्मा सदन इन्द्रना लोक था
अधिक की धूं ॥
सकल तीर्थ जहां विट्ठल वासी वसे इन्द्र व्रज
ईश जहां देव सघला।

भक्त बिना भूधरो वश्य नहीं कोयनें एकतें
एकपें अधिक डगला ॥
मात जसमाहसे नाथ सन्मुख धसे एम विलसे
प्यारो प्रेम प्रीते ।
नरसैयानो स्वामी श्रीकृष्णजी बाललीला रमी
एह जु रीते ॥

१४

जिनि बोलो पिय मोसों आज ।
जहां बसे निशि तहीं सिधारो मोतें कहा है काज ॥
सगरी रैन मोहि मग जोवत गई दहो मदनको दाज ।
छीतस्वामी गिरिधर दृग जोरत आवत नाहि न लाज॥

१५

अरुण नयन देखियत है आज ।
बसे जहां निशि तहीं सिधारो रसिकनके सिरताज ॥
मग जोवत मोहि रैन बिहानी तुम्हें नहीं कछु लाज ।
छीतस्वामी सो कहति भामिनी यहां नहीं कुछ काज॥

१६

हरिजूकी बालक लीला भावति ।
माखन दूध दहीको चोरी सोई यशोदा गावति ॥
प्रकट बिभङ्ग पूतना शोषण तृणावर्त वध कीन्हीं ।
ऊखल बन्धन जमल उधारन भक्तन को सुख दीन्हीं ॥
वत्स चरावन मुरली बजावत यमुना काछ विहारी ।
परमानन्द दासको जीवनि वृन्दावन सञ्चारी ॥

१७

जागत जागत रैन बिहानी ।
कहि गये सांझ आवन मेरे गृह बसे अन्त
रति मानी ॥
उर बिच नख चत प्रकट देखियत यह शोभा
अति बानी ।
भाल महावर अधरनि अञ्जन पीक कपोल निशानी ॥
निशि समग्र जोवत बीती मोकों आये प्रात
यह जानी ।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधरण सिधारो तहां जो तुम्हरे
मनमानी ॥

१८

प्रियसुत मुग्ध विनोदे वद विपिने किं किं विहितं ।
पल्लवचय मतिवल्लभ मधुना कुत्र शिरसि निहितं ॥
गैरिक चित्र विचित्रित वदनं कुत्र कृतं ललितं ।
कचचय मतिसय मेचक रूपं बरहि तेन प्रेषित
पिछ कलितं ॥
पायित मति घर्म निवारण कृत ये निर्मल नीरे ।
उपविष्ट विटप च्छाये सुत कुत्र गोपसहित मितो-
माया वद भुक्तं भवतावन तीरे ॥
चारित मति कोमल तृणवति देशे गोकुल मथ कुत्र
कण्टकनिचय मिथो खलु लग्नचरणं ॥
विलसित मिति वद कया लीलया भवता बालकुले ।
ब्रूहि कुत्र मिलिते रथ धावित मति विपिने विपुले ॥
स्थेय मितो बलभद्र युतेन सदा भवतातिमयेन ।
रति विज्ञापित महरु मदीयं मानय बहु विनयेन ॥
कृपय सदा सुहृदावर सूनो गृह दासे हरिदासे ।
श्रीवल्लभ वर चरण कमल सेवन विरचित पदवासे ॥

१९

कुत्र गतं निशि गोकुल नायक अन्य हृदय हित
पञ्चम शायक ।
नैवं करण महो समुचित मिह व्रजयुवती जन
बहु सुखदायक ॥
वदसि विनय वचनानि नतानि विसन्ति हृदय
मतिमानं ।
चित्त मितर युवतीषु लग्नमिति नैव मानये तव
सन्मानं ॥
प्रकट मखिल मङ्गेषु दृश्यति संप्रति चिह्नचयं ।
कृत विरहित मथ कश्मानये नाथ वचन विनयं ॥
दर्शयसि शिथिल मुष्णीषं रूप मथो विकलं ।
चित्त मिदं निज दुःख कृतं भवता सुन्दर सकलं ॥
कुङ्कुम मृगमद गन्ध रेणु युत वनमाला हृदये ।
कथमेवं करणं घटने शृणु मदभि मखं सदये ॥

नक्षत्राणि मया गणितानि निखिल निशि रहसि
निकुञ्जे ।
अहमपि सखीयता हताशाभूवसन्ति आभिर पुञ्जे ॥
जागरणारुण नयन युगं कुरु निर्मल मिह नीरेण ।
विहितं कथ सुनि सुखं भवता वद युवती वीरेण ॥
श्रीवल्लभ पद कमल रेणु वल्लभ हरिदास वरापि
विपाके ॥

२०

साय मिह सो जयति बालकं माता ।
अति मुग्ध मृदुल दुग्धोदनं निज मुखे सपदि
विदधातु मम सकल सुखदाता ॥

ध्रुव

प्रति कमले यदपि वंचन मभियाचते तदपि तेन
खलु भोजनीयं पुरा ।
खेलनीयं ततो बालक रखिल गोकुल जनैरिति वदति
डिम्भ किमिति त्वरा ॥
विपिन चरितं तया कि मिति वस मत्पुरं दर्शति
प्रायशो गोपकुल पालकं ।
वीजयति दक्षिण करेण कमलालयं मार्जयति
वामतो वदन मपि शालकं ॥
मुख विगलितं पयोबिन्दुचय मद्भुतं प्रोञ्छति प्रबलतर
दत्त दृष्या ।
भवति सुखिता परं निज सूनु दर्शने वदन लावण्य
पीयूष वृष्ट्या ॥
लोकसिद्धा मथो कथयति प्रिय कथा मति स्मित
मुग्ध सुख दत्त नयना ।
नैव सहते परं भोजन विलम्बनं मावित स्वच्छ
पर्य्यङ्क शयना ॥
बालचरितानि ललितानि खलु गायति प्राण
सदनानि रदनानि दृष्ट्वा ।
चीत करोतीह रोमाञ्चति प्रति पदं हसति रोदिति
परं मनसि हृष्टा ॥

अङ्क मुपवेश्य कर युगल मनु धावयति मुखगतं
ताम्बूल मथ सुखे दत्वा ।
उत्सङ्गमारोग मृदुल शयने मुदा शाययति
वनखिन्न मत मत्वा ॥
निज वदन चर्वितं पीयूष गर्भितं भुक्त शोषित
मथो यच्छ हरिदासके ।
वल्लभाधीश पदकमल सेवन विहित माव भर
संजात भक्ति सुख याचके ॥

२१

उषसि वद गोकुलाधीश कुत्र आगतं ।
इतर युवती जनित चिह्न शत वलित वर मृदुल
देहेक्षणे सपदि मानसा गतं ॥
किमु गृहं विस्मृतं नाथ मनिसि स्थितं मद्गृहं
दुःखजन स्मरण मागतं ।
याहि निज भवन मति माषणं त्यज मया शृणु दया-
रहित मम नैव सुरुषा गतं ॥
मान मुन्मूलयितु मुग्धे तो भवसि वद कथ
मुन्नि स्मारयसि विरह परिषागतं ।
अधिक मधिकं मपदि समुदयति मानसे दोष गणनं
निखिल नाथ कुपथागतं ॥
यत्र तव मानसं विषय कृत लालसं गच्छ तत्रैव यत्र
सुखमागतं ।
तन्मनोरथ मखिल माशु पूरय हरे विरह हर
दुःखभर महह विरहागतं ॥
परमहं वेद्मि ननु विस्मरा मीशनहि विस्मर त्यहह
गोकुलनृपहृद्यागतं ।
त्वमपिहि स्मारयितु मागतो गोकुलाधीश कर वै
किमुत कल्य समुपागतं ॥
एत देवास्ति विज्ञापनं नाथ मतिष्ट हृदये सतत
मद्य तु यथागतं ।
याहि कुरु शयन मति जागरारुण तरे लोचने समय
परिताप मनसागतं ॥

इति वचन जातमति मानिनी वदन सञ्जात माकर्ण्य
तनु हृदय कमलागतं।
पूरयतु गोपिकाजन मनोरथ मखिल मद्भुताकार
गति शयित शरणागतं॥
देहि वल्लभ चरण राजीव रेणुमपि विषयि जनसङ्ग
दुर्मति विरोधागतं।
धर्म रहितं सहित मति दोषकारकं रहह हरिदास
मथ चरण शरणागतं॥

२२

वन्दे वल्लभ वर तनुजं।
भक्ति शरण शरणी कृत साधन साधन रहित
सकल मनुजं॥
सुन्दर रूप विबोधित भाव वशीकृत गोकुलनाथं।
निरुपम भाव विभावित चतुर तमं मम विट्ठलनाथं॥
हरिसम्बधवती समुदाय विविध सम्बन्ध सहायं।
अतुल वचन तोषित तरुणीजन जीवन पतिमतिमायं॥
मनो वचो गोचर कृत विज्ञापित निजगण महिमानं।
निज सेवक सेवित पदकमल युगाहित हृदयालानं॥
प्रकटी कृत व्रत जीव सुखालय रसमय मञ्जुल रूपं।
श्रीभागवत विवृति बोधन निज जनमति शोधन भूपं॥
निज पीयूष विजित विधु मण्डल मण्डित मदन
सरोजं।
अखिल मनोमोहन निज सुखमा विरहित
मान मनोजं॥
मृगमद सम्भ सहज तिलक शोभित शोभगनिधि भालं।
कुञ्चित चिकुर समावृत वदन विनिर्जित
मधुकर मालं॥
कृपयति समयि कदापि हृदाकिङ्कर किङ्कर हरिदासे।
भवतु पुरं गोपोपति चरण-कमल भावं पदवासे॥

२३

भजे सखि गोकुलेशं।
नन्द भवन भूषणं नख भूषित हृदयेशं॥

ध्रुव

मन्दहास फुल्ल नास रुचिर मुख सरोजं।
वदन चन्द्रकिरण कान्ति रहित मानमनोजं॥
वदन कमल मधुप वदति राज दलक पुञ्जं।
वर्हमुकुट तट विलासि बहु विचित्र गुञ्जं॥
युवती मुख कमल मधुप चञ्चल तर नयनं।
अनुपम निज निहित भाव सतत कृत मृगनयनं॥
भ्रूतट धृतमाट विहित वर्त्तुलमसिविन्दुं।
मुखजित पीयूष भरित चारु विलस दिन्दुं॥

श्रीकृष्णाय नमः।

ललित—तिताला

जागहु जागहु हो गोपाल।
नाहिं न अति सोइयत है प्रात परम शुचिकाल॥
फिरि फिरि जात निरखि मुख छण छण सब
गोपनिके बाल।
बिन विकसे मानो कमल कोषते ते मधुकरको माल॥
जो तुम मोहि पत्याउ न सूर प्रभु सुन्दर
श्याम तमाल।
तो उठिये आपुन अवलोकिये तजि निद्रा नयन
विशाल॥

२

प्रात समय आवत हरि राजत।
चन्द्र जड़ित कुण्डल सखि श्रवण नि ताको किरण
सूर तन लाजत॥
सातइ राशि मिली द्वादशमें ता भूषण अवलङ्कृत
छाजत।
जलज तातत्य कण्ठ नाम धरि ताको पंक्ति मुकुट-
शिर साजत॥
पृथ्वी दही तात ताके कर मुख समीप मधुर
धुनि बाजत।

सूरदास प्रभु सुनहु मूढ़ हो भगत नि वश अभगनते
भाजत ॥

३

आजु अति शोभित है तन श्याम ।
मानहु री जीति नन्दनन्दन मनसिज सों सङ्ग्राम ॥
मुकुलित कच न समात मुकुट रुचि रोश अरुण
दोउ नयन ।
श्रम सूचित गति भांति आलस्य वश बोलत
बनत न बैन ॥
नखच्चत श्रेणि प्रस्वेद गातते चन्दन गो कुङ्क छूटि ।
मदन सुभट के शर सुदेश मानो लगी कवचपट फूटि ॥
दशन अङ्क सह पीक प्रकट भए सन्मुख शुभग प्रहार ।
सूरदास प्रभु परम शूर मैं जाने नन्दकुमार ॥

४

आए आए सुरति रङ्ग रस माते ।
मानहु चण विश्राम निमित्त प्रिय अभित भए
हैं ताते ॥
डगमगात मग धरत परत पग उठत न वेगि तहाँते ।
ज्यों गज मत्त चरण संकल कर गहि आनत ताठाँते ॥
उर नख चत कङ्कण चत पाछे शोभित हैं रुचि राते ।
मदन सुभटके बाण लागि तनु निकसि गए उहि घांते ॥
सांचे करत बोल अपने हैं टरत न मर्यादाते ।
सूर श्याम कहि गए आइ हैं पमु धारे तेहि नाते ॥

५

उनींदे कान्ह आए री मेरे नयन भरे रसमाते ।
डगमग पाइ धरत धरणी पर वेणु बोलत अरुझाते ॥
सब अङ्ग शीतल श्रमजल भीने बारम्बार भपाते ।
कज्जल रेखा रही अधरन पर काहेको श्याम लजाते ॥
विन गुण माल विराजे उरपर नखच्चत नाहिं छिपाते ।
सूरदास प्रभु सांचो कहो तुम कौन त्रिया रङ्ग राते ॥

६

आजु श्यामाजूके नयनकी वांते सुनरो सखी मोपे
वरणि न जाई ।
सुधा किरण बिच युग शुभ खञ्जन किये पान मनो
सोवत अघाई ॥
सुखन राग रङ्गीले रसमसे कहा कहूं सुन्दरि
सुन्दरताई ।
मर्कत विद्रुम कमल कोष में लेजावकको रेखा बनाई ॥
आलस तिरछे चाहत बिच हो बिच कछुक विकसित
जब लेत जंभाई ।
मन्मथ जय करि हरि जीतन को दयो बाण भ्रू
धनुष चढ़ाई ॥
देखि लाल लोचन विथकित भए परम चतुरता
सब विसराई ।
सूर श्याम रस रीझि रहे तहां तुम हम सहचरिको
कौन बड़ाई ॥

७

भोर हु भए प्रकट श्यामा जू तउ रजनी मन आनति ।
प्रिय अङ्ग रुचि लोचन पथ पूरित निशि अंधियारो
मानति ॥
अलिगण श्रेणी रटत नीरजनिपर सुनि रसना
रट लागति ।
पर न क्षत करणो माधव सों आनन्द शयन सुबानति ॥
सूरदास सहचरी सब प्रमुदित विरुद्ध यतन क र
भानति ।
दिन पुनि प्रकट विनोद रजनीके तरणि उद्योत न
मानति ॥

८

कहां ते लाए हो इन साथ ।
आलस्य भरे री जंभात जे अलि निपुण बसे तुम्हरे सङ्ग
मधुप गन्ध ले और न भाषत गावत गुणगण गाथ ॥
हों तुम ते सूधे हो बूझति तुम तो उलटे हो तरजत
हमपर हम जो कहा भरि लीन्हीं भाथ ।
व्रजपति रसिक तुम वेज रसिक जिन किये
चतुर्भुज सुनि प्रिय गोकुलनाथ ॥

९

कहांते आए हो उठि प्रात अङ्ग अङ्ग हो अरसात।
सब अङ्ग हो अरसात नयन अरुण रगमगी दोउ घूमत
आवत सुधि न कछु तन चिह्न बने सब गात ॥
लटपटी पाग मलगजी माला पीताम्बर उरपर जु
विराजत मन्दमन्द मुसकात।
यह छवि निरखि निरखिके ब्रजजन हसति
परस्पर लेति बलैया फूले अङ्ग न मात ॥

१०

आए आए हो तुम प्रियतम प्रात हो रैन अन्त बसे।
रजनो सुख अवधि बदो हमसों बोल तिहारे नसे ॥
अञ्जन अधर भाल जावक रङ्ग प्यारो पग शीर्ष घसे।
अटपटे भूषण मलगजी माला आधे शिर पाग लसे ॥
आलस्य वश डगमगत चरण गति जित तित
जात खसे।
ब्रजपति प्रिय ललनाको वचन सुनि नगधर नेकु हसे ॥

११

आए आए हो तुम श्याम कहांते भोर हि भवन
हमारे।
कहि गए हमसों बसे औरके सांचे बोल तिहारे॥
सगरो रैन मोहि मग जोवत गई विरह व्यथा
भई भारे।
ब्रजपति प्रिय तुम हो बहु नायक तजे मेरे
नयननके तारे ॥

१२

आए आए हो मनभावन कहांते भोर हि नन्ददुलारे।
तुम कियो रति सुख हमे दियो अति दुःख
सांचे हो बोल तिहारे ॥
तुम कियो मधुपान हमको तिहारो ध्यान
ऐसे कैसे बने प्राण प्यारे।
अब तो सिधारो तहां रैन बसे हो जहां गोविन्द प्रभु
पीय हमारे ॥

१३

रङ्ग रसिक नन्दनन्दन रसिक भामिनो मृगनयन
कमल नयन नागर नागरी।
गिरिधर कल हंस हसनी मानो गोपतरुणि दोउ
सम तूल गुणन सागर सागरी ॥
करत केलि वनविहार निरखि जोट लजित मार
गावत मिलि वदन चारु ललित रागरी।
खग मृग पशु सुनत नाद पिवत अधरसुधा स्वाद
कृष्णदास बदत वाद सुफल भागरी ॥

१४

प्यारी तेरे नयन रगमगे निश पिय सङ्ग जागे।
अरुण वरण शोभित आलस्य भरे अतिशय
रति रस पागे ॥
पलकां पोक भौंहें रमि रहीं आली मानो कमल परागे।
कृष्णदास गिरिधरण प्रिय सङ्ग हसि हसि हसि
सुख लागे ॥

१५

नींद न परी रैन सिगरी सुंदरिया मेरी जु गई।
याहीतें झटपटात उठि आई चटपटी जियमें
बहुत भई ॥
तुम्हरो कान्ह पनघट खेलत हो बूझहु महरि हांस
होय लई।
विसरत नहीं नगीनो चोखो जिय तें टरत न
झलक नई ॥
चतुर्भुज प्रभु गिरिधर चलो मेरे घर देहों दधि
चाहो जितई।
मेरो व जोवनि मोहि को देहो तव चरण को चेरो
हो हों युग वितई ॥

१६

कहि धों री नवेली कहूं ते देखे नन्दनन्दन।
बूझो री मालतो कहां ते पायो तन चन्दन ॥
कहि धों कुन्द कदम्ब वकुल चम्पक ताल तमाल।
कहि धों कमल कहा कमलापति सुन्दर नयन
विशाल ॥
कहि धों री कुमुदिनो कदली कछु कहि कोविद
कण वीर।

कहो तुलसी तुम सब जानत हो कहां घनश्याम
शरीर ॥
कहि धौं मृगी मया करि हम पर कहि धौं मधु
पर शाल।
सूरदास प्रभुके सङ्गी तुम हो सब दीनदयाल ॥

१७

नवल लाल वृषभानु दुलारी आवत कुञ्ज भवनतें भोर।
इन तन वनी मलगुजी सारी प्रिय उर माल रही
बिनु डोर ॥
आलस्य वश अंश नि भुज धरि धरि आवत अति
छवि पावत।
मधुपमाल सौरभ वश गुञ्जत सुयश तिहारे गावत ॥
वृषभानु पुरातन गई लाड़िली नन्द सदन गए श्याम।
छीत स्वामी गिरिधरण रङ्गीले विलसे चारो याम ॥

१८

मेरे तुम आए भोर भए पिय रैन कहां गंवाई।
कौन नारिके वश परे मोहन सांचो कहो कि
न जानि परो चतुराई ॥
उर हि हार बिनु डोर विराजत शिथिल अङ्ग सब
नखक्षत देत देखाई।
छीत स्वामी गिरिधर कहो मोसो रसिक शिरोमणि
जावक पाग रङ्गाई ॥

१९

राजत दोउ रतिरङ्ग भरे।
सहज प्रीति विपरीत निशा सब आलस्य सेज परे ॥
अति रणवीर परस्पर दोऊ नेक हु कोउ न मुरे।
अङ्ग अङ्ग बल अपने अस्त्र नि सो रति सङ्ग्राम लरे ॥
मगन सुरझि रहे सेज खेतपर इत उत कोउ न डरे।
सूर श्याम श्यामा रति रणतें एक पग पल न टरे ॥

२०

करि शृङ्गार दोऊ अरसाने।
प्रथम बोल तमचर सुनि हर्षे पुनि पौढ़े दोऊ
अरसाने ॥
रतिरण जूझि याम त्रय नीके सेज परे उठि पुनि
मुरझाने।
मानो सूर खेत सम लरिके गिरे उठत फिरि गिरत
लजाने ॥

२१

बोले तमचर चारो यामको गजर मारो पवन भयो
शीतल तमित गसिता तई।
प्राची अरुणानी भानु किरण उजारी नभ छिपे उड़गण
चन्द्रमा मलीनता लई ॥
मुकुले कमल वत्स बंन्धन विछोहो ग्वाल चरै
चली गाय दुजपैती करको दई।
सूरदास राधिका सरस वाणी बोलि कहे जागो
प्राणप्यारे जू सवारे को समय भई ॥

२२

छोटी छोटी गोड़ियां अङ्गुरियां छोटी छवीली नख
ज्योति मोती मानो कञ्ज दलनि पर।
ललित आंगन खेलै ठुमुकु ठुमुकु डोलै झुनुनु झुनुनु
बाजै पैंजनी मृदु मुखर ॥
किङ्किणी कलित कटि हाटक रत्न जड़ी मृदु कर
कमल नि पहुचियां रुचिर वर।
पियरी पिछौरी झीनी और न उपमा भीनी बालक
दामिनी मानो ओढ़े ठाढ़ो वारिधर ॥
उर बघ नख कण्ठ कठुला झड़ूले बार वेणी लटकन
मसि विन्दु मुनि मनहर।
अञ्जन रञ्जित नयन चितवनि चित्त चोरै मुखशोभा
पर वारौं अमित असम शर।
चुटुकी बजावत नचावत नन्दघरनि बालकेलि
गावति मल्हावत प्रेमसों मर ॥
किलकि किलकि हंसै दुहुं दूध दंतुली लसै सूरदास
मन वसै तुतरे वचन वर ॥

२३

आई तू डगमगाति ऐंड़ाति जंभाति रगमगो
रङ्ग भरिकै।

चन्द्र उदय मुख देखति हो री कर दर्पण प्रतिबिम्ब
निहारि धों पीकलीक नयन छवि परिकैं ॥
बिथुरे अलक सुथरे मुख ऊपर मनो सुधा पीवत
अलिमाल आनन्द हरिकैं ।
सूरज प्रभु रसिक राय रस वश कीन्हों बनाय सुख
दीन्हों मन अघाय नवला नव रीझे मन ढरिकैं ॥

२४

नवल निकुञ्ज नवल रस दोऊ राजत रङ्ग हि भौन ।
कुसुम नि सेज भोर उठि आवत आलस्य युत
अंशनि भुज दोनि ॥
अरुण नयन कुच नखरेख विराजत श्रमजल वसन
पलटि तन लीने ।
सूरज प्रभु प्रिय प्यारी को सुख निरखत सखिन
सहित ललिता दृग कीने ॥

२५

दोउ वनते व्रजधाम गये ।
रति सङ्ग्राम जीति पिय प्यारी भूषण सजत नये ॥
वे व्रज गये आपु अपने गृह चितते कोउ न टारत ।
मनसा वाचा कर्मणा ए दोऊ एकौ पल न विसारत ॥
जैसे मीन नीर नहि त्यागत खण्डित हठ पूरन ।
सूर श्याम श्यामा दोउ देखौ इत उत कोउ न अधूरन॥

२६

रास रमि अमित भई व्रजबाल ।
निशि सुख दै यमुना जल ले गये भार भयो
तिहिं काल ॥
मन कामना भई परिपूरण रही न एको साध ।
षोड़श सहस्त्र नारी सङ्ग मोहन कीन्हो सुख आगाध ॥
यमुना जल विहरत नन्दनन्दन सङ्ग मिली सकुमारि ।
सूर धन्य धरणी वृन्दावन रवितनया सुखकारि ॥

२७

राधे छिरकत छैल छबीली ।
कुच कुङ्कुम कञ्चुकि बन्द टूटे लटकि रही लट गीली ॥
वन्दन शिर ताटङ्क गण्डपर रत्न जड़ित मणि लीली ।
गति गयन्द मृगराज सुकटि पर शोभित किङ्किणी
ढीली ॥
मच्यो खेल यमुना जल अन्तर प्रेम मुदित
रस झीली ।
नन्दसुनु भुजग्रीव विराजित भाग सोहाग भरीली ॥
वर्षत सुमन देवगण हर्षित दुन्दुभि सरस बजीली ।
सूर श्याम श्यामा रस क्रीड़त यमुन तरङ्ग थकीली ॥

२८

प्यारो चिते रही मुख पियको ।
अञ्जन अधर कपोल नि वन्दन लाग्यो काहु त्रियको ॥
तुरत उठी दर्पण कर लीन्हे देखो वदन सुधारो ।
अपनो मुख उठि प्रात देखिके तब तुम अनत सिधारो ॥
कज्जल वन्दन अधर कपोल नि सकुचे देखि कन्हाई ।
सूर श्याम नागरि मुख जोवत वचन कह्यो नहि जाई ॥

२९

क्यों मोहन दर्पण नहिं देखो ।
क्या धरणी पर नख नि करोवत क्यों मोतन नहिं
पेखो ॥
क्यों ठाढ़े बैठत क्यों नाहीं कहा परो हम चूक ।
पीताम्बर गहि कह्यो बैठिये रहे कह्यो ह्वै मूक ॥
उघरि गयो उरतें उपरैना नख चत विन गुण माल ।
सूर देखि लटपटो पाग पर जावकको छवि लाल ॥

३०

भोर हो श्यामा श्याम खरे ।
जलद नवीन मिली मनो दामिनी वर्षि निशानि झरे ॥
शिथिल वसन तन नीलपीत द्युति आलस्य युत पहिरे ।
कञ्चुक बुन्द पर रति श्रमकणिका बादर वरण करे ॥
भूषण विविध भांति मिड़वारो रतिरस उमगि भरे ।
कज्जल अधर तमोल नयन रङ्ग अङ्ग अङ्ग झोल परे ॥
प्रेमप्रवाह चली मनो सरिता टूटी माल गरे ।
शोभा अमित विलोकि सूर प्रभु क्यों सुखजात तरे ॥

३१

ऐसे हि ऐसे रैन विहानो ।
चन्द्र मलीन चिरैया बोली सुनी काककी वानी ॥
वे लुब्धे अनुत हि कान्ह के मनकी आश भुलानो ।
कपटो कुटिल क्रूर कहा जाने श्यामनाम जिय आनी ॥
कोकिल श्याम श्याम अलि देखो श्याम रङ्ग है पानी ।
श्याम जलद अहि श्याम कहावत सूर श्याम सो वानी ॥

३२

मैं जानी जहां रति मानो ।
तुम आये हो मेरे ललना जब चिरिआं चुहु चुहानी ॥
मुखको बात कहा कहो ठानी बात नहीं पहिचानी ।
दृति पर अंखिआं रसमसानी अरु पगिया लटपटानी ॥
भाल जावक रङ्ग बनानी अधर अञ्जन प्रकटानी ।
बिन गुण बनो माला सब अङ्ग अङ्ग उलटी निशानी ॥
सूरदास प्रभु गुण निधानी अन्तर गतिकी जानी ।
धन्य त्रिय तुम को जो सुखदानी सङ्ग जागत रैन विहानी ॥

३३

ऐसे हि सुख सब रैन विहानो ।
भोर भये निज धाम चले दोउ मन मन नारि सिहानी ॥
प्यारी गई वृषभानु पुरातन श्याम जात नन्दधाम ।
प्रमोदा महल द्वार हो ठाढ़ो उनि देखा वह वाम ॥
प्रात चले वन ते व्रज आये मन मन करति विचार ।
सुनहु सूर सकुचत ठठुकत ता गृह गये नन्दकुमार ॥

३४

वन तनते आये अति भोर ।
राति रहे कहं माहन घेरत आये हो ज्यों चोर ॥
अङ्ग अङ्ग उलटे आभूषण वन झमें तुम पावत ।
बड़ भागी तुम ते नहि कोई कृपा करत जहां आवत ॥
औचक आइ गये घर मेरे दुर्लभ दर्शन दीन्हों ।
सूर श्याम निशि हो कहुं जागि भावति अङ्ग अङ्ग चीन्हों ॥

३५

आजु अति रैन उनीदे लाल ।
तुम पौढ़ो मैं चरण पलोटौं जिय जिनि जानो ख्याल ॥
सुमन सुगन्ध सेज है डासो देखति अङ्ग बेहाल ।
मेरे कहे कान्ह कछु भोजन करौ न मदनगोपाल ॥
निशि श्रम भयो घोर मोहि आवति सुनति परस्पर बाल ।
सूर श्याम सुनि वचन कपट त्रिय भरि लीन्हो अङ्ग माल ॥

३६

राधा हरिके गर्व भरी ।
सखियन को आगम जब जान्यो बैठी रही खरी ॥
उत व्रजनारि सङ्ग जुरिके सब हंसति करति परिहास ।
चलो न जाइ देखिये री वा राधाको उजुहास ॥
कैसो वदन शृङ्गार कौन विधि अङ्ग दशा भई कैसी ।
सूर श्याम सङ्ग निशि रसकी ये निधरक ह्वै बह वैसी ॥

३७

श्रीकृष्ण कृपाल कृपानिधि दीनबन्धु दयाल ।
दामोदर वनवारी मोहन गोपीनाथ गोपाल ॥
राधारमण विहारी नटवर सुन्दर यशोमतिबाल ।
माखन चोर गिरिधर मनहारी सुखकारी नन्दलाल ॥
गोचारण गोविन्द गोपपति जिय भावन मञ्जुल ग्वाल ।
छीतस्वामी सोई अब प्रकटे कलिमें वल्लभ लाल ॥

३८

हरि सों तू बैठी दे कपोल कर ।
मानत नाहि नयम नीर डारति उसकति छतियां करत धर धर ॥
चरणनि शीर्ष नाइ मनाइ लइ ले ले पहपहे निकुञ्ज घर ।
तोरि गढ़ मान गोविन्द को प्रभु जाति रतिपतिरूप सुखद मर ॥

३९

पहरि केसरी सारी प्रिया प्रिय मुख कारखत ।
देखत निज रूप नयन निभरि भरि अङ्ग अङ्ग परयत अरु परखत ॥
बोलत तुतरात लागत सुहावन सींचे व्रजजन अमृत वर्षत ।

गोविन्द प्रभु गति गयन्द चलत भावत सब नि जिय
हंसि हर्षत ॥

४०

प्रात हो आये हो नन्दलाल।
जावक भाल अधर मसि अञ्जन पीक लगाये भाल ॥
लटपटी पाग उनींदे नयननि उरसि मलगुजो माल।
चीत स्वामी गिरिधरण बनी छवि चलत मन्दगति
चाल ॥

४१

मृदु कपोल लोल युगल कुण्डल कृत शोभं।
हीरक कृत चिवुक भूषण विरचित विचोभं ॥
कण्ठ शोभि मुक्ता मणि भूषण धृत ग्रीवं।
भाव भरतया वशीकृत युवती जन जीवं ॥
कटितट गत पीत वसन शोभित निज रूपं।
पद नख सुखमा विमान सुर नर मुनि भूपं ॥
विज्ञापन मेतदेव मानय मम वचनं।
श्रीवल्लभ चरण कमल कृपया कृत रचनं ॥

४२

प्रिय सखि विरहे विपिन विचरणं विरहि मनुज शरणं।
गोकुल पति पद भावता मति शयितशो करणं ॥

ध्रुवं।

विविध विटप युत लतावृन्द सन्दर्शन जनितानन्दं।
शिशिरित निखिल शरीर पवन विचलित नव कुसुम
मकरन्दं ॥
मुदिर मुदित मानस घननाद विलासि रव श्रवणं।
अद्भुत पचति युग दर्शन कृत हृदय दुःखय विहरणं ॥
फलित रसाल शाल शाखागत पिक कूजितक सुखं।
स्थल कमलाह्वित शोभोपमित युवति जन सरस सुखं ॥
हरित रसालोकन चिन्मित हरिरूप नाम युगलं।
संवर्द्धित हृदयाहित राग गान कृति रणित गलं ॥
गगन विलसदति घन घनवृन्द विलोकन कृत
सुखदानं।
कम्पित शाखामत मृदु पल्लव चलन विहित सन्मानं ॥

विविध स्थल विरचित लीला विज्ञापन बहुतर निपुणं।
प्रिय सन्निधि सुख निचय विचारण परमानस कृपणं ॥
ईदृश दशायुतं हरिदासं दर्शय गहन विहारं।
हृदय निहित हरिवल्लभ वर पद नख विद्युति
मणिहारं ॥

४३

मानिनि धो मा सहसे किमिति वियोगं कुरु हरिणा
सम्भोगं।
वारय तदधर पीयूषेण विषम चेतो भवरोगं ॥

ध्रुवं।

निज हस्तौ रचितातिमृदुल तर कुसुम रचित
शयनेन।
प्रति पद मवलोकित पद विकृत चपल चकित
नयनेन ॥
भावित शयन शयित भवती सन्दर्शन जनित सुखेन।
कृपयिष्यति दयितेति तोषभसनृतति हसित सुखेन ॥
पुनरपि तालवृन्द कृत पवन विशेष वशित हृदयेन।
श्रम विन्दु निकलयता वदन कमल मनसा सदयेन ॥
कूट लाल कतति नयन समागति रति जागरभितेन।
मार सरे रति परुष तरैरिह विरह दशनितेन ॥
मुख कमलाह्वित गन्ध लोभ गुण भर गणित या सेन।
स्तन तट ललित हीर शोभा भर सतत स्मृत रासेन ॥
संवाह्वित सरसिज सुन्दर भावित पद कमल युगेन।
सकरुण हृदय कमल सम्पादित भाव वदेक सुगेन ॥
श्रीवल्लभ पद कमल विमल मति हरिदासे सदयेन।
मनसा सखि भावय निज भावं भाववतो विनयेन ॥

४४

हरि मनसर सरसिज नयने।
कुरु शयनं हरिणा सह सुन्दरि रचित कुसुम शयने ॥

ध्रुवं

विरह भाव समुदित हृदि ताप निवारय गीत गुणं।
प्रत्यवठा टागगिनि रूपम सुखमा परिभावन निपुणं॥
चिर मवलोकित पद कमलाकृति तरु पल्लव निचयं।

चिन्मित चरण चमत्कृति चिन्वित दृष्टि रचित विलयं ॥
भाववशाशय विहित विनोद विशेष निधान विचारं ।
भावित रुचिरावयव विलोकन विहित नयन सञ्चारं ॥
भावित भवती परिरम्भण कृत सम्भ्रम जनित सुखं ।
मधुराधर पीयूष प्राण सम्पुटित सलाल सुखं ॥
भावित मानापनयन करयुग धृत पद कमल वरं ।
नख विधु किरण कौमुदी मोद विनोद विशेष परं ॥
अनुसंहित निज विरह दशा समुदित मानस सन्तापं ।
अन्वेशिततनु दाहि विनाशक शीतल कमल कलापं ॥
शिशिरोपाय विधान विहित निज जन्म सफल विवासं ।
श्रीवल्लभ वर चरण कमल परिमल लोभित हरिदासं ॥

४५

मानिनि तव पद पतिताहं ।
अङ्गी कुरु गोकुल पति सङ्गं येन सपदि भविता हरि ताहं ॥

ध्रुवं ।

मानय विनय वचन मति दानं तवमिलन करणे सुहिताहं ।
नैव सुचित मति रोषवती भवति कृपया दासी विहिताहं ॥
अवलोकयति पथं तव सुन्दरि मान वारणे सखि निहिताहं ।
इति जानी हि चरण परिचरण निरन्तर करण दोष रहिताहं ॥
भवती रति सम्पादन कृतये निरुपधि गोकुलपति रचिताहं ।
यदि ना यासि तथैव भवामि तदा निपुणैकमध्य लिखिताहं ॥
त्यजसि न मान महो कथमपि तदोतर युवतीभीरतो वर्जिताहं ।
यदि न भवति मम विहित मिदं सखि किमु कथयामि मध्य वनिताहं ॥

पदनामृत कर किरण चकोरं दर्शय सुखितं भूलुठिताहं ।
इतर सखी जन साहं कृत बहु वचन रचन शोचन स्तुतिदाहं ॥
जीवन मपि मम दुर्लभ मधुना यदि निज सङ्ग भङ्ग गमिताहं ।
कथं दर्शयिष्यामि सुखं पुनरपि हरिणा बहुधा लपिताहं ॥
इति सहचरि वचनानि हृदाकरण्य अति वदति सखि सखि चलिताहं ।
श्रीवल्लभ वर चरणरेणु हरिदास मदीय कृपा वलिताहं ॥

४६

विरहे सुन्दर वर्षा समये ।
वद जीवामि कथं मम दोषे रतिशयिते रिह सखि विपरीते सदये ॥
वर्षति जलदे विरहा नलदे गोवर्द्धन शिखरे ।
पर पुष्पे शत घुष्टं कूजति वदति केकि मुखरे ॥
लसति भूमि रति हरिता पवन विचलिते तृण निचये ।
इन्द्रगोप कैतव निज मूल विलसदनुरागमये ॥
विविध शिलासु अत्र निज रूप युता सुविराजति नाथे ।
निज सुख दर्शन जनितानन्द विलास गीत गुण गाथे ॥
नव घन मध्य शोभिता सुमुखि हृश्वले सित स्तवकमाला ।
मेघनाद मनुर्गजति मुरली चरति रसं सुरशाला ॥
उदयति विद्या दतीव चञ्चला चालयतीह जनं ।
असित मेघगण विरचित तमसा बहु भीषयति वनं ॥
रञ्जित रुचिर कुसुम्भ वसन परिधान विराजित रूपे ।
गायति मेघ समागम राम निरुपधि गोकुल भूपे ॥
इति विज्ञापित मतिशय करुणे विरहित हरिदासेन ।
श्रीवल्लभ पद कमल पराग धारिणि विरचित वासेन ॥

४७

सततं विचरति वृन्दा विपिने ।

गोकुल पति रति गोपाल बालकं रक्षदेषि दिने॥
निज वदनेन वदति नामानि गवामति रति वचनेन।
मनसि मोदते विपुल रसागत सरस कुञ्ज रचनेन॥
निर्मल नीर धौत शिखरोपरि रुचिर शिला मुपविश्य।
भुङ्क्ते भवन समागत मन्नं निज गोपेशु निविश्य॥
अत्यङ्गुलि दल विविध कलानि दधानि रुचिर हस्ते।
मध्य मोदनं तनुते दृष्टिं जननी कृत शस्ते॥
पिवति विमल पानीयं यमुनाया मञ्जलि बन्धेन।
प्रतिविम्ब पश्यति सुचिरं निज लोचन सम्बन्धेन॥
मृदु वादयति वेणु मति मधुरं चलति धेनु सङ्गे।
हरति ताप मध्य कानन देशो विरचित तृण भङ्गे॥
कनक चषक गत फेन समूहं पिवति गोप मथितं।
शिशिरयतीह बालकुल हृदयं बहु विरह व्यथितं॥
श्रीवल्लभ पद कमल पराग राग रञ्जित हृदयं।
हरिदासं सुखितं मावे रयि कुरु दुर्जन विलयं॥

४८

चरणं वहि सरस हृदये।
व्यथतेसि तृणमूले रतिपदमिति चिन्तैकमये॥
नहि समुचित मिह धरणि विचरणं सुन्दर
मति कमले।
उद्भटभाव निरन्तर निर्गत नयन नीर विमले॥
श्रीरपि कुरुते सपदि सहायं।
यद्यपि वन चलने तदपि वाधते मामक हृदयं॥
चरण चिह्न कलने यद्यपि भूमि रयो रस
सहिता त्यजति तथापि हरे।
दह यदि गन्तुं चण मुत्सहसे कर वै सपदि करे॥
व्रज सम्बन्धि गवा मुनगं किमु गोपीजनवृन्दे।
दोषमयो चेतसि चिन्तयसे लौकिक मति मन्दे॥
किमिति विभेषि ताप संस्पृष्टे धारयितं चरणं।
फणिफण धृत पदपद्म किमद्भुत मेव तव करणं॥
कर्दमजनित दुःख मर्षयसि पदा जनितानन्देन।
भूमिरहह वियोगे विहितं किमु मयि गोविन्देन॥

श्रीवल्लभ पदकमल सदागति सङ्गत गन्धयुतेन।
योजय निज चरणं करुणामय दास सरस हृदयेन॥

४९

मित्र मायाहि करवै पयो मन्थन मिह
भोजनीयं त्वया।
पत्रं विरचित रुचिर पात्र निहितं हरे ननु विधेया
ममो परि दया॥
शीतलं भये ति ननु भाव सुन्दर हरे शृणु वने यत्र
विहितं मया।
किमिति हि विलम्बसे तिष्ठ मम सन्निधौ
गोपसुतमण्डली विहित विनया॥
दर्शनानन्द गोविन्द सम्प्रति यथा भवति दुःखालि
रथ रचित विलया।
दृष्टतर नीलमणि मञ्जु मुखलग्न मधु दुग्ध कण
परम शोभैकनिचया॥
तिष्ठ कथयामि परमद्भुता मथकथा मयि किमपि
मधुवचन मुदित मथ चैकया।
मामहह कानने करुणया योजय प्रणत पति
गोकुलाधीश पदवया॥
श्रायामि किमपि कथयामि तव कर्णयो
रतिशयित गुप्तमथ लोक विरचित भया।
मञ्जु कुञ्जे रचय सङ्केत मद्भुतं शीघ्र मह्मायायामि
चरणगति कृतरया॥
विजयिष्यामि परमति रमण सम्भ्रमे दर्शनीयो
हरे भक्त कृपया।
योजनीयो स्मिन्नमु सपदि भवता कदा कार्य करणे
रसिक जननाथ सहितया॥
दर्शयिष्यति कदा मत् प्रभु स्वामिनो सहस वदनं
विहित विपरीत मिच्छया।
मदभिनन्दन मथोदत मनसा कदा कर्णयिष्यति
सुरति सङ्ग्राम कृत जया॥
देहि निज दास्यमिह वल्लभाधीश पदकमल सेवन
विहित भक्तिज फलाशया।

सतत-सहितेपि हरिदासके करुणतम-विलस-
विपिने सरस नृत्यत तधिया ॥

५०

यथाह शृणु मा याहि वनं किमुचितमितिगमनं ।
चारणोयमिह गोपैरभितो व्रजनृपधेनुधनं ॥

ध्रुवं

करवैष्टत-वसन-भूषाभिरलंकरणं तव देहे।
रहसि विराजित-विपुल-विताने वस मामक-गेहे ॥
अतिसुगन्धमुद्वर्त्तनमतिशयशुद्ध-गन्धतैलं ।
स्नानमथ कुरु नीरै रुष्णैरुरीकुरु चैलं ॥
कच्छपटं परिधेहि तिलकमपि वितनु विपुलभाले ।
तनुसुष्णीशं शिरसि विधेयं ग्रथितालकमाले ॥
नूपुर युगमतिचपलं पदयोरुत भुजयोरपि धेयम् ।
कङ्कणचयमथ मध्यमङ्गदं गुच्छसहितमपि देयम् ॥
हृदय-मध्य-मणि-मुक्ताजड़ित-पदकं नाथ विधेयम् ।
मुक्ताकनकमालिकायुगलं जय जगदखिल भजेऽयम् ॥
उपविश पर्य्यङ्के मृदुरम्ये कुरु सुन्दर-शयनम् ।
तनु वै कर-क्षत-मङ्ग-मर्दनं शिशिरीकुरु नयनम् ॥
इति सरसं वचनं राधाया रतिरसभावयुतम् ।'
शृणु वल्लभवर-चरण-कमल-तलगत-हरिदासनुतं ॥

५१

हरिरिह दिवसैर्वसति वने ।
गोचारणमपि कुरुते गोपै रमितो विटप-घने ॥

ध्रुवं

नैव रोचते किमपि सुमुखि मम हरि-विरहित-सदने।
विरहवह्निरपि तनुते दाहं हृदये नृप-मदने ॥
द्रष्टुमहो कामयते नयनं गोपतनय-वदनम् ।
अलिकुल-सदृशालकमतिसहितं मुग्ध-दुग्धरदनं ॥
नासासततं विहितदुराशा देहकमल-गन्धम् ।
आदातुं तस्या ननु तनुते सैव हृदयबन्धम् ॥
रसना कुरुते सततं मनोरथमधर-रसं पातुम् ।
वागपि रमानुरागवती विदधाति मनो गातुम् ॥

——o——

श्रीकृष्णाय नमः

पद्—तिताला

बनि आज नन्दलाल सखि प्रेम मादक पिये
सङ्ग ललना लिये यमुना तीरे ।
फूली केशर कमल मालती सघन वन मन्द सुगन्ध
शीतल समीरे ॥
नीलमणि वरण तन कनक मण्डित वसन परम
सुन्दर चरण परसि माला ।
मधुर मृदुहास परकाश दशनावली छवि भरे
द्युतरात द्दय विशाला ॥
किये चन्दन खौर वदनारविन्द मकरन्द लुब्धे
भ्रमर कुटिल अलके ।
हलत कुण्डल लटकि चलत जब श्यामघन मणिनको
कान्ति कल गण्ड झलके ॥
एक चम्पक तनी कृष्ण रस माती करे राग पञ्चम
सङ्ग लागि सोहे ।
एक हरि मुख निरखि धरि रह्यो ध्यान मन चित्र
सम भई हरि हियो मोहे ॥
एक दामिनसी भुज मेलि ग्रीवा बात कहन मिस
आय मुख मुख सों लायो ।
एक नव कुञ्जमें खैंचि रह्यो कटिबन्ध आपनो लाल
चित चार पायो ॥
एक श्याम छि हेरि शुभग लोचन भरि विहंसि
बोली भले कान्ह कपटी ।
एक सोंधे भरी छूटे बारन खरी चन्द्रमुखी विन
कञ्चुकी रीझि लपटी ॥
एक श्यामा कनक कञ्ज वदनी प्रेम मकरन्द भरी
हरि निरखि बिकसी ।
ताके रस लोभि रह्यो लपटि सांवरो भ्रमर प्राण
प्यारी भुजन बीच जु लसी ॥
रसिक मणि रङ्गभरे विहरे वृन्दा विपिन सङ्ग सखि
मण्डली प्रेम पागी।

कहै भगवान् हित राम राय प्रभु सुमिरि सोई
जामि जाहि लगन लागी ॥

२

आज नन्दलाल मुख चन्द्र नयनन निरखि परम
मङ्गल भयो भवन मेरे।
कोटि कन्दर्प लावण्य एकत्र करि वारों तब हौं
जब हि नेक हेरे ॥
सकल सुख सदन हर्षित वदन गोपवर प्रबल दल
मदन जनो सङ्ग घेरे।
कह्यो कोउ कैसे हु नाहि सुधि बुद्धि रहै गदाधर
मिश्र गिरिधरण टेरे ॥

३

नवल व्रजराज को लाल ठाढ़ो सखी ललित
सङ्केत वट निकट सोहै।
देखि री देखि अनिमिष या वेषको मुकटकी लटक
त्रिभुवन मोहै ॥
स्वेद कण झलक कछु झुकी सी पलक मानो प्रेमकी
ललक रसरास किये।
परम बड़ भाग वृषभानु नृपनन्दिनी राधिका
अंश पर बाहु दिये ॥
मणि जड़ित भूमि रही नव लता झूमि रस पुञ्ज
शुभ कुञ्ज छवि कहि न जाई।
नन्दनन्दन चरण स्पर्श हित जानि यह मुनिनके
मन नि मिलि पांत लाई ॥
परम अद्भुत रूप सकल गुणभूप यह मदन मोहन
विना कछु न भावे।
धन्य हरिभक्त जिनकी कृपाते सदा कृष्ण गुण
गदाधर मिश्र गावे ॥

४

पाछली रात परछांही पातनकी मेरो लालजो
रङ्ग भीनो डोलत द्रुम द्रुम तरनि।
बन हि देखत वने लागि अद्भुत मनै ज्योतिकी
घातसों निकसि रही सब धरनि ॥
कृष्णके दर्शको अङ्कके स्पर्शको भई री मग्न
तब भई हां मज्जन करण।
नूपुर ध्वनि शुनत चकित ह्वो थकि रह्यो परि गयो
दृष्टि गोपाल सांवरे वरण ॥
जरकशी पाग पर मोर चन्द्रिका बनी कमलदल
नयन भ्रू बङ्क छवि मनहरण।
धाई तव गहन को रस बचन कहन को आवति
छवि सों अति चरण सों धर धरण ॥
रोम रोम रमि रह्यो मेरो मन हरि लयो नाहि
विसरत वाको झुकनिमें भुज भरन।
कहै भगवान् हित राम राय प्रभु सों मिलो लोक
लज्जा गई भई हो परवश परन ॥

५

मुकुट माथे धरे खोर चन्दन करे माल मुक्ता गरे
कृष्ण हेरे।
पीत पट कटि कसे कान कुण्डल लसे निशिदिना
उर वसे प्राण मेरे ॥
मुरलिका मोहनी कर कमल सोहनी ले कनक
दोहनी खरिक नेरे।
लाल लोचन वने ललित रस में सने मैनसे
अनगने ग्वाल टेरे ॥
किङ्किणी काछनी देत शोभा घनी देखि कौस्तुभ
मनी सुर छकेरे।
प्रभु छवीले रङ्गीले रमीले आली लगनकी
मगनमें मन वसेरे ॥

६

कृष्ण कथा विन कृष्ण नाम विन कृष्णभक्ति विन
दिवस जात।
ते प्राणी काहे को जीवत नहि मुख वदत
कृष्णकी बात ॥
श्रवण कथा नि श्यामसुन्दरकी रामकृष्ण
रसना न स्फुरात।
मानुष जनम कहां पावे गो ध्यान धरे घनश्याम गात ॥

जो यह लोक परम सुख राखत अरु पर लोक
करत प्रतिपाल।
परमानन्द दासको ठाकुर अति गम्भीर दीनानाथ
दयाल॥

७

आज उठि भोर नव कुञ्ज कानन सखो ठाढ़ी
भई राधिका रङ्ग भीनो।
विलसि सुख सङ्ग नवरङ्ग प्रिय श्यामघन कामको
सैन सब जीति लीनो॥
शुभग विकसित वदन नयन अति रसमसे मोरि
मुख हंसो कछु सकुच कीनो।
श्रीविठ्ठल गिरिधरण सङ्ग नागरी जागि सब रैन
आनन्द दीनो॥

८

हौं चली री जाऊं जहां मोहन मुरली मधुर
मधुर ध्वनि बाजी री।
यमुना पुलिन शुभम वृन्दावन मदन गोपाल
विराजी री॥
सजल नील घन वरण श्याम तन दशन दामिनि
छवि छाजी री।
मोर मुकुटको शोभा निरखत इन्द्रधनुष द्युति लाजी री॥
कुण्डल श्रवण कण्ठ कौस्तुभमणि आनन्द मुख हि
प्रकासे री।
चरण धरण कहत न बनि आवै कौतुक कुञ्ज
विलासे री॥
घूंघरवारे अलक नि झलके चन्दन तिलक ललाट री।
अमल कमलदल मञ्जुल नयनन जोहत हैं
मम बाट री॥
हरि ठाढ़े हैं कल्पतरु वर तरे मोहि देखि हंसि
देहैं री।
अति ललचाइ लटक सूं चली जब सुध बुद्धि सब
हरि लेहैं री॥

जाको मन मिलि रह्यो री कथासों ताको अकथ
कहानो री।
कहै भगवान् हित राम राय प्रभु सुमिरण माझ
समानो री॥

९

हौं मिली री तहां जहां खोरि सांकरी सुन्दर
श्याम सलोना री।
इत ते हौं जात उत ते वे आवत ओढे पोत
उढोना री॥
हंसि मुसिकाइ लटकि जब बोले पूछत हैं वधू को
नारी।
हौं सकुची मोपें उत्तर न आयो इन ठग ठगी
ठगोना री॥
चित्र लिखो सो रहि गइ ततक्षण मनो पढ़ि डारो
टोना री।
घूंघट चापि चिवुक चितवनिमें भूलि गई
सखि भोना री॥
मात पिता सुत बन्धु खिजोरो मेरो मन मोह्यो
मोहना री।
वंशीधर गिरिधर पर वारो अब कछु और न होना री॥

१०

अरी मोर मुकुट कुण्डल झलकन अलकन उर
मन मेरो जो हरो।
मुरली ध्वनि श्रवणन सुनि सजनी काम धाम
सब को विसरो॥
बावरे लोग मारे सटको घरको नहीं जानत
पैड़ परो।
भावै सो होय हरि सङ्ग न छाड़ौं यह व्रत जिय
निश्चय जो धरो॥
काहेको लोक लाज आवै सखि काहू सों काहूको
काज सरो।
चन्द्र सखो सोई बड़भागिन बालकृष्ण प्रभु
बारो वरो॥

११

अरी आज सखी बनतें बनें आवत गावत श्याम
सखागनमें ।
गति गुञ्जत अमित गयन्द झुको लखि कौन रहै
अपनें मनमें ॥
पगिया सिर लाल रही झुकि भाल सौं पीत झगा
झलके तनमें ।
ए उपमा उपजी जियमें मानो चपला लपटी
श्याम घनमें ॥
घुंघरारी लट लटके मुख पर राजत है रज गोधनमें ।
चित्र लिखी सी रहि गई तत्छण वृन्दावन प्रभु
वृन्दावनमें ॥

१२

कान्हर कारो नन्द दुलारो मो नयन नि को तारो री ।
प्राण पियारो जग उजियारो मोहन मित्र हमारो री॥
दृगमें राजत हियमें छाजत एकछण नाहिन न्यारो री।
मुरली टेर सुनावत निशिदिन रूप अनूप संवारो री॥
चरण कमल मकरन्द लुब्ध ह्वै मन मधुकर
गुञ्जारो री ।
रसरङ्ग केलि छबीले प्रभु सङ्ग हित सौं सदा
विहारो री ॥

१३

आज व्रजभूमि नवरङ्ग शोभा बनी रास खेलत
नवल सङ्ग प्यारी ।
माधुरी रूप रस केलि सोहावनी चन्द्रिका मोर
छवि देत न्यारी ॥
हलत कुण्डल चिलक पीत पट अति सरस कर
कमल फूल लीन्हें विहारी ।
लगनमें मगन मोहन निरखि नेह सो रङ्ग
रसमूल राधे विहारी ॥
सखी निर्तत घनी बनी ठनी हित सनी बजत
मुरली मधुर स्वर सुखारी ।
युवतीके यूथमें प्रेम पूरण पगी युगल जग प्राण
जीवन अधारी ॥

गगन सुर गण देखन छयो ए अलो शिव
विरिञ्चि सबन सुधि बुद्धि विसारी ।
छवि छबीलो छबीले छको होइ जब युवतिन
आजु सर्वस्व हारी ॥

१४

निरखि त्रिभुवन धनी प्रेम पूरण सनी माधुरी
रूपरसमें लुभानी ।
छवि छको सांवरो अब किते जावरो लगन मन
मोहनी सुधि भुलानी ॥
लाग सौं चित्त लुभ्यो नेह हियमें खुभ्यो लाज
कुलकानि जियतें छुड़ानी ।
अङ्ग सब रङ्ग हरिके रङ्गी ह्वै अङ्गी कोउ कहो
बावरो काउ सयानी ॥
देखि सुन्दर वरण मनहरण सुखकरण नागरी
नवल हित बनिके ठानी ।
रसिक जीवन छबीले प्रभु प्राणधन चरणके शरण
सुखमें समानी ॥

१५

जयति गोकुलानन्द गोविन्द गोपालक तालक
तालगीत-नृत्यकारी ।
हेम-मणि-मण्डली मध्य घन नीलमणि-मोहनी
नन्दमन्दिर-विहारी ॥
जयति बालगोपाल सुविशाल लोचन-युगल
गरे रुचिर व्याघ्रनखमणि-सुरारी ।
सुघट कटि किङ्किणी नाद उन्माद पदनूपुर-रणित
गति नृत्यधारी ॥
जयति ललाटपटघटित-तिलक कस्तूरिका कुटिल
अलकावली सुख विकाशी ।
दक्ष दक्षिण हस्त पूपपर पायस वाम कर नवनीत
ब्रह्मराशि ॥
जयति पूतनाप्राण-हत शकट उच्चाट करि असुर
तृणावर्त धरि धरणी आने ।

नीलगिरि श्रीजगन्नाथ शिशुरूप क्षत कौन मति दास
माधव बखाने ॥

१६

सरस रस रङ्ग भीने नवल हरि रसिक वर प्रात ही
जात इतरात सोहे ।
परम प्रीतिकी ऐन हित हुलसि जागी रैन चैन चित
निरखि द्युति मन मोहे ॥
मन्द मृदुल हसनि छवि लसनि सुख माधुरी
ललित कच कुटिल दृग वङ्क भौंहे ।
मदन गोपाल अवलोकि धीरज धरे कहो री सजनी
ऐसो बाल को है ॥
चकित चितवत चित्त करत चञ्चल चखनि
विसरि गति विवश बावरी हो है ।
शोभा को सदन सुवदनकी ज्योति लखि होत है
कोटि रवि शशि लजो है ॥
लपटि उद्गार उरहार कञ्चन वसन प्रेम शृङ्गार
तन मन लगो है ।
केवलराम वृन्दावन जीवन छकि सब सखी
दृगनिसों रूप जोहे ॥

१७

शरत् रजनी रुचिर शशि सुखद चांदनी सुदित
मोहन रसिक रास राचे ।
लेत गति लटकि भ्रू मटकि मदन मोद सों
नवल नटवर ललित स्वरूप नाचे ॥
रीझि भीजी कुंवरि लाल सङ्ग ताल क्रम उच्चरे
मधुर स्वर सरस सांचे ।
उरपति लइ दुर मई नई नई गति सों सङ्गीतके
रङ्ग माचे ॥
मैन मोहित चन्द्र थकित खग मृग विवश बांसुरी
ध्वनि सुनत मुनिन वांचे ।
केवलराम वृन्दावन जीवन धन्य युगलवर सदा
विलसत दृगनि दर्श जांचे ॥

षट्—चर्चरी

राधिकारमण गिरिधरण गोपीनाथ मदनमोहन
कृष्ण नटवर विहारी ।
रास लीला रसिक व्रज युवति प्राणपति सकल
दुःख हरण गो गणन चारी ॥
सुख करण जगतरण नन्दनन्दन नवल गोपपति
नारिवल्लभ मुरारी ।
चीत स्वामी हरि सकल जीव उद्धार हित
प्रकट वल्लभ सदन दनुजहारी ॥

२

आज दधि मन्थन करे मामिनी प्रेमथी हर्ष
आनन्द भरी गीत गाए ।
रई माहे करी रज्जु वे ह्र कर धरी घमरनो शब्दतें
अति सुहाए ॥
प्रेम पुलकित तनी कृष्णरस मा सनी किङ्किणी
नाते अति घोष थाए ।
उरजना भार थी कटिते लचका करे सुन्दरी
शोभा ते कही न जाए ॥
ते समय कान्हजी आवीने ओचका पेठो घर माहे
नवनीत खाए ।
युवती ए जान्यू की धंसी गयु औरडे मैलो मंथानते
चालो धाए ॥
सुन्दरी अवतां जोइ श्रीकृष्णजी तजीने माखनतें
चण पलाए ।
नरसैना स्वामी थी गोपी विनती करे माजसों
माजसों चित चुराए ॥

श्रीकृष्णाय नमः ।

देवगान्धार—तिताला

आजु अति राजत दम्पती भोर ।
सुरतिरङ्ग के रसमें भीने नागर नन्दकिशोर ॥
अंशन पर भुज दिये विलोकत इन्दुवदन विम्ब ओर ।

करत पान रस मत्त परस्पर लोचन तृषित चकोर ॥
छूटी लटन लाल मन करष्यो ये वाके चित चोर ।
परिरम्भण चुम्बन आलिङ्गन सुर मन्दिर कल घोर ॥
पग डगमगत चलत वन विहरत नव निकुञ्ज घनघोर ।
हित हरिवंश लाल ललना मिलि हियो सिरावत मोर ॥

२

व्रज नव तरुणि कदम्ब मुकुटमणि श्यामा आजु बनी ।
नख शिखलौं अङ्ग अङ्ग माधुरी मोहे श्याम धनी ॥
यों राजति कवरी गूंथति कच कनक कञ्ज बदनी ।
चिकुर चन्द्रकण बीच अर्ध विधु मानो ग्रसत फनी ॥
शीभग रस शिर श्रवत पनारी प्रिय श्रीमन्त टनी ।
भृकुटी काम को खण्ड नयन शर कज्जल रेख अनी ॥
तरुण तिलक ताटङ्क गण्ड पर नासा जलज मनी ।
दशन कुन्द सरसाधर पल्लव प्रियतम मन समनी ॥
चिवुक मध्य अति चारु सहज सखि श्यामल
विन्दु कनी ।
प्रियतम प्राण रत्न सम्पुट कुच कञ्चुकी कसि व तनी ॥
भुज मृणाल बल हरति वलय युत स्वर्ण सरस अवनी ।
श्याम शीर्ष तर मानो मिड़वारी रची रुचिर रमनी ॥
नाभि गम्भीर मीन मोहन मन खेलन को ह्रदनी ।
कृस कटि प्रथु नितम्ब किङ्किणि व्रत कदलि
खम्भ जघनी ॥
पद अम्बुज जावक युत भूषण प्रियतम उर अवनी ।
नव नव भाव विलोकि भाम इमि विहरत है
वर करनी ॥
हित हरिवंश प्रशंसित श्यामा कीर्ति विशद घनी ।
गावत श्रवणनि सुनत सुखाकर विश्व दुरित दमनी ॥

२

देखत नव निकुञ्ज सुनि सजनी लागत है अति चारु ।
माधविका केतकी लता ले रच्यो मदन आगारु ॥
शरत् मास राका निशि शीतल मन्द सुगन्ध समीर ।
परिमल लुब्ध मधुव्रत विथकित नदत कोकिला कीर ॥

बहुविध रङ्ग मृदुल किसलय दल निर्मित
प्रिय सखि सेज ।
भाजन कनक विविध मधुपूरित धरे धरणि पर हेज ॥
तापर कुशल किशोर किशोरी करत हास परिहास ।
प्रियतम पाणि उरज वर परशत प्रिया दुसवती वास ॥
कामिनि कुटिल भृकुटि अवलोकित दिन प्रतिपद
प्रतिकूल ।
आतुर अति अनुराग विवश हरि धाइ धरत भुजमूल ॥
नागर नीवी बन्धन मोचत ऐंचति नील निचोल ।
वधू कपट हठ कोप कहति कल नेति नेति मृदु बोल ॥
परिरम्भण विपरीत रति गति सरस सुरति निज केलि ।
इन्द्रनील मणिमय तरु मानो लसत कनककी वेलि ॥
रति रण मिथुन ललाट पटल पर श्रम जल
सीकर सङ्ग ।
ललितादिक अञ्चल झुक झोरति मन अनुराग अभङ्ग ॥
हित हरिवंश यथा मति वर्णन कृष्णरसामृतसार ।
श्रवण सुनत प्राण वारति राधा पद अम्बुज सुकुमार ॥

४

आजु वन क्रीड़त श्यामा श्याम ।
शुभग बनी निशि शरत् चांदनी रुचिर कुञ्ज अभिराम ॥
खण्डन अधर करत परिरम्भण ऐंचत जघन दुकूल ।
उर नखपंक्ति तिरीछी चितवनि दम्पति नीरस समतूल ॥
वे भुज पीन पयोधर परशत वाम दिशा प्रिय हार ।
वसननि पीक अलक आकर्षत समर श्रमित शत् मार ॥
पल पल प्रबल चोपरस लम्पट अति सुन्दर सुकुमार ।
हित हरिवंश आगु तृण टूटत हों बलि विशद विहार ॥

५

आजु वन राजत युगल किशोर ।
नन्दनन्दन वृषभानुनन्दिनी उठे उनींदे भोर ॥
डगमगात पग धरत शिथिल गति परशत नख
शशि छोर ।
दशन वसन खण्डित मुखमण्डित माला तिलक
कछु थोर ॥

दुरत न कच कारजनिकी रोके नयन अरुण अलि चोर।
हित हरिवंश संभारन तन मन सुरति समुद्र झकोर॥

६

वनकी कुञ्ज निकुञ्जनि डोलनि।
निकसत निपट सांकरी वीथिन परशत नाहि निचोलनि॥
प्रातकाल रजनी सब जागी सूचत सुख दृग लोलनि।
आलस्य बलित अरुण अति व्याकुल कछु उपजति गति गोलनि॥
तितंन भृकुटी वदन अम्बुज मृदु सरस हास मृदु बोलनि।
अति आसक्त लाल अति लम्पट वश कीन्हें बिनु मोलनि॥
विलुलित शिथिल श्याम छूटी लट राजत रुचिर कपोलनि।
रति विपरीत चुम्बन परिरम्भण चिबुक चारु टक टोलनि॥
कबहुंक अमित किसलय शय्या पर मुख अञ्चल झक झोलनि।
हित हरिवंश दास हिय सींचत वारिद केलि कलोलनि॥

७

प्रीतम दोऊ बने मरगजे बागे।
नव निकुञ्जते निकसि प्रात ही पिय पाछे धन आगे॥
खण्डित अधर पयोधर मण्डित गण्ड विराजत दागे।
छूटी लट टूटी मणि माला अ ँ घुंघट छवि पागे॥
नख शिख विशिख कुसुमकी सेना छूटे हेरन बागे।
व्यास स्वामिनी को सुख सर्वस्व बिलसो श्याम सभागे॥

८

कहांलो अलके देही ओट।
कुण्डल चपल सुरङ्ग छबीलो आनि बन्यो मग जोट॥
खञ्जन मीन कमल अति लाजत उपमा दीजे कोट।
सूरदास प्रभु कहां लग बरनों नाहि न रूपको टोट॥

९

भलो यह खेलिवेको बानि।
मदनगोपाल लाल काहूकी नाहि न राखत कानि॥
देखि यशोमति कर्तव्य सुतके यह ले माट मथानि।
फोरि ढोरि दधि डारि अजिरमें कौन सहे दिन हानि॥
अपने हाथ ले देत वनचर को दूध भात घृत सानि।
जो वरजों तो आंखि दिखावे पर घर कूद निदानि॥
ठाढ़ी हसति नन्द जूकी रानी मूंदि कमल मुखपानि।
परमानन्द दास जानत है बोलि बूझि दे आनि॥

१०

ठाढ़ी यशोदा कहे।
यह ब्रजके लोग लालके गोहन लागे रहे॥
जाके भवन जात न कबहूं सो झूठे आनि गहे।
एक गांउ इक वास वसे वो कैसे जात निबहे॥
तुम जिन खीजो मात यशोदा सबनि को जीवन यहे।
परमानन्द आंखि जरो जाकी जू टेढ़ो दृष्टि चहे॥

११

सुनहु धौं अपने सुतकी बात।
देखि यशोमति कानि न राखत ले माखन दधि खात॥
भाजन भानि डारि सब गोरस बांटत है करि पात।
जो वरजों तो उलटि डरावत चपल नयनको घात॥
जो पावत सो लेत चपल हठि नेक हु नाहि डरात।
हों सकुचति अञ्चल कर धरिके रही ढांपि मुख गात॥
गिरिधर लाल हाल ऐसे करि चले धाय मुसिकात।
चतुर्भुज दास सङ्ग हों आयो बुझि सोंह दे सात॥

१२

जो तुम सुनहु यशोदा गोरी।
नन्दनन्दन मेरे मन्दिरमें आजु करत थे चोरी॥
हों भई आनि अचानक ठाढ़ी कह्यो भवनमें को री।
रहे छपाइ सकुचि मोचक होइ मनहु भई मति भोरी
मोहि भयो माखन पछितावो रीतो देखि कमोरी।

जब गहि बांह कुलाहल कीन्हो तब गहि चरण निहोरी ॥
लागे लेन नयन जल भरि भरि मैं हरि कानि न तोरी ।
सूरदास प्रभु देव निशा दिन ऐसो अलक सलोरी ॥

१३

हा हा और सुने गो कोउ ।
बहुरि ग्वालि मुखतें जिनि काढ़े जो हम जानें दोउ॥
बालक कान्ह निपट भोरो है पांयो चलन सिखायो ।
तासो कहति भवन अपनेमें चोरी माखन खायो ॥
घर ह्व करत कलेउ क्रम क्रम जो कोउ बहुत निहोरे ।
सो कों अनत सकुचको लरिका कञ्चुकि के बन्द तोरे॥
चतुर्भुज प्रभु गिरिधरण चन्द्र को झूठेही लावति खोरे।
ह्वै है काह्न और गोप को इनहीके अनुहोरे ॥

१४

नित उठि देन उराहनो आवे ।
यह जु ग्वाली यौवन मदमातो झूठे ही दोष लगावे ॥
कहि धौं भाजन धरे वराये कहां मेरो मोहन पावे ।
लरिका अति सकुमार गहें कर हलधर सङ्ग खिलावे॥
कबहुं क कहति कञ्चुको फारी कबहुंक और बतावे ।
कबहुं क रई मथानी लेके आंगन शोर मचावे ॥
मन तेरो लाग्यो कमल नयन में उत्तर बहुत बनावे ।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधर मुख इह मिस क्षण क्षण देखो भावे ॥

१५

अरी मेरो तनक सो गोपाल कहा करि जाने दधिकी चोरी ।
काहे को आवति हाथ नचावति जीभ न कर हो थोरी॥
कब छीके ते माखन खायो कब दधि मटुकी फोरी ।
अङ्गुरिन करि कबहूं नहीं चाखत घर हो भरी कमोरी ॥
इतनो बात सुनी जब ग्वालिन विहसि चली मुख मोरी ।
परमानन्द नन्दरानीके सुत सों जो कछु कहे सो थोरी॥

१६

ढोटा रञ्चक माखन खायो ।
काहे को हरई होति री ग्वालिनि सब व्रज गाजि हलायो ॥
जाको जितनो तुम जानत हो दूनो मोपे लेह ।
मेरो कान्ह रहे इकलो तब सबे आशिष मिलि देह ॥
कमल नयन मेरो अंखियनि तारो कुल दीपक व्रज गेह ।
परमानन्द कहत नन्दरानी सुत प्रति अधिक सनेह ॥

१७

तुम नीके दुहि जानत गैया ।
चलिये कुंवर रसिक नन्दनन्दन लागों तिहारे पैया ॥
तुम हि जानि करि कनक दोहनी घरसे पठई मैया ।
निकट हि है यह खरिक हमारो नागर लेउं वलैया॥
देखियत प्रेम सुदेश लरकई चित चुहव्यो सुन्दरैया ।
कुम्भनदास प्रभु मानि लई रति गिरि गोवर्द्धन रैया ॥

१८

मोहन पूरे हो सत् भाइ ।
कहत लाल नीके दुहि देहों ग्वालि तिहारी गाइ ॥
आतुर ह्वै दोहनी कनककी करते लीन्हीं धाइ ।
देखौं वेगि पाटको नोई वछरा चोखे जाइ ॥
हंसि हंसि दुहत अरु कहत रसीली बातें बहुत बनाइ ।
चतुर्भुज प्रभु सहज हि रति जोरी गिरिगोवर्द्धन राइ ॥

१९

लाल तुम कैसे दुहत हो गाइ ।
कहुं वैठे कहुं दृष्टि दोहनी धार कहूं चलि जाइ ॥
यह दुहिवो हम कबहु' न देख्यो ग्वालि कहति समुझाइ ।
जो कछु हुतो तनक सो वामें सिरतो दियो लुढाइ ॥
मेरी बास खरी रिसहारी अब मोहि देखि रिसाइ ।
श्रीविट्ठल गिरिधरण लालपे सर्वस्व चली हराइ ॥